श्री श्री

दुर्गायन

درگائن

नव काण्ड

जिसे

Shri Shri

Durggáyán

Nine Kands

by

Babu Hira Lal

Head Master A. V. School Dhamtari

District Raipur Central Provinces

बाबू हीरालाल हेड मास्टर ए वी स्कूल धमतरी ज़िला रायपुर

सेन्ट्रल प्राविन्सेज़ ने बनाई

Lucknow

1884.

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालय में मुद्रित हुई

सन् १८८४ ई०

दुर्गायण ॥

सूचीपत्र ॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

हीरालालकृत ॥

नवखण्ड ॥

भूमिका

दो० मनसाधितमनसुमिरिकरिगावहु चरितसुहाइ ।
तीनलोकयुग चारमहं चार पदारथ दाइ ॥

चौपाई ॥

हीन बुद्धि यदि ग्रन्थ सुहाई । रातदिवस गावहु हियलाई ॥
लाइ वन्दना सुरगण केरी । ललितस्तुति अजकीन्हनिवेरी ॥
कृपाखानि मा चरित सुहाये । तब मधुकैटभ बधब कहाये ॥
श्रीश्री देविस्तुति सुर कीन्ही । दुर्ग्गम फलचारहु फललीन्ही ॥
गाहु सदल महिषहिं गतिदाई । यह पुनि देवि दूत बतराई ॥
नयन धूम्र चण्डमुण्डहु वधसत । नवलहु वीज शुंभ निशुंभहत ॥
वर तपसी पुनि स्तुति महाना । कारसुफल सबविधिफलदाना ॥
न्यायवेद आदिक सतहेरी । डगर भक्ति अरु मुक्तिहु केरी ॥

दो० आदि आदिपद अर्थमहँ प्रथम वरण सब जोइ ।
ग्रन्थनाम जो हस्तमहँ जानहु पाठक सोइ ॥

हे श्रीश्री आद्यनादि शक्तिमहान देवीकृतमायाचरण सांसारिकजागरूक भक्त्याभूषित पाण्डित्यागारो, आपलोगोंके संपूर्ण

सुफल जनक संसार सारताधूत भक्तिभावमें विधि हरि हरादि स्वामिनी अगणित ब्रह्माण्ड जामिनी चारपदार्थदायिनी तीका-लिक भक्तभायिनी श्रीश्री आदिशक्ति महान देवीजी की भक्ति मुक्ति मिश्रित पावनता भरित कथाका किंचित् संक्षिप्त वृत्तांत सनामी नवकाण्ड श्रीश्रीदुर्ग्गायण लवांश लेशांशप्रकार करके सनमृता व सविनय प्रदर्शित कियाजाता है,नैश्चित्यपूर्वकसंप-न्नाशहै कि श्रीमानभक्त जनगण अनाद्यनन्तदेवी नामांकितपोथी को निज निजप्रकारसे निजनिज क्षमामयी कृपाश्रयमें सानुगृह गृहणकरेंगे भक्तजनार्थ भायका शक्तिभक्ति दायका कथितपुस्त-क नव नवकाण्डोंमें ससौंदर्य्य व सलावण्य निम्नलिखित प्रका-रसे विचारितहैं और तदनुसार प्रत्येक काण्डमें श्रीश्रीमहान सुन्दरीजीके चित्रविचित्र पवित्रचरित्र सूक्ष्मांशरूपीय विवरण और विस्तारपूर्वक हार्घाय नयनगोचरानुभवद्वारा तल्लिखित विधिसे विज्ञात होतेहैं ॥

प्रथमकाण्डवर्णनः ॥

वन्दनामयी मंगलाचरण,नामांकित सहस्वशक्ति सुरगणोंके स्वभावस्वगुण औरसांसारिक घटनामयीकर्त्तव्य कर्म्मादिवर्णन कथित सुरगणोंको स्वांगासीन करना,पावन शुद्धभावमें प्रविष्ट होना,पवित्र चरित्रका स्वगुण और स्वफलवर्णन, मारकण्डेय मुनिकी और जैमिनी मुनिकी सानंद भेंट और फलप्रद वादानु-वाद, महान सम्राजपति सुरथकी महानऋषि मेधसकी और वैश्य समाधिकी विधिवतभेंट और वादानुवादमय संक्षिप्तवर्णन आदिशक्ति औरपरमेश्वरका विधिवत सम्बन्ध,आदिशक्तिमहान मायाजीका प्रभावांशादि वर्णन,आदिशक्ति और परमेश्वरकेभाव मयी कार्य्यकारण की सांसारिक घटना, आदिशक्ति महानदेवी जीके वर्णांशमयी प्रभावादि करके सांसारिक व्यवहारकर्मादि

वर्णन, आदिपुरुष स्वरूपी परमेश्वरीय विष्णुसनामी ईश्वरका स्वरूप मान्सिकघटना विराट स्वरूप इत्यादि विवरण, असुर मधु और कैटभकी उत्पत्तिरूपादिबखान, ब्रह्माकी दर्शकगाण की उत्पत्ति स्वरूप घटनादि लेखन, विधिकृत आदिदेवीजी की सत्यसार ख्यातिमयी महान स्तुति और तदनुसार लौकिक और अलौकिक व्यवहारादिका दर्शकमयीवर्णन, आदिशक्तिका करके आदिपुरुष परमेश्वरकादर्शनादर्शन, विष्णुसे और दानवमधुऔर कैटभकोसंग्राम, और मधु और कैटभ असुरोंकावधितहोना॥

द्वितीयकाण्ड वर्णनः॥

असुरगण महानपति महिषासुरका राज्यवर्णन, शिवजीके महानकाल स्वरूपी घटनामयी रूपादि वर्णन स्वर्ग नर्कलेखन, सुरासुरोंका स्वगुण स्वभाव स्वलक्षण स्वव्यहार स्वसंसार इत्यादिविवरण, पक्षीपशुनरादिका सान्सारिक स्वरूपलेकरदर्शनादिवर्णन, आदितामयी देवजनित तेज्यप्रकाशिका आदिशक्ति महान देवीजीका सुंदरीवेषमें दर्शितहोना, तथातदनुरूप स्वरूप भूषण आयुधादि आकारलेकर विविध विधि तन्मयी सान्सारिक घटनाका अर्थार्थमेंवर्णन, जगसम्बन्धी कर्मलेकर और स्वगुण मयी अंगांगमें दर्शितकरके आदिदेवी सुंदरीजीके सौंदर्य्यप्रभिश्रितशोभित स्वरूपाकारकावर्णन, सुरराशिकृत आदिमायाश्रीदेवी जीकी महान स्तुतिकालेखन, महादैत्यराज महिषासुरका ज्ञात होकर महान महान सेनापतियोंके प्रतिसंग्रामाज्ञा करनीइत्यादि, आदिदेवीजीसे और महिषदलपतियोंसे विस्तारपूर्वकमहान संग्रामहोना, दैत्यराज महिषासुरका संग्रामभूमिमें आकरविधि विधिउपद्रवादिकरना, महान महान कटककाविनष्टहोना, सुरगणकृत आदिपरमेश्वरीकी महान स्तुतिका वर्णन, देवीजीका स्वरूप सौन्दर्य्य शोभादिकथन, महिषदलपतियोंके नाम

नुसारी और कर्म्माद्यनुसारी स्वगुण स्वकार्य्यादि का वर्णन, आदि सुन्दरीजीसे महान महान योद्धासहित महिषासुर का संग्रामकरना, रणभूमिकी शोभादिका वर्णन, महिषासुरका विधि विधिवेषोंमें होकर विधिविधि उपद्रवादिकरना और उनवेषोंके स्वगुण स्वकर्म्मादिका मान्सिक और सान्सारिक घटनालेकर संक्षिप्तवर्णन, आदिदेवीजीसे महान संग्रामकरके महिषासुरका शोभामय वधकोप्राप्तहोना, और सुरगणसानन्दकृत आदिदेवी जीकी पूजा और गान नृत्यादि करके स्तुतिआदिका वर्णन॥

तृतीयकाण्डवर्णनः॥

आदिमायाजी का रणकोप शांतहोना स्वस्वशक्तियों सहित विधि हरि हरादि सुर गणोंका देवीजीको शोभापूर्वक संवरित करके और गान नित्य सेवापूजनादि करके अत्यन्त महान पावन स्तुति वर्णन करनी, और कथित स्तुति वर्णन के प्रत्येक मध्य मध्य में मान्सिक दर्शक लौकिक अलौकिक और अन्य भावी घटना लेकर उनका तदनु रूप सत्य सारार्थ संक्षिप्त विवरण में बुद्धिमय प्रत्यक्ष करना, और भक्ति मुक्ति रक्षणित्यादि वरका आशीरवाद देकर श्री आदि देवीजी का शक्ति सहित सुरराशि सन्मुख से ध्यानान्तर गतिको प्राप्त होना॥

चतुर्थकाण्डवर्णनः॥

महा काल स्वरूपी महान विकराल शुंभ और निशुंभ दैत्य राजाओं का राज्यित्यादि वर्णन, देवादेवों के मान्सिक और सान्सारिक स्वगुण स्वलक्षण स्वकर्म्म इत्यादि की घटना और विवरण सुर समूहों का हिमालय के निकट आना और महान देवीजीकी महान पवित्रस्तति कथित करनी, तदनुसार

उसका प्रत्येक स्थल के मध्य मध्य में मान्सिक दर्शक और सान्सारिक गुणादि भाव लेकरकर्म्मादि स्वरूपमेंघटित वर्णन करना,महान देवी पारबती जीका और पुनि आदि देवीजीका दर्शितहोना,पारवती ईशा शिवाऔरकौशिकी देवियोंके नामानु-रूप अलौकिक और लौकिक स्वगुणस्वकर्म्मित्यादिका घटित विवरण,महान दानव पति शुंभ और निशुंभ सेवक सेनापति चण्ड और मुण्ड का देवीजीको दृष्ट करके निज राजाओं से वृत्तान्त सशोभा भाषित करना, शुंभ और निशुंभ दैत्येशों की तत्काल विदितप्रशंसा का वर्णन महान् दनुजपति कटकेश सुग्रीव दूतका देवीजीके निकट, आकर अपने राजाओंकी विविधवत प्रशंसामय भांति सुभांति सम्वाद करना,पुनि विधि-वत कथित संवाद का दर्शक भावादि दर्शना,और सुग्रीव दूत बहुर कर आगत होना ॥

पंचमकाण्डवर्णनः ॥.

दूत सुग्रीव के द्वारा श्रीसुन्दरी सौंदर्य्याभूषित देवीजीका वृत्तान्त ज्ञातकर महान दानव नाथ शुंभ और निशुंभ का महा कटक सहित कटकपति धूम्रलोचनकोभेजना, श्रीविदित माया देवीजीसे और कटक सहित कटक पति धूम्रलोचनसे विविध विधि भाषानुवादमयी युद्ध होना,देवीजी के वाहन सिंह का कटक दनुजोंको हतकरना, धूम्रलोचन का वधित होना,धूम्र-लोचन का नामानुसार सान्सारिक कर्म्मादि वर्णन, चण्ड और मुण्ड सेनापतियों का सेना सहित आना और आदीश्वरी देवी जीके प्रति युद्ध करना,महान काली कालिका देवीजीका दर्शित होना और स्वरूप कर्म्मादि अनुसारमान्सिक और सान्सारिक घटना और विचार,महान काली देवी जीका भयदायक चरित्र, चण्ड और मुण्डका निज निज सेनासहित पृथक पृथक वधित

होना, सुर समूह कृत आदिदेवी जीकी स्तुतिका लेखन, चामुण्डा देवीजीका नामार्थ, सेनासमूह सह धूम्रलोचन चण्ड और मुण्ड को वधित जान महान दैत्य राज शुंभ और निशुंभ का त्रिविध विधि अत्यन्त भयंकर सेनाओं को राजाज्ञा वर्णन, कम्बुदोद्भ धौम्र्य दल धौम्र वंशी दुर्दरवंशी मौरय कालकेय इत्यादि महान महान सेनाओं का भयंकर भाव कर्म्मादि प्रकार से रणोपस्थित होना, और इन सर्व सेनाओंका नामार्थानुसारी मान्सिक और सान्सारिकघटित बिबरण, महान दानव नाथ शुंभ और निशुंभका महान महान भय जनककटक सहित युद्धार्थ सजित और शोभित होना, आदि देवी ललाट जनित महान काली देवीजीका वखान, ब्रह्माणी आदि शक्ति देवियों का ससौंदर्य्य व सलावण्य रणोपस्थित और अति भय शोभित होना, तथानुरूप उन देवियों का पृथक पृथक नामानुसारी स्वगुण आकारानुसारी स्वकर्म्म भूषण युधा नुसारी रक्षणार्थ कर्म्म व्यवहार इत्यादि भाव मय मान्सिक और सान्सारिक घटित वर्णन, आद्यनादि शक्ति महान देवीजीकी और अन्यान्य देवियों की उपमादिसहित शोभादिका विवरण और विविध विधि कटाक्ष मय भांति सुभांति युद्ध कर्म्मादि वर्णन, शिवदूती देवीजीका स्वगुण स्वकर्म्म इत्यादि वर्णन, अतिशय भय प्रद महान दैत्य सेनापति रक्त बीजका संग्रामोपस्थित होना और मान्सिक और सान्सारिक घटना मयी स्वगुण स्वलक्षण स्वयुद्ध कर्म्मादि वर्णन, महान दानव रक्त बीजका युक्ति सहित युद्ध करना युद्ध शोभादि वर्णन, और अन्त को वधित होना, और सुरगणकृत सानन्द श्रीमहान सुन्दरी जीकी स्तुति का वर्णन ॥

षष्ठकाण्डवर्णनः ॥

महान निशिचरपति विकराल शुंभ और निशुंभके भाग्यानु-
सारी स्वगुण स्वकर्म्मादि भय दर्शक और सान्सारिकघट-
नादि लेखन, महान दैत्य दल समूह सहित निशुंभ का और
तदनुसार तदधिकानुरूप पश्चात शुंभका रणागमन और
महा संग्राम करना, सर्व्व सुन्दरी देवियों का पृथक पृथक
भिन्न भिन्न कटाक्ष सहित संग्रामपिल्लीआदि भय नानाप्रकारसे
युद्धकरना और भांति सुभांति महान महान दैत्यगणोंको वध
वधित करते जाना, कथित महा संग्राम साधन मध्य निशुंभ
औरपश्चात शुंभ कराल दैत्य राजाओं को मूर्छा आनी, सर्व्व
सुन्दरी देवियों का कटाक्ष मयी नृत्यादि करना और सुन्दर
और डरकर कौतुक करना, निशुंभ दैत्यराज का विविध विधि
युद्ध करके वधित होना, सर्व्व देवियों का अपरापर दैत्यगणों
को कटाक्षी लीला करके हत करना, सुरराशि कृत देवियों का
स्तुत्य वर्णन नाना दानवों करके वधित होने परभी महान
दैत्यराज शुंभका रणोद्यत होना, आदि देवीजीका और सर्व्व
देवियों का सांग्रामिक स्वरूपादि ससौन्दर्य्य वखान सर्व्व
अन्यान्य देवियों का अन्तरगत होकर आदि शक्ति श्रीमहान
देवी जीमें प्रविष्ट और मिश्रित होना, इन सर्व्व कौतुक का
मान्सिक दर्शकओर सान्सारिक घटनादि वर्णन, महान महान
दैत्य दल गण सहित महान दैत्येश शुंभका आदि देवीजीसे
महा संग्राम करना, नभ मार्गमें स्व स्व सुन्दरीसहित सुरगणों
का रणानन्द लेना और किंचित्तर्क को प्राप्त होना, आदिमाया
महा सुन्दरी जीने और महादैत्येन्द्र शुंभने आकाशमें विविध
विधि सुन्दर और भयंकर महा युद्ध होना, अन्तको आदि भग-
वती देवीजी करके महा दानवेन्द्र शुंभ का वधित होना, स्व
सुन्दरी सहित सुरगणों का आदिदेवीजीकी स्तुतिका सानन्द

वर्णन, और अगणित शव गणोंकेसमूहोंका दहन होना औरत स्व तत्वोंमें मिलितहोना॥

सप्तमकाण्डवर्णनः॥

अतिशय विकराल महान दानवपति शुंभ औरतथा निशुंभके अत्यन्त दलसमूह सहित नष्ट और वधित होनेपर तीनोंभुवन का बहुलानन्द ससौन्दर्य्य वर्णनहोना,स्व स्व शक्तियों सहित विधि हरि हरादि सुरगण कृत महानमाया परमसुन्दरी महान देवीजीकी सानन्दीय पूजादि वर्णन, सकलफलदायक कल्प वृक्षका भाव दर्शित होना,स्व स्व सुन्दरियों सहित अज हरि हरादिसुर समूह कृत श्री आद्यनाद्रि महान माया देवीजी की आदि नारायणीजी की और सर्व देवियोंकी विस्तारपूर्वक अति शय पावन अत्यन्त महान सत्यसत्य पावनस्तुति वर्णन,तथानु-रूप प्रत्येक स्थलके मध्य मध्यमें आदि सुन्दरी महान मायाजी की लावण्य सौन्दर्य्य शोभा प्रभाव प्रतापादि विवरण कथित सुरराशिका अनादि माया देवीजीसे रक्षण भक्ति मुक्ति इत्यादि मयी शुभ शुभ वरदान याचना,आदि माया महान देवी जीका सशक्तिसुरगणोंपर सन्तुष्ट और प्रसन्नहोना,श्रीमहान स्वामिनी आदि माया जीका रक्षणादि सम्बन्धी वरदान दायक पवित्र वाक्य वर्णन,सतादि चारोयुगोंके कालान्तरमें परमेश्वरावतार वर्णन और विधि विधि बहु ब्रह्माण्डोंके कार्य्य कर्म्मादि वर्णन, महादनुजेश शुंभ तथा निशुंभ की भूत भविष्य उत्पत्त्यादि करके कथा वर्णन,आदि देवी जीके पवित्र वाक्यमें अन्यान्य देव्यवतारों की अलौकिक सत्यमय और सान्सारिक व्यवहारादिमय कथा वर्णन,विष्णुके विख्यात अवतारोंकी शक्तिका कथा वर्णन,आदि देवीजीका भक्ति मुक्ति दायक पवित्र वाक्यऔर महान माहात्म्य

बखान, और अन्तको महान विदित संग्रामके पश्चात् शेषदोबार दैत्योंका रसातलको गमन करना॥

अष्टमकाण्डवर्णनः॥

सुरसमूहकृतआदिदेवीजीकीपावनमहानस्तुति औरअत्यन्त महान शोभादिवर्णन, आदिदेवी शक्तिजीके महानमाहात्म्यका वर्णन और उसका स्वगुण स्वफलादिवर्णन, चैत्र और आश्विन नवरातोत्सव का सकारणवर्णन,महानस्वामिनीअनाद्यादि शक्ति देवी माया जीके महान पवित्र माहात्म्यकाफल प्रभाव प्रताप पूजनादि वर्णन और तन्मय सान्सारिकफलप्रदतादिकी प्रत्यक्ष घटना, आदि स्वामिनी देवीजीकी शोभा लावण्यादिका लेखन, सुन्दरियों सहित सुरसमूह कृत महान देवीजीकी पूजादि महान स्तुत्यादिका वर्णन औरमहान माया देवीजी करकेंकथित शक्ति सहित सुरगणों का भक्त्यादि मय शुभशुभ वरदानपाना,आदि देवीजीका हृदयान्तरगतिको प्राप्तहोना, निजनिजसुन्दरीसहित सुरगणों का निज निज लोकोंमें प्रविष्टहो सुखानन्दकोभोगना, महान माया देवी जीके विविधविधि सुन्दर सुन्दर स्वरूपोंको स्वगुणादि घटना मय वर्णन करना, भक्ति वरित्यादिविवरण, सुरथनृपति और समाधिवैश्यकोमेधसऋषिका भविष्यफलप्रद शुभोपदेश देना, और श्री आदि देवी जीकी ओर पवित्र भक्ति लगाकर भूपति सुरथ और और वैश्य समाधिका महान ऋषि मेधस की पूजादि करके विदाहोना और श्री देवी जीके महान तप हेतु सरिता तट गमन करना॥

नवमकाण्डवर्णनः॥

महान तपसी सुरथ और समाधि का सरितातटोपस्थित होकर श्रीमहानमाया आदिशक्ति देवी जीके निर्गुण स्वरूप

का ध्यान लगाना दोनों तपसियोंका महादेवीजी की अत्यन्त सुन्दर मूर्ति बनाकर पूजादि कार्य्यकरके महान पावन स्तुति वर्णन करनी और पुनि महानविख्यात व गुप्त महान पूजनादि करके करुणामयी स्तुति करनी महानभागी दोनों तपसियों को आदि शक्ति महानमाया महानदेवीजीका सुन्दर वरदायक दर्शन देना, परमानन्द भोगी महान तपसियों का दर्शित देवी जीकी पूजादिकर पावन महान शुभस्तुति को विस्तार पूर्वक वर्णनकरना, और साशीरवाद फल प्राप्त करना आदि देवीजीका दोनोंतपसियोंसे ध्यानान्तरगतिको प्राप्तहोना भक्त्यादि महान, अटल वर प्राप्त करके दोनों तपसियोंका निजनिज स्थान को गमनकरना, महान मुनिमारकण्डेय का श्री श्रीदुर्गायणजी को अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन में कथितकरना; श्री श्री दुर्गायणजी का प्रभाव प्रताप माहात्म्यइत्यादि वर्णन, श्रीमहानमाया आदि शक्ति देवी जीको हृदयान्तर में धृत कर महानमुनि मारकण्डेय का और जैमिनिका निज निज आश्रममें विश्रामलेना, आदिमाया महान स्वामिनी देवी जीका अवतार ससौन्दर्य्य सन्मुख मान मनका और मनधृतका विविधविधि सम्वादहोना आदिभगवती देवीजीका प्रभावादिवर्णन अगणित अतुलितऔर अपारवृह्माण्ड समूहों का उत्पत्यादि गुण सम्बन्धी युगादि काल सम्बन्धी औ इत्यादि सम्बन्धी विस्तारपूर्वक वर्णन होना, आद्यनादि शक्ति महान देवीजीसे आदि मनुरूप परमेश्वरका घटित सम्बन्धादि वर्णन, पुण्य पाप सत्यासत्यादिका ज्ञानवर्णन, मनुष्यकी उत्पत्ति गर्भवास युवादि अवस्थामयी कर्म्मादि वर्णन, सत रज तम तीनों गुणों का विवरण और इनको विविध विधि भिन्न भिन्न नृपति बनाकर और अन्यान्य सान्सारिकभाव विकारोंको सेनादि रूप बनाकर उनकासोपमादि विस्तारपूर्वक वर्णन, श्री श्रीदुर्गायण जीका गुण फलादि वर्णन, महान स्वामिनी आदि शक्ति महान

देवीजीके पवित्रविख्यातनामादिके प्रभावादिका अत्यन्तसंक्षिप्त वखान, विपुल विस्तार पूर्वक भांतिभांति प्रत्येक उपमामयसन्त और असन्तजनोंके वहुलक्षणोंकावर्णन, आदिशक्तिमहानस्वामिनी देवीजीके निमित्त अर्पणहोना, और वन्दित सशक्तिसुरगणोंसे विनय करना और अन्त में श्री श्री दुर्गायश का अन्तहोना ॥

हे काव्यीय नैपुण्यगेहो, काव्याध्ययनाभूषितो, आद्यनादि श्री परमेश्वरी जीका ऊपरी ससौन्दर्य्य कथित पावन विवरण कथानुवार्ता व्यक्तकरके भिन्नभिन्न काव्यीय औपम्यादि से विविधविधि विस्तारपूर्वक सलावण्य विचरित हैं और प्रत्येक स्थलान्तर में प्रत्येक कथा वार्ता भिन्नभिन्न भावोंसे अधिकाधिकम् हृदयान्तरमें प्रविष्टहोनेके सुभांति सुयोग्य लिखितहैं यदि कथितानुसारकरस्थ लेखनीको इसप्रकार गमनकराना किसीभांति अयोग्यदृष्ट और ज्ञान पड़े तो साधीनता अंगीकृतहैं कि हस्तस्थकथितकथन और लिखित लेखन नानाप्रकारीय लघु. दीर्घ कईदोषोंसेमिश्रित और भरितहोंगे और कईस्थलोंमें अन्यान्यभावी रचना और बनावट अर्थार्थान्तरके भिन्नभिन्न अवरोधोंसे साड़चन वाधित और कलंकितहोंगी पर इतनाभी स्मरणाश्रितहोना उचितहैकि ये सब कथितानुरूप दोषित और कलंकित अवरोध नैपुण्यप्रसार और चातुर्य्य विस्तारकेद्वारा अधिकाधिकम् तोषदायक सान्तुष्य्यको परिपूर्ण प्राप्त होसक्तेहैं और सागृता साधीनता विनयभीहै कि पाण्डित्याभूषित नैपुण्यासंवरित भक्तजन उन दोषमय अवरोधों को और अवरोध मय दोषों को कृपा पूर्वक सकरुणा मान्यकर क्षमामयी स्थानोंमें एकओर अज्ञातानुसार निजनिज विधिसे निवासीनकर और पुनि उनको वैसरण्य शक्तिके क्षमाश्रयमें त्यककर पावन पावन गुणायों को पवित्र ज्ञानान्तर में निज निज शक्त्यनुसार और स्वस्व वृद्धि बलाधार प्रविष्ट और आसीन सानन्द करेंगे और कदापि कोई कोई उक्त विनयों के

सज्ञान विमुख होकर हास्यभाव को प्राप्त होवेंगे तो दीनता मय असामर्थी हैं परन्तु उन स्थलावसरों के सन्मुख आनेपर लौकिक और अलौकिक भावों को न्यायान्यायीय नेत्रोंसे दृष्ट करना अतिशय परम धर्म्म और माननीय कर्त्तव्य कर्म्म है और यहभी स्मरण शक्तिमें ज्ञातरहे कि साधनके और भाषण के मध्यान्तरमें कैसा और कितना विस्तीर्णान्तर माननीय और जाननीय होताहै और श्रवण शक्तिकी अपेक्षा दृष्टि शक्ति उत्तमतर और दृष्टि शक्तिसे और सर्व्व भावोंसे ज्ञान शक्ति सर्व्वोत्कृष्ट भाषितहै और साधन शक्त्यर्थ किंचित कथितहोवे उसका मार्गही ज्ञानानुरूप साहाज्यमय और काठिन्यमय उभय भावीहैं॥

अनाद्यनन्तशक्ति श्री श्रीमहानमायाजीके नित्य चिदानन्दी पाठको, आपलोगोंके पावनध्यानमें सोत्तमप्रकार प्रविष्ट होगा कि श्रीमारकण्डेय महामुनि कृत पावनपाठ सप्तशती ग्रन्थ सर्व्व सकलप्रकार करके त्रयोदशमाध्यायमें वेदसत्यसार से और महान वेदमंत्रसे सातिशय काठिन्य आभूषित हैं सर्व्व सकलपाठमें सत्यसारमंत्र यहां पर्य्यन्त कि प्रत्येक अक्षराक्षर में पवित्र मंत्रहीमंत्रमिश्रित और भरितहैं और सत्यमें मंत्रही मंत्र हैं और सत्यहीमें महाज्ञान गोचरकेसर्व्व विधि बहिर हैं सो ज्ञातकरना उचितहै कि करस्थितग्रन्थ श्रीमारकण्डेयग्रन्थ का अक्षराक्षर अथवा शब्दशब्द अथवा श्लोकश्लोकअथवा कथा वार्ताकथावार्ताकरके उत्थानिपटपूर्वक नहींहै परन्तु केवलएक हेतु करके सार सारांश संक्षिप्त सूक्ष्मांश रूपसे श्रीश्रीमहान परमेश्वरीजीके शुभ पवित्र चरित्र ज्ञातकरके अन्यान्य सुन्दर सुन्दरवार्तानुवादकरके उपमादिमयीरचित वन्धनकरके भांति सुभांति कथानुवाद करके भक्त भक्त्यानन्दीय रस माधुर्य्य करके इत्यादि नाना प्रकारी भावादि करके यही हस्तस्थ नयन

सन्मुख गून्थ सनामी श्री श्रीदुर्ग्गायण नव नवकाण्डों में वर वर्शित भावपूर्व्वक विचरित और प्रदर्शितकियागयाहै ॥

और जग जागरूकभक्त पाठको, जो कुछ कि भणित और लिखितहै सो ही नहींहै परन्तु श्री श्री आदि शक्ति महान माया के पवित्र चरित्रों की रचनामें कई लावण्यमयस्थलोंमें अवसराश्रित होकर ये ये वार्तानुवार्ता और लेखनानुलेखन दर्शित होंगे अर्थात् आद्यनादि महानमाया श्री श्रीं देवी की महान स्तुति मंत्राभूषित श्लाघ्य महान माहात्म्य इत्यादि विवरण, विविधविधि सुन्दर सुन्दर शक्ति देवियों के स्व स्व गुणीयप्रताप प्रभाव इत्यादि घटना, उनके स्वस्व रूपाकारानुसारी और भूषणायुध धारणानुसारी सान्सारिक घटनादि बखान, विधि हरि हरादि और अन्यान्य सुर गणादि के नाम कर्म्म भूषण आयुध आद्यानुरूपी जग दर्शित घटनादि लेखन कार्य्य कारण शक्ति बलादि भाव विवरण दैत्य गणोंके नाम कर्म्म आयुध आद्यानुरूपी जग सम्बन्धी दौष्ठ्य कर्म्मइत्यादि कथन,पुनि और देवादेवोंके भिन्नभिन्न लक्षण, स्वर्ग नरकान्तर अगणित ब्रह्माण्ड का उत्पत्यादिकर्म्म वर्णन, सन्तासन्तान्तर गुणादि स्वभाव,कर्म्मादिवर्णनइत्यादि अन्यानुवादविवरणऔर महानमहान समर लीला इत्यादि कथन लेखनतो रचितविचरितहैं और सर्व्वोपरलाक्ष्यकोप्राप्तहोनासर्व्वविध्योचितहै कि ये सर्व्व कथनानुकथन और लेखनानुलेखनमान्सिकदर्शकसाहित्य न्यायतर्क इत्यादि महानमहान गुण औरविद्याओंसे भिन्नभिन्न भांति स्थल स्थलान्तर में विभूषित और संवरित कियेगयेहैं, परन्तुयेसर्व्वउक्त वादानुवादऐक्यपूर्वक और पौन्यपूर्वकविदित करनाआवश्यकताके बाहिरहैकारण यहहै यहसर्व्व सकलअगू वर्णितनवकाण्ड विवरणोंके सौख्य भाववर्णनके द्वारासारल्य पूर्वक सर्व्वदृष्ट पड़ताहै और अन्तको गाम्भीर्य्याभूमित पाठकों

को सर्व्व सकल विधिसे दृष्टिशक्ति करके और ज्ञानशक्तिकरके बुद्धि नैपुगय चातुर्य्य इत्यादि द्वारा उक्त गून्थ के पठन पाठन में ज्ञानाश्रितहो सक्ताहै॥

कथितोपरवर्णित प्रकार को कदापि त्यक्त करके चातुर्य्य विद्या भूषितों कोओरभी ज्ञातहोगा कि वे निज निज नैपुगयादि शक्तिके प्रवाह से उक्तगून्थ के नाना प्रकारीकई एकछन्दपदों के कथार्त्थों को भक्ति पाथ धृत करके कई एक भावार्त्थों में घटित करसक्तेहैं यहनहीं किअन्त्यस्थल में विचरित काठिन्य सम्बंधी शब्दोंके कोषके विश्वासाश्रयमेंदृढ़ासीनहोवें औरभिन्न भिन्न अवरोध दायक दोषोंके निमित्तार्थ प्रथमहीसे स्वाधीनता क्षमा याचित होचुकीहै परन्तु औरभी कदापिकहींकहींस्थाल्य द्राब्यके नानाप्रकारी संशय और सन्देहऐसे आपड़ेंगे कि रसरा हित्य और मान हीनता दृष्टि में ज्ञातपड़ेंगी परन्तु इन कार्य्य कारणों के हेतुजो कुछ भविष्यकालमें भाषण लेखन होगा सो वर्तमानकालमें प्रतिज्ञाकेबहिरहै कदाचित कि मनोमंगकेसीमान्तर है तदापि कोई भक्तजन ऐसी ऐसी आकस्मात्य हृदय गूसित और अतिशयशोधित होनेपरभीपावेंतो कृपापूर्वकसानुगृहचिट्ठीपत्री केद्वारादीनलेखकको विदितकरेंपरन्तु भलीभांति स्मरण रखेंकि गून्थहीमेंपठनपाठनकेसमयकाट छांटभावकेदर्शन कोस्वाधीकारके बहिरजानें और यदि कोई कोई गून्था ध्ययनी भक्तजन उक्तगून्थमें से कोई कथावार्ता अथवा एक परपदभी अलगविलगकर कहीं और किसीअन्य गून्थस्थलमें लिखित व कथितकरना चाहें तो लेखक गून्थकरताकी सकृपाछापदेकर लिखितवकथितकरें नकिअन्य गून्थलेखककीनिजछाप लगावें॥

अब समाप्त्यन्तमें पाणियुग विनयहै कि हस्तस्थ गून्थके आद्यन्त लव तम व महान तम आशयार्थ परिपूर्ण रूपसे भली भांति विविधप्रकार गाम्भीर्य्य शान्त्य प्रावीगय शोधनमनोगति

गोचरान्तर इत्यादि स्वस्वभावों के द्वारा सोत्तम प्रकार ज्ञानान्तरमें प्रविष्ट कियाजायगा तब नैश्चित्याश्रित होगा कि जो कुछ परमानन्दीय सुखदायक सत्याशयहोगा सर्व्वभावसे एक एकान्तर सान्मुख्य प्रकार करासीन होजायगा॥ इत्यलम् किमधिकम् ॥

(हीरालाल)

श्री श्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायण॥

हीरालालकृत॥

नवकाण्ड॥

प्रथमकाण्ड ॥

सो० श्रीश्री दुर्गेनाय श्रीदुर्गायण रचहुं तव ।
बन्दहुंशिशनवाय गणपति आदिहिंरीति जस॥
गणपति बाणी आदि दुर्गे तव बल पाइभल ।
नितनितइहसम्बादिबन्दितपूजितविविधविधि॥

चौपाई ॥

श्रीदुर्गे नित कवि गण रीती। इनहिंप्रथम बन्दहिं वरनीती ॥
सबकर वन्दन करि शिरनाई । तब बरणहिं निजकथा सुहाई ॥
पर मम वर्णन कविता नाहीं। कहैंसत्य जग साखी आहीं॥
यातेकिमि कवि जगत कहाऊं। रंक धनद पदवी कस पाऊं॥
पुनि कस रचना कविता नामा। तरु बबूरकि कल्पफल जामा ॥
पर संयोग बनो अस आई। मम वर्णन तव कथा सुहाई ॥
यद्यपि बने वर्णन नहिं इहँवा। परतवनामकथित जहँतहँवा॥
काढे तव शुभ नाम लिखाहीं। आवत जहँ तहँ वर्णन माहीं॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

आवत मात नाम तव जहँ तहँ लेख महँ दरसावहीं ।

याते वर्णन होत सहित रस सुधा छाकहिं आवहीं ॥
सो अब जननी रीति जगत् कर कहत दुर्ग्गालेखहूं ।
प्रथमहिं जानहु क्षमा दायिनि नितनित तुमहिं देखहूं ॥
दो० श्रीदुर्ग्गा मम स्वामिनी श्रीदुर्ग्गायण मोर ।
गावहुं उष्ट्रासीनहो वीणा धरि कर जोर ॥

चतुष्पदाछन्द ॥

जयजयतिविनायक बुधिवरदायक गिरिजापरमानन्दा ।
जयजयतिगजाननइकदशनाननशिवलोचनसुखकन्दा ॥
चतुभुज बलधारी उदर सुभारी मूषयान सुखदाई ।
प्रिय मोदक मेवा फल प्रद सेवा सेंदुर मस्तक छाई ॥
सबसंकटहरणा सबसुखकरणा पूजित प्रथमहिंदेवा ।
सब वाधाटारी सब सुखकारी सोदहु करहु अभेवा ॥
जाते श्रीदेवा यदि नहिं सेवा होवे मम मन माहीं ।
श्रीश्रीदुर्ग्गायण शुभफलदायन पूरित भल होजाहीं ॥
दो० वन्दहुं तुमहिं गणाधिपति जयतिजयति गणराइ ।
मागहुं पुनि वरदान पर दुर्ग्गा भक्ति सुहाइ ॥
विघ्न विनाशक देववर सुख प्रद देव महान ।
बिघ्न रहित पुनि होय सब सुखफल तव बरदान ॥

तोटकछन्द ॥

जय बाणि गिरेजय ज्ञानमते । रस आदिकजे कविता महँते ॥
सबहीं फल दायक मातु भली । जय रूपधरी बुधिज्ञानमिली ॥
विधिकी तनुजा तव रूप नहीं । चखु ज्ञान रमी तव रूपसही ॥
जय देवि प्रभा मय छाय सदा । किमिजाय निहारत मामिमदा ॥
कवि लोक सदा रखहीं बलजे । तबते बहु पाहिं दया नितते ॥
तव दाय प्रभाव जनावहिं जो । जगतीनबखानहिं आनहिंसो ॥
तबते बुधि पाहिं महान महा । सुर साधुनरादिकआन कहा ॥
सुविय गुणआदिक तीन जगी । सब कन्दनि दोविसदाहुअगी ॥

शुभ सुन्दरि बेषबनाय रही। यदि रूपनहीं पर भक्तिकही॥
जयमूल बनी बहुभूरि सदा। वुधि ज्ञान वलादिक जोययदा॥
जय आदिनिजोति अनूप बनी। जय यान मयूर सुनो जननी॥
दुर्गायश की करहों रचना। डरराखि सदा मनहीं बलना॥
पर पाइ भरोस दया तुम्हरी। रचहों गहहों मन आशकरी॥
जय शारद देवि भलो जबहीं। जयसीदहु मातु चहों अबहीं॥
दुर्ग्गायश की रचना करहो। रसमेलि जहां जस होयरहो॥
पुनि देविमहा वरदान यही। दुर्ग्गा वर भक्तिहु होयसही॥

सो० जयतिगिरे जयबाणि वन्दहुं पदरज शीश मम।
जोरिसदा युग पाणि देहु दया करि दान वर॥

दो० वाणि विनायक दोउकर चरण परहुं पुनि वार।
जिनकि कृपा रचना रसो वाधा मिटहि अपार॥
पुनि भाग्य बश सदामैं फलद वाणि गण राय।
पावहुं निज स्वामिनि कर अनुपम भक्ति सुहाय॥

सो० वन्दहुं शीश नवाय रवि आदिक नव देव पुनि।
होहु ठाम अंस आय अशुभ टरे सुख फल मिले॥

चौपाई॥

दिनपति निशिपतिअवनिकुनारू। यामिनिस्वामी सुतगुरुचारू॥
शुक दिवसेश सुअन पुनिकेतू। राहु कहावहिं नव ग्रहजेतू॥
पूज यथोचितं सब कहँ दई। जिनकहँ महा महासुर भेई॥
सब कहँ वन्दहुं वारम्वारा। परहु ठाम शुभ ग्रंथहिं सारा॥
दुर्ग्गायशहिं बिघ्ननहिं आवे। भलो भांति पूरित हो जावे॥
पुनि ममहेतु परहु अस आई। पावहुं दुर्ग्गा भक्ति सुहाई॥
जन्म जन्म सोभल जिय जाई। वाधा वश कभु होन हटाई॥
इनकर दिशि प्रताप कर आगे। होहिं शुभा शुभ युग युगजागे॥
शुभ करुअशुभफलदबहुभांती। माया रचना किमि कहिजाती॥
सुरनर मुनि सब कहँलगजाई। जोतिष बिद्यारस सुन्दराई॥

जन्म जन्म जग परहीं ऐसे। माया रचना जिमि जग जैसे॥
सब ग्रहकहँ वन्दहुं पुनि वारा। जाते नष्ट अशुभ विस्तारा॥
दो० क्षमा प्रदा फलनी विपुल अवनी धरणी माय।
प्रणवहुंसहितसनेह भल पाणिजोरिशिर नाय॥
जीव सहित पुनिमृत्युमयसहतसदा सब भार।
जाकहँ कहुं नहिंठाममिल ताहिमहा पर आर॥
यदि अघतन नितमोरभलधरतसदा मम भार।
तद्यपि प्रणवहु पुनिहुपुनिवसु मतिमातु अपार॥
तवमहँ पुनि सबलोक महँ श्रीदुर्गायण जोय।
सन्तहृदय नित बसरहे मुक्ति फलदनित सोय।
श्रीदुर्गावर भक्तिपुनि देहु दयाकरि मोहि।
सोफल में नित याचहौं वन्दहुं पुनिजग सोहि॥
चौपाई॥
गुरूनहीं मोकहं अबलगिलोगू। कबहुन आय परो संयोगू॥
कहनि लोगगुरुबिन नहिंज्ञाना। भागबिना सतसंग न जाना॥
जगत गुरू शंकरहि मनाऊं। मानि गुरू मम शीश नवाऊं॥
वारवार सह गिरिपतिचन्दनि। कालरूप शिव काला नन्दनि॥
दोऊकर शुभचरण मनाऊं। वार वार गिरजा सह ध्याऊं॥
जिनकर कृपा पाइसुख जामा। तुरती फलदायक सुखकामा॥
भेष अशिव यदिशुभ फलकारी। बल संहार व्यापका मारी॥
सती पारवति शक्ति सुहाई। हतन शक्ति वेदन्ह नितगाई॥
जिनकर प्रीति रहहिंहरि ताकी। शिवाशक्ति सुन्दरि वपुजाकी॥
जोहरि मातु शक्तिपुनि भाई। प्रणवहु दोउहिंशीश नवाई॥
सुरमुनि आदिजिनहिं नितध्यावें। नेति नादिकहिं दोउहिंगावें॥
जिन कर जलज चरण मनलाई। शुद्ध हृदय हो कृपा सहाई॥
दो० शम्भु शिवापद हृदयधरि वन्दहिं सुरमुनि मानि।
वन्दहुं शीश नवाय करि सदा जोरि युग पाणि॥

जिनकर कोपत कतहुं नहिं काहु भलाई नाहिं ।
कृपा पाइ जिनकर सदा ग्रंथ पूर हो जाहिं ॥
सो० पुनि मांगहुं शिरनाइ हे शंकर हे तुहिन जा ।
दुर्ग्गा भक्ति दृढ़ाइ पावहुं सहजहिं असकृपा ॥

चौपाई ॥

वन्दहुं श्री हरि कमला कन्ता । सहितजलधितनुजाभगवन्ता ॥
जितने सब स्थैर्य परनामा । पोषणतोषणविधिविधिजामा ॥
बलस्थिरता पोष स्वरूपा । भगवत विष्णु ईश्वर रूपा ॥
शक्ति स्थैर्य लक्ष्मी नामा । हरि हरि पतिनी रक्षणकामा ॥
लिंग भेद व्याकरण बनाये । शक्तिहु बलहु दोउ इकआये ॥
सो व्यापक नामित सब माहीं । नाश रहितनित उद्यत आहीं ॥
नाश कोउ पुनि उपजत आना । असशिवअजबलखगपतियाना ॥
सोइ प्रकृति महान श्री माई । वार वार पद वन्दहुं धाई ॥
जिनकर कृपा दृष्टि वर पाई । चक्षुहीन कहँ सब दरसाई ॥
मूक होइ बाचाल सुखारी । पद विहीन लांघहि गिरिभारी ॥
पाणिहींन करहीं सब करणीं । महिमाजिनकरजायन वरणीं ॥
सो लक्षमि हरिकहँ शिरनाई । सुमिरहुँ वार वार वर पाई ॥
दो० सो वर इहमैया चहौं श्री दुर्ग्गायण मोर ।
रहहिंविदित सज्जनहृदय नितभवमहँ चहुँओर ॥
पुनि पावहुं फल दायका दुर्ग्गा भक्ति दृढ़ाय ।
दुर्ग्गा पद रज प्रीति पुनि जमहिं हृदय मम आइ ॥

चौपाई ॥

गायत्री अज प्रणवहुं धाई । उपज शक्ति बलजिन सबगाई ॥
ज्ञान मूल जिनकेर दुलारी । शारद कविबलखानिसुखारी ॥
सुरगण मुख्य सदा सुखकारी । सबकर नायक उपजनधारी ॥
वेद पाणि धृत सदा सुहाये । ज्ञानखानि जहां भरी भराये ॥
सो ब्रह्माणी सहंविधि ध्याऊं । पाइ कृपा मांगहुं वर पाऊं ॥

दुर्ग्गायण भलि भांति सुहाई। उपजत पूरण उपजत जाई॥
पुनि श्रीदुर्ग्गा भक्ति सुहाई। बसे हृदय मम आय सदाई॥
वन्दहुं दोउहिं जानि अकामे। अंकुर ज्ञान हियहिं नितजामे॥

दो० अष्ट भुजी अगणित भुजी आदि नरायण जोइ।
जासु बास हरिपुर परे हरिते ऊपर सोइ॥
सर्व शक्तिमय आदि बल शक्ति भरोसे नाम।
दुर्ग्गा सोई शक्तिहै जाबिन आदि अनाम॥

चौपाई॥

वन्दहुं श्री नारायण सोई। एकआदि बल व्यापक जोई॥
जासु कृपा अंगसुख दातारी। भक्तिमुक्तिमय नितहितकारी॥
आदि शक्ति मय आदि कहाई। शक्तिरहितसो बलकिमिगाई॥
शक्ति सहित नारायण सोई। प्रणवहुं बार बार हिय जोई॥
देहिं दया करि शुभ वरदाना। दुर्ग्गायिण दायक फलनाना॥
होपूरित भक्ति मुक्ति दाई। पावहुं दुर्ग्गा कृपा सदाई॥
दुर्ग्गा भक्ति शुभग सहजाई। पावहुं पुनिनित दया सदाई॥
प्रणवहुं वन्दहुं बारम्बारी। आदि शक्तिबल आदिसुखारी॥

दो० अहिप शेष पुनि शक्ति तिन वन्दहुं बारम्बार।
जासु कृपा जग रटरहे दुर्ग्गायण सुखकार॥
पुनिहोवे शुभ पूर्णसो पावहुँ दुर्ग्गा भक्ति।
पुनिपुनिप्रणवहुं शेषकहँ कृपा करहिं सहशक्ति॥

चौपाई॥

पुनि हरिकर अवतार अनेका। पावन बिदित एकते एका॥
सबकह वन्दहुं शीश नवाई। चार बीश जे बिदित कहाई॥
शक्ति सहितसुमिरहुं शिरनाई। मुनिइनमहँदश विदितकहाई॥
कच्छ मच्छ वाराह स्वरूपा। नृसिंह वामन परशु अनूपा॥
राम कृष्ण बुध शुभगकहाये। भविष कलंकी होहिं सुहाये॥
सहितशक्तिसुमिरहुं सबसतहीं। जिनकरगुणगांभवतरनितहीं॥

इनमहँ राम कृष्ण जे आहीं । विदितमहामित कलाजनाहीं ॥
सीता राधा रुक्मिणि सहिता । प्रणवहुँ बार बार जे विदिता ॥

दो० मागहुं बर इनसबन्हते दुर्गायश शुभ जोइ ।
रह पूजित सब ठाममहँ होयविदित सबहोइ ॥
याचहुं पुनिसंशय बिना दुर्गा भक्ति अनूप ।
नितनितममन रमरहै विधुचातक अनुरूप ॥

चौपाई ॥

यदि अवतार विदित जगमाहीं । तदपि व्यापसब ईश कहाहीं ॥
सो सब वन्दहु नित करजोरी । दुर्गा भक्ति प्रीति नहिं थोरी ॥
सहितशची सुरपहिं पुनिध्याऊं । भानु इन्दु सह प्रिया मनाऊं ॥
वरुण कुवेर आदि गन्धर्बा । कोटि तीश ती सुरगणसर्बा ॥
पावक पवन आदि जे नामा । सहितशक्ति सबकहं सुप्रणामा॥
किन्नर यक्ष आदि जे आहीं । सबकहं विनवहु हितमन माहीं॥
दुर्गायश पूरित हो जावे । पुनि मम मन महंभक्ति समावे॥
इक इक कारज इन सुर पाहीं । सबहिंनमंहुंयुग कररतमाहीं॥

दो० जीवि अजीवी देहमहँ पूतिवपु इनकर वास ।
निजनिज बलहिंजनावहीं सुखदुखहरषहुत्रास ॥
वन्दहुं सबकहं जोरिकर नितनित मांगहु येह ।
दुर्गायश शुभ वपु वसे वसे भक्ति मम देह ॥

चौपाई ॥

पावक रूप शक्ति पुनि गाऊं । तनमन हित चितशीशनवाऊं ॥
चर अरु अचर भरो सब ठाहीं । रहितअग्निकछु जीवनआहीं ॥
अज ते पिपीलिका पर्य्यन्ता । भरितअग्निइनआदिहु अन्ता ॥
असश्री पावक कहं शिर नाऊं । असश्रीशक्तिहिंसुमिरहुंध्याऊं ॥
यथाग्नि दुर्गायश भर जावे । दुर्गाभक्तिममहियहिंसमावे ॥
सुरनर मुनिआदिक तन माहीं । रविआदिक मयभवबहुआहीं ॥
सबमहँ अग्नि भरीजिय दाई । वन्दहुं वन्दहुं शीश नवाई ॥

तेजसकल सब इहितिहि भांती। वन्दहुं मांगहु वरजो राती॥
दो० वन्दहुं रती मनोज कहं मांगहु वरजिमि उक्त।
जिनवश अगणित जगतहें सुरमुनि आदिअशक्त॥
जिनकर करशर सुमनधनु सकलजगत वशआहिं।
मागहुं दुर्ग्गाभक्ति शुभ मममन निजवश लाहिं॥
चौपाई॥
अगणितऋषिमुनि तपसीआदी। योगी सज्जन परार्थ वादी॥
साधुसभा सत संगति सानी। एक एक विधि जे निरमानी॥
सबकहं वन्दहुं करियुग पाणी। दुर्ग्गायण भलहोफलखानी॥
सत संगतिकर सुजन सुहाये। प्रणवहुं सबकहं सबमनभाये॥
पावहुं दुर्ग्गा भक्ति सुहाई। युगयुग विदित लोकतोछाई॥
राउ रंक सबकहं सिरनाऊं। भक्तजनहिं भलिभांति मनाऊं॥
पाहुं कृपा यदि नात लगाहीं। मोसम भागी को कत आहीं॥
यदपि पाप तनवी मम देहा। तद्यपि मिश्रित मातु सनेहा॥
दो० लोक चार दश वरणनर लघुदीरघ जे आहिं।
वन्दहुं सबकहं पाणियुग शक्तिरमी सबठाहिं॥
चारचरण खगकीट सब प्रणवहुं सबकहं सत्य।
सहित स्वांससब जीवजे वसीशक्ति जहंनित्य॥
सो० सहित कृपा वरदान सबदेवहिं अस मांगहों।
दुर्ग्गा भक्ति सुज्ञान दुर्ग्गायण पूरे मिले॥
चौपाई॥
लोक जगत महिमहि धरनाना। सरितासर आदिक सबजाना॥
तरु पाषाण माटिका आदी। चरअरुअचर भांतिभलवादी॥
सबकहंप्रणवहुं हितचितमाहीं। सबमहँ शक्तिव्यापिता आहीं॥
अनुभव भलीभांति इह कहहीं। रहितशक्तिकछु कतहुंनअहहीं॥
यदिनहिं शक्तिकहहुकाअहहीं। सहित शक्तिसब रहतीकहहीं॥
उपज नाश शक्तिहु वलहोवे। सोहुरहनि पुनिसो नहिंजोवे॥

यातेजहं लगिमन गति जाई । सबकहं नमन करहु मनधाई ॥
पुनिजहँलगि मनगति नहिंजाई। वन्दहुं सब कहँ प्रणवहुंधाई ॥
अन्तहिं मांगहुं इह वरदाना । दुर्गायश प्रियहो जगजाना ॥
पावहुं दुर्गा भक्ति सुहाई । सुमिरहुं सबहों अस वरदाई ॥
दो० पुनि पुनि प्रणवहुं सबहिं पुनि शीशनवाइ नवाइ ।
देहिं दयाकरि सबहु शुभ याचित भिख सुहाइ ॥
श्रीदुर्गा कर भक्ति नित वसे हृदय मम आइ ।
यदि अयोग तो हिय रहे तदपि चहौं हठ लाइ ॥

चौपाई ॥

वेद पुराण शास्त्र सब गीता । विधिविधि विद्या कलासुनीता ॥
शक्ति भरोस सकल जे गाये । वन्दहु सब कहँ शीशनवाये ॥
पुनि शुभ दुर्गा पाठ सुहावा । सारशक्ति जहँ विदितकहावा ॥
तीनलोक उत्सव प्रख्याता । सुरनरमुनिजो सबहिंसुहाता ॥
बार बार वन्दहु शिरनाई । जामहँ जाकर कथा सुहाई ॥
तासु भक्ति मांगहु मन लाई । देहु दयाकरि सदा सदाई ॥
मारकण्डेय मुनिहिं मनाऊं । जिनयह कथारची शिरनाऊं ॥
ज्ञान शील गुणखानि सुहाई । असमुनिकहँ शिरनावहु धाई ॥
पुनि प्रणवहु जैमिनि ऋषिराई । व्यासशिष्य बरभक्ति जनाई ॥
मातु चरित महँ जिन रत लाई । सुनी सनीति प्रीति हियआई ॥
जिमि दोउ मुनिमा भक्ति सुहाई । लही रखी वहुविधि मनलाई ॥
मोहुहिं अंश मात्र कछु लाई । देहिं भक्ति कर वन्दहुं धाई ॥
दो० मेधसऋषि सुज्ञानभव जिनहिय दुर्गा ध्यान ।
महाभाग ते गावहीं दुर्गा चरित महान ॥
बार बार पद शिर धरी प्रणवहु शीश नवाइ ।
पावहु माया भक्ति वर नितनित रह हियछाइ ॥
सुरथ समाधी पुनि बड़े भागी भये महान ।
सुनी कथा श्रीदेविकर अचल भक्ति हिय आन ॥

जिन हित दरशी देविश्री दीन्ही भक्ति सुहाइ।
पुनि दीन्ही पदवी महा सुर मुनि जोनहिं पाइ॥
इनकहँ वन्दहु पुनिहुपुनि युगकर माथ नवाइ।
मोहि भवानी भक्तिवर दानदेहिं मनलाइ॥

चौपाई॥

मधुकैटभ निशिचर बड़भागी। जिनहितसहितशक्तिहरिजागी॥
कीन्ह समर श्रीशक्ति मनाई। मारे तिन कहँ कमला राई॥
इन कहँ सुमिरहु पुनिपुनिधाई। भागमहान पाइ यश पाई॥
चिक्षुर चामर ताम्र कराला। अन्धक हनुगजदन्त विडाला॥
उग्रास्य उग्रवीर खलादी। दुरधर दुरमुख वाष्कलादी॥
उद्दतादि महिप दलकेरे। महा महा कटकेश घनेरे॥
जिन हित वाहन ले श्रीमाया। करि श्रममारी कठकनिकाया॥
सबहिं नमहु वन्दहु शिरनाई। अघदेहीहो शुभगति पाई॥
बैर भाव करि अस गति पाई। सो सब देवी दरश प्रभाई॥
फलद पाणिते शुभ बध पाये। पूणवहु सबकहँ शीशनवाये॥

दो० महिष दनुज महिषा कृती महिषासुर विकराल।
वधब समय कीन्हा कछुक कित इक रूप विशाल॥
जाहित दया कीन्ही श्री माया दरसी आइ।
पुनि श्रम करि बांधी तिही दुष्टहिं वधी बनाइ॥
सो महिषहिं शिरनाइ करि वन्दहु वारम्वार।
माता पद रज भक्ति नित पावहु जो जगसार॥
दुर्गायश पुनि ख्यातहो रहे लोकती छाय।
गावहिं यश लीला सब शुचिरत हिय बहुलाय॥

चौपाई॥

दूत सुग्रीविहिं वन्दहु धाई। जो देवीते भल बतराई॥
महा कटकपति धूम्र लोचना। बड़भागी यदि बुद्धि पोचना॥
चण्ड मुण्ड सेनापति दोऊ। रक्तवीज पुनि बहु वपु सोऊ॥

जिन हित श्रीमाया दरसाई। बहुत बेष धरि शक्ति लखाई॥
विधि विधि युद्ध कीन्ह फलदाई। हती सबहिं श्रीजननी माई॥
सब कहँ सुमिरहुं शीश नवाई। पुनिपुनिवन्दहु मनमहंलाई॥
महा महा भट येसब आहीं। अगणितदलनिश्चरगणमाहीं॥
सब कहं मारी चण्डी माया। सबहिंनमहु मांगहु सहदाया॥
निज रिपुनी कर भक्ति सुहाई। देवहु मोकहं सदा सदाई॥
इनकर भाग सुरन कर नाहीं। देवीकर मरि देव सराहीं॥
अमित अतुलबल खानिकराला। शुंभ निशुंभ महा विकराला॥
जिनकहं मारी जननी माई। वन्दहु बार बार शिरनाई॥

दो० हरिहरि जिनते धकपके डरे मनहु निज काल।
तिनकहं श्रीदुर्ग्गाहती अस दोउखलविकराल॥
जिनते बहु कौतुककरी कीन्ही समर अनूप।
श्री श्री दुर्ग्गा अगमश्रीरूप सहित नहिंरूप॥
वधकरि दीन्ही शुभगगतिसुरनहिं पावहिंजोइ।
सोसबदरशन मातुकर। करपरसन पुनिसोइ॥
तिन निशिचर कहँ वन्दिहैं बारबार शिरनाइ।
देहिंभक्ति निज वधनिकर अनुपम सदासुहाइ॥
पुनि दुर्ग्गायश विदितहो यशलीला जो आहिं।
भावहिंजनमनध्यानमहं रखि मायहिंमनमाहिं॥

चौपाई॥

सबकर वन्दन जिमि मन भाई। कीन्हा विधिवत कपट छंड़ाई॥
कोविद कवि जिनमा गुणगाये। गावहिं आगे विविधिसुहाये॥
अन्तहि सबकहं प्रणवहुं धाई। कृपाकरहि हिय दयालगाई॥
सबकहँ पुनिपुनि सुमिरहुं लाई। देहु दया वर हो वरदाई॥
जिमिहिय भक्ति रमी तिन केरे। तिमि मांगहुवर मुखनहिंफेरे॥
दुर्ग्गा भक्ति बसे हिय मोरे। नित नित बाढ़वटे नहि थोरे॥
दुर्ग्गायश पुनि पूरित होई। सब जगमहंपुनिप्रसिद्ध सोई॥

पुनि निजमन वन्दहुं करजोरी। जिनप्रेरा निजकहं इहठौरी॥
देवीयश कछु वर्णन आनी। याते बढ़ कर काजग जानी॥
दुर्ग्गा भक्ति सदा सो पावे। भक्ति मगन दुर्ग्गा कहंध्यावे॥

दो० श्री दुर्ग्गायश जोरिकर वन्दहुं प्रणवहुं धाइ।
भक्ति मुक्ति फलचार मय जो बनहीं बरदाइ॥
श्री दुर्ग्गा तेजादि सब अंशरूप अवतार।
विधिविधि शक्ति शिरोमणिवन्दहुंसबसिरभार॥
सर्व्व व्यापता दरशता सर्व्वशाक्त्य बल आदि।
आदिता अरु अनादिता कैवल्य ऐ क्यादि॥
अना मता अनवद्यता अनानता सतसार।
आकृति रहिता सकलता अगोचरता पार॥
अपारता अरु अतुलता अमितता बहु भाव।
पुनि उलटो इन भावकर कथित सत्यस्वभाव॥
अस श्री दुर्ग्गा भावता आदि भावता आदि।
सबकहंवन्दहुं जोरिकर विधिविधिसतसम्बादि॥

चौपाई॥

देवि स्तुति श्रीसमर बखाना।शुभशुभयशनिर्म्मलविधिनाना॥
रणक्रीड़ा आदिक सम्बादा। शक्ति अंश जे प्रगट सुनादा॥
देवि महातम वर विधि नाना। जेजे कीन्हा पाठ बखाना॥
सब कहं प्रणवहुं वन्दहुं धाई। सबनितबस ममहियभलआई॥
श्री ब्रह्माणी हंस वाहनी। पाणि कमण्डलु सदादाहनी॥
माहेश्वरी शूल शुभ पाणी। अहिकंकण आहि भूषभवानी॥
वाहन वृषभ कला विधुवाली। कर डमरूपुनिसब विधिजाली॥
करमहँ शक्ति मयूर सवारी। रूपवती देवी कौ मारी॥

दो० गरुड़ यानी वैष्णवी शोभित कर दुइचार।
शंखचक्र धनु पद्म गदा पुनि शोभित तलवार॥
अति सुन्दर बहु भेषनी गौर रंग पुनि श्याम।

श्री शक्ति बहु सोहनी मोहनि बपु रति काम ॥

चौपाई ॥

वाराही अतुलित बल वाली । तुण्ड पृहारिनि वसुधा पाली ।
कण्ठ केश पृहारिनी माई । नारसिंहि बल राशि सुहाई ॥
वज्रपाणि गजराज वाहनी । सहस नयन ऐन्द्री दाहनी ॥
इन सबशक्तिहिं पुनि पुनि धाई । वन्दहु सुमिरहु शीशनवाई ॥
मांगहुवर नित करि युगपाणी । अपन मूल करभक्ति सुहानी ॥
दुर्ग्गायिणा यशछावे युग युग । वन्दहु सबहिंभक्तिहोनितजुग ॥
शिवदूती अरु कालिकालिका । भयंकरा दोऊ सुघालिका ॥
उग्रा शृंखाली श्री काली । रसना चपला खलकुलघाली ॥
चामुण्डा श्री माय सुहाई । चन्द्र मुखा वरनी नहिं जाई ॥
सबकहं सुमिरहु पृणवहु धाई । दुर्ग्गा भक्ति चहों शिरनाई ॥
विविधशक्ति सुर करजे आहीं । सबकहं वन्दहु ला मनमाहीं ॥
पूरित दुर्ग्गायिणा होजावे । दुर्ग्गाभक्ति मम हृदयसमावे ॥

॥ दो॰ आश्विन चैत्र रजनीनव कथित आहिं नव रात ।
दुर्ग्गा उत्संव पाठ शुभ पूजादिक बलिजात ॥
सबकहं वन्दहु पुनिहु पुनि सदा चले विख्यात ।
लोक लोक युग छाय रह देकरि भक्ति सुहात ॥

॥ सो॰ पुनि उत्सव नितकेर होत रहत नितजबहिंजब ।
चले चले नित बेर सबकहं वन्दहु नाइ शिर ॥

चौपाई ॥

मधु कैटभ वध समयहिं जोई । देविरूप विधि ध्यानहिंसोई ॥
तिनकर समर कालहरिम्नहीं । श्रीस्वरूप जोध्यानहिंपुनहीं ॥
हरि चखयोग मायजो रूपा । पृलय पाछु जो रम स्वरूपा ॥
महिष वधन लगिजोसुखरूपा । हरि आदि कृत स्तुतिस्वरूपा ॥
तेज, महान, पृगट, आकारा । शक्ति महाबल कर सतसारा ॥
भूषित आयुध धृत जो देहा । जहां रमोसब अमर सनेहा ॥

विधिविधिदलपतिभटगणनाना। जो स्वरूप देवी करमाना ॥
हतकरि कीन्हीचरित सुहाये। विधिविधिमहिषहिंखेलखिलाये॥
हतनकाल बांधी शुभ भांती। लखे जाहिसह तियसुरजाती ॥
जोस्वरूप मरदा महिषहिं। जो देवी तारी तिहि असहिं ॥
॥दो॰ अतुलकटक सहमहिषकहं जोस्वरूपगतिदीन्ह।
पुनिसुरमुनिजाकरबहुतस्तुतिफलद शुभकीन्ह ॥
पुनिवर दीन्ही ध्यानते जो वपु अन्तर ध्यान।
भयो रूपजो शुभग शुभ आदिनि शक्तिमहान ॥
चौपाई॥
पुनिहु स्तुति सुरजाकर कीन्ही। सुरसरितट जो दरशनदीन्ही॥
पुनिवर वपुजो अमित सुहाई। सुरहरषे लखि सुख मनपाई ॥
जाते दूत कीन्ह सम्वादा। दया वती जो वपु अनु वादा ॥
धूम्रचखुहिं जो तनवध कीन्हा। चगड मुगडकहं जोगतिदीन्हा॥
रक्तबीज कहँ बहुत खिलावा। रचना समर सुखद जनभावा॥
ताहि काल जय महँ सुरसबरे। तियसह निरखे हरषे सगरे ॥
शुंभ निशुंभहि जो वध कीन्हा।सहदलवधिशुभगतिजोदीन्हा॥
पुनि जोसुरूपकरस्तुतिबखानी। हरिआदिक सुरमुनिमनआनी ॥
वहुविधि यशगा नमन सुनाये। विवुध हृदय जो रूप सुहाये॥
जोनिज मुख महात्म्य सुहाई। संकट खगडन जोइ सुनाई ॥
दो॰ जो स्वरूप वरदान कर हरि आदिक कर ध्यान।
अन्तरगत पुनि होगयो जो वपु शुभ गतिखान ॥
सुरथ समाधी हेतु लगि जोतन प्रगटो आइ।
तिन कहंजो वरदान दे अन्तर भयो जनाइ ॥
चौपाई ॥
उक्तविविध विधि स्वरूप वाली। जोश्रीआदिनि शक्ति सुपाली ॥
जो श्री जननी नित नित आई। हीरा स्वामिनि मातु कहाई ॥
ताकहं तिन कहं वन्दहु धाई। पाणि जोरि शुभ पद शिरनाई ॥

जोस्वरूप चखुतीन कहाये। जासुवाहु दश आठ सुहाये॥
वहुविधि भूषित आयुध धारी। नीलाम्बर धृत कंचुकि वारी॥
जोतन वाहन सिंह बनावा। अमित अपार सोह सुहावा॥
सो तन वालि कहं मनलाई। प्रणवहुं वन्दहु शीश नवाई॥
वार वार याचहु गति दाई। आपन दुर्गा भक्ति सुहाई॥
देहिं दयाकरि मम इह आशा। सदाकरहिं मम हियमहंवासा॥
पुनिपुनिसुमिरहु वन्दहु चरणा। कृपा जासु हरि पदवी करणा॥

दो० जो सुरूप लखि नित सदा मोह चराचर आदि।
सो तन वाली मातुकहं वन्दहु जय जय वादि॥
बिन्ध्य बासिनि देविजो यशुमति गर्भहिं जोइ।
दरशी जो श्री शक्ति श्री वन्दहु प्रणवहु सोइ॥

चौपाई॥

जोतन वृक्ष चारिणी रूपा। नव यौवना सुरूप अनूपा॥
नटवर वेष किशोरनि रूपा। कन्या वपु सुन्दरी अनूपा॥
अस तनवाली आदिनि माया। आदिशक्ति इकरूप निकाया॥
हीरा स्वामिनि सोइ सुहाई। वन्दहुं सुमिरहु शीश नवाई॥
उग्र भयंकर लोहित वरणा। रक्तदन्तिका सुख फलकरणा॥
सहस नयन मय दरशित माई। शताक्षी सहसाक्षि वरसाई॥
शाकम्भरी शाकादिक दाई। अगजग पालिनि माया माई॥
अस सब कहँ निज शीशनवाई। सबकरपदकहँ सुमिरहु ध्याई॥
दुर्गा रिपुनि श्रीसिद्ध सुहाई। श्री दुर्गा प्रख्याता माई॥
जाहिध्याहिंहरिहरनितनितही। एकअनादिनि आदिनसतही॥

दो० अस श्रीदुर्गा देवि कहं वन्दहु शीश नवाय।
मांगहु सो नट रूपधर वसे हृदय मम आय॥
वयस किशोरिनि रूपले स्वामिनि मा मम होइ।
वसहु हृदय मम नित सदा श्री श्री दुर्गा सोइ॥

चौपाई ॥

भीमा माता रक्षण कारी । भीमरूप श्री सुख दातारी ॥
श्री भ्रामर भ्रामर रूपा । षष्ट पदी श्री देवि अनूपा ॥
इनकहँ वन्दहु शीश नवाई । करहिं दयादे भक्ति सुहाई ॥
इह जग धरणी बुधादि आहीं । इनकर हमार रवि दरसाहीं ॥
पुनिअसरविगणअगणितअमिता।असब्रह्माण्डहुवहु जगसहिता ॥
पुनिइनरविकर दिनप घनेरे । अमितअतुल अगणितबहुतेरे ॥
अस असबहु ब्रह्माण्ड निकाया । कीन्हाबहुविधिमनहिंसमाया ॥
पुनि नहिंजा कभु मनहिंसमाई । इन सबकरजो शक्तिसुहाई ॥
आदि शक्ति सो आदिन सोई । जाबल हरी ईश्वर होई ॥
सोइ शक्ति श्री दुर्ग्गा मायी । भवानि दुर्ग्गा देवि सुहायी ॥
सो शक्तिहिं वन्दहु शिरनाई । बार बार प्रणवहुं हिय ध्याई ॥
मागहु बर श्री भक्ति सुहाई । देहिं दयाकरि होमन भाई ॥

दो० सबकर बन्दन कीन्हमैं निज निज विधिमन लाइ ।
रहे सहे सब सुमिरहैं बारबार शिर नाइ ॥
देहिं दयाकरि नितहिं नित सकलतेहु भल भांति ।
दुर्ग्गा भक्ति अनूप जो सदा गुप्त विख्यात ॥

चौपाई ॥

हरे हरे सूझो मन आई । मुख्य बात भूल्यों इह ठाई ॥
मोते भयो महा अपराधा । क्षमहिंदयाकरिजिनमनसाधा ॥
छोट बड़े सब एक अनेका । सबकहँ वंद्यों रहा न एका ॥
सबते वन्दन लेहुं फिराई । देहिं दया करि सब बहुराई ॥
बन्दहुं प्रथम अपन कुलदेवा । जिनकरपाछे सब कर सेवा ॥
निज कुल देव इष्ट ममदेवा । प्रथम मनावहुं तन मनसेवा ॥
पुनि पाछे सब जे मैं गाये । निजनिजवन्दन लेहिं फिराये ॥
सबते प्रथम इष्ट कुल जामी । आहु दास तिनकरते स्वामी ॥

दो० महाराज सन्मुख शुभग कटि पाछे कर जोरि ।

शीशअवनि तृण अधर धरि फेंटा गरहिं बहोरि॥
इहि विधि घिसनीनासिका करहु अवनिपरनित्य।
वन्दहु पूजहु स्वामि मम इष्टदेव कुल सत्य॥

चौपाई॥

इहि विधि बारबार शिरनाई। महाराज कहं वन्दहु धाई॥
जिहिसमसब बलवतवलभावा। कोउन ईश महान प्रभावा॥
आदि न बीच न नहिंअवसाना। जिहिकहँ सपनेवेद न जाना॥
आदि देव प्रभु महान राई। निराकार साकार सुहाई॥
अग ब्रह्माण्ड नाथ महिमामय। ताकहँशीश नवावहुं जयजय॥
संगहिं संगहिं वन्दहु धाई। संग पूजिता दुर्ग्गा माई॥
आदि शक्ति श्री आदि भवानी। आदि मध्य अवसान नआनी॥
कथित विधान सम्मुख शिरनाई। तृणधरि ओंठ फेंट गरलाई॥
कटि पाछेकर जोरि बहोरी। घसहु नाकमहिप्रीतिनथोरी॥
इहि विधिपरिमहि वन्दहु धाई। आदि देवि श्रीदुर्ग्गा माई॥
इष्टदेवि कुल स्वामिनि माई। निराकार साकार सुहाई॥
अग ब्रह्माण्ड पतिनि मम माई। वन्दहु तिनकहँजयतिसुहाई॥

दो॰ पूजहु विधिवत होत जस दोउहिं वारम्वार।
महाराज कुल इष्ट प्रभु देवी जगदा धार॥
सोउ जननि मम इष्टकुल दुर्ग्गा आदि भवानि।
कृपाकरहिं करुणा सदा निजनिज भक्ति प्रदान॥

चौपाई॥

इहिविधिइनकहँपुनिपुनिध्याई। बहुविधिसबविधि शीशनवाइ॥
पूजहुं प्रणवहुं वारम्वारा। करहिं सकलते अंगी कारा॥
पुनि नितमम हिय गेह विराजें। सबविधिकृपाकरहिं नितसाजें॥
नित नित वन्दन याचन कामा। नितनितचाहु भक्तिफलधामा॥
इहकरिइहिविधि सुमरहु भूरी। वन्दहु तिनकहँ होमन पूरी॥
सबकर वंदनअबजिमिकीन्हा। सबविधिभांतिभांतिजिमिचीन्हा॥

अब सब वन्दन बहुतहुथोरी । सबकहंविधिविधि देहु बहोरी॥
सबकर वन्दन पूरा अबहीं । जसमैंकहहु चाहु असरसबहीं ॥
दो० सबकर बन्दन कीन्ह मैं बारबार मनमाहिं ।
याचहु दुर्ग्गा भक्ति नित दुर्ग्गायण पूराहिं ॥
पुनिसबकहं निज देह धरि शक्तिसहित सबआहिं ।
ममतन महँ पुनि शक्तिरम भारकहां पर नाहिं ॥
चौपाई ॥
सबसन पुनि पुनिविनतीमोरी । मोर देह यदि पापहिं बोरी॥
सोकिहि भांति योग अस आई । भारमहान बहे निज माहीं ॥
पर जानहु मैं भल इक बाता । महान परमेश्वर विख्याता ॥
सब व्यापी सो सदा कहावे । सोइ व्यापता शक्ति लखावे ॥
यदि नहिं शक्तिवली कस होवे । अनुभव भलीभांति इहजोवे ॥
सोइशक्ति श्रीदुर्ग्गा माया । अखण्डनी रमजगतनिकाया ॥
जब असहै मोहू जगमाहीं । ममगहँशक्तिसांस गतिआहीं ॥
सोइ शक्तिबल अंश प्रसारा । काबपुरा अस महान भारा ॥
यदिनहिंकरहु इहांवशहठहीं । सोगनहींयदि मममतिशठहीं ॥
पावहु कृपा तदपि सब केरी । सो किमि वृथा होय इहबेरी ॥
दो० कामादिक षट बैरिमदविधि विधि जगत विकार ।
इहविधि करनी अघमयी रहनी मम सन्सार ॥
इहमहँसोवहु नितहिं नित यदपिचलहिंअसनित्य ।
तदपि सुनहु सज्जन शुभग कर्मखलु मम सत्य ॥
चौपाई ॥
इनमहँ देवि कृपा पुह फाटी । सर्वविधिमंगलप्रदहितसाटी ॥
हिय मूढ़ता तिमिर रजनीकर । कछुककालकर बीतिअसपर ॥
मन खट खटता इन्दु प्रकाशू । विगत भवा हियपावा आशू ॥
अस्तजाल जग उड़गण सगरे । सतमतिअरुणशिखातहँसबरे ॥
सुबुधि आदि आये वहु कागा । इहिविधि सोवतमैं तबजागा ॥

उदयाचल बुध अन्तर चीन्हा। शुद्धज्ञानरवि प्रकाश कीन्हा॥
अन्तर लोचन उघरे जबहीं। हियआनन्द भयो अतितवहीं॥
देवी करुणा मम मन आई। जाते हिय आनंद समाई॥

दो० ऊपर वर्णित शयन ते शुद्ध होइ जसरीति।
मन दृढ़ता पीढ़ामहीं बैठहु यदि जग भीति॥

॥ चौपाई॥

वुद्धि विमलता लेवहु झारी। तामहँसतगुणभरि शुभवारी॥
हृदय नयन धोवहु भलभांती। धोवन दशन सुमति संघाती॥
रसना ज्ञान मुखरता भावा। साहस दृढ़ता दशन कहावा॥
इनकहँ धोवहु पुनिवहु भांती। हिय मलीनता प्रथमनशाती॥
पाणि सहाय भलीमन जानी। धोवहु प्रथमचरण अघमानी॥
मन एकता ध्यान लगाई। रटहु देव कुल देवी माई॥
महाराज श्री दुर्ग्गा माई। प्रबल शक्ति वर सब फल दाई॥
जय जय देव देवी भवानी। आदि देव वर दुर्ग्गा रानी॥

दो० मन पावनता सरित महँ करहु जाइ असनान।
विश्वास डुबकी लेवहों पुनि मन भल नित जान।

चौपाई

निरमलतादि स्थित जे आहीं। सोवस्तर पहिरहु वपु माहीं॥
मन अशुद्ध मलीनता जोई। छूट वसन इहिभांतिहु सोई॥
पर विनती इह ठाम मझारी। ममकरनी नितअघसन्सारी॥
तदपि होन ममइहि अवलम्बा। क्षमहिं देविजननीजगदम्बा॥
इहि विधि शुद्धहोयमनआनी। देव इष्ट कुल मातु भवानी॥
बार बार पूजहुं शिरनाई। परहु चरणवन्दहु पुनि ध्याई॥
पुनि वन्दहु वन्दित सुर नाना। करहिंकृपासव ममहितजाना॥
देवि सहित सो ध्यानहिंआई। सो प्रसाद भलपावहु पाई॥
पुनि पुनि ध्यान पानिकरपाना। करहु सदा जबजब मनमाना॥
पुनिसो पदरत मद भल लेई। सोह अमल मद माहीं सेई॥

दो० वन्दित गणते विनय मम कछुहु कृपाकरि आइ।
जिहिविधि चाहहु सुनहुभल दीविकृपाजवपाइ॥
यदि अयोग अघदेह महँ तदपि वशी हठ आइ।
देविकृपा हो कथाकस कथित शुद्ध वपुपाइ॥
सो० प्रथमहि सन्मुख राखि गणपविनायक देववर।
भुवन तीनयुग साखि बिघ्न हटावहु जोरहे॥
दो० शीशासन मम भूपकरि राजहु शुभ भल भांति।
ऊपर ऊपर उड़हिं भल विघ्न वाध संघाति॥
सो० हेविधितनुजे माय कृपा करत नितकविन्हपर।
देवी कथा लखाय यदि कविनहिं मैं मूढ़नित॥
दो० होवे वाहन तवसदा रसना आसन मोर।
ज्ञानादिक हिय महं चलें निरमल मति चहुंओर॥

चौपाई॥

रवि आदिक नव सुर ग्रहजेते। ममवपु अंगन्ह बसहीं तेते॥
शुभ शुभ ठाम रहहिंआसबते। शुभशुभफलद ग्रन्थहोजवजे॥
वसुमतिमातु क्षमहिं मम भारा। वसे मोरतर अंगन्ह सारा॥
अजा सहितअजवसहिंकपाला। दुर्ग्गायण रचना जिहिकाला॥
जाते चतुराई निपुणाई। वसहिंरहहिंविधिविधितहंआई॥
कण्ठ वसहिं शिव गिरजाआई। देवी गुणगावनहिं सुहाई॥
मधुर कण्ठ होवे भल भांती। मिश्रित राग रागनी जाती॥
हरि कमला वसहिं भुजमाहीं। वीणा वाज लिखनिचलजाहीं॥
सो० यदिनहिहै अधिकार तदपिक्षमहुअहिनाथप्रभु।
शीश वुद्धि विस्तार करही रक्षण भाल भुज॥
दो० इहिविधिविधिविधि सुरसबेविधिविधिअंगन्हमांहिं।
आयवसहिं कविवर कृपा करतअपनफलजाहिं॥

चौपाई॥

हरिशिव कर अवतार अनेका। सहित शक्ति आवहु इक एका॥

अवसर पाइ बुद्धि मति माहीं। वसहु आय कछु संशय नाहीं॥
पुनि देवीकर बहु अवतारा। सब देविन्ह ते वारम्वारा॥
विनती मम नितनित आआई। वसहु बुद्धि मति ध्यानहिं ठाईं॥
कण्ठ दशन रसनातालबसब। अधरमिलहिंआकरहिंशब्दतब॥
दुर्ग्गा चरित निकसहिं आई। सोइ रहन समझहु मन भाई॥
पूति पूति अंग बसे सबआई। कछु न रीत जहं कछुनसमाई॥
तदपि फीकलागत का कारण। देहु जनाय कृपा जग धारण॥

दो० इहिविधि सब सुरआयकरवसे मोर वपु माहिं।
मनहिय रीते अबलगी मुख्य ठाम ये आहिं॥

चौपाई॥

जोरि पाणि शिर नाइ बहोरी। पदगिरिवहुविधिकरहुंचिरोरी॥
इष्ट देव कुल दुर्ग्गा माई। आदि भवानी सकल सुहाई॥
ममहियमनमहँकरहु निवासा। अचलअटल आसनकरिवासा॥
यदिअघमय वपुनमनितआहीं। सब विधि योगनहीं जो नाहीं॥
मनहिअशुद्ध रहत नितनितहीं। यदिगतिंमृषकभु अघपरपतहीं
तदपि हृदयमनकहँ भंलभांती। कृपा तुम्हार लंइ विधिजाती॥
झारहु पोंछहु विमल बनाई। चाहहु तुम्हरो पद वसनाई॥
इष्ट देव कुल दुर्ग्गा माई। वसहिंहृदयमनमहं नितआई॥

सो० का कहिये अब बातहियमन तन कस लागही।
जनु पापी हरषात चार पदारथ तरकरे॥

चौपाई॥

जब इनकहँ मे दीन निवासा। मनहिय कछुते तरकर वासा॥
कण्ठ शीश भुज कन्धहु आहीं। सबसब ऊपर निजनिजठाहीं॥
देखब महँ असते सब लागे। सबऊपरमन हिय नितजागे॥
पाकू सबमहं इनगति जाहीं। याते मुख्य हृदय मनआहीं॥
तन नशाहिं परजीं कभु नाहीं। याते इहयाचहुं जिय माहीं॥
वसहिं देव देवी नित आई। अटल अचल करिवास सुहाई॥

दुर्गायण पूरितहो जबहीं। पुनिपठ पाठहोय जबतबहीं॥
वन्दित सुरगण जे मैं गाये। तबतब बसहीं आवहिं आये॥
परये कबहु न छांड़हिं मोही। वसहींनितममन हियदोही॥
जयतिजयतिजय इनहिंमनाई। करहुं कथा आरम्भ सुहाई॥
॥दो॰ अघगणदुखगण आदि गण हरनीकथा सुहाइ।
॥ चार पदारथ दायिनी गावहुं सो चितलाइ॥
॥ तीन लोक युग चार महँ सदा कथा विख्यात।
। हरिशिव आदिकलोकमहँ गावहिं सबमनभात॥
॥ चौपाई॥
अमित अतुल अपार सुखकारी। दायक कामादिक फलचारी॥
लघुते महान सुख दातारी। लघुते महान दुख कटनारी॥
अमित अपार अतुल दुखहारी। नाशकविपतिविविधदुखटारी॥
हरिआदिकसुरमुनिजिहनिशिदिन।गावैंनितअथाहिंनहिंमनतिन
सो शुभकथा कहहुंकछु भांती। जहां जुरा आनन्द सुजाती॥
सोइ कथा श्री दुर्गा केरी। जहां सारता वेद निबेरी॥
पुनि कुल इष्टहिं हृदय मनाई। बार बार तिन कहँ शिरनाई॥
वन्दहु तिनकहं शीश नवाई। वन्दितगणकहँ प्रणवहुं ध्याई॥
॥दो॰ शारदशेष गणेशश्रुति विधि हरिहर सरआदि।
। गान सकहिं दुर्गाकथा अमथअनन्त अनादि॥
॥ तोहुअपन हित भक्तिलगि सदासदा सबगाहिं।
श्री देवी भवतारनी देतमुक्ति क्षण माहिं॥
॥ चौपाई॥
सो समझहु श्री दुर्गा नामा। इहिविधिगाहुं कथापरिणामा॥
लिखहुं कथा मायाकर पावन। यदिनकथा परनाम जनावन॥
मन दृढ़ता कर करहुं मसानी। पदरत काजर सतता पानी॥
असमसि लेखन हेत बनाऊं। धुनघृति लेखनि सुन्दरनाऊं॥
लिखहुं कथा सो दुर्गा नामा। जाते सबविधि फलमयकामा॥

इष्टदेव कुल मातु भवानी। श्रीश्री दुर्गा सतगुणखानी॥
सुमिरहुं तिनकहं कथा सुहाई। लिखहुंगाहु अबसबविधिभाई॥
पुनि नित नित पुनिवारम्वारा। वन्दहुं नाहु शीश महिपारा॥

दो०। चर अरु अचर अनेकजग सदा सदा सब माहिं।
। शक्तिसहित सबदेखिये रहितशक्ति कछुनाहिं॥

सो०। तिनकहँ वन्दहुं ध्याइ वन्दनते न अघाहुं कभु।
। चार पदारथ दाइ करहुं कथा आरम्भअब॥

॥ चौपाई॥

एककल्प मुनि व्यास सुचेरा। प्रीति देवि पद रखि मनहेरा॥
वेद पुराण ज्ञात मुनि ज्ञानी। बुद्धिमान सब शास्त्रहु जानी॥
मारकण्डेय निकट सो आई। सहितप्रीति पदशीश नवाई॥
पाइ अशीश भेंट जैमिनि तब। प्रीतिसहितसो कीन्हप्रश्नजब॥
हेमुनि देव क्षमहु कछु कहहू। आदिशक्ति कौतुक हियचहहू॥
आदि शक्ति श्री आदि भवानी। श्रीश्री दुर्गा अगजग खानी॥
कथा महान विदित नितआहीं। पठत सदाहरि आदिकजाहीं॥
भुवन तीन युगचार प्रमाणा। असअस अगणितअपारनाना॥

दो०। सो मुनि मोसन करि कृपा कौतुक कहहु महान।
। श्रीश्री दुर्गा करकथा चाहहुं सुना सुजान॥

॥ चौपाई॥

कह मारकण्डेय मृदु वानी। तैसहिभांति प्रीति रससानी॥
धन्यधन्य मुनिजैमिनि तुमहीं। वेदसार तुम पूछत हमहीं॥
यदपि ज्ञात पर पिवहु सुहाई। कथा सुधाचारहु फलदाई॥
आदि शक्ति श्री दुर्गा माया। आदि ज्योति श्रीएकनिकाया॥
हरिहुजासुबलवसहींकितनित। इंककाबहुहरि झूमहिंसतसत॥
देवि कथाकर पारहु नाहीं। महामहा पुनि गाय नजाहीं॥
तदपि कछुक सुमिरहुं श्रीनामा। सुनहुजासुनित फलप्रदकामा॥
श्रीदिन प्रतिकर नारि अनेका। तिनमहँ जानहु छाया एका॥

॥दो० तिनते सावर्णी सुअन श्रीअष्टम मनुराज।
भये सो मातु प्रभावते कथा फलद शुभकाज॥
सो सब सुनहु चरित्र अब देवी आदि अशेष।
भाव प्रताप शुभ कौतुक गाहु कछुक लवलेश॥
सो० श्रीदुर्गा सुप्रभाव ऋद्धि सिद्धि भवमुक्ति लय।
करहिं पीछे सब आव विनायास अग जग सदा॥
दुर्गा देवी माय हीरा स्वामिनि माय कर।
शुभग कथा फलदाय सुनहु प्रीति सहजैमिनी॥

॥चौपाई॥

भये सुरथ नृप इक कल्पाहीं। दूसर मनु चैत्र बंश माहीं॥
प्रजापालहीं सुअन समाना। नीतिशास्त्रविधिसबहितजाना॥
धर्म्म राज बहुन्याय समेता। करहिंलहहिंबहुसुखचितचेता॥
प्रजा सकल सानन्द सुभोगी। तुरतीफल पावहिं जनयोगी॥
जेजे शुभकारज हित लागी। साधे भूपति भागि सुभागी॥
सुरथ नृपतिकर शुभसम्राजा। कोल भील बहु बसहींराजा॥
सब राजहिंमुनि सुरथअधीना। छोटे बड़े बहु विविध प्रवीणा॥
राजत महिपति भयो कुभागा। मनहुशनीचर शुभग्रहजागा॥
दो० नाम सुनामी अनेकन्ह राज भये सम्राज।
सुरथ राज शुचि रान अतिशोभित महाविराज॥

॥चौपाई॥

अस संयोग भयो इकबारा। कोल भूप रिपु भये दुकारा॥
भइ इनमहं अति घोर लराई। राजा सुरथ हार तब पाई॥
यदपि सुरथ बड़ शासन वारे। मुनि माया वश तब सो हारे॥
जैमिनि यह हो भाग सुबाता। लोकहु होवत अबका बाता॥
दया धारिणी दया जुआवे। ता कहँ कालडरतनहिं पावे॥
यदि मरहीतो शुभगति दाई। विनायास तब जीवहु पाई॥
होन चहत अब सरथ सुभागा। नहिंपावहिंकरिकोटिन्हयागा॥

जगहिं भाग भूपति कर ऐसे। सुरहु न पाये बड़पन जैसे ॥

॥ दो॰ रारि खाइ मन मारि तब बहुरे सुरथ नृपाल।
॥ बसे देशनिज कछुकदिन छूटत नहिं जग जाल ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि मंत्री खल भय बलवाना। दुष्ट दुरात्मन दारुण नाना ॥
रहा सहा बल सेना कोषा। सुरथ भूपते लीन्ह सरोषा ॥
कथित वसुप सेनादिक हीना। दिवस वितावहिंहृदयमलीना ॥
एकदिवस जनपति मनआना। मृगया करन जान बन ठाना ॥
सुन्दर इक अतिवाजिमंगावा। चढ़ितापर तुरत चलावा ॥
जनप अकेले संग न कोऊ। बिसरि गये पथ भटके सोऊ ॥
बनऋषि मेधसआश्रमजहंवा। आये नृपमुनि ध्यानी तहंवा ॥
ऋषिवर मेधस शोभा छाये। शिष्य अनेक निकट बैठाये ॥

॥ दो॰ मेधस तन उपदेश कर अशिक्षाशिष्यन केर।
॥ मोह रूप नृप आयेउ आश्रम ज्ञान सुढेर ॥
॥ सिंह व्याघ्र बहुभालु तहां हिंसाकरहिं न कोउ।
॥ जींवजन्तु मिलवसहिंसब काननअति घनसोउ॥

॥ चौपाई ॥

आदि देविकर ध्यान लगाये। बैठे मुनि हिय माया छाये ॥
जबमुनि मुनिवरत्यागाध्याना। गिरेचरणनृप लकुट समाना ॥
परतपाद सोहत नृप देहा। मोह प्रवेशत ज्ञानद गेहा ॥
अशीश दीन्हा जैमिनि देवा। कछुदिन बीते सोकर सेवा ॥
सेवहिं नृपमुनि आदर करहीं। इत उतभ्रमतसुरथ तहंरहहीं ॥
नृपमन ग्रसितमोहमन माहीं। शोक शोच करमन बहु आहीं ॥
आहू दई कत मम सम्राजू। कहांसेन बल कोष विराजू ॥
कत सब सेवकसुतसबरानी। कहं सब मोरे आज्ञा मानी ॥
पीढ़िन ते सम्राज मम आवा। पराधीन सो आज कुछावा ॥
खल मंत्री भोगहिं सो राजू। मनकलपत ममता मय आजू ॥

किमि बीते मम आयुस भाई । विधिनहिं देवे मीच बनाई ॥
जोमृतु उपजी असजसमाहीं । सो कस मांगत आवत नाहीं ॥

दो० जैमिन मुनि तहं सुरथनृप करत शोकमनमाहिं ।
मनहु शोकतन धारि करि सोच शोकबन आहिं ॥
मोहअग्नि मन जनपबर बूझत नहिं भभकाइ ।
मेधस ज्ञान सुवारिते आगूमुनि वुझ जाइ ॥

चौपाई ॥

सोचत नृप पुनिपुनिमनमाहीं । सोचबहुत कछु कहिनसिराहीं ॥
नाम समाधी वैश्य सुजाती । भयो काल सो इक सो भांती ॥
रहो तासु ढिग वित बहुताई । सुखानन्द कछु कहि न सिराई ॥
बाल बालका ताकर नारी । ताकहं गृहते दीन्ह निकारी ॥
लीन्ह सकलसम्पती छिनाई । भयो समाधि असंगी भाई ॥
सोचत सोचत जैमिनिसोऊ । आवा सो बन भटकत ओऊ ॥
ममता ग्रसित कुलोभअपारा । वैश्य कहहिं मनविविधप्रकारा ॥
किमि रहहीं ममबाल सुवामा । कुशलित हैं नहिंममसुखधामा ॥
भगिनीबन्धु सकलजन मोरे । काकरहीं नहिं जान परोरे ॥
ममइतनो वित कसते राखें । कसउप योगहिं कससो चाखें ॥
कतगमने ममसुखसब जाती । पुनि पावहुंसबकिहिकिहिभांती ॥
आह दई तव बावर ताई । मीच केर जो अवधि बनाई ॥

दो० जैमिनि ताही कालमहं भेंट भई भूपाल ।
मनहु दोउतन धारिकर मिले मोह भवजाल ॥
तबतेनिजनिज कथासब जिमिजिमिरहसुप्रकार ।
कहे परस्पर रुदन करि सोच सोच अनुसार ॥

चौपाई ॥

सोचहिं ते कछु जान नजाई । लोभ मोह कस ग्रसहीं आई ।
मन ममता बहु पावक बारे । कछुन उपाय विसोचत हारे ॥
चलचल हो अब मेधस पाहीं । पूछहिं तिनसन सकलसुनाहीं ॥

प्रीति सहित मेधस ढिगजाई। बैठे दोऊ भाग सुल्याई॥
परेरहे सो सागर माहीं। आये मानो नवका पाहीं॥
सुनिशुभ कौतुक होवहिंपारा। सोश्री दुर्गा कथा प्रसारा॥
सहित सनेह प्रश्न बहुतेरे। पूछहिं मुनिते एक घनेरे॥
पूछत पूछत भूपति बोले। बहु रस महं जनुअमृत खोले॥
पूछहुं गूढ़बात मुनि राई। प्रीतिसहित भलकहहुबुझाई॥
बार बार कस सुनहु कृपाला। लागतकठिन बहुत भवजाला॥

हरिगीतिकाछन्द।

लागत कठिन कराल जाल भव नेक चैन न पावहीं।
लोभ मोह ममता परि पूरण सोच बहुतहिं आवहीं॥
मुनिवर मेधस करहुकृपा अब भली भांति बुझावहू।
गुप्तबात पूछहिं हमतुमसन कारण कर्म्म सुनावहू॥

दो० मै महिपति सब जानिहौं रीतिनीति भल भांति।
तदपि रहहुं मोहान्ध हो सोवहुं ममता राति॥
मूढ़ जाति मै वैश्य हों छूटो गृह सब द्वार।
लीन्हे सम्पति काढ़िकर मम धामा परिवार॥

चौपाई॥

तद्यपि मन हमरो नहिं माने। राज्य वित्त परिवार लुभाने॥
कहहो कारण कवन कृपाला। छूटहिं काते यह भव जाला॥
मुनि मेधस बोले मृदुवानी। भूप वैश्य हित नौका आनी॥
सुनहु कथा अस वैश्य नृपाला। कठिन कराल काल भवजाला॥
आदिशक्ति पुनिआदि न जाही। पुनिनहि मध्यअन्तनहिं ताही॥
आदि देवि अस प्रबली माया। उपजावत ब्रह्माण्ड निकाया॥
सृजत संहारत जब मन आवे। कोउन अस जो भूल न जावे॥
विष्णु विरंचि शिवादिक देवा। पोषहिंसृजहिंहतहिंकरिसेवा॥
मोहत माया इन कहं भाई। अपर अभर कर कौन चलाई॥
आदि देवि कर मार न पावें। ऐसी दुर्गा वेदन्ह गावें॥

॥ दो० सो दुर्गा सब व्यापिनी सर्व शक्ति सब पूर।
आदि अनादिनि अखंडनी रूप रहित बल भूर ॥

चौपाई ॥

अगम्या देवी गम नहिं आवे। सो श्री दुर्गा मातु कहावे॥
वा दुरगम ते जानी जावे। आदि शक्ति सो नाम कहावे॥
यद्यपि जानहिं धर्म्महु द्वारा। तामहं मिलहीं बिनश्रम पारा॥
पर सब कठिन कराल नृपाला। जाते जग उपजत बहु काला॥
कारण रूप देवि बल रूपा। भये ईश्वर कार अनूपा॥
विन ऐश्वर्य्य ईश्वर नाहीं। सो ऐश्वर्य्या देवी आहीं॥
अस ऐश्वर्य्य प्रगट जग माहीं। जा बिन जीव चराचर नाहीं॥
सब शात्त्य सब व्यापी सोई। वैष्णवता सो सब महं जोई॥
विना शक्तिबल नहिं कोऊ होवे। अनुभव भलीभांति इह जोवे॥
याविधि तीन शक्ति मयदरसत। सृजभवलय सबमहंजोपरसत॥

दो० आदि पुरुष जो ईश्वर विष्णु कहावत जोइ।
देवी इच्छा दरसही कारण कारज सोइ॥

सो० देखहु हृदय विचार अनल अनिल नीरादि सब।
सतरज तमगुणकार प्रकृति इन्द्रिया दिक सब॥
येसबमिलिसन्सार उपजहिंअगणितअमितनित।
धरणी भानु अपार चन्द्रादिक बहु रूपजे॥

चौपाई ॥

पुनि इकइक अस जगतमझारी। जीव चराचर अगणित झारी॥
सब महं बलविनबल कछुनाहीं। सोई देवी व्यापित आहीं॥
ताकर कारज ईश कहावे। जो कारण ते रचना लावे॥
अनलअनिल गुण आदिक केरा। संयोग वियोगादि निबेरा॥
उलट पलट सचराचर सोई। अगणित वार कारते होई॥
सोई विधि हरि शिव करनामा। नामबहुत परिणामहु जामा॥
सोई सृज भव लय कर कारा। जांते अगणित रूप पूंसारा॥

उपज नाश काहू कर नाहीं। सतमंहअदलबदलजगमाहीं॥
याते जहं तहं लोकहु जोगा। सकलव्यापताविष्णुसयोगा॥
सोइ व्यापता दुर्ग्गा आहीं। जाकर कारज विष्णु कहाहीं॥

॥ दो० नित नित सर्व्व व्यापता रम अदर्श दरसाय।
सोई कारज आदि मनु ऐश्वर्य्य बलपाय॥
सो दुर्ग्गा उपजावहीं स्वयम् सुरूप प्रकाश।
मूल शक्ति ऐश्वर्य्यता कारण हो अविनाश॥
पुनि सुख दुख फल चार सब उपजाई बहुतेक।
सब जानन श्रीज्ञान तब उपजे एक अनेक॥
जीव कहत जो लोगसब भिन्नभिन्न सो आहिं।
सो सब ज्ञानहु शक्तिवश जगमहंआवहिं जाहिं॥

चौपाई

लोकहु भूपति जीव घनेरे। उपजहिं वसहिं मरहिं बहुतेरे॥
मानहुधरिधरिविधिविधिरूपा। सोहहिंमाया कर जग कूपा॥
मातु दयाते निकसहिं जाई। रूप पलटहीं पीर न पाई॥
कोऊ असलोकहिं दिन मानी। उलूकादि असआही प्राणी॥
कोऊ अस जे रातन देखें। अस प्राणी कामादिक लेखें॥
कोऊ अस देखहिं दिनराती। पशुगणजलगणअगणितजाती॥
सब ते उत्तम जन गणज्ञानी। राखहिं ज्ञान भिन्न ये प्राणी॥
कोऊ ज्ञानि अज्ञानी होहीं। कोउ ज्ञानी ज्ञानी सोहीं॥

॥ सो० खानपानव्यवहार रीतिरंग भिनभिन सकल।
भाव परस्परसार कहुंमिल कहु मिलहींनहीं॥
॥ दो० वसुप वश्य झगड़ो कठिन मायाकृत जग केर।
गावहिं कहं लगिपार नहिंगाय नजाय निबेर॥

चौपाई

ज्ञानी जन अपि लोभ लुभाने। ममता मद मय मोह भुलाने॥
सुत वित आदि प्राइपरिवारा। मोहहिं त्यागहिंपरउपकारा॥

मोह लोभ भ्रममता जाला । देवि प्रभावतजहिंमहिपाला ॥
पुनिपुनिहोत स्थिति सन्सारा । कारण माया सो विस्तारा ॥
संशय अत्र करहु नहिंभूपा । माया कृत रचना भव कूपा ॥
माया वल अति कठिन कराला । ज्ञानीजनकहँ व्यापत जाला ॥
यदि आपिज्ञान देहधरि आवे । मोहत माया छूटै न जावै ॥
विधिहरि हररविशशि सुरईशा । मोहितमाया मय अवनीशा ॥

दो० श्रीदुर्गा सो दविहै माया प्रबल कराल ।
। करिकौतुक श्रीकौतुकिनि रचतजगत महिपाल ॥

॥ चौपाई ॥

सो देवी बहु जग कर कारण । वरदायिनिनितभवनिधितारण ॥
देवि भगवती योग सुमाया । शयत करहिं हरिजाबल पाया ॥
जाबल विधि रचहीं सन्सारा । जाबल जगहरिपालहिं सारा ॥
करहीं शिव जाबल संहारा । जाबल रचित बहुत सन्सारा ॥
जाबल उपजहिं दिनप घनेरे । राखहिं जगजग इव बहुतेरे ॥
जाबल वारिद वरषहिं वारी । जाबलमहिनित नितफलकारी ॥
जाबल रविशशि तारा आदी । करि प्रकाश जगइव सम्बादी ॥
सो बल श्री दुर्गा निरमाई । भाव प्रताप न कहि सो जाई ॥

॥ दो० जाबलते चर अचर सब रूपवान सन्सार ।
॥ वारिबतास पावकसकल महिमा धरहिंअपार ॥

॥ चौपाई ॥

जाबल सुरमुनिजन सबप्राणी । जगकरकारकरहिं शुभजानी ॥
जाबल ज्ञान धर्म्म शुभ द्वारा । जग कारज भल होत अपारा ॥
जाबल अर्थ धर्म्म अरु कामा । मोक्ष फलादिक होवहिं जामा ॥
जाबल विधिविधि तनसबप्राणी । पावहिं जसतसभोगहिंमानी ॥
जाबल देखहिं सुनहीं कहहीं । जाबल कारजनित फललहहीं ॥
जाबल सुरादेव सुख भोगो । जाबल तपसो योगीजोगी ॥
जाबल हरि ब्रह्माण्ड निकायी । स्थित दशाराखहिं जगभायी ॥

सो बल दुर्गा विश्व रूपा। परमा माया सत स्वरूपा॥

दो० यद्यपि भाषहिं वेद अस तदपि देवि अस आहिं।
आदि मध्य पुनि अन्त नहीं निर्गुण रूप सराहिं॥

चौपाई॥

जा बलते उपजहिं बहुतेरे। अजहरि शिवरविसुरपवनेरे॥
अगणित मंगल बुध गुरु ईशा। शनिशुकमहिजलपतिरजनीशा॥
गणपति धनपति वायुवतासा। पशुमनुगणसबअगणितसांसा॥
अगणित काम लोभ मदमोहा। अगणितमत्सरती गुणकोहा॥
ज्ञान ताप तप अगणित योगा। नेम धर्म सब भोग विरागा॥
क्षुधा तृषा निद्रा सब भोगा। अगणितरतरिपुतासबयोगा॥
काल व्याधि रोग विधि वादी। अगणितबुधिबलसुखदुखआदी॥
अगणित राग रागनी जीते। नवरस शतरस उपजत ताते॥

दो० अगणित इन्द्रिय तत्वपुनि प्रकृति भाव स्वभाव।
अगणित मूरति रूप रस भरित प्रताप प्रभाव॥

चौपाई॥

अगणित जीवन मरन रहाई। अगणितयोग वियोग गँठाई॥
अगणित अहंकार चतुराई। अगणित कार विकार लजाई॥
अगण प्रकाश तिमिर भव ज्ञाना। अगणित विद्या गुणादि नाना॥
अगणित वेद पुराणहु गीता। अगणित मारग हारहु जीता॥
अगणित पूजा पाता नाना। अगणितनेम अराधन ध्याना॥
अगणित सोच विचार प्रकारा। अगणितसम्पतिविपतिप्रसारा॥
अगणितअगणित सुनाजोदेखा। मनमहँ सकनहिं करहिंलेखा॥
सो सब दुर्गा बलांश पाई। सुनहीं लखहीं गणहीं साई॥

दो० वसुपति वश्य प्रताप अस परमा माया कार।
अजादि सुर परमेश्वरी लीला अमित अपार॥

चौपाई॥

अस जग जस यह है कछु नाहीं। इकइकते वर अगणित आहीं॥

सो रचना सब देवि प्रभावा। अगणितशेषसकहिंनहिंगावा॥
नृप इतनो कछु अधिकहु नाहीं। बलवन्ती अस माया पाहीं॥
पुलकि उठे सुनि सुरथ नरेशा। हरषे मनमहँ अतिवनि केशा॥
भाषे नृप तब सहित सनेहा। धन्य धन्य मुनि तुमकहँ एहा॥
असमाया कस उपजतमुनिवर। कसस्वरूप सोपूछहुं मनकर॥
कस करणी का दायिनि माया। अगणितजगअसकसउपजाया
सबविधि मोहिं कहहु समुझाई। मन वच कर्म्म सुनहुं मुनिराई॥
॥दो० मनुपति इतनो कहा हम तोहुन समझे सार।
॥ विदित जगत करणी कहौं लीला सुनहु अपार॥

चौपाई॥

नित्य नित्य कल्पान्त कल्पाहीं। श्रीदुर्गा रहज्योति सदाहीं॥
उपजावत अगणित सन्सारा। भिनभिनविधिविधिपार अपारा॥
देवी नहीं उपजत वर रूपा। सो आकाश प्रकाश सुरूपा॥
हां असउत्पति श्रुति शुभगाहीं। जबजब हरि सुर संकट पाहां॥
तब तब आवत ध्यान सुरूपा। करत सहाय अंश बल भूपा॥
विष्णु आदि सुर ताबल पाई। करहिंकारनिज जसजसआई॥
निज करते वा देवी करते। जस संयोग बने भल तरते॥
तब कहहीं अवतार अनूपा। जन्म रहित ध्यान धृत रूपा॥

लवायीछन्द॥

॥ जन्म रहित नित ज्योति दुर्गा नन्दिनी ज्योति मणी।
॥ विधि हरिहर सब आदि भूलहीं दीपेक पतंग घनी॥
॥ नादि नादि अस नेति नेतितस आदि माय प्रकट नहीं।
॥ ध्यान आव जब विष्णु आदिमहँ सुअवतार सहायही॥
दो०। ज्ञानी जन अस समझहीं विष्णु व्यापी आहिं.
॥ उत्तम रूप सुरुपता ध्यानी मति मन माहिं॥
ताकहं सुरमुनि भाषहीं भयो विदित अवतार।
निज तुषता लगि रूपले वरनहि पार अपार॥

सुन्दर अन्वय देहकर कहहिं रूप धर देह।
सो सब ध्यानहिं रमतहैं पुनि लोचन करनेह॥
कल्पअन्तकरिजलहिजग क्षीरपयोनिधिमाहिं।
शेषशयनहरिकरहिंजब जलजलरहकछुनाहिं॥

चौपाई॥

जैमिनि बोले वनिव महीशा। कहहु बिष्णु कर रूपमुनीशा॥
शंख चक्र का आयुध चारा। बैज यन्ति पीताम्बर धारा॥
लक्ष्मि सुन्दरि का स्वरूपा। आन भेद कछु कहहु सुरूपा॥
भाषे तब मेधस हरषाई। गूढ़ अर्थ सुन हो मनुराई॥
समझ वुझावन बाट अनेका। इतिहास कविता इक एका॥
उदाहरण बहुतहिं इनमाहीं। बिन जिनके कछुबनतहुनाहीं॥
साव्य सार इनमाहिं निवारी। समझ बुझाव करहुभल भारी॥
बिष्णु सर्ब्ब ब्यापी जो आवे। सो सब दुर्ग्गा शक्ति लखावे॥
बिना शक्ति हरिब्यापी नाहीं। सार अर्थ इहहै सब ठाहीं॥
स्वरूपान्तर अस सब गावें। जाते जग जन जानत जावें॥

दो० कौस्तुभमणि ज्योतिवर वैजयन्ति वरमाय।
बिष्णु ब्यापि सो धारहीं जोजगमहँ पूगटाय॥
लक्ष्मी सोही शक्तिहै अन जन धन सन्सार।
जाते जग सब स्थितहैरचना बिविध पूकार॥

चौपाई॥

चार वेद पीताम्बर नामा। ओढ़े जगकर ज्ञान सुकामा॥
सांख्ययोग्य शास्त्र नाना। कानन कुणडल सो निरमाना॥
सत-नीरज वल गदा कहाई। शंष तत्व जल चक्र पवकाई॥
खंग तत्व नभ चाप कुकाला। तरकस जीवन करमन माला॥
कछुतत्वन्हमिलजगउपजावा॥ तामहँ जल पुनि एक कहावा॥
क्षीर शब्द है उपमा ताही।सो बर सागर नाम कहाही॥
असससबआदिकंआदिकजांनीं। बिधि बिधि कारण रूपबखानीं॥

सर्ब्ब व्याप पुनि बिराट रूपा। कविता लगि जगरूपअनूपा॥
शिर नभपदभलधरणीसोही। लोचन रबि नासिक पवनोही॥
दिशा करणभुजलोकन्हपाला। मेघ घटा शिर कर वरबाला॥
दशन राज यममनशशि आहीं। तरु पाती तन रोम कहाहीं॥
गिरिवर अस्थिउदरजलईशा। सरिता नस सोहत अवनीशा॥
दो० पृथम लिखितिजो नामहैं जाकर हरि असनाम।
सो नित रहत सुशक्ति बश निर्गुणअतनअकाम॥
सो हरि कारज जगत मय आदि पुरुषलेनाम।
देवी इच्छा पृकट भे जाकर जग तिथि काम॥
चौपाई॥
तब तो बलवन्ती श्रीमाई। हरि लोचन निज बासबनाई॥
योग निद्रा हरि लोचन माहीं। सोइ शक्ति श्रीदुर्गा आहीं॥
करहिंशयन हरि घोरस्वरूपा। माया बलते सोह अनूपा॥
सोवत सुमिरहि गरुड़पताका। श्रीमाया श्रीदेवी मांका॥
मनु सोवत अद्भुत सप नाहीं। श्री माया रम नयनन्ह माहीं॥
सोह कंज धर भगवत राजा। नील कमल जल शेतबिराजा॥
बिष्णु कर्ण मल तेता काला। उपजहिं दानव दो बिकराला॥
मधु अरुकैटभ जिन करनामा। रूप भयंकर कालहु धामा॥
इन कर मनमहँ इह तबआवे। जाते हरि नहिं जग उपजावे॥
हरिकहँ माया सपन बतावे। जग रचना इन कहँन सुहावे॥
जनुबियोग संयोग नशावे। तिमिर कारकहँरबिनहिं भावे॥
मूढ़ मानसिक ज्ञान घिनावे। मलरजकहँ शुभअविकनभावे॥
दो० ताहि समय हरिनाभिते कमल निकरहीं एक।
बिधि उपजत सो कमलते आसन कमलहुटेक॥
चतुरानन भुजचार वर वेद धरित शुभ चार।
जगरचना जानहु धरे बिदित सकल सन्सार॥
नृप समझहुबिधिशब्दते सृजन शक्तिवर भाष।

वेद शब्द ते ज्ञान है भुजा धरन हित राख ॥
आनन तेता कथनहै जग ज्ञानी वद बात ।
मानसिक्य अस रूपहै परइति हास बतात ॥

चौपाई ॥

उपजत अजमनु जगजग आवे । सोमधु कैटभ मन नहिं भावे ॥
देखे अजजब प्रचण्ड निशिचर । लोकेहरि कहँसोवत जलपर ॥
तबचित एक बूह्मइक ओरा । आसन मारि कमलकर ठौरा ॥
हरि बोधन जगरचना लागी । जाते हरिजग करजग भागी ॥
माया केर स्तुति अज ठाना । निद्रायोग सुशक्ति प्रधाना ॥
बूह्मा निज चारहु कर जोरे । ध्यान देविकर मनअति बोरे ॥
करहिं स्तुतिवर अगम अपारी । जग रचना मनुवेद उघारी ॥
रचना रचित ज्ञान दरशावे । देवी रचना वेद जनावे ॥
मातु स्तुति सो रचना जानो । बिधिसृजहोवत लोकबखानो ॥
ज्ञानीजन निज तुषता लागी । बिधि अरु वेदरूपता मांगी ॥
सोसबहो इतिहासहु द्वारा । भरित कथितबिधिनानापारा ॥
सो पुनि दरशहीं स्तुति माहीं । दुर्ग्गाशक्ति जगत जो आहीं ॥
सो० लगिवाणी फलकार अज तेजस्वी महाबली ।
देवीस्तुति अपार करहिं सुधापय निधिबरस ॥

त्रिभंगीछन्द ॥

जयजय जगजननी जगकरकरणी जगकरसृजनी जगहरनी ।
सृजनिद्रा घोरा लोचनठौरा काल कठोरा लय करनी ॥
सृज भवलय देवा करहीं सेवा तुमहीं भेवा हे माता ।
नय अक्षरे नित्ये घट बढ़ रहिते प्रकाश सहिते जग त्राता ॥
दो० परमा शक्तिशक्ति महा आदिशक्ति श्री सत्य ।
निर्गुण शक्ति अनादिनी देवी दुर्ग्गे नित्य ॥

चतुष्पदाछन्द ॥

जयदेवि अनादिनि जयअविनाशिनि जयति जयति जयमाय ।

मुक्ति बरदायनी सुन्दर भायिनी द्रवहु द्रवहु वर दाया ॥
हे स्वाहा रूपा अग्नि स्वरूपा अगणित अग जग भोगी।
श्री दुर्गे रानी तीगुण खानी प्रगटहु देवि संयोगी ॥
स्वधा स्वरूपा स्वस्व रूपा वषट् कारी प्रकाशा।
पितृ रूपिनि माया सुधाहु दाया सुर भोजन स्वकाशा ॥
नमो नमो माता अति बिख्याता करणी कार अपारा।
अब दरशन देहू बिनती लेहू करहु प्रकट सन्सारा ॥

दो० जयति जयति जयदेवि जय सदा जयति भरपूर।
द्रवहु द्रवहु श्रीमातु अब कोप रहित बलभूर ॥

चौपाई ॥

ह्रस्व दीर्घ प्लुता स्वरूपा। अर्धमात्र ब्यंजनी रूपा ॥
हे नित्ये परि माणहु रहिते। अनुच्चरिता वरलक्षणसहिते ॥
हे माया रबिमण्डल काशा। तुमरमहो सबमाहिं बिकाशा॥
अगणित मण्डल असपुनिआहीं। पार्वाहिंसब प्रकाश तवपाहीं ॥
परमा माता बहु सन्सारा। उपजा वहु नित ऊपरधारा ॥
पालहु पोषहु पुनि संहारा। पावक रूप लेहु जा बारा ॥
भव सृज लय सबकर तुमरूपा। कल्प कल्प तव कर्म्म अनूपा ॥
परमा विद्या परमा माया। महा सुमेधा करहो दाया ॥
जयतिजयति महावुधि धारिणी। महा सुमेहा स्मृति कारिणी ॥
महादेवि जग प्रकृति कारिणी। सतरजतमतीगुणसुधारिणी ॥
काल रैनि यम भगिनी रूपा। प्रलयसमयबड़रजनिअनूपा ॥
मोहकाल महँ यामिनि मोहा। भयमय रूपाशोभित सोहा ॥

दो० संयुक्ता ऐश्वर्य्यता श्रीपरमेश्वरी माय।
मंत्र तंत्र स्वरूपहो तव गुण गाय न जाय ॥
वुद्धि बोध शुभ लक्षणा लज्जा पोषण रूप।
तुष्टि रूप सन्तोषसो शान्ति स्वरूप अनूप ॥

चौपाई॥

सुरथ सुनहु अज स्तुति करहीं। मनहुपयोनिधि सुधाबरषहीं॥
सोवहिं हरि बिश्राम मझारी। निद्रा रूप देबी विस्तारी॥
पुनि भाषहिं ब्रह्म धरि ध्याना। महादेवि बहुगुण मयनाना॥
क्षान्ति सुरूपा खंग धारिणी। शूल धारिणी गदापारिणी॥
चक्र धारिणी शंख धारिणी। चाप धारिणी बाणमारिणी॥
भुशुण्डी परिघा शस्त्र गहिनी। महाकालकीकालसुश्रहिनी॥
साम्यता सौन्दर्य्य सुन्दरी। सुन्दरता कहँ सुप्रकाशकरी॥
श्रेष्ठन्ह महँ तुम श्रेष्ठ सुरूपा। उत्कृष्टन्ह उत्कृष्ट अनूपा॥
परमेश्वरी सर्व्व सत्र रूपे। अखिलात्मिके सुभांति अनूपे॥
सतचैतन्ह वर्गन्ह तुम व्यापी। वर्ग असत जड़महँ तुमआपी॥
सकल शक्तिकर शक्ति सुअहहो। ऐसेहुकरस्तुति किमिकरहों॥
अस श्रीशक्ति सुशक्ति सुरूपा। माया दुर्ग्गा देवि अनूपा॥

दो० अस तुमते मम रूपकरि उपजत बहु सन्सार।
अस तुमते हरि रूपलख असतुम शिव संहार॥
सो रूप तुम देवि महा रमत विष्णुकर नैन।
तव बशहो हरि सोवहीं कहको तव गुणबैन॥

चौपाई॥

जयति जयतिजय तिर्गुणरूपा। महान परमा सत्य स्वरूपा॥
आदिशक्ति पुनि शक्ति आदिनी। नेति नेति श्रीशक्ति नादिनी॥
सर्व्वशक्ति व्यापित सब माहीं। लेशनहीं जहँ तुम कभुनाहीं॥
यहीकाल यदि कछु नहिंआवे। महिसहउड़गण रविपुनिछावे॥
असअगणित रविकर रविआहीं। पुनितिनकर गणना होनाहीं॥
अस रचना सबकर परिमाणा। शकतिलेश तुमरो करनाना॥
हरि इव हरि होवहिं बलवाना। अगणितअतुलितअपारनाना॥
तिन महँ कोअस जोबढ आने। जो तुम्हरो गुणगाय न जाने॥

लवायीछंद॥

कह सकहिं को बलवन्त ईश्वर गुणतुम्हरो देविमहे।
कोउ नहीं अस बली ईश्वर गुण तुम्हरो गाय कहे॥
मैं हरि शिव सब तुमहिं सेवहीं पर काहें लेख महे।
प्रगटहु देवी श्रीवर माया जाते हम तुष्टि लहें॥

दो० जयति जयति जय देविवर दुर्गे माया माय।
देवि भवानी जयति जय नमो नमो बल दाय॥
दुर्गेभवलयस्वामिनी हरिहरस्वामिनिजोय।
सुरनरमुनिसबस्वामिनी हीरास्वामिनिसोय॥

तोटकछंद॥

जयदेवि नमामि महाकरणी। सृज पोष संहारसदा धरणी॥
तव आदि नहीं अवसान नहीं। तवबीच नहीं तवबीच यही॥
तव रूप रमो भलदेखहिं जो। बर काश मयो तव रूपअहो॥
हमईश सुईश सुरे सगरे। तव मायहि आ सब भूल परे॥
अजनी कमला शिव रानिसबै। उपजें बहुते तव अंश जबै॥
अस देविनमामिनमामिसदा। करहो सुकृपा प्रकटो सुयदा॥
बहु भानु सुरूप धरे यदहीं। नहिं पावहिंते तव काश कहीं॥
जय जोति सुजोति धरीजननी। जय रोग सुताप सबै हननी॥
वरदायिनि देवि महा सुमहा। दुर्गे दुर्गे प्रकटो सुइहां॥
जय देवि नमामि महान महा। द्रवहो द्रवहो अब देविमहा॥

दो० महिपतिबिधि विनती बहुतकरहिं करहिंअनुकूल।
छोट बड़ी बूंदन महीं वरसहिं सुधा सुफूल॥
स्वयम् सुरूप जो स्तुती बड़ बूंदन कर ढेर।
रह जिहि महँ बहुतरकना छोट बूंद मनुहेर॥

चौपाई॥

वदत ब्रह्मा जोरि निज पानी। करहु कृपा अब देवि भवानी॥
मोहहु मधु कैटभ बिकराला। प्रकटे मोह होय वधकाला॥

हरिहि जगाइ होइतिनबोधा। जागहिपालहि हरि करिशोधा॥
मम उपजन रचना सृजआई। जागहिं हरिमन पोषण छाई॥
मारहिंहरिइनअसुरहिंजबहीं। ले बल तुम्हरे पालहिं तबहीं॥
करहु कृपा होवै न बिलम्बा। करहु श्रवण देबी जगदम्बा॥
सुरथ समाधी तबतो माई। हरहिं जगावन मनउपजाई॥
मधु कैटभ कर मारन ठानी। ऐसी बिधि बन्दिता भवानी॥
नट बरनी नव कन्या रूपा। ती चखु बाहु अठार अनूपा॥
आदि शक्तितम शक्तिप्रधाना। प्रकटी सुन्दरि अजहियध्याना॥

चतुष्पदाछन्द॥

सो प्रकट अनूपा तामस रूपा जगकर जननी माई।
तमकर स्वरूपा प्रकाश रूपा अगण राशिरबि आई॥
सुन्दर अति आनन सुन्दर कानन सुन्दर नयना धारी।
नासिका सुन्दर कण्ठसु बरतर हृदया सुन्दर बारी॥
सुन्दर सुकुपाला बहुत बिसाला आभाछबि अनुकूला।
निरखत ही जाके सुन्दर ताके भज सुन्दरता मूला॥
सुन्दर कर चरणा सुबस्त्र धरणा भूषित सुन्दर देहा।
अज दरशन आई प्रकाश छाई दीन्ही दरशन एहा॥

सो० परमा शक्ति महान आदि अनादिनि शक्ति श्री।
सर्वोतमा प्रधान सर्व्व श्रेष्ठा उत्कृष्टा॥
श्री दुर्ग्गा बिख्यात आदि भवानी देवि श्री।
श्री माय जगजगात असअजहरि बहु सेबिता॥

दो० मुनिसमझहु भलिभांति अब सोनरूपयदिआहिं।
तोषणता बिधि ध्यानकर रमितभयो मनमाहिं॥
अस श्री दुर्गा देबिवर जासु अंश लव एक।
हरि जे सोवहिं उदधि महँ उपजहिं एक अनेक॥

चौपाई॥

जैमिनि सुनहु गूढ़इह बाती। किमिहरिउपजहिंअगणितजाती॥

अखिला अमिता निराकारिणी। सदा एकरस कार धारिणी॥
रूप रहितजो ज्योतिकहाहीं। सब प्रकार बलआ जापाहीं॥
सो श्री दुर्ग्गा देबी आहीं। आदि शक्ति सो बिदितकहाहीं॥
सोइ शक्ति बलपुरुषकहावे। जाहि बेद पुनि ईश्वर गावे॥
सोइ शक्तिते उपजहि माया। जाते महत्तत्व पुनि आया॥
ताते अहंकार फिर आवे। पुनि ताते मह शब्द बढ़ावे॥
नभ आवतहै पुनि मुनि ताते। उपजत बायु पवन पुनिताते॥

दो० उपजत पावक वायुते ताते जल बहुआय।
पुनि आगे अस होवहीं सो माया बलपाय॥

चौपाई॥

सोई शक्ति जामाया माया। जासु प्रकृतिबड़नामकहायाँ॥
ताते उपजहिं तीगुण मुनि बर। सतरज तमइकतेइकबढ़कर॥
अहंकार आदिक जे आये। ते सब बाढ़हिं घाटहिं जाये॥
तीगुण बाढ़ घाट पुनि आगे। शक्ति अंश अस आवन लागे॥
ताते उपजहिं हरि मनुरूपा। पुरुष ब्रह्माण्ड देह अनूपा॥
शक्तिज तामस शक्ति सुप्रेरे। चेतहिं हरि जगरचना हेरे॥
सोइ सुरथअब देखहु आगे। तामस बल हरिजागन लागे॥
अहहिं गूढ़अति दुर्ग्गाचरिता। महिमा कौतुक पावन कथिता॥

हरिगीतिकाछन्द॥

पावन कथिता चरित्र दुर्ग्गा आदिशक्ति कहावहीं।
महिमा प्रतापप्रभाव अमितहुअगणित तत्वलावहीं॥
जाबल श्रीहरि बिष्णुनामते अगणजगत कहावहीं।
हीरा स्वामिनिसोइदविकहँ हरिआदिनितध्यावहीं॥

दो० बसुप बनिक अबजानहो आगिल कथा बिचार।
जिमि तामसी प्रतापते हरि जागे जगकार॥

चौपाई॥

भूपति देवी ध्यानहिं आई। अजमन हरष कहोनहिं जाई॥

ब्रह्म प्रफुल्लित मन न समाये। मनहु अन्ध दो लोचन पाये॥
मूकहिं बाणी रसना जामी। पंगु पाद मय भय पद गामी॥
शवतन माहिं प्राण मनुआये। मनुज देहमनु अमरहु पाये॥
तपसी तपकर फलतुर पावा। पुनिमनुजिन फल याचतलावा॥
अजहरि लखहिं रूपकस गावें। आदि शक्ति जोवपुअस लावें॥
भावे देवी निजमुख जाकहँ। बूझन कोहै बुधिअस कापहँ॥
नहिं शारद को शेष गणेशा। जो सक बरणो रूप नरेशा॥
याते तासम सोही रूपा। कहिन जाय कसआहिं अनूपा॥
एक अखंडनि आदिनि माई। रूप रहित असरूप दिखाई॥

दो० मुनि असहरिज अजदरशन दीन तामसी आय।
योग शक्ति तब लीन्ही खींच बिष्णुते माय॥

चौपाई॥

उदधि शयन हरि जागे कैसे। उदयाचल ते दिनपति जैसे॥
बिधिबिस्मयशशिछपहीं तबहीं। दानव तेजहु उड़गण सबहीं॥
तिन कर नयन उलूक समाना। सूझहिंकछुनहिंहिय महँज्ञाना॥
तिनकर मरणबीतिनिशिमानो। अज जीवन सुखबासर जानो॥
अजहियबिकसहिंकमलसमाना। रबिप्रकाश जगरचना जाना॥
बिधिबिधि जीव देह सबआहीं। मनहु काक बहुबोलत जाहीं॥
बनिक सुरथ इहकथा अनूपा। रूप रहितपर सहित सुरूपा॥
पुनि सुनहो शुभकथा पुनीता। निजतुषतालगि भक्तिसनीता॥

दो० आदि शक्ति परमात्मिनी श्रीदुर्गा जग रूप।
कोतुकिनि श्रीसनातनी कारण कार अनूप॥

चौपाई॥

करत शयन तबतो हरि जागे। लोके मधुकैटभ निज आगे॥
दैत्य दुरात्मन दुष्ट दुबीरा। पराक्रमी अति बहु बलधीरा॥
नयन अरुण पति कोपहिं मारे। निरखत जिनकेमृत्युमनहारे॥
फरकत अधर नासिका फूले। निर्भय बहुत बहुत अनुकूले॥

रूप डरंकर घोर कराला। मनु खेलहिं दोदेही काला॥
विधिकहँ भक्षण तिनकरकाजा। यद्यपि मोक्ष पावहीं राजा॥
कमलापति जब सोवत जागे। निशिचर दोऊ जूझनलागे॥
शंख गदा चक्रहि हरि फेरे। मधुकैटभहु शस्त्र तब प्रेरे॥

लवायीछंद॥

फेरहिं फेंकहिं शस्त्रअस्त्रबहु करि लीला दनुज करी।
भांति भांति आयुध प्रचारहीं चार केवल धर हरी॥
गिरहिं परहिंपुनि उठहिंपुनि पुनिभिरहिं आयभयंकरे।
मनहुं काल दोरूप धारि कर कालहु ढिग समर करें॥

दो० नृपति इहिविधि लड़त लड़त बीतगयो बहुकाल।
हारे हरि करि युक्ति बहु मरहिं न दुष्ट कराल॥

चौपाई॥

मरहिं न दानव लरहिं अनूपा। हरिविस्मितजनुविस्मयरूपा॥
अनमनमहँ तवसुमिरहिं माया। करहु देवि अब तुरतीं दाया॥
देवी तामस आया कोही। निजमायासों असुरविमोही॥
तबतो निशिचर भाषहिं नाना। गहहो हमकहँ हरि बलवाना॥
तब बोले हरि गरुड़ सुकेतू। तोषहु हम कहँ हमरे हेतू॥
दैत्य भये तुम भल बध योगा। इह महँ वरमहँका संयोगा॥
निशिचरकहजहँ महिजलनाहीं। मारहु हमकहँ हरिता ठाहीं॥
जयजयदेवि आदि जयदानी। जय जय दुर्ग्गेआदि भवानी॥
सुमिरि वेग अस देवि भवानी। शस्त्र चलाये हरि सुखमानी॥
वंधे दानव शीश नृपाला। बधित भयेदोउ दुष्ट कराला॥

लवायीछंद॥

भये बधित दोउ दनुज तबहीं गिरतोयनिधि तलमले।
जनु पहार दोउ सपक्ष कज्जल वारि निधि बूड़े भले॥
जयजयदेवी जयतिजयतिहरि बबहिंबोलत विधिभये।
शक्तिप्रभाव बचेहरि इन कहँ बचाइ अज जगत अये॥

दो० जैमिनि मुनि इह लोकहो दुर्ग्गा देवि प्रभाव।
मधुकैटभहिं विष्णु हते अजको भयो बचाव॥
लखत बधेहरि निशाचर आदिशक्ति बलपाय।
ठानी ब्रह्मा स्तुति पुनि सेवा हरषि जताय॥

चौपाई॥

जयतिजयतिजयजननिअनूपा। भवलयकारिणिप्रकृतिस्वरूपा॥
सतरज तम त्रिगुण नितधारी। जाते वैष्णवि शक्ति प्रसारी॥
जय हरि बोधनि कार शोधनी। समर क्रोधनी युद्ध रोधनी॥
जगदुख खंडनि विपति नाशनी। सनातनी सत्तज्योति काशनी॥
जय हरि माया शक्ति प्रचारे। मधुकैटभ सम कालहिंमारे॥
जयतिजयतिजय जगतसुरूपा। अवहोवहिंजगविदितअनूपा॥
जय जगपति भगवान कृपालू। कीन्ह कृपा श्रीसुखद दयालू॥
अब उपजहिं ब्रह्मांड निकाई। जिनमहँ रमणीशक्ति समाई॥
जयतिजयतिजयजयजगदम्बा। स्थितिशक्तिश्रीहरिअवलम्बा॥
जयजय भगवत स्थित सुरूपा। नामविष्णुसो रमण अनूपा॥

दो० सुभगस्तुति जोकीन्हअज मुनिनवोन इहनाहिं।
स्वारथ सेवा सकल विधि दरशतहैं सबठाहिं॥
पुनिहरिमनमहँ हरषिअति देविहि लायेध्यान।
आदि अनादिनि शक्तिश्री जा बल बिष्णुमहान॥

सो० जयति जयति जयमाय आदिशक्ति परमामहा।
नमहुंनमहुं बलदाय ममस्थिति तव भरोसबल॥
श्रीदुर्ग्गे सुभवानि प्रकृतितत्व गुणआदिकर।
स्वयम्रूपनितखानि जयतिजयतिश्रीदेविश्री॥

चौपाई॥

सुरथ वैश्य अस देवि प्रभावा। कालहिजीतिसकहिपदिआवा॥
तोहूनहिं. कछु बहुत बड़ाई। दुर्ग्गा महिमा रहन लुकाई॥
जब हरि दोऊ दानव मारा। हरपसहित अज रच संसारा॥

हरि पोषहिं सृज शक्तिहिं पाई। सो सबबिदित वेद श्रुतिगाई॥
यद्यपि देवी नित्या माई। स्वयम् रूपअस उपजकहाई॥
नहिं उत्पति जाकर प्रभुभूपा। भक्तन हेतु भई अस रूपा॥
गावहिं सब अस भक्तिहु पावें। सुर मुनि आदिक जेते आवें॥
हे जैमिनि अस मेधस गाई। वसुप बनिक प्रतिकथा सुहाई॥

लवायीछन्द॥

गाये अनुपम कथा सुहाई वसुप वनिक दोउपहीं।
ज्ञानी मेधस प्रीति पूर्वक नृपसमाधि जानसही॥
मुनिअसदेविप्रभाव गुणादिक वेदादिनहिंसकगने।
शेषशारद गणाधिनाथसब विधिहर शंकरादिघने॥
एकअनेक नाम नितजाकर भावराख अनूपही।
सो देवीकहँ जपहो नितनित गावाजस सुरूपही॥
सोमाया श्रीहीरास्वामिनि दुर्गानाम जगमहीं।
देहिंपदारथचारहुताकहँ लिखितयश जोभजकहीं॥

सो० चरित सुनहिं जेलोगतनमन हितचितलाइकरि।
पावहिंयश रणयोग अमलघु नहिंकछुजानपर॥
पावहिं भक्ति अनूप दुर्गामाया देवि कर।
नहिंकछु जगमहँऊपत्यागिशक्तिबलसबहिंमहँ॥

दो० गावहिं श्रुतिसुर आदिसब दुर्गाभाव अपार।
चारहु युग पुनिलोकती ज्योतिएक विस्तार॥
नितनित याचहुं माय यह देहु दयाकरिसोय।
चातकहीरालालहित स्वाति भक्ति तव होय॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्गायशः प्रथमकाण्डःसमाप्तः॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः॥

श्रीदुर्गायण॥

हीरालालकृत ॥

नवकाण्ड॥

द्वितीयकाण्ड ॥

सो० बसुधव बनिकअपार श्रीदुर्गा महिमाअमित।
प्रेमदमोक्षदचार सुन्दरशुभ अगणित चरित॥
जगत अनेकन्हमाहिं व्यापित नित्यप्रकारबहु।
देविरहितकछुनाहिंशक्तिरहितकछुरहितनहिं॥

चौपाई॥

जबअजअगणित जगउपजाये। हरिजगिसबकहँ पोषणलाये॥
सोसो भांति भांति निरमाई। विधि विधिवसुपतिबेदनगाई॥
कल्प एक बड़ दानव राजा। महाबली महिषासुर भ्राजा॥
भयो महिष सो इन्द्र सुरेशा। भये अमर बलहत बनिकेशा॥
बाढ़े निशिचर बहु बलपाई। नाशा कर्म्म तरंगन्ह छाई॥
अमर असुरबिच जुर कटकाई। भांति भांति अतिपरी लराई॥
घोरं कठोर डरद संग्रामा। प्रगटोशत बरशन्हपरिणामा॥
सुरप दिनप पावक धनईशा। पवनआदि यमउड़ रजनीशा॥
सब सुर रचना वशहो हारे। मानहुं जीव कालके मारे॥
निशिचर महिष भयोततकाला। अमरासुर करसुरप नृपाला॥

श्वानशब्द यदि गज गंभीरा । परनहिंबिहसहिंमनुजअधीरा ॥
दुष्ट उड़ावहिं रज शशिओरा । यदपिपहुंचनहिंनभढिगथोरा ॥
दो० सुरपासन आसीनतब महिष दैत्य बलबीर ।
रजधानी शुभविबुधपुरी भोगत सुखरणधीर ॥
करतरजायसुविविधविधि नवदेवन्हपरनित्य ।
अनल अनिल जल पालहीं महानआज्ञासत्य ।
चौपाई ॥
भ्रमहिं विबुधगण अवनी माहीं । मानहु मानुज तनधरिआहीं ॥
मिलिशुभ सुरशुभ मताबिचारी । चलहु विचारहुहरिकामारी ॥
जलजजनित अजकहँ करिआंगे । अपरअमरसब पाछिललागे ॥
रोवत धोवत पहुंचे जहंवा । शोभितशौरिशम्भुशुभतहँवा ॥
निज निज कथा कहन सबलागे । जाविधितेसुखसम्पतित्यागे ॥
शोच शोक व्याकुलता राजा । कलपनविलपनरोदनभ्राजा ॥
मानहुं विधि विधि वेष बनाये । पोषणमारन पहँ चलि आये ॥
मनहु अनेक मृगेश भजाये । भयशियार मनखाइ पराये ॥
बाज पक्षि जनु नृप बहुतेरे । अस सब आये लवा खदेरे ॥
दिनपति निशिपति तेज बढ़ाये । राहु केतु भयते भजि आये ॥
दो० जेंभिनि निजनिजकथातब सबसुरकहीसुनाय ।
कमलापति कैलाशपति विनयकरहिंहमआय ॥
चौपाई ॥
उमानाथ जलजापति देवा । आये हम सब महिषा भेवा ॥
हमविधि अमरप रविशशितारे । वरुण कुवेर अनिलयमसारे ॥
पावक जलनिधि आदिक यूथा । लघु महान सब अमरवरूथा ॥
निशिचर पाल महिषबलवाना । छीन्हलीन्ह सुखसंपतिनाना ॥
स्वर्ग लेइ तहँ जाइ विराजा । निडर निशंक करतहै राजा ॥
हरिशिवसबसुर ब्याकुलनाना । भ्रमहिंअवनिमहँमनुजसमाना ॥
सोसब याचहिं शरण सुहाये । महिषबधन जिमिहोमनभाये ॥

मधु कैटभ हत भयगे जैसे। महिष दनुजपति होवे तैसे॥
नहिं तर उलटी रीति चलाई। सरिता सागर जीतन धाई॥
खगपति भक्षण पन्नग धावा। करिमृगपतिकाहँचाहखावा॥

॥ हरिगीतिकाछन्द॥

खानि चहत जनु गज सिंहगणहिं खद्योत रबि मारहीं।
छत्रक दाँड़ी वेधहिं अविकहि दीपजलपति जारहीं॥
अस कस होत कृपालु ईशहरि सुनहु हमइमि गावहीं।
जासे मरहीं महिष दनुज अब सो विचार चलावहीं॥

सो० कस उलटी यहरीति जो निकसी हत भाग ते।
का फल रखनव नीति जो न फले अवसर परे॥

॥ चौपाई॥

जैमिनि इतमहंवसुपवनिकवर। कह मेधस सनजोरिदोउकर॥
अजहरि शंकर का मुनि राई। तिनकर रूप काज निरमाई॥
देव असुर कर अर्थ बताई। स्वर्ग नर्क समझाहु बुझाई॥
पुनि अरुइनकर बिषयन्हमाना। सकलकहहु जोहमनहिंजाना॥
भाषि मेधस ज्ञानद बाता। बुद्धि ज्ञानते जानहु ताता॥
अजहरि सृज पोषण स्वरूपा। उत्पति स्थिता शक्ति अनूपा॥
सो सब प्रथम कही मैं गाई। अब श्रवणहु आमिल अरथाई॥
शिव आदिक जे नाम कहावा। कविताजिमिशुभ रूपलखावा॥

दो० सो सत शक्ति संहार करभांति भांति वर रूप।
सामग्री सब काल इतन धरि इकत्र अनूप॥

॥ चौपाई॥

लोकहु हिय महँ ज्ञान समेतू। शिवमहँ सकल ज्ञानकरहेतू॥
पंचानन जो नाम कहावा। सिंह कर्म्मजनु कालदिखावा॥
भूतप्रेत जो संग रमाये। सोमनसा श्रम भय दिखराये॥
शव स्थान जो तिनकर धामा। सोसब भयद त्रास करठामा॥
मुण्डमाल भूषण अहि नाना। जीवघात कर सबसो ज्ञाना॥

नग्न कुभेष अमंगल दरसे। डर प्रद जीव घात हियपरसे॥
शंभु दिगम्बर नाम कहावा। मनहु काल अनजान धरावा॥
श्रोणिवार बहुसमझहिंज्ञानी। जब मनमहँ गतिबुद्धिसमानी॥
नृपये काल केर समटाई। जगतविदित जो नितदरशाई॥
इनकर शक्ति शिवा स्वरूपा। तामसि नाशनि शक्ति अनूपा॥

दो० तामस गुण संहारहै जाबल श्रीभगवान।
मधु कैटभ कहँ बध किये आगे भयो बखान॥

चौपाई॥

हरि सोवहिं पय सागरमाहीं। सो विराट जग तर्क कहाहीं॥
जगत रूप सो समर कहाई। मनुष रूप ले उत्तम राई॥
सोसमझहिंभलऋषिमुनिज्ञानी। सारसारले विविधि बखानी॥
प्रलय होय मनु सकलनशाई। सो पय सागरकथित कहाई॥
भावतत्व आदिक पुनि आहीं। हरि मनुरूपतबहिं जगमाहीं॥
स्वर्ग धाम आनन्द सुठामा। जहां महां सुख सबरह जामा॥
अपर कथा जो बरनहिं लोगू। सो कविता इतिहास सुयोगू॥
नरक नामअतिशयदुखधामा। सोसबविदितअवनिमहँ जामा॥
यदि वर्णन भलभांति न आवे। तो वर्णन कस शोभा पावै॥
अमर असुर जे नाम कहावे। सोसबविधि विधिमनुजबतावे॥

दो० देवन्हगणः बस नामहै बुद्धिमान बलवान।
ज्ञानवान जन रूपहैं गुणी सिष्टता मान॥
असुरन्हते अस जानहो मूरख रूप अमान।
हित अनहित नहिं जानहीं सदा ज्ञानकर हान॥

चौपाई॥

भूप सानु भव जग बिस्तारा। जानहु चेतन जड़हु प्रकारा॥
सकल तत्व पुनिती गुणआदी। घटत बढ़त होवहिं नामादी॥
गणना इनकर लकुटी नाना। तृणतरुआदिक आदिपखाना॥
धरहिंबिगरहिंनिजतिजरूपा। जस संयोग वियोग अनूपा॥

भाव सुभाव बनत जब आवे। तन बिराट सो अंश कहावे॥
तब जड़महँ चेतनता आवे। ताते जगत सजीव कहावे॥
कीट पक्षि पशु आदिकमाहीं। लोकहु समता ढिगढिगपाहीं॥
जिमिनिरखहुखरअश्वसमाना। गोरख रादिक पशु बहुनाना॥
दो० अस अस भेष दशा सकल सुधरत होत अनूप।
बाढ़त प्रकृति तत्वादिक मरकट हो नर रूप॥

चौपाई॥

यद्यपि बिगरहिं पुनिसोरूपा। सो बियोग कर दशा सुरूपा॥
ऊपर कर संक्षिप्त बखाना। समझहुमहिप वनिकभलनाना॥
अवसर पाइ शिष्टता दरसे। स्वारथ परमारथ भल परसे॥
दया मया करुणा रति चारी। आदिक दरसें तीगुण धारी॥
ताते प्राणी दोउ प्रकारा। देव असुर सो नाम प्रचारा॥
सत भाषण सतबरणत करणी। दया मयायुत जहँलगिबरणी॥
पर उपकार शिष्टता चारी। विविध गुणभिलजगविस्तारी॥
असगुण वारे जे जनराई। ते नर ऋषि मुनि देव कहाई॥
दो० करणी करहिं विरुद्ध जे सदा बनी गुणहीन।
तिनहिंअसुरबुध भाषहीं यहनितनीति नवीन॥

चौपाई॥

इन महँमुख्य गुणन्हकररूपा। जिनते उपजत जगत अनूपा॥
रवि पावक जल आदिस्वरूपा। बल गुण मयपुनिअपरअनूपा॥
बुध जन मति बशइनकरनामा। देवन्ह संज्ञा भई सुठामा॥
बनी अगुण जे हिंसक लोकू। निजअरथी करणी निजभोगू॥
तेनहिं देव असुर भल आहीं। जे नित रिपुता इरषामाहीं॥
ताते हो तिनमहँ संग्रामा। जबहिंशुभाशुभअवसरजामा॥
तामस बल जब दानव मारा। अज बल रचना भा सन्सारा॥
जस जसउक्तलिखित महिराई। सबसो सार अरथ मैं गाई॥
दो० बरणित रूप बिधानते जगत भयो बिस्तार।

बाढ़े खलनिज काजते बुध जन कर करिहार ॥
अवसरतेअस खलन्हमह महिषभयो बलवान ।
भये विवुधवुध हीनबल आगिलसुनहु बखान ॥
अस कबिता इतिहासकर सुखमा लोकहुभूप ।
बोले अमर अजादि गण मंजु विनय अनुरूप ॥
सो० हरिशिव कसकुप्रकार तुमजबहीं तवउलटअस ।
महिष दनुज संहार होवे जाविधि कहहुतस ॥

चौपाई ॥

लोकहु नरपति विपति बड़ाई । बल साहस सब देत नशाई ॥
भावी वश बल नष्ट कुकालू । आय परे यदि दुष्टन्ह पालू ॥
सत्य कहहिं बुध ईशहु भेवें । जाहि पराक्रम बाढ़नि देवें ॥
सत्य कहनि पुनिइमिजनगावें । खल जनते नितदेव डरावें ॥
रोगिन्ह पीरा सही न जाई । ओषधि यदि नहिंरेन मिलाई ॥
साकुलता प्रभात जब दरसे । ओषधि मिलत तोष तवपरसे ॥
निशिचर सिगरेऐसहिं भूपा । तिनकर बश सुर रोग कुरूपा ॥
देवी ओषधि नाशहिं रोगा । होवहिं भल सुर पाइ सुभोगा ॥
दो० सारतिबाणी कहहिं सुर अबविलम्बजनि होय ।
अति उत्कृष्टा शक्तिसों समरहि माहिषा सोय ॥

चौपाई ॥

नृप इतनो जब अमर सुनाये । माधव साधव कोपहि छाये ॥
कोप बढ़ो सो कहि नहिं जाई । कबहुन देखा सुना न भाई ॥
अमित कोप अतुलिततनधारी । मानहुं दरसे बिष्णु पुरारी ॥
पावक पावक अमित प्रकाशी । बरही सो ढिग मनु बहुराशी ॥
सुरपति आदि अमर सब जेते । कोपित भये बनिक सब तेते ॥
कोपित हरि मुखते महिपाला । निकसातेज महा बर ज्वाला ॥
कोपित शिवमुखताहि प्रकारा । अपर महा अति तेजनिकारा ॥
दोऊ तेज जुरे इक आई । सो प्रकाशकिमि बरणी जाई ॥

दो॰ हरिशिव तेजन्ह जानहो पोषण मारन रूप।
भयो मनहुं सुर पालना असुर संहारन भूप॥

चौपाई॥

दरस तेज कस दरसहि भूपा। उपमा कहुंनहिं दरस अनूपा॥
पर कछु समझहुमतिबशमाहीं। जस प्रकाश सोहत इहिठाहीं॥
अगणित रबियदिकहताकाला। तेजअमितकसअतुलितज्वाला॥
तसजलनिधिइवउलकाकहहीं। पावक पतिअतिमुर्च्छितपरहीं॥
श्रीपति सागर शय्यासाजें। तब जलजल परिपूर बिराजें॥
याविधि जहँ तहँजुराप्रकाशा। सुरनसकहिं लखजोइबिकाशा॥
अस प्रकाशयदि शीतहु घेरो। नहिं साहस पट ऊपरकेरो॥
आय परी सुखदशा तड़ाका। झिलमिलाहिंचखुनिरखतजाका॥

लवायी छन्द॥

लोचन झिलमिल निरखत तेजहिं अटपटाहिं प्राणी तहां।
जहँतहँ तिलइव लागतिमिर नृप सोहु अव पूरन चहा॥
हरि शिव पाछे कोपित सुर सब निकारे प्रकाश रवा।
मनहु महान प्रलय महिं स्वामी नीर हीन तेज भवा॥

दो॰ अस जलमहँ हरिरूपता जग बिराटकर मान।
इहते जन पुनि प्रकटहीं श्रीदुर्ग्गा जबध्यान॥
भूपति सुरपति आदिकर महा तेज सब आय।
जुरे एक महँ मिलहिं सब एकहिं एक समाय॥

चौपाई॥

भरुभरु भवपतिआदिक सारे। भिन भिन जेते तेज निकारे॥
आये मिलि सब एक विकाशा। कछु नहिंपरसब ओरप्रकाशा॥
सोसब मुनि किमि गावेजाई। कमलअरुणरवि शशि बहुताई॥
सो सब काश तेज महिपाला। श्रीदुर्ग्गा कररह बर ज्वाला॥
अगणितगिरिमनु तेजप्रकाशा। अगणित लोकन्ह तेजविकाशा॥
तेजहिं ते जनि रखिये भूपा। लोक रहित अति सोहअनूपा॥

जब सबतेज मिलो इकआई। अमरन्ह लोचन अस दरशाई॥
सुन्दरता आभा छवि ताई। तेज सिंगार काश मथ नाई॥
सर्व सारते निकसी एहा। अतिशय सुन्दर सुन्दरि देहा॥
बरणन ताकर होसक नाहीं। यद्यपि लोचन रसना पाहीं॥

हरिगीतिका छन्द॥

होवे कथनन मुनिबर नयनन्ह यदपि रसना लागहीं।
शारद शेष गणेश रसना रोम रोमहु पागहीं॥
निजपर तोष हेतु कौतुक लगि ज्ञानी सो मनमानहीं।
कसको ताकर बर्णहिं बरणन जो न आवहिं ज्ञानहीं॥

पद्मावतिछन्द॥

दरसीं श्री जननी तिमिर सुहननी सुन्दरता आभाधारी।
अपारविकाशनी सकलकाशनी अजआदिक सुरमन हारी॥
सो सदा निरूपा ज्योति अनूपा नित जन्म रहित श्रीमाई।
बुधजन तुष लागी मनमहँ जागी हीरा प्रभु नीरत आई॥

दो॰ असश्री दुर्ग्गा शक्ति कर रूप कहन कसजाय।
होत दोष यदि सत्यमहँ तौहुँ न बनतबनाय॥
मन तोषण भल होत है ऐसो रूप बखान।
जाते जन सुख पावहीं सुनके करिके ध्यान॥

चौपाई॥

सोदेवी अस रूप दिखाई। सकलबिबुधबुधनिरखहिंभाई॥
प्रतिसुरमुनिजनमनअसदरसी। तोष काम मनु लोचनपरसी॥
शंभु तेजजो निकसो राजा। ताते देवी आनन भ्राजा॥
अनल तेजते लोचन तीया। सन्ध्य तेजते भ्रू कमनीया॥
दशनन दक्ष तेज दरशाई। तेज कुबेर नासिका आई॥
पवन तेजते कर्ण लखाये। यम सुतेजते केश बनाये॥
बिष्णु तेजते भुजा अठारा। अष्ट बसूकर अँगुली पारा॥
इन्दु तेज दोस्तन विराजे। सुरप तेजते उदर सुभ्राजे॥

बरुण तेज जांघन्ह उरछाई। अवनि तेज नितम्ब दरशाई॥
पद दुइ ब्रह्मातेज बनाई। भानु तेज पद अंगुली पाई॥
इहिबिधिअपरअमरमुनिजेते। भाग शरीर भयो सब तेते॥
शिवा देवि अस दरसी आई। सो श्री दुर्ग्गा देवी माई॥

लवायीछन्द॥

सो श्री दुर्ग्गा देविमहा अति भेष अगणित करि धरी।
जब जब अमर पावहीं संकट स्वयम्जनित कर्म्म करी॥
शिवा स्वरूप साजि उतरी अस जाय सुन्दरी कस कही।
अजादि अमर बधू निज निजमन सकुचहिबिलोकहिंसही॥

दो० बनिक महिष पीड़ित अमर हर्षहिं बारहिं बार।
निज निज तेज प्रकाशते शिवा देवि लखि चार॥

सो० दुर्ग्गा मुख तिमिरारि अमर कंज विकसे सकल।
कुमुद पुहुप अमरारि सकुचहिं निरखत भेष भल॥

चौपाई॥

मुनिबर बोल उठे बसुराई। सुर देहन ते कस श्रीमाई॥
कहहु गूढ़ता मुनि समुझाई। मेधस बोले अति हरषाई॥
बार बार बसुधव मैं गाया। वैष्णव शाक्त्य दुर्ग्गा माया॥
ईश सोइ बल विष्णु कहावे। सब व्यापी सो शक्ति लखावे॥
जब अस होवे भाव प्रकाशा। नहिं सन्देह रहा तम नाशा॥
सुर नर आदिकजड़चेतन सब। तिनमहँ शक्तिरहीव्यापितजब॥
सो अमरन्ह कर बरबर देहा। प्रकटो तेज महाबल एहा॥
मनतोषण लगि ध्यानसमावा। प्रकटो रूप शक्ति दरशावा॥

दो० जनपति जानहु ज्ञान हिय भिन भिन विबुधन्ह नाम।
भिन भिन सो बल रूपहैं भिन भिन तिनकर काम॥

चौपाई॥

जस लोकहु शिवशक्ति जु आहीं। बल संहारन काज कहाहीं॥
जाकरं देवी मुख श्रुति गावा। सोमुखअरथ जगतबधखावा॥

विष्णु शक्ति जो थिरता गाई। थिरता निजबल असदरशाई॥
सदा रहत बल भुजा सुरूपा। सोइ भरा आभुजा अनूपा॥
कान सुनत जग भुजा सहाई। कर्ण नाम सो देवी भाई॥
लोक लोकहीं प्रकाश द्वारा। लोचन ताकर ठाम प्रसारा॥
सो प्रकाश है अनिल स्वरूपा। सोइ नयन भा दरस अनूपा॥
नृप संक्षेप कहहुं मैं गाई। समझहुपर सुरमहँ असलाई॥
दो० भाष आव अस ज्ञान महँ समझहु भांति विचार।
सुखकविता इतिहास कर वुधवेदन्ह विस्तार॥
नहिंतर इहसब व्यापता व्यापरमी सब माहिं।
सो दुर्ग्गा श्री शक्ति है रत बश रूप लखाहिं॥
अनुभव कर इहि काजहै शक्ति वृद्धि जब होय।
सुरते बल महँ निम्र जे दनुज हतन तब जोय॥
चौपाई॥
पुनि श्रीदेवी कौतुक कारी। सुर नर अस्त्र शस्त्रसब धारी॥
शिव निज शूलत्रिशूल निकारी। दीन्हे देविहिं सो ले धारी॥
हरि निज चक्रहिं चक्र उपारी। दीन्हशिवा कहँ सो ले धारी॥
वरुण शंख देवी कहँ दीन्हा। पावक शक्ति सु देवी कीन्हा॥
पवन चाप दय निषंग बाणा। इन्द्र कुपिश ते वज्र सुआना॥
दीन्हा घंटा गज प्रचण्ड सों। दीन्हिदण्ड यमकाल दण्डसों॥
दीन्ह सुपासहिं सरिता पाला। विधि कमंडल अक्षन्ह माला॥
दीन्हादिनप किरण निज माला। कालखंग मणि जटिता ढाला॥
दो० भिन भिन अस्त्र शस्त्र शिवा लेत लेत शोभाय।
मानहुसुखमा कमारस सोह सर्व्व समटाय॥
चौपाई॥
जलधि बसन शुभ भूषण नाना। मुक्ताहार बसन नव आना॥
दिव्य दिव्य चूड़ामणि भाये। कुण्डल कंकण बहुत सुहाये॥
निर्मल अर्ध रजनीश प्रकारा। भुजा बन्द लगि भुजा अठारा॥

पदहित नूपुर विमल सजाये। ग्रीवा भूषण भिन भिन लाये॥
सतलड़ पचलड़ आदिकनाना। दीन्हिनीरपति शुभगसुहाना॥
कर पद अंगुली लगि बहुतेरी। रत्नजटित मुद्रिका घनेरी॥
विमल परशु सब अस्त्र अनेका। अविकन्हजटित कवचबहुतेका॥
कवच अविक जो भेद न जाई। महा देवि कहँ दीन्हे लाई॥

दो० पुनि तोयाधिप दीन्ह बर पंकज मस्तक लागि।
वारिज विकसित हारशुभ उरशोभे जनु आगि॥
स्वयम् रूप श्री सुन्दरी आभूषण वसनादि।
धारी सो नहिं शोभिता शोभित भूषण आदि॥
भूषणादिक कमारहित सुखमा सुन्दरि केर।
पाकरि निज निज ठाम वर शोभित अकमाहेर॥
प्रथम काश महँ सुन्दरी रही तेज बहु व्याप।
धारी कारण रूप अस लखहिंअमर हिय आप॥

चौपाई॥

वारि नाथ पुन कर लगिदीन्हें। विधिविधिनीरजसुन्दरकीन्हे॥
वाहन सिंह रत्न शुचि नाना। सोसब सादरहिमपतिआना॥
धनपति लाये मदिरा पाना। सुन्दर पूरण वासन नाना॥
अहिपति निर्मित भूषण माला। जटित महामणिदीन्हें काला॥
जाकहँ कछुन न्यूनता राई। सो सुन्दरि सुरदीन्ह बड़ाई॥
कौतुक बड़ यह अचरज आवे। कबहुंकसरितहिंजलनिधिधावे॥
नहिं नहिं कबहु न ऐसो होई। सुरन्हध्यानिरतिकारणसोई॥
बड़ भागी सुर देविहिं साजें। रंग गेह आकल्प बिराजें॥
नृप यह शेष वेद कस भाषे। अगणितजगनिज ऊपरराखे॥
इहि विधि अगणित सुर ते पाई। अगणितभूषण आयुध छाई॥
मानो सुर देबिहिं सन्माने। सेवा निज हित हेतु जताने॥
कृपा करी अस माया राई। आरति वाणी सुनिइम आई॥

दो० आदि देवि स्वरूप धरी सोकिमि वरणीजाइ।

शारद शेष गणेश बहु मूक होहिंमुख पाय ॥
सो महिमा कछुबहु नहीं दुर्गाढिगअसबात ।
अतुलितमहिमाकन्दनीहीरास्वामिनिख्यात॥

चौपाई ॥

हे मुनि सोकिमि जायबखानी । अतुलितअमितकमाजिनआनी॥
अमित तेज जिन क्षणउपजाई । सुखमा आभा सुन्दरताई ॥
अमित क्रान्तिरविशशि बहुतेरे । उड़गण आदिक अनल घनेरे ॥
इन कर सार मूल जिन जाई । ताकरबरणनकिमि कहिभाई ॥
इतनो महँ जब रूप बनाई । सुर नरइव पुनिसुन्दरि नाई ॥
सुरनरगणअस समझमहीशा । निजस्वरूपसमपरनमुनीशा ॥
जब अब आदि मूल दरशाई । रूपवती सोकिमि कहिजाई ॥
शेष शारदा वेद गणेशा । देख देख हों चकित नरेशा ॥
कोऊ पोछे कहहीं काहा । मूक पोव जिमि सुधा सराहा ॥
भाषहिं इन सम येही देवी । उपमा नहिं हम आहीं सेवी ॥
भुवन चार दश तीनहु काला । चारहुयुगजहँलगि इहिहाला ॥
कतहुंन दरसो अस सुन्दराई । जस जगधारिनिदेवि सुहाई ॥

लवायीहरिगीतिकाछन्द ॥

जिमिजगदम्बा जननि सुहाई स्वरूपन जायकही ।
रूप परमता आदि सारते मथित रमा मूल सही ॥
मूकसुधागुणजानहिं नहिंयदिसुरसुरपतिनिमांगहीं।
हम महँ जेते रोम देहमहँ नयनअगणित लागहीं ॥
दो० वसुप बनिककछुबहुत नहिं इतनो यदिदरशाहिं ।
आगणित्य आमित्य अस जो करहीं क्षणमाहिं ॥

चौपाई ॥

मुनियदिलोकन्हकरहिं बिचारी । उपमा सकुचिकहत मनहारी ॥
सो सब जन मन तोषण लागी । नहिंतर कहसककोअसभागी॥
परम रूप यदि धरे पुरारी । छवि होवे मनोज रिपुनारी ॥

सुन्दर बल जाते सुत होहीं । गजप्रकाशशिरगणपतिसोही ॥
याबिधि अगणितउपज गणेशा । गावन देवी रूप नरेशा ॥
परम रूप यदि बिधि अवतारी । आभाहो अज बचन सुखारी ॥
वचन उपजक्रान्ति सुन्द राई । जाकर शारद नाम धराई ॥
याबिधि शारद हो बहुतेरी । कहन रूप गुण माया केरी ॥

दो० परम रूपता लेइ करि उपजहिं अगणित शेष ।
छबि सुखमा गण आदि कर रसनालाग अशेष ॥
इहि बिधि अगणित शेषनृप उपजहिं गावन रूप ।
जग मूला श्रीदेवि कर जो जग जगत अनूप ॥

चौपाई ॥

छबि सुन्दरता महिप सिंगारू ।सुखमामिलिअगणितश्रुतिचारू॥
देविरूप गुण वरणन लागी । निज हित हेतु सुहावहिंभागी॥
अस गणपतिश्रुतिशारदशेषा । अगणित सारसहित मयभेषा॥
पुनिऐसहिबुधिबल गुण राखें । सार ज्ञानकर रुचि करि भाषें ॥
निज सुन्दरता आदिक शोभा । शोचिशोचितजिनिज गुणलोभा॥
अस इनके सब रोमन्ह माहीं । इक इक रोमहिं लागत जाहीं ॥
अगणित लोचन रसना भूपा । लोकन भाषण लोक अनूपा ॥
राग रागनी षट षटतीशा । अन्य रागनी विविध मनीशा ॥
ऊपर वर्णित शारद नाना । अहिपगणप श्रुतिआदिसमाना॥
उपजहिं आवहिं धारहिं देहा । देवि रूप छबि गावन एहा ॥
तवश्री दुग्गी शिवा स्वरूपा । अब जस शोभित दरसअनूपा ॥
ज्ञान शक्ति जो जगत कहाई । इनकर मथिमथि सार कढ़ाई॥
सकुचत बोलहिं शोचविचारी । तवकहुं व्याजहिं पाय बिगारी॥
चाहे व्याज व्याज लघु आई । माया रूप सकहिं कछु गाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

सकहिं गाय माया स्वरूपहिं कछुक बहुत विगारके ।
असरीति लिखित शारदादिक रागादिक प्रकारके ॥

आदि मध्य अवसान हीनता गुण अनूपहिं राखहीं ।
जबसबहारे तब कस हीरा स्वस्वामिनिहिं भाषहीं ॥

दो० श्री दुर्गा दुख दाहनी आदिनि शक्ति अनूप ।
सनातनी सत धामिनी दरसी सुन्दरि रूप ॥
श्री चण्डिका देवि शिवा माया अमित अपार ।
अतिकृपाला कारुणिका सहित रहितविस्तार ॥

चौपाई ॥

नृप प्रत्यक्ष अस बात कहाई । जगमाया गुण गाय न जाई ॥
जगत सृष्टि महं अगणितप्राणी । अगणितवस्तुआदिसुखदानी ॥
अगणित सुखदुख भाव सुभावा । गुण द्वारा बहु काज लखावा ॥
अगणित कीट पतंग लखाहीं । बहुप्राणी जलथल नभआहीं ॥
अगणित रवि मंडल बहुतेरे । अगणितजग ब्रह्माण्ड घनेरे ॥
अगणित पुस्तक वेद पुराना । ऋषिमुनिकीन्हेंविधविधिनाना
तौहु न पावे माया पारा । जो जा जगदरशन विस्तारा ॥
पुनिनहिं पावहिं मुनिकभुआगे । अज हरि शंभुहु हारन लागे ॥

दो० सो महिमा कछु बहुत का आदि शक्ति श्री देवि ।
उपजहिंअगणित अजादिक जाकहंनितनितसेवि ॥

चौपाई ॥

जाकहं विधिविधिवेद पुराना । नादि नेतिकहि गावहिं नाना ॥
जाबल आदि पुरुष जगरूपा । शक्ति भरित अस ईश अनूपा ॥
सो अस देवी ध्यान अशेषा । प्रगटी सुन्दर सुन्दरि वेषा ॥
कचकारे अति भाल विशाला । जहंबस महाबुद्धि बरज्वाला ॥
तीन अरुण मद माते नयना । तीनकाल प्रकाश मय अयना ॥
भृकुटी बंका अति बंकाई । काल भयद जो जगत नसाई ॥
लाम नासिका तीन सुवासा । सुन्दरश्रुतिअतिपवननिकासा ॥
अरुणा रसना गतिकर दोऊ । विविधिविधिस्वादरूपलगसोऊ ॥

दो० सुन्दररदच्छद अरुणअति सुन्दरदशनन्हश्वेत ।

रसना मिलि मुख भक्षक जग अनेक लै लेत॥

चौपाई॥

अरुणपीत अतिश्वेत कपोला। अपर ओष्ठ चिबुक शुभ खोला॥
सुन्दर ग्रीवहु बहुत सुहाई। सकल मधुरसुर ठाम दिखाई॥
हृदया फूल भरे सुन्दराई। जग निरोगता तिन महं आई॥
भुजा कन्ध नृप सोहहिं कैसे। बल समूह पूरण लख जैसे॥
शोभित बहुत सुबाहु अठारा। सकल शक्ति बलसो विस्तारा॥
उदर नाभि अति सुन्दरनाना। जग जीवन भक्षण कर थाना॥
नितपतरी अति कटिसुन्दराई। दृढ़ता जगकर सोइ बताई॥
सोहत जांघ पाद भल दोऊ। उपजनाश जग चालन सोऊ॥
दो० करपद अंगुली सोहहीं पोर पोर नख जाति।
सकलशरीर सुगौरवर कर प्रकाश शुभ भांति॥

चौपाई॥

बहुरंगी कंचुकी सुहाई। नीलाम्बर धृत शोभा छाई॥
मणि अविकन्हते वसनजड़ाये। लपटे माया माया छाये॥
विधिविधिभूषण जटितसजाई। सोहत जगत जगत चतुराई॥
सो सब जग बन्धन वसुराई। मोहादिक माया गठनाई॥
धारी शस्त्र अस्त्र इक एका। जाते रक्षित जगत अनेका॥
वाहन सुन्दर सिंह विराजी। मनहु काल मस्तक पर भ्राजी॥
सकल शरीर उड़त महकाई। प्राणाश्रय सो जीव जनाई॥
सादि अन्त लगि शोभानाना। सो सब संचिहुमुनिधरिध्याना॥
दो० भूषण महं मुक्तावली नखनख अंगुरिन्ह माहिं।
झिल मिलाहिं मुक्तासब नखप्रकाशअधिकाहिं॥
अंग अंग अविकावली बहु प्रकाश चमकाहिं।
अंगकाशमहँ तिमिर इवछाइ छबितिन माहिं॥
भूषण शिर कुण्डलकरणरवि हासकभलभांति।
मुक्तावलि अविकावली हेमहिं मणिसब जाति॥

अबिक जटित नीलाम्बरी रंगी कंचुकिनिकाश ।
दुर्ग्गा शक्ति अनादिनी स्वामिनि हीरादास ॥

चौपाई ॥

दोउ कपोलन्ह दशनन्ह माहीं । रसना गतिमनमाहिं लुभाहीं॥
लोचन पूतरि डोलनि नाना । मोह देह यदिवरछि समाना॥
चढ़नी उतरन भृकुटी बंकाई । सोई तन हिय शरभिद जाई॥
फूल नासिका वारम्वारा । सालत सोई तन हिय सारा॥
नखशिखपूतिपूतिअंगन्हमाहीं । बहु कटाक्ष ते तन मुरछाहीं ॥
दाहिन चरण आड़ लटकाई । पर षद पर सोऊ मुरकाई ॥
इक अंगी मृग नृप आसीना । सो बैठनि लखि मनचितहीना॥
रवि शशिरसनायदिजमजावे । अमित अरुणपन रसना छावे॥
अस जिह्वा कहं मुरछा आवे । दाहिन पद तरुवा लखि पावे ॥
कहंलगिज्योतिहिंकरहुंवखाना । जाकहं आदि देव नहिं जाना ॥
पातकि बरु हरि पदवी पावे । दुर्ग्गा शक्ति बखान न जावे ॥
जबअसतब्र कहसक को बीरा । कस कहं सकही वपुरा हीरा ॥

लवायीछन्द ॥

सकही कह कस हीरा वपुरा कीट पातकि जग मही ।
माया दुर्ग्गा शक्ति आदिनी तासम ता देवि सही ॥
तोहु ताहि प्रभुता कछु नाहीं रोम रोमन्ह नित धरे ।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड भारी अगणितअमित नित भरे ॥

दो० तिनयना भुज अठारनी सिंह वाहनी माय ।
शस्त्र अस्त्र बहु धारनी नीलाम्बरी सुहाय ॥
आदिज्योति असध्यानरत लखिहरिआदिकभूप ।
विनती भाषे जोरिकर शुभ गति प्रदा अनूप ॥

तोटकछन्द ॥

जयजोति अनादिनि देविसदा दुरगेदहनी जगकाल यदा॥
तव आदि मध्य अवसान नहीं घटवाढ़ नहीं तवएक सही ॥

नितजागतिजोति धरीजननी जगजाल कुरोग सदाहननी।
बहुकालहिं भोजसदाकरनी जिहिते जगहोत सदाभरनी॥
परमा सतदा वरदा जनदा जियदा सुखदा वितदा अनदा।
महिमानहिं पारकहा लखही तवमातु कृपा नहिं आचखही॥
यदिदेवि दयाकरि सोहरही दुखटारहु मातु हमार यही।
महिषा सुर सेन समेत जबे क्षण मारि प्रसीदहु मायतबे॥
चौपाई॥
जयजय जयजय जगदा धारा। क्षणमहंकर अगणितसन्सारा॥
विष्णु रूप जो ईश कहावे। आदि ब्रह्म जाकहं जग जावे॥
जाकर शक्ति सुबाजहु माता। तवबलविष्णु अहहींजगत्राता॥
जगत विष्णु अस ईशभवानी। सृजत हनत जगतवरुखजानी॥
अगणित काल खाहु क्षणमाहीं। सुर रिपु वपुरेका तव ठाहीं॥
मारिखलन्ह अवतारहु अम्बा। मरेमहिष खल होन विलम्बा॥
भृकुटीलय खलगण मरिजाहीं। पर नहिं अम्बा अस नहिंचाहीं॥
रणकौतुक सुखयाचहिं धरणी। जाते तव गुण हो जग तरणी॥
दो॰ हम अज्ञानी मूढ़ अति कछु नहिं जानहिं आन।
जयजय भाषहि हेतुलगि वारहिंआपन प्राण॥
सो॰ लोकहु नृप अस देव मायहिं भूलहिं पाय सुख।
कोरी इनकर सेव सत्य होत बर मातु ते॥
हरिकर उपमा लाइ टालत साधन काज सुर।
थोरे महं गुण गाइ रिझावहीं जग अम्ब कहं॥
पर यह है सतभूप श्री दुग्गा श्री ज्योति जग।
ऐसी मातु अनूप तौहु न कछु अचरज इहां॥
सत्य कहहिंसब वेद जड़तावश हो तर्कना।
इनमहं वेद नभेदभेदयही श्रीज्योति जग॥
चौपाई॥
छटा मातु कर परी घनेरी। झलकत इतउत विधिवहुतेरी॥

सुरसुरतियछबि महं लगिजाई। भइगति लाज वन्तिहरियाई॥
आरति वाणी सुनत भवानी। मधुर कण्ठ ते मंजुल वाणी॥
भाषी अम्बा हरि शिव सगरे। कछु भयनाहिंबनेबरु बिगरे॥
मन महं धीर धरहु इह ठाहीं। कौतुकभल्लनिरखहुरण माहीं॥
रक्षा करिहौं तुम सब केरी। पण मम देव यूथ नित बेरी॥
मधुरी वाणी देवि सवांगी। अमृतकमलकलिन्हझड़लागी॥
आहट कस मृदु करण सुहाये। सुरमय शब्दमधुर सुनिआये॥
भगवति मालिनि जगदाधारा। तापविबुधगणविविध प्रकारा॥
पुलकित निज अरथी सुरयूथा। मनु नृपतरुहंसिखेल बरूथा॥
फूले मनमहं वत्स समाना। जनुगोचाट तिनहिं मनमाना॥
इत महं गरज़ उठी जयरूपा। साहट बलमय भांति अनूपा॥

हरिगीतिकाछन्द॥

साहट बल मयसाहट विधिते गर्ज्ज हो श्रीमायके।
अतुलित नभ महंदामिनिघनजनुफूटटूटहिं आयके॥
बारबारअसशब्दहोत बहु असुरप्राण पयानहीं।
मानहुपन्नगभाजहिंविधिविधिगरुड़ाहटहिंजानहीं॥

दो० भगवतिवाहन सिंहतब गरजेसि शिरकचझार।
असुरनारि सुनि पारहींनिज निजगर्भ्भ प्रसार॥
देवि कृपा वर पायके सुर कहं नहिं असह्यानि।
व्यापीताहीसमय महं जन जानहिं जिनज्ञान॥
अस मुनि बरदेवी शिवाशोभित अमित्त अपार।
ऊंच ऊंच सुर बलहिं बलगरजत बारम्बार॥

चौपाई॥

गरजी तरजी बहु गुहराई। मनुरतिसिंहनिअगणितआई॥
महा अमितअतितासों अमिता। शब्द करे बहु कोपहुसहिता॥
अगणित लोक उठे तब कांपी। अतुलगगणमहंआहटव्यापी॥
कापहिंसागर डोलहिं धरणी। गिरिडगहींउड़निशपतितरणी॥

जैमिनि कांप उठे दिगपाला। भाजे धीरज साहस काला॥
नृप इतनो कछु बहुतन ताके। काल कोप बहु सेवक जाके॥
सुर मुनिमुदमनअस्तुतिकरहीं। जयतिजयतिजयबयनउचरहीं॥
गावहिं मंगल जय रणगीता। सहितरहितभयभीतसभीता॥
दो० आदिनि शक्ति प्रभावते उपजाई बहु सेन।
अगणित सुन्दर सुन्दरी मानहु रती अबेन॥
नृप यदिथे नहिंजूझहीं अम्ब अगमणि माहिं।
मुकुरमुकुरमहंतुल्यसोंजहंतहंअतिझलकाहिं॥
सो० भांति भांति चिंघार बाज जुझाऊ बाजहीं।
रण शोभा नहिं पार शस्त्र अस्त्रबहु डोलहीं॥
चौपाई॥
शोभा लखि शारद सकुचावे। बीरहु रस मन मीच मनावे॥
शब्द सुनत महिषासुर कोही। कहा कहा करि धावा द्रोही॥
सुनिसुनि आहट अमित घनेरे। धाये यामिनिचर बहुतेरे॥
नाना अस्त्र शस्त्र सब बांधे। रण बिद्यागुण दृढ़तासाधे॥
दरसहिं मानहुअगणितकाला। रूपअनूप विकट विकराला॥
मानहु चाहहिं अगणित लोका। भक्षण क्षणमहंसोचनशोका॥
लोका महिषभवानि विकाशा। अगणितलोकन्हभराप्रकाशा॥
काल काल प्रद आहट करई। शब्दप्रकाश श्रवणलखपरई॥
निरखत असुख सांसा भरई। शिवा ताकिमनु कालनिबरई॥
रवि शशि कम्भुनराहु डरपावा। यमकरडरनितअधीन आवा॥
हरिहिं डरमधु कैटभ नाहीं। कनक कशिपु प्रहलादपपाहीं॥
मीन केतु शिरडर नहिं आवा। जस महिषा मनमहं घबरावा॥
लवाणीछन्द॥
घबरावा व्याकुल महिषा सुर कहा कहा काह भयो।
हतेउ कछुहु नहिंअचहिं अवहीं प्रकाश अमितकसअयो॥
धावहु सुभट जारहु प्रकाशहिं शब्द रोकहु क्षण महीं।

नतु सबहिंजीवत काल भक्षण दैदेहुं बिलम्ब नहीं॥

दो० हे अवनिप सो देवि तब सोह मध्य रण ठाम।
पदप्रकाश वसुधा दबी मुकुट रहो नभ थाम॥

सो० सोमुनिलखहुविचारिनभतमहिलगिदरस अस।
जगत व्यापता धारि सर्व्वव्यापिनीमातुअस॥

चौपाई॥

महिषायसु पा सुभट करारा। गहिगहिआयुधविविधप्रकारा॥
साजि कटक भयप्रदबलभारी। देवी पहं आये खल झारी॥
जगदंम्बा कहँ लोके कैसी। दीप शिखा यम गृहबरबैसी॥
निशिचर जरहिं पतंग समाना। पावहिं मुक्तिविना रतध्याना॥
वीर रूपिनी सोह अनूपा। जो कालन्ह करकालस्वरूपा॥
ताकहँ देखा महिष कटकजब। खावहिंमुरछा रजनीचरतब॥
गौर सुवरण रवि शशिमूला। धारी शर आदिक तीशूला॥
अविक जटित भूषण नवसाजी। नीरवसन कोमल वपुभ्राजी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

नील वसन कोमल वपु साजी हेमवरण सिंहासनी।
जलज रूप मुक्ता जनु झरहीं मंजु महान भाषनी॥
निरखिनिरखिखलदलसबमोहहिंसँभरिसँभरिदहारहीं॥
स्वरूप अगणित महापूलय मनुभखन चहनभधारहीं॥

दो० कटिलचनी चखु मारनी भृकुटि चघावनि साज।
आयुध सर्व्व संभारकरि उछ लाई मृग राज॥

चौपाई॥

सुनि सुनि देवी नभ टंकारा। वधिर होहिंनभपंताल सारा॥
सहसन्हभुज मनुसबदिशढांपी। शस्त्रअस्त्रगहिदिकसब व्यापी॥
याविधिदुर्गा व्यापिनि भूपा। अखिल जगत रक्षा स्वरूपा॥
अस देवी सन परी लराई। निशिचर गण भिरगे तबआई॥
महिष कटकपति चिक्षुर एका। सपर दनुज बहुवाजि अनेका॥

साजि साजि चतुरंगी सेना। भिरे शिवासन रणहिं गयेना॥
षट रथ एक जोरि बल चारी। उद्भग दानव भिर रण भारी॥
सहस रथन्ह जोरे महिपाला। दनुज महा हनु लड़ताकाला॥

॥ लवायीछन्द ॥

दनुजमहाहनु लड़त भूमिरण दनुज माया बहुकरी।
मनहिंमनहिंमुसकुरातमातानिरखिसाहसबलभरी॥
कुशब्द उचारहिं मुक्तिप्रदाकहँ भाषत सो दोषपरे।
सोनहिंनृपदोषिहु कस लागत पावहिंमुक्तिखलतरे॥

दो० पांचसहस पुनि सहस्त्रषट एकसहस रथ जोरि।
आसलोमा बड़ रजनिचर लड़संग्राम बहोरि॥

॥ चौपाई ॥

बहुतप्रकार सहस वर वाजी। अगणितसहसन्हकरिवरसाजी॥
कोटिन रथमयवाष्कल असुरा। करत युद्धदेवी सन बपुरा॥
पच शत जोरित रथ बहुतरे। असुर विडाल लरत दल घेरे॥
इहिविधिअगणितकठिनकराला। कोटिकोटिभिरनिशिचरकाला॥
अगणित अस्त्र शस्त्र संवारे। जूझहिं भांति भांति अतिकारे॥
महिरण छाय रहा अँधियारा। तामहँ मातु प्रकाश प्रसारा॥
मार मार कहि रिपु गुहराहीं। सुनहिं न कछुरवतेरण माहीं॥
रण शोभा कस जाय बखानी। लड़ बहुकालकालनिजजानी॥

॥ हरिगीतिकाछन्द ॥

काल लड़हिं निजकाल जानिजिमि एक अनेक धावहीं।
अगणितआयुधजे रिजोरि बर खींचि खींचि चलावहीं॥
सकलअमरगणमुदितभीतिसह कौतकविहँसिदेखहीं।
कभुजयजयकरिकभुविस्मितहो भागसुफलितलेखहीं॥

सो० मारमार खल भाषि असलेखन महँ बज्रपरे।
क्षमाप्रदा सुख राखि क्षणोलइ चलहलेखनी॥

दो० रणमहँदेवी सोहअति दामिनिदमक घनेरे।

असुर कटक तम रातिमहँ मोहहिंसुरबहुतेर ॥

चौपाई ॥

सुरथवनिक जबविविधप्रकारा। जुरे भिरे अविबुध बिकरारा॥
अतिकठोर तब महिषकराला। आवा जनु कालन्ह कर काला॥
कोटिन कोटिन रथ गजवाजी। रक्षाहित बहुनिशिचर साजी॥
सोहमहिष कस भयप्रद भूपा। कालन्ह काल भयंकर रूपा॥
कालडरत जिहिनिरखत भाई। सो आवा निज काल सुपाई॥
देखिमोहि मन कह तियएहा। कारण ठाढ़ी कोमल देहा॥
कटक जुरा अब पूरण भारी। लखिलखि डरनभसुरसुरनारी॥
नभ निवास तहँ रहेविमाना। सुरगण तिअसहगमनहिं नाना॥
वसुपति विद्याकर बढ़ नाई। जावल होत विमान सजाई॥
हूंहां करि उठ कठिन लराई। रण बहु बाजन बाज बजाई॥

लवायीछन्द ॥

बाज बाज बहु जुझाव बाजा असुर गण बहु तर्ज्जहीं।
तोमर शक्ति त्रिशूल परशुशर मूसरधर अति गर्ज्जहीं॥
मारहु मारहु करहिं रैनचर स्वरूप भयंकर बने।
श्रीशिवादेवि शोभितअतिनृप छबिदीपसुररिपुघने॥

दो० अमित अपार असंख्य खल घोर कठोर कुरूप।
मुक्ति दायिनी एक तहँ कोमल तनवी भूप॥

चौपाई ॥

मुनि जब बाजन बाजन लागे। साहस धीरज बल चित भागे॥
तोमर पाश शूल भिंदिपाला। परशु निषंग चाप शर भाला॥
धरिधरिसुररिपुकरहिं प्रहारा। कौतुक लाघव देवि निवारा॥
शस्त्र अस्त्र बहु असुर चलाहीं। हँसि हँसि देवी काटि गिराहीं॥
लाघव लाघव आयुध कटहीं। मनु किसान निजखेत विकटहीं॥
बार बार खल आवहिं धाई। माया मारन करहिं उपाई॥
सो नृप कभु कैसन होपावे। मायाढिग जो काल नचावे॥

वाणि विरुध वददोषहु लागे । तदपि बने बरणात जस आगे॥

लवायीछन्द ॥

तदपि बने बरणन जिमिआगिल सुनतकुवचदेविसही ।
स्वयम् रूप सुरनाहनि श्यामा अगणित भव पूररही ॥
सुन्दर दशनन्ह निकारि विज्ञा तिकालज्ञा हँसतअती ।
दाड़िम कलि मुक्ता मनु पांती शुठि सोहत मोह मती ॥

दो० सुरमुनिमिलिसबकहहिंजय जयतिजयतिजयमाय।
निशिचर मारहु सकौतुक सेनहिं क्षण विलगाय ॥

चौपाई॥

आयुध फेंकहिं नाना भांती । असुर भयंकर बड़ बल घाती॥
आवहिं धावहिं ते मुनिराया । अति भयावनी करिनिजमाया ॥
नृप माया कौतुक बरसावे । अगणित आयुध काटतजावे ॥
दीप्तिमान शोभिता भवानी । मुखचमकतनहिंश्रमकछुजानी॥
निडर निशंक सोह सिंहयानी । सुन्दरता छबि मदअतिसानी॥
सुन्दरि रूप स्वरूप बनाई । रतिसिंहनि गजयूथहिंआई ॥
सुरमुनि ध्यावहिं बारहिं बारू । निजनाथहिंजिमि सेवकसारू॥
अम्ब अनीक रही इक ठौरा । केवल विजया लड़ नहिंऔरा॥
देवी कर बर आयुध आवें । जाइ जाइ खल देह समावें ॥
मरा हुं असुर पुनि जीवहिं आई । सोसब सत्या महा प्रभाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

सोप्रभाव श्रीमाया परमा मरि असुर पुनि जीवहीं ।
लरहिंभिरहिं करहींनिजमाया रणसुधासुरपीवहीं ॥
शोभा रण अपार कस भाषी जाय कह मन शारदा ।
यदि कविकोउवरणहिंरणइह कादेहुं मतितायदा ॥

दो० माया यान कोपित सिंह गर कच बरकम्पाय ।
बन महँ पावक तुल्यसो चलाकटक महँधाय ॥

चौपाई ॥

मनुपति माया पवन चलाई। शोभितकोपितनिजमृगराई ॥
सा मृगनाथ तहां कस धावा। मनहुगरुड़ पन्नगगणआवा ॥
सोलीलतजगअगणितनिशिचर। उरविदारकर फारफारकर ॥
अगणित गणमय असुरनृपाला। जूझहिं भांतिभांति विकराला॥
शत सहस्त्रलख कोटि निकाया।गणगणविधिविधिलड़मुनिराया
परशु पाश शर धनु तलवारा। नाना विधि जे बहुहथियारा ॥
काटहिं कटहीं मरहिं घनेरे। जिनकर पुण्य पुंज बहुतेरे ॥
मरि मरि उठिउठि बाढ़हिंआई। सो परमेश्वरि सबल प्रभाई ॥

लवायीछन्द ॥

सोसबसुन्दरिप्रभावक्रीड़ा कौतुकलगिकरतसही।
सुन्दर सुन्दर आयुध नाना फेंक देवि समर मही ॥
नयन भृकुटी नासिका करपद कटाक्षकरविधिअती॥
निरखिनिरखिअमरअमरतियनभभूलिमोहकाहकती।

दो० मुनिबर मातु कटाक्ष कर सब अंगनि प्रति फेर।
सुर सुरनी सब मोहहीं लोकत बनें न बेर ॥

चौपाई ॥

रणउत्सव यदिनिरखहिंआई। शवहिं प्राण आवे महिराई ॥
यद्यपि मरहीं असुर घनेरे। जीवन मरन सुमाया प्रेरे ॥
ताते संशय करहु न कोऊ। महिमा माया विदिता सोऊ ॥
कोउ बजावहिं मारू बाजा। शंखध्वनि को मुख महँ साजा ॥
अगणित बाजन बाजअधीरा। वेद विदित जे दायक भीरा ॥
पुनि मालिनिनिजआयुधराई। शूल गदा खंगादि चलाई ॥
अगणित शर देवी बरसाई। शत शत सहससहस खलराई ॥
गिरहीं परहीं मरहीं नाना। खाइ खाइ बहु शूल सुवाणा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

खाइ खाइ बहु शरतीक्षण अति खलगण मुक्ति पावहीं।

जे न जपे सपने जग जननी अमर धाम सिधावहीं ॥
धन्य धन्य ये असुर दुष्ट जन बिनश्रम सुगति पावहीं ।
सुख सम्पति परिपूर इन्द्रते असुर भल कवि गावहीं ॥

दो० देवी वाहन कौतुकी कर गर घंट बजाय ।
असुर अगणित मूरछहीं मरहींसुनिरवराय ॥

चौपाई ॥

कोपि कोपि कभु परमा माई । करत युद्ध कभु मन मुसकाई ॥
कोपत भय मानहिं सुरज्ञानी । जनु सेवक निजस्वामिनिजानी ॥
मुसकुराततबबिहँसहिमुदिता। निजहितलगिनिजनारिन्हसहिता
शस्त्र अस्त्र बहु मातु चलावे । मनु रति सुन्दरि शरधनु आवे ॥
मूर्छि मूर्छि पुनि खाइहि खाई । मरहीं अगणित खल नरराई ॥
कित खल गिरहीं मुरछाखाई । कितकर शिर बहु कटहींआई ॥
कितरिपु खोवहिं करपदअंगा । कित नाचहिं करि भेष अभंगा ॥
कित धावहिं माया पृति भूपा । निर्भय आननि साहस रूपा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

निर्भय आननि साहसखानी समर अतुलित राचही ।
नादि नादि नित नेतिनेति नित सुर मुनि वेद वाचहीं ॥
असुर कटक घटन्ह घनघेरो दमक आयुध दामिनी ।
जगदम्बा कर कूदब फांदब कभु काश रवि कामिनी ॥

दो० देहिं विधाता असुर तन यदि जगमहँ महिराइ ।
तौ उपजावे महिष दल पदवी बर हो जाइ ॥

चौपाई ॥

विजया मातु चलावत पाशा । कितइकगिरपर महितरनाशा ॥
तीक्षण खंग भवानि प्रहारा। होहिं खण्ड दो असुर करारा ॥
तड़ित होइकित अम्बा पाहीं । सोवहिं निशिचरवसुमतिमाहीं ॥
कित खलगयाबहुमूसरखाहीं । बधित होइ तन रुधिर बहाहीं ॥
छातिन हियन शूलकितखाहीं । हतहो गिरहीं अवनी माहां ॥

तीनयना प्रहार शरयूथा। रण आंगन महँ असुर बरूथा॥
खाइ खाइ महि सोये नाना। बिन अन्तर लवलेश न थाना॥
रंग रंग शव राशि सुहाई। महि रज कत न दरस मुनिराई॥

लवार्याछन्द॥

महिकणकतहुनदरसतमहिपति बहुखल शव देख परें।
कौतुक रण बहु बेर लागहीं नीलाम्बरी क्षण करें॥
अगणितविधिविधिकृष्णशवन्हमहँरुधिरशस्त्रदरसपरें।
मनहु श्याम घटा नभ माहीं सुरप चाप रंग भरें॥

दो० अठ दश भुज बलराशिनी विजया नित्य अजीत।
कीटन्ह प्रतिकसहारहीं मत्त गजनि नहिं भीत॥

चौपाई॥

बहु अविवुध होवहिं रणआगे। वसुधा परहिं प्राणतन त्यागे॥
मरहीं कित इक भुजाकटाई। मरहीं कित इक ग्रीव गँवाई॥
गिरहीं शिर तनतेमहिमाहीं। कित खलपरहीं हियकटजाहीं॥
खोवहिं जांघ रात चर नाना। भूमि परहिं बहु मेरु समाना॥
महा सुरेश्वरि अम्ब भवानी। केल करत वसुरण बलवानी॥
करत एकभुजकित सुररिपुहीं। एक नयन इकपद कित बपुहां॥
अस रूपहिं ते त्यागहिं प्राणा। धन्य धन्य अम्बा बरदाना॥
अगणितअसुरहिं जयवतिमाई। करत जात दुइ खण्ड नृराई॥

लवार्याछन्द॥

करत जाहिं बर भगवति देवी रिपु दोदो खण्ड सबे।
करहीं अगणित दानव मस्तक गिरि उठहिं तौहू तबे॥
सो अखिल माया केलिकौतुक लखि सुरसुरनिनभमहीं।
जयजयउचरहिं विहँसिविहँसिमनसोस्वारथकर्म्मयही॥

दो० घोर अघोर कुशस्त्रगहि निशिचर दुष्ट कराल।
भवमाया मुखहँसनसन करहिं युद्धमहिपाल॥

चौपाई ॥

खोवहिं तनते खल अमरारी। उठबैठहिं पुनिं जगत दुखारी॥
तुरही आदि बजावहिं बाजा। नाचहिं रणभू साजि कुसाजा॥
पकरे दुष्ट खंग दुइ धारा। खल गण पकरे शक्ति करारा॥
देवी कहँ जो नित जयवानी। ठहरहु ठहरहु भाषहिं वाणी॥
समर दशा श्री शिवा बनाई। खेल मूष गण रती बिलाई॥
वसुरण पर अगणित रथ यूथा। गजवाजी पुनि असुर बरूथा॥
भांति कुभांति परे वसुधेशा। अवनि दवी बहुबोझ कुवेषा॥
कटकरहा असुरन्हकर जहँवा। तत्क्षण कौतुकलखिये तहँवा॥

लवायीछन्द ॥

कौतुक लखिये ताक्षण माहीं गज अश्व सुररिपु मरे।
शोभित शोणित श्रवहिं तिनकर महामहा सरित भरे॥
एक अनेक नदी बहहीं तहँ अम्बिका कौतुक धरी।
क्षणते क्षण लवलेश क्षणहिं क्षण सेनमहा नष्टकरी॥

दो० महि पोषक जिमि अग्नि लघु तृणअरु काठबरूथ।
जराय देवे क्षणहिं महँ जगदम्बा रिपु यूथ॥

चौपाई॥

श्यामा के हरि माया प्रेरे। कम्पित केशन्ह ग्रीवहिं घेरे॥
सोम्‌मृगपति रवमहा न कीन्हा। दानव तनते प्राणन्ह लीन्हा॥
जब देवी खल कछु संग्रामा। अन्त भयो सुखपूद परिणामा॥
तबसुरतिय सहगणमझारी। तुष्ट भये कछु मन सुखधारी॥
बरसावहिं पुहुपन्ह करमाला। जयजय देवि भाषि भूपाला॥
नाचहिंगावहिं विधिविधिनाना। लावहिं सेवा स्वारथ जाना॥
परमानन्द कछुक सबठाहीं। यदपिमहिष कर भयमनमाहीं॥
पाणिजोरि कछु विनय सुनाये। लघु बड़ भांति मनहिं जेआये॥

तोटकछन्द ॥

दुर्गेजगमाजयहोयसदा। जयकारुणिकाबरदानपूदा॥

भवसिंधुअपारउतारनही। सुमहा तरुणी जनपारनही ॥
॥ जयदेविसदासंबसेवत हैं। विधिनीकमलागिरजाजित हैं ॥
॥ जगजोतिजगीनितनाम्रमयो। जगमाहिंरहीनितऽपापश्रयो ॥

॥ पंचचामरछन्द ॥

॥ दया मया प्रदा यदा। कृपाल कारुणीसदा।
॥ अपार भार भूमि की। धरीसदा बिनाश्रमी।
॥ तिलोचनी अठारनी। भुजावली अपारनी।
॥ कराल कालकालनी। विशाल भालभालनी।
॥ अभूषणी सुरूपनी। तिलोक मों अनूपनी।
तिकाल नाहिं तोहिते। समानता सुहाहिंजे।
। रमेश ईश तो जपें। रहा न कोउ आनजे।
॥ अनादिनी अबीचनी। अनन्तनी सुसीजनी।

सो० महिष दुष्ट अतिघोर वधन करहु न विलम्बहो।
॥ नहिं दूसर को ओर मत्त गजहिं मृगपतिनबध ॥

दो० भूप उक्त विनती महीं का रंग ढंग दरसात।
॥ सुर बपुरे नहिं चेतवश जोलों नहिं खल घात ॥
याते अटपट भावते भाषे विनय विगार।
॥ नहिंपर श्री अमरेश्वरी क्षमाज करणि अपार ॥

॥ चौपाई ॥

असुर अनीक जबहिं बिलगाई। सुरसुरतिय पुष्पन्ह बरसाई ॥
जयजयकार भई नभ माहीं। हरषिहरषि सब घंट बजाहीं ॥
विनयकरहिंसुरपुनि मुनिराया। मारहु महिषहिं महानमाया ॥
निरखिमहिषकर काजकराला। थरथरहिं सुर अवनीपाला ॥
सो कस प्रोचनीचभलभागी। सेवहिं देविहिं स्वारथ लागी ॥
वसुधब रीति सदा चलि आई। जब जब संकट घेरत धाई ॥
धावहिं माया ढिग गुहराई। कभु हरिहर पहँ आवहिं धाई ॥
जब संकट इनकर कटिजाई। डूबहिं सुख महँ सबहिं भुलाई ॥

दो० माया बलहु ते हरि शिव सारहिं सुरकर काज ।
नहिंतर श्री मायामहा परहिं सजि निज साज ॥
सो० निजनिज हितकर प्रीति एकदशा मकरन्द सुर ।
नित्य लोलुपीरीति सुरबललगि अलि पुष्प रस ॥
अलिहु ते अमरअकाज जोलोंनिजहितनिपटनहिं ।
तोलों सेव समाज जगदम्बा बल खानि यदि ॥

चौपाई ॥

सोह अमित श्यामा महिराई । यद्यपि श्रम कालय जगदाई ॥
श्वेत स्वेद मस्तक लग कैसे । हेम जटित अविकादिक जैसे ॥
असुर रुधिर नीलाम्बर माहीं । मुक्ता अरुण सरिस चमकाहीं ॥
शोणित डूबे आयुध नाना । मणिन्हजटितरविकिरणसमाना ॥
यानहुं महँलखि शोणित भूपा । पीत गगण उड़अरुणसुरूपा ॥
कहुंकहुं वाहन कृष्ण रँगेरो । जहँ तहँ घटा लाग दुरनेरो ॥
सतमहँ उपमा रहित बखाना । कविता लगि मनतोषत नाना ॥
कहँ असकोहैं सुरमुनि जेते । जननी उपमा गावहिं तेते ॥
सो० महारानि जग रानि अंगनि अंग कटाक्षमय ।
आयुध रानि भवानि फेंकत फेरत समर महँ ॥
दो० जग कोटिन श्री रक्षका निजसिंहहिंकरिप्रीति ।
थप थपात निज पाणिते कस कौतुक यह रीति ॥
परसत कोमल पाणिते दुई चार इक जोरि ।
गुदगुद लागत यानकहँ कोमल अँगुरिन्ह पोर ॥

चौपाई ॥

रुधिर भरित दशनानन भूपा । सिंह दरस मनुकाल स्वरूपा ॥
सो पुचकारत चूंबत माई । जनु गौ वत्सल निजढिगपाई ॥
ओंठ गठनिमनुमदन सुरूपा । जलजसकुचिपुनिविकसअनूपा ॥
ताहि काल नथलटकनिमोती । परत कपोलन्हअधरन्ह जोती ॥
मामुख छबिलेमोतिनछबिपर । यानअवनि परशशिले रविकर ॥

मुदितविबुधगण वीचिजलेशा। विकसहिंमनकुमुदनि मनुजेशा॥
द्रवहिंविबुधस्वामिनिमुनिराई। कभु झटपट कभु बेर लगाई॥
सोबल ले हरि हर बनिकेशा। करहिं सहाय आय वसुधेशा॥
सुनहु कथा अब रणाकर आगे। जाविधि निशिचर जूझन लागे॥
भांति कुभांति कुवेष बनाई। पुनि सब दलपति जुरगे आई॥

दो० चिक्षुर चामर अरु उद्रग उद्दत गज दन्तादि।
वाष्कल विडाल अन्धक बड़ हनुनाम कुबादि॥
उग्रास्य उग्र वीर्य पुनि दुरधर दुरमुख आदि।
नाना युध ले आयगे बोलहिं बादि कुवादि॥

चौपाई॥

मुनि नृप बोल उठे ताकाला। मुनिबर निशिचर दलपति हाला॥
रूप कर्म्म सब कहहु बुझाई। जाते मन संशय मिटजाई॥
मेधस हरषित उतर उचारे। मनहु तिमिर हित दीपकबारे॥
धन्य सुरथनृप धनविनिकेशा। मेटहु मनकर संशय लेशा॥
अधमअहित असत्यअपकामी। अपर हानि जिनके उरजामी॥
दुरबुध विपिनी मिथ्यावादी। इनकर संज्ञा असुर खलादी॥
सो सब प्रथम वसुप मैंगाई। तैसहिं दलपति दशा कहाई॥
सोचहुइनकर विधिबिधिनामा। तैसहि रूप करहिं सो कामा॥

दो० गज दन्ता जो नामहैं ताकर यदि नहिदांत।
करनी ताकर सोयहै जो गजकर दश नांत॥
विडालते अस समझहो मारजार कर जोय।
काज डरंकर हानि प्रद करे असुर जग सोय॥

चौपाई॥

बड़हनु जो तहँ असुर कहावा। ताकर काज वधब नितगावा॥
उग्रवीर्य्य जो नाम कहाई। ताकर वीर शूर लङ्कनाई॥
दुरमुख जाकर कहहीं नामा। रूप भयंकर भयप्रद कामा॥
अस अस जानहुअपरन्हनामा। जैसो रूपो तैसो कामा॥

सनद्धन हितये सुभटनृपाला। वीर भयंकर रूप कराला॥
कथितविविधविधिभांतिसुभांती। सो अनुभवते जानी जाती॥
औरहु इक घटना इह ठाऊं। सो अति गूढ़ सन्देह नसाऊं॥
जग उत्पति तुम लोकहु भूपा। कीट पक्षि पशु ते नर रूपा॥

दो० सो भूधव भलि भांति मैं गावा प्रथम बुझाय।
ताहि ज्ञानते जानहो पशु नर कस होजाय॥

चौपाई॥

सोइ रूपले दल पति आहीं। भांति भांति जस नाम कहाहीं॥
तसहिं महिष वेष वसुपाला। ज्ञानसहित समझहु सबहाला॥
भांति भांति सजिसाजकुसाजा। पशुनर अस तस जुरेसमाजा॥
सृष्टिकार लखि अरु रणमाहीं। ज्ञान वशित बहु घटना आहीं॥
समर कथा अब गावहुं आगे। महा महा भट झपटन लागे॥
वीर वयन बहुबोलत जाहीं। मनमिष्ठान मनहिं मन खाहीं॥
लोकिकटकनिजअसुरप्रधाना। चिक्षुर कोपित माया ठाना॥
गिड़गिड़ाइ देवी पहँ आवा। मनु निजरूप काल धरिधावा॥
अगणित शर बरसावनलागा। आदि जोतिपर तिमिरसजागा॥
वसुपति वरषा कस सोभाई। मेघ सुमेरु शिखा बरसाई॥
भांति भांति माया करि माई। वाण सलाघव काट गिराई॥
काटत कर कटाक्ष बहुभांती। निरखत मोहे सुर सबजाती॥

हरिगीतिकाछन्द॥

मोहे बहु सुरारि रिपु सबरे मनहु मोह विमोहहीं।
भ्रूनिमि नयननासिकाकरपद कटाक्ष अंगुरिसोहहीं॥
अगणित माया मायाप्रतिकरि दनुजचिक्षुरजूझही।
मनहु भयंकर रूप पतंगा दीपशिखा न बूझही॥

दो० धराप पुनिदेवी महा वाण कठोर चलाइ।
वधेसि वाजिन वाजपति सारथि दूर भ्रमाइ॥

चौपाई॥

पुनिकाटी निशिचरअतिभारी। अति ऊंची पुनि धजा प्रहारी॥
कीन्हचिक्षुरहि घायल माया। मनहुक्षहिप गिरिकोन छिलाया॥
जब सारथि धनुरथसबबाजी। नष्ठ भये बिनु श्रम सब काजी॥
घायल चिक्षुरपुनिउठिधावा। मनहु देबि कहँ चाहत खावा॥
दनुज कोपिशरसिंहहिंमारा। कौतुक मय मृगपति ते हारा॥
पुनि खलवपुनिवामभुजठाईं। माराशर अति तीक्ष अमाई॥
सो शरमायाभुजमहँ लागा। रणहिं बड़ाई शर बड़ भागा॥
सो शर लागा भुज महँकैसे। मत्त गजनि कहँ कुसुमनि जैसे॥

लवायीछन्द॥

मत्त गजनि कहँ कुसुम लागहीं भुजभूषण जो रह्यो।
तामहँ अधिकजटितबहुलागे लगिअधिकशरविधगयो॥
ताहि समय सह कटाक्ष माया भ्रूनाक चघात भई।
सोलखिअमर तियनसह मोहेपुनि हियखलखींचलई॥

सो० कविता महँ कछु होय मिथ्या लेखन कहहिं नर।
भुज शर लगमृषसोय अवनिनाथहोजाय भल॥

दो० उछलत महँ नूपुर चरण बाजहिं हिय फट जाइ।
सुनि मुनि छांड़हिंध्यानसबमनमहँरतिसकुचाइ॥

चौपाई॥

सो नचोट भुजमहँ महिपाला। सुर सुरतियहियविधताकाला॥
नयन मूंद व्याकुल घवराये। वहु रवि शशिढिगराहु सिधाये॥
यामहँ तरक न संशय नाहीं। करत मातु कौतुक रण माहीं॥
नहिं तरजो बहुकाल न चाहीं। ताकहँ चोट सके को आहीं॥
सो मुनि जापर देवी दाया। जानहिं ते प्रभाव बल माया॥
सुर निज अरथीविनतीकरहीं। लाजन आव बूड़ि नहि मरहीं॥
सो कस होवे अस जननी पहँ। कृपा शरण करुणा बरदा जहँ॥
धनसुरगणजिनहितहितवारिनि। कौतुककरिदुखसहतसुखारिनि

लवायीछन्द ॥

करि कौतुकदुखसहतसुरेश्वरि यदपिअमितबलबलभरी।
करत समर अस महान कौतुक संग्राम शिवा वपुधरी ॥
जान बूझ जो लड़त भिड़त अस लेवोट अजान जनी।
नहिं तर नयनतरेरत नरपति जार काल समर मणी ॥

दो० चोट देइ भुजदेविकर अरुणनयनसे नेश ।
महाबीर चिक्षुर प्रबल गहा त्रिशूलनरेश ॥

चौपाई ॥

पुनि छांड़ा भद्रकाली ओरा। रवि मंडल इव शूलहु दोरा ॥
निरखत छांड़ी शूल भवानी। खण्डन शत चिक्षुर कर आनी ॥
सुन्दर सुन्दरि शुभ सुकुमारी। चिक्षुर दनुजहि लाघव मारी ॥
गिरा अधमखल महिमहिराई। पक्षो कज्जल गिरि दरकाई ॥
भूमि दबी मनो बज्र महाना। रूपधारि आ परा उताना ॥
देखत नभसुरगणसुख लीन्हे। बार बार बहु श्लाघ कीन्हे ॥
सुमन बरष कससाह अकारा। भई गगण महँ बहु नदिधारा ॥
सदा स्वारथी सुर समुदाई। सत महँ पोच हृदय अधमाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

पोच सत्य महँ हृदय अधमसुर स्वारथ हेतु सेवहीं।
आरति वाणी कारुणिका कहँ श्रवणाइ बरलेवहीं ॥
महादेवि कर समरबखानहुं अंज तनयाहु शोचही।
पाइ न उपमा हारि मनहिंमहँ निजबुद्धि कह पोचही ॥

दो० भिरगे असुर अधम गण करहीं माया राशि।
सुकुमारी कस जीतसक बड़ अचरज यह भाषि ॥

चौपाई ॥

चिक्षुरहतलखि चामर निशिचर। तीसुरदुखदायकचढ़िगजपर ॥
आवा सन्मुख अति गुहराई। मनहुँ पतंग दीप झपटाई ॥
छांड़ा शक्ति जु हीन प्रकाशा। राहुझपट मनु इन्दुविकाशा ॥

सो श्री माया महानमाई। काटिकठिनरण अवनिगिराई॥
कटत शक्ति खल छांड़ा शूला। काटी सोऊ जग निरमूला॥
विधिहरिशिव आदिक सुरयूथा। अजा रमा सुरतीय बरूथा॥
कौतुकलखिलखिबिहँसहिंसुंदर। दाड़िम सोहत मनहुबीजबर॥
कूदहिँ फांदहिं असुर दुखारी। काल कटक मनु खलप्रसारी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

खेलहिं खेल कालु कटक बहु दूत यम बहु धावहीं।
निरखतसकुचतसुरस्वामिनि मन भोरीकछु नआवहीं॥
कटहिं गिड़गिड़ाइ सुभट गणबहु भयद बेषडरावहीं।
मानहु नरक पहरुआगण बहु बैकुण्ठहिं सिधावहीं॥
सो० बिहँसतकोपत माय भांतिहि भांति कटाक्षकर।
मुदित मुग्ध महिराय सकलअमरअमरनीनभ॥

चौपाई॥

मुनि श्री माया महिरण भाई। सुन्दर साज संग्राम सजाई॥
सोकरणी किमि कहिये ताकी। सेवकनी बहु देवी जाकी॥
सो श्री दुर्गा माया ठानी। सुन्दर रचना करत भवानी॥
माया वाहन मारि उछाला। बैठा चामर गज शिर काला॥
करन लाग अति युद्ध कठोरा। सुररिपुचामर भुजप्रति ओरा॥
वाहन चामर गज ते आई। रचे महिपर महा लराई॥
भुजा प्रहार करहिं बहु भांती। दारुण दुखदायक बहु घाती॥
सो तब सोहत कौन सुभांती। हिरनाकुश कहँ हरि संघाती॥
मृगरिपु मृगपति गगणउड़ाई। पटका खलकहँ भूमि भ्रमाई॥
तब ताकहँ निज पाणि प्रहारा। चामरमुण्डविलगि करिडारा॥

लवायीछन्द॥

बिलगावा मुण्डरुण्ड खलते रुण्डिका महँ सिंहमहा।
माय मुदितमन बिहँसतठाढ़ी अमराररिण गहागहा॥
मदन वारिज पुहुप सुखमा मय परहिं हँसत देविमहा।

नृप कोपिता तव वरष पावक भाषहिंसुर अहा कहा ॥

दो॰ तीनयनी सिंह वाहनी भुजा अष्ट दश चार।
सोहत रूप विशाल रण ईश्वरी नहिं पार ॥

चौपाई॥

चामर मरत,उद्रग तब आवा। तरु पाषाण काठ बहु लावा ॥
माया सन्मुख करत प्रहारी। खण्डखण्डकरि शिवा निवारी ॥
वधी दनुज कहँपुनि मनुपाला। गिरेउ भूमि मनु वज्रकराला ॥
तब गजदन्त धाव करि क्रोधा। मुष्टि चपेटन्ह करिकरि बोधा ॥
क्षणमहँ श्रीश्यामा तिहिमारी। पुनि उद्धत पर गदा प्रहारी ॥
सोऊ हती क्षणहिं सुर भाई। कौतुक करत वाल इव माई ॥
पुनि बड़वीर वाष्कल ठाढ़ा। काल रूप मनु पर्वत बाढ़ा ॥
ताहि देवि मारी भिंदिपाला। मीच पाइ सो गिरा विशाला ॥
एक एक खल मारत जावे। खेत जुआरी कृषी कटावे ॥
ताम्र कुअन्धक सन्मुख आये। शिवा वाणते मीचहु पाये ॥

लवायीछन्द॥

मीचहिं पाये ते निशिचर शर लागत हृदय महि गिरे।
मनहु देविकर अविकायुध कहँ दांड छत छूअत परे॥
मरत असुर गण उड़ात शाणित छींट देवि मुखविथरे।
षोड़श कला पूर निशि नाहा अरुण मणि कलंक परे।

दो॰ महिष कटक गण समररण तिन्हकरशव बहुभांति।
जहँतहँ सुन्दर सोहहीं साकिमि पुनि कहिजाति ॥

चौपाई॥

रूप भयंकर निशिचर सारे। मानहु महिधर पक्षी कारे ॥
नाक कान मुख रुधिर बहाहीं। विधिविधि सुन्दरझरनाआहीं ॥
कहुंकहुं बहहीं शाणित धारा। महामहा सरिता विस्तारा ॥
कहुंकहु कुण्ड भरे जहँ तहँवा। मनहु सोहसरभरतहँजहँवा ॥
काग चीलबहु पक्षी झूमहीं। मनु वन मारवो तंत्र घूमहीं ॥

असुर रोम बहु चोड़ उचारे। कानन ठाढ़ रूख नहि भारे॥
जोगिनि नाचमुदित मनमाहीं। भूत प्रेत बहुचरित मचाहीं॥
सोसब कानन केर निवासी। मनमाने तहंफिरहिं सुपासी॥

दो० रण बाजा बहु बाजहीं आहट आवत घोर।
मृगपति भालुगजादिकर जानहुनाद कठोर॥
सुरमुनि जयजयभाषहीं मनुतपसिनकरनाद।
मोक्षजनकतरुकल्पतहँजगदम्बिका अनादि॥

चौपाई॥

टूक टूक बहु गिरि हथियारा। परहिं दामिनी भूमि पहारा॥
धूर पूर नभ लगि बहु छावा। मेघ घटा नभ जलवरसावा॥
बरदा दल महं सुन्दर रूपा। लड़हीं ते नहिं सोह अनूपा॥
सो मनुसुन्दरदलकहिं दामिनि। अंधकार तहँमानहु यामिनि॥
जब तब चमकत अम्बा रूपा। मेघ ओट मनु इन्द अनूपा॥
इहि बिधि नभतेमहिलगिभूपा। सोहसमर भयजनक अनूपा॥
लोकत सकुचहिं वेद गणेशा। अजअजतनुजा आदि नरेशा॥
विहँसहिंभाषहिंजयजय वाणी। जयतिजयतिजयमातुभवानी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

जयति जयति जयजय जगजननी अगजगरोगजारनी।
सत्य सिंधुनी सत्य धामनी कृपा करुणा कारनी॥
परमा माया परमा विद्या देवि जय बर दायनी।
द्रवहु मातु कोपहु जनि हमहर मेटहु दुख सुहायनी॥

दो० बरसिसुमनसेवालगि सुरनिजहित भय पाय।
कोपदेखिविस्मितहृदय कहहिंकोपजनिमाय॥

चौपाई॥

धाव उग्रास्य अरु उग्र बीरा। दनुज महा हनु मनहुसमीरा॥
आये सन्मुख सुख सागरनी। बधीतिशूल अति नागरनी॥
वधित भये ते क्षण महिपाला। पुनि आवा ढिगअसुरविडाला॥

सुख केतुनि जब खंग प्रहारी । शिर विडालखंडित करिडारी ॥
दुरधर दुरमुख निशिचर दोऊ । सत्या सन्मुख आये सोऊ ॥
बहुशर छांड़ी देवि भवानी । दोऊकहँ तब यमगृह आनी ॥
कितइक महाबीर बलधीरा । कालहुते जे जूझहिं बीरा ॥
हतेसि सबकहँ निजतिज भांती । सुरपालिनि सुररिपुसंघाती ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

अमरपालनीअसुरघालनी रणधीरा अति सोहहीं ।
मुदिताविहँसतमनहिं मनहिंतबकोपतरूपकोकहीं ॥
जाहिअजाकमलादिक सबरीचरणरजरुचिसेवहीं ।
सो श्रीदुर्गायुत विख्यातसहंसमुखनिबर देवहीं ॥

दो० शोभासोह संग्रामसब सुख सिन्धुनि सुखसार ।
मोह सार मनु मोहहीं वीरनि रूप अपार ॥

चौपाई ॥

शस्त्र अस्त्र बरमाया केरे । डूबित दरसे शोणित घेरे ॥
चमकहिंते मनु रवि बहुतेरे । अमितप्रभामय गगणहिंघेरे ॥
पुनिपुनिचमकहिंपुनिबिलगाहीं । तेकसलागहिं असुरन माहीं ॥
मघ ओट रवि अरुण घनेरे । विकसहिंसकुचहिंकिरणभरेरे ॥
देवि अंग जनु दामिनि नाना । देखि देखि जोइतउत ध्याना ॥
सुरतिय तबसब मरहीं लाजा । लोकि लोकि लोकेशासाजा ॥
सकुचत रति खद्योत समाना । निरखतबासरपतिकर नाना ॥
यदिश्री सत्य कारिनी माया । चरित करत रणभायसुभाया ॥

दो० जानि थकित मृगईश नृप झुककरि चूंबत माय ।
अरुण सुपीत कपोल पर भूषण करणलुभाय ॥
लटकनि मुक्ता छारहे परहिं कपोल दबाय ।
सोमुनिजानहुभांतिइहि कोमलताकहिजाय ॥

चौपाई ॥

महिष कटक करदलपति नाना । महा महाभट काल समाना ॥

नवहिँ सबहिँ श्रीमाया मारी। कोपि कोपि विस्मित अमरारी॥
कोमल कमल कली इव नारी। अगणित भट महँ इक सुकुमारी॥
जिन कहँ कालडरत नित भारी। तिन कह क्षण महँ लाघव मारी॥
बड़ अचरज यह मो कहँ आवै। गिरिगण समता रज किमि पावै॥
पिपीलिका किमि मेरु उठावै। बारि बुंद किमि जलधि अटावै॥
सो कछु नहिँ परभटगण भाला। मीच लिखी इहि बिधि अवकाला॥

दो० सुरथ वनिक अस भाषही महिष सभा रणमाहिं।
कोऊ ज्ञानी तहँ रहे बोले समय सुठाहिं॥

चौपाई॥

जानहु कुरप्रभु महिष कराला। डरत सदा तुमसन जो काला॥
सो आवत कछु बेर न आवे। ताकहँ जाहि गहन सो पावे॥
नाथ करहु अब वादि विसोचू। मनमहँ साहस कसमति पोचू॥
जाकहँ कहहु नारि सुकुमारी। सो न नारि नस तुमहुं विचारी॥
एक आदि अनादिनी रूपा। अगम अनन्तनि शक्ति सुरूपा॥
अमित शक्ति धारिनी अनूपा। जा बल ब्रह्म भये जग रूपा॥
सो स्वरूप व्यापिता कहावे। जो बल कालहिं बहुत नचावे॥
सो सुकुमारी तुम्हरे लेखे। भलीभांति प्रभु तन नहिं देखे॥

दो० नहिं तर शोचहु मनहिं प्रभु चिक्षुर चामर आदि।
दुरधर दुरमुख दन्त गज अन्धक वाष्कलादि॥
क्षण महँ सबकहँ मारिकर हँसमुख वनी अति भाय।
चेतहु शोचहु सुचितचित सो कस नारि कहाय॥

चौपाई॥

बोला महिष महा भट मानी। हमहिं सिखावन आये ज्ञानी॥
धावहु धावन आज्ञा एहा। पठवहु इनकहँ तुर यम गेहा॥
जाहुं रणहिं लोकहुं सुकुमारी। कस बचिहैं मोतें सो नारी॥
गृह बैठे मन मोदक खावे। जो गरजे सो का वरषावे॥
भूपगगण सुर करहिं विचारा। कौन रीति खल जावे मारा॥

अजहरिशिवविबुधहिंसमझाहीं। विस्मय इहां करहु कछुनाहीं॥
तुम जो भाषे लख हम चाहीं। माया कौतुक महि रण माहीं॥
ताते निश्चय जानहु भाई। मायामारहिं खलहिं खिलाई॥
नहिंतरक्षणमहँभृकुटिविलासा। महिषहिं माताकरत विनाशा॥
सत्य वेद श्रुति सुर अस गावें। भय सन्मुख सबचेत नसावें॥

सो० पवन वहत लगजाय मलमुख महँ श्री देविकर।
पीत रंग उतराय अस कौमल्य मूला श्री॥
सो सुन्दरि रण माहिं पूरित धूर कुधूर महँ।
सुररजभागसराहिं मणि भृकुटिनि मुखशिरचढ़े॥

चौपाई॥

आवा महिष कुवेष कराला। मानहु कालन्ह करबड़ काला॥
सो कस सोह समाधि नरेशा। आवा पावक ढिग सरितेशा॥
सुरगण सबगण त्रासन लागा। सुर सुरनी कर धीरज भागा॥
अगणितगणकहँमुखहिंप्रहारा। अगणित खुरते अवनी डारा॥
बहुतहिं लांगुल ते तहँ मारा। बहुतगणहिंसींगनहिं विदारा॥
अपरहिं पटका भूमि भ्रमाई। बहुतहिं पटका दे गुहराई॥
कित इक पटका मारि उसासा। बहुत गणन्हकर साहसनासा॥
बिबिधिभांति माया दल त्रासा। सुरसमूह अतिकीन्ह निराशा॥

हरिगीतिका छन्द॥

कीन्हनिराशकटकगण बहुविधिविधिहरिहर शक्रादिजे।
लखिलखिप्रबलमहिषकर उपद्रवसोचसुरतिय आदिते॥
दुष्ट दुरात्मन दुःखदाय खल लड़त तहँ कस भावही।
महा प्रलय मनु रूपभयंकर धरि बहुत गण खावही॥

सो० मुनि जैमिनि संग्राम खेल महिषा बिबिधि विधि।
मातु कौतुकी काम नहिं तर असुरप क्षणहिं मर॥

चौपाई॥

जब असुरप सब सेन विखारी। मृगाधीश कहँ हतन विचारी॥

सुखाकरनि ढिगतब चलिआवा। निडर निशंकन काल डरावा॥
निरखि चरित श्रीकोपहु बाढ़ा। कोपवती सन्मुख खल ठाढ़ा॥
कुपि महिष महिखूंदन लागा। महितल वासिन्ह धीरजभागा॥
गगण अवनि सबकांपन लागे। गिरिजल पति सब पाछू आगे॥
ऊंच ऊंच गिरि सींगन द्वारा। हांकि हांकि चहुंओर प्रहारा॥
हांक सुनत अजहरि शिवदेवा। विस्मित सोचकरहिं मन भेवा॥
मारि सींग ते मेघ घनेरे। बिलगि बिलगि कीन्हा बहुतेरे॥

हरिगीतिका छन्द॥

बिलगि बिलगि मेघन्ह नभ कीन्हा खंड खंडहु होगये।
श्वास अग्नि महिष खलछांड़त नभधरामहँ सोगये॥
भाजहिं मानुजसरिससकलगण निरखिभेवस्वकालहीं।
नरपतियदपि न मरहिं अमरते भेवमहिष करालहीं॥

सो० माया रूप विशाल राका शशिइवनिरखि कर।
सुरसुरतिय अवकाल जलधिबीचिआनन्द तौ॥

दो० कोपा असुरपजब बहुत सुर भाजहिं हहराय।
जाबिधि मरहीं दुष्टखल तस सोही श्री माय॥

चौपाई॥

कोपि देवि फेंकी बहु पाशा। असुरहि बांधी कीन्ह निराशा॥
बन्धित होतहिं रूपहुत्यागा। क्षण महँ सिंह रूप ले जागा॥
माया पतिनी शिर महँ मारी। काटत शिर तज रूप सुरारी॥
एक पुरुष इक देवी दरसा। कर महँ ढाल खंग शरफरसा॥
दीनदयालिनि बाण प्रहारी। माया पुरुषहिं सबेग मारी॥
इतनो महँ खल सोऊ त्यागा। महाबली अति बड़गज जागा॥
सिंहहि शुण्डहुदण्डन लागा। गरजा बहु लगिखंग सुत्यागा॥
अन्तहि निजरूपहिदिखरावा। महिष रूप महिषासुर आवा॥

लवायी छन्द॥

आवा महिष रूप महिषासुर मृतु मायहि डरत अती।

गरजत तरजतखूंदत खांदतबिदारसीगन्ह कुमती ॥
सुनहु सुरथ नृपसज्ञान लीलाप्रभुनीअसलीलाकरी।
मार जार पावक रति रूपा खिलावभूष दुइ घरी ॥
दो० कौतुक रण अस दुरद बड़ मीचकालभजजाहि।
कौतुक अस ताकरनिकट सदासहज बनआहि ॥
महिष मरहि नहिं बेग नृप कारणइहि नरपाल।
कांप काल जगदम्ब ते आवत महँ ताकाल ॥
चौपाई ॥
जैमिनि सुनत सुनत ताकाला। बोल उठे तहँ सुरथ नृपाला ॥
मुनि बर इह बड़ अचरजआवे। क्षण क्षण सुर रिपु बेषबनावे॥
कभु मनु कभुगजसिंहकुरूपा। बिधि बिधिकीन्हकाल अनुरूपा॥
यह घटना भल कहहु बुझाई। जाते मन कर संशय जाई ॥
ऋषि बोले इह घटना ऐसी। प्रथमहिं तुमसन गाई जैसी ॥
तुम जानहु रचना संसारा। अगणितअतुलितअमितअपारा ॥
कीट पक्षि पशु ते नर राई। आवत जग महँ नरगढ़ नाई ॥
तामहं उलटपुलट बहु भांती। घाटब बाढ़ब होवत जाती ॥
दो० याते जानहु महिष खल धारा रूप अनेक।
समय समय करगढ़निसोरहेअसुर कितएक॥
महिष नामतिनकर परा वा औरहु भल होय।
बिधि बिधिसोईकालमहँसमरभवाअस सोय ॥
कल्प कल्प ता भांतिसोंसुरन्ह कीन्ह संग्राम।
आय शक्ति तबतब बधी दुष्टहिअस रण ठाम ॥
दरशक कर इह ज्ञानहै कबिजन शोभा साज।
सो बरणे सत भावते जस मैं गावा आज ॥
चौपाई ॥
यदिइहनहिं तो सुनहहु आनी। घटना बुधजन करहिं बखानी॥
जसजसबेष महिष जोकीन्हा। तस तस भावसुभावहु लीन्हा॥

बेष एक जो महिष सुरूपा। सो तो रह ताही अनुरूपा॥
पर जस करि तें जानहु ऐसो। करिकर हानिद सुभाव जेसो॥
कीन्हा तैसहु दुखद अकाजा। ऐसहि जानहु केहरि साजा॥
केहरि करहीं जो दुख हानी।सो दुखमहिषहु कीन्हखुटानी॥
ऐसहि आनहु जानहु इहवां। जस संयोग बने जहं तहवां॥
थोरे महं मैं तुमहिं बुझावा। जानहु बहु जो सन्मुख आवा॥
दो०॥ अब रण लीला सुनहु शुभ जो जो भा ता ठाम।
पुनि इह महं सन्देह कस जगदम्बा संग्राम॥

चौपाई॥

जब निज रूप महिष ले आवा। सकलचराचर क्षोभहिछावा॥
बार बार सुर करहिं पुकारा। काल रूपिनी अबका बारा॥
भय पूद कौतुकलखिनहिं जाई। महिष मीच अब तुरहो माई॥
सकल पुकारहिं आरत बानी। बिहँसहिं कोपहिं मातु भवानी॥
मनहिं सुरेशा रिस बहु लाई। लघुता लहि जलतालसमाई॥
कौतुकिनी तब कीन्ही पाना। भांतिभांति नानाबिधि नाना॥
बार बार विहँसत जग माता। मदमातीमुख सुन्दर गाता॥
सो हांसन कस कहिये राजा। कोअस लोकजहांअससाजा॥

हरिगीतिका छन्द॥

को अस लोक साज असजहवांरूप हंस श्रीमायहो।
निरखिदशनकपोलकटाक्षकहँलाजरतिअति कायहो॥
ताहि कालनासिकाकपोल करचढ़निसुन्दर भायहो।
मनहिं बिचारत कमलामनकहगढ़निममसकुचायहो॥
सो० कमला रति इहएक लावहिं मनहिं समानता।
यदि ये होहिं अनेक तौहुतो रज गिरि अन्तर॥
दो० कुलकत बेष तिलोचनी हरित कंचुकिनिलाल।
सोहत दुर्गा उन्मता नीलाम्बरी नृपाल॥

चौपाई॥

कोपत असुरप अति गुहरावा। अतुलित बसुधरसींग उठावा॥
जग तारिणिपरकीन्ह प्रहारा। जगत मरे महिषासुरभारा॥
सत्य देविगहि निजशर यूथा। खंड खंड कर मेरु बरूथा॥
मदपानी अतिस्वामिनि सोही। अरुण नयन आनन सुरमोही॥
मनु मोहद मुख ज्वालाबरही। रविछबिगणकहछबिमेंकरही॥
बोलत महिषा अर्ध कुवानी। तासन बोली अम्ब भवानी॥
सुमन सुधा बरसे ता बारा। कोपमिलन पुनिअग्नि प्रसारा॥
अमर होत खल सुर डरपावें। देवि भाष यदि सुधा सुभावें॥
मुनि लोकहु इनकर अनजानी। महा प्रबल जग कालभवानी॥
अज आदिकअजादिमनुपाला। विनवहिं बहु कालन्हकरकाला॥

हरिगीतिका छन्द॥

विनवहिंबहु कालन्हकालिनिकहजयजयतिगुहरावहीं।
करत कटाक्षभृकुटिअगणितजगभवलयहोत जावहीं॥
सो श्री माया कदापि चाहे अमरहु मीच पावहीं।
पुनि विदित नित वेदादि गावें महाप्रलयहु आवहीं॥

दो॰ मृगपति सुन्दर याननी श्री सुन्दरि सत मूल।
मदते अरुण जोतनी माती अति अनकूल॥

चौपाई॥

सुन्दर डोर परे चख माहीं। काम रती निजनयनलजाहीं॥
ते सब डोर रहे शर नाना। लोचन तरकसभलतिनजाना॥
चाप भृकुटि लागी वंकाई। खाये मोह सुरासुर राई॥
अस सुख सिंधुनिसत्यभवानी। भाषी सुधर सुधाशुभ बानी॥
गरजहुभलखल अधम बिमूढ़ा। मधु मम पान होत अबगूढ़ा॥
निष्फल गरजहु वादि चलाई। खल तव मीचअबहिं नियराई॥
जस मन भाव करहु दुखकेतू। कारज ममनितनित हितहेतू॥
मम करते तवबध हो जबहीं। वेगसकल सुरगरजहिं तबहीं॥

स्तवहि नभसुर अबहुं पुकारा। विधिआदिकसुरमुनिगणसारा॥
नितनित रीति भली चलिआई। अमरअसुरगण गरजहिं धाई॥
गरजहिं इककरिबिनतीसेवा। पर गरजहिं रिपु भाव कुभेवा॥
मोकहं कछु नहिं होवै काहा। प्रेम कोप कछु हो जो चाहा॥

हरिगीतिकाछन्द॥

प्रेम कोप कछु हो जो चाहे करहिं ते जसभावहीं।
कार्य्यमम भव लयनेमित पर जबहिंअवसरआवहीं॥
भाषण नीलाम्बरी देवी परमेश्वरी भाषहीं।
मनराग षटइक नारिरूपा भाषमहं सुर राखहीं॥

दो० सुनि सुर सुन्दरि भाष मृदु लाजहिं बारम्बार।
बारम्बार मनावहीं हतहु खलहि जगधार॥
उतमोहहिं सुर अमरतिय इतमोहत अमरारि।
सेवा मयते मुदित मन यह भेवत मन हारि॥

चौपाई॥

बिधि बिधि बोलतमंजुलबानी। अमित कोपिता भई भवानी॥
मृगाधिपति याननि बहुतेरे। कटाक्ष कीन्ही कूद घनेरे॥
कूदब उछलब कसकहि जावे। दमकत दामिनि घनहिसमावे॥
महिष कंठ महँ शूल लगाई॥ पुनिताके लोचनहिं गड़ाई॥
पंकज पदते रोपि नृपाला। थामेसि असुरहि बज्र कराला॥
बड़भागी मुनिमहिषकुबादी। बादि सत्य महँ पद अजआदी॥
हरि आदिक जिनपदरजहेतू। सेवहिं नितनित भक्ति समेतू॥
तौहू पावत दुर्गम सोऊ। जब कभु द्रवहीं देवी ओऊ॥
सोचरणहिं आयहिं मुनिराया। देत परशमहिषहि श्री माया॥
महिषासुर महिषानन ते जब। अरध रूपनिकसोसुररिपुतब॥
बिबिधि भांति सो जूझनलागा। रूप काल प्रगटा मनुजागा॥
सुरतिय लोकत भई सभीता। सोचहिं कस खलजावजीता॥

लवायीछन्द ॥

सोचहिंसुरसुरतिय कसखलयह मरहिंमनमनभयबढ़े ।
करतकौतुक कौतुकिनि कोपत विपिनपतिमहंरणचढ़े ॥
महान भागीमहिष अमर रिपु अगणितजगत वशकरे ।
जाहि लागि अस हीरा प्रभुनी कर परिश्रम मोदभरे ॥
दो० धन्य धन्य धन महिष धन धन्य दुष्ट असुरेश ।
परश अंग श्री देवि कर तरसहिं सुरनि नरेश ॥

चौपाई ॥

लड़त लड़त महिषासुर हारे । अनललेशकिमिजलनिधिजारे ॥
कृपा कारिणी आदि भवानी । महिषहिं मारन मनमहँआनी ॥
बांधी ता कहँ प्रबल प्रभाई । कर पद महिष न सकाहटाई॥
दृढ़ गिरिसम असुरप बसुराई । जलजांगी मृद्वंगी माई ॥
धामी दृढ़ अस तनु बिकरारा । कौतुकलखसुरतियसहसारा ॥
दृढ़ नहिं परसह असावधाना । मनुगिरिकछुनहिंरजपरमाना ॥
यदि महिधरतर तृणकभुआवे । सोकि कभुककछु जानाजावे ॥
जो न द्रवहिंअस वपुमनआनी । जस श्रीमाया कौतुक ठानी ॥
राखहिं हियते वज्र समाना । कोमलतनवी कर श्रमनाना ॥
बज्र ते अस मन होवे बीता । वसुधा बोझरहे सो जीता ॥
अजादि सुरनी लोचनवारी । तनकतनक आवा हियभारी ॥
अहअह महिषा कसबड़भागी । महामहा सुर वपुर अभागी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

महा विबुध बपुरे हतभागी महिष भाग प्रशंसही ।
जालगि शक्तिस्वरूप सुन्दरी करत श्रम बिध्वंसही ॥
अजा कमला उमादिक जे पद चाहचाप न काजहीं ।
हीरा स्वामिनि करसो पद शुभमहिष मस्तकराजहीं ॥
दो० लखिलखि नितजेचरणकहँविधिआदिकसबजोय ।
ठाढ़हिं अन्तर जोरिकर परसत महिषा सोय ॥

श्रीवेधतशर रुधिर उड़त परत अंग सुकुमार।
राकाशशि मंडलमही अरुण कलंक निहार॥
चौपाई॥

बहु कौतुककरि कृपा कारिनी। व्याधि उपाधिकुकालजारिनी॥
मनमहँ कोप कालप्रद आनी। महिष शिरहिं वेधेसिभवानी॥
वेधत शिर खलअतिअकुलाना। बड़भागी त्यागा निज प्राणा॥
सुर मुनि गण उठे चिलाई। हती महिष कहँ दुर्ग्गामाई॥
वधी मातु महिषहिं बिकराला। दुर्ग्गाहतीदुष्टहिं सुबिशाला॥
जयति जयतिजय जननीमाता। जयतिजयतिजयसुरकुलत्राता॥
असुरहिं मारी जगत तारिनी। दनुजमहिषकहँ हतीजारिनी॥
जयचण्डिका जयकालयामिनि। जयदुर्ग्गा जयहीरास्वामिनि॥

हरिगीतिकाछन्द॥

जय दुर्ग्गा जयहीरा स्वामिनि जननि जय हम गावहीं।
अम्बिका चण्डिका भद्रकाली जयति हम सुर ध्यावहीं॥
जान हमारे परिश्रम वहुत करि हती लाघव बीरहीं।
जय जय दुर्ग्गे महिष तारनी तारहु अमर धीरहीं॥

सो० रणबन अधिक सुहाय कुपतखड़ी श्रीसिंहनी।
अमरअसुर समुदाय विधिविधिवासीविपिनके॥

दो० परम महागति महिषखल पावा बिनतपयाग।
जोनित सुरमुनि याचहीं सोपावत बड़भाग॥

चौपाई॥

दरशक ज्ञान तनक अस आवे। जो कछु भाषा युद्धजनावे॥
देव असुर सुभाव विधि कामा। प्रथमहिं भाषा सह परिनामा॥
कथित देवि अमरज बल जोई। भूषण आयुध धारी सोई॥
सोसबसुरगण करविधिभांती। युद्ध हेतु सब नाना जाती॥
भई सुरासुर कथित लराई। अजन्मा देवी जब कहि जाई॥
भक्तमनुज मति अस दरसाहीं। आदि शक्ति उतरीरणमाहीं॥

सोउन संशय सह इह एका। कल्पकल्पकर करनि अनेका॥
सब पाछू अस घटना लागे। आदि शक्ति श्रीमाया जागे॥
दो० आदि शक्ति सब शक्तिहैं सब महँ व्यापित नित्य।
काज लराई आदि महँ शक्ति सहित सब सत्य॥
चौपाई॥
महिष मरा महिरण बहुतेरे। रहे सहे लघु दनुज घनेरे॥
श्रीदेवी सों जूझहिं आई। विधिविधिमरहीं सबमुनिराई॥
जब सब सेन नाश कहँ पाइ। कोउ न रहा तहां भू राई॥
तोषहिं देविहिं सुरमुनियूथा। करिकरिविनती विनयबरूथा॥
गावहिं गायन गण गन्धर्व्वा। नृत्य करहिं अप्सरा सर्व्वा॥
विविधिविविधि बहुबाजबजाहीं। नभसुर सुरतिय आहीं जाहीं॥
बरसहिं सुमनसुमन बहुमाला। स्वार्थलागि सबकरहिं नृपाला॥
सहिततियन्हसुर मुदबहुभांती। मनुनिधिउफलहिंसरिताजाती॥
हरिगीतिकाछन्द॥
उफलहिं मनहु जलधि सरिता बहु अमरस्तुति सुनावहीं।
वाल बहुत स्वबली मातु पहँ रोवहीं पुनि गावहीं॥
घटहि न कोप महा देवीकर शान्त होहु सुनावहीं।
करहिं कल्पना सुरादि मनमहँ प्रलय कोप कि आवहीं॥
दो० विधिविधिवसुपतिकल्पकरिजोरिजोरिनिजपाणि।
स्तवहिं सारति विबुध गण सनातनी श्रीजानि॥
तोटकछन्द॥
जयरानि भवानिमहा सुखदा। जगधारसदालयकार सदा॥
जयदेवि महाक्षणमाहिं हती। अमरारिमहाजगछाहसती॥
रिसत्यागिकरोकरुणाजननी। सबदीननमेंअजआदितनी॥
कमलादिक देवि सबेतुमहीं। निजपाणिसुजोरिसबेनमहीं॥
अजनी वपुनी सबरूपकरी। तवरूपकलानहिं जान परी॥
महिमाअमिता नहिं पाररही। कछुजोकहिये सबथोरसही॥

नित भूतिस्थैर संहार करी।विधियाजग कोटिन्हभारधरी॥
द्रवहो द्रवहो अब मातुमहा। करहिं हम सेव सनेह इहा॥
दो० जय श्यामा श्रीमालिनी अन्न पूरणा दाय ।
श्रीदुर्ग्गा दुर्ग्गा महा महान दुर्ग्गा माय ॥
आदिशक्ति श्रीआदिनी जय जयतीगुण खानि ।
महा शक्ति श्रीभगवती आदिनि देवि भवानि ॥
चौपाई ॥
जयजग कारिनि तारिनिमाता। अमितप्रभाव महाविख्याता॥
वपु वेष सुवेष धरी जननी ।महिषदनुजसहदलक्षणहननी॥
अज हरि शिवआदिक सब देवा। अजाकमला शिवादिक सेवा ॥
तन मन हित चित करहीं माई। अमित प्रताप मुक्ति नितदाई॥
द्रवहुद्रवहु सबरिस अब त्यागी। कारुणिका करुणा जगजागी॥
निरंकारिनी आदिनि माया। आदि बीच अवसान न जाया॥
सनातनी सत्या सतकारी । कौतुक ऊपर भव संहारी ॥
एक आदिनी केवल रूपा। अगजगव्यापिनिनित्यस्वरूपा॥
दो० पूजन करहीं अमर हम जयश्री जगदाधार ।
कृपामयी बर दृष्टि करि करहु स्वांगीकार ॥
चौपाई ॥
सेनसहित खलमहिषअसुरसब। वधितभयेक्षणमाहिं भूपजब॥
अगणित शवपूर्नि खण्डअनेका। जहँतहँ परे राशि इकएका ॥
देवी निरखि हँसी मनमाहीं। सुखप्रद लीला महि नभठाहीं॥
बरदायिनि वर आज्ञा कीन्ही। विपिनबहुत काष्ठादिक दीन्ही॥
अणमहँ समटे महिरण माहीं। आज्ञा पावत पावक आहीं ॥
क्षायसु पाय प्रचण्ड अधीरा। बही कोटि उनचास समीरा ॥
क्षणमहँ खलदलगण शवयूथा। जरगा रहा न लेश वरूथा ॥
निज निज तत्व मिले सबजाई। जल भव नभ आदिक जेगाई॥
दो० भूप कटक रह गगण सम इन्दु केतु बहुतेर।

उड़गण आदि बिलायगे देवि इच्छ रवि घेर ॥
इह विधि वसुप भवानि तब धारी भोरो रूप।
तीन कालज्ञा ज्ञानदा दुर्ग्गा महा अनूप ॥
॥ चौपाई ॥
जैमिनि जान परो कछुनाहीं। मिलेतत्वसब निजनिज ठाहीं ॥
जब सब भा अस लाग भूपा। कछुहु न कीन्ही माय अनूपा ॥
बृह्महु जा बल जगंत नचावे। सो बल शक्ति कि जानीजावे ॥
असजननी नित कृपाकारिणी। कीन्हकृपासुरगणहिंतारिणी ॥
पराक्रमी विकरार नरप जब। दुष्टदुरात्मन अमररिपुहिंतब ॥
खलमहिषहिं वधकीन्हभवानी। निरंकारिनी दुर्ग्गा रानी ॥
अजआदिकजे विधिविधि देवा। ठानी पूजा अस्तुति सेवा ॥
जयतिमहा दुर्ग्गा सुखदानी। हीरा स्वामिनि तो जगरानी ॥
हरिगीतिकाछन्द ॥
तीजगरानी हीरा स्वामिनि हरिहर उपजावनी ॥
मारीक्षणमहँअमितअपारहु सदल महिषढरावनी ॥
पायपरमगति विबुधवैरिसब अमरसुखबहुपावहीं ॥
संग्रामकौतुकहरषिहरषिमन सुरतियनाचगावहीं ॥
गन्धर्व्व अप्सराबजावहीं गाय गवाय नाचहीं ॥
हरिशिवआदिकमहामहासबदेविभक्तिशुभयाचहीं ॥
जेजन तनमन सनेहरत तेसमरकाण्डहिं गावहीं ॥
तेश्रीमातापरमभक्तिपुनि मुक्ति वरगति पावहीं ॥
सो० हेजननी जगमाय जोकछु लेखन लेखमहँ ॥
करहुसत्यहोजायतुम्हरीमहिमाअमितनित ॥
गावहुभक्ति सनेह समरमहिष महिषारिनी ॥
वारहु नित मनदेह अमरेश्वरी कृपा हित ॥
दो० भल भलकारज जीतिभलजोकछुहोवतजाय ॥
तसतस बलजसजसचहे पूरहिंश्रीजगमाय ॥

याचत हीरालाल अस श्रीदुर्गे सुनि लेहु ॥
तवपद जलजपराग रस ममअलिहृदयहिंदेहु ॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्गायशःद्वितीयकाण्डःसमाप्तः ॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायण ॥

हीरालालकृत ॥

नवकाण्ड ।

तृतीय काण्ड ॥

सो० बहुजगभवलयकार जगजननीजगज्ज्योतिनी ।
महिमा अमितअपार श्रीदुर्ग्गासोचण्डिका ॥

दो० भृकुटीविकटकटाक्षते अगणित सृज संसार ।
नष्टहोहिं क्षणमाहिं पुनि दुर्ग्गा भावअपार ॥
सोदेवीअतिकौतु किनि सुरगणतोषनलागि ।
श्रमते मारत असुरगणसदाज्योतिश्रीजागि ॥

चौपाई

नृपजब पराक्रमी विकरारा । दुष्टदुरात्मन रिपु संसारा ॥
सुररिपु महिषहिंहतीभवानी । निरंकारनी दुर्ग्गा रानी ॥
तबविधिहरिशिवसुरपदिनेशा । शशि पावक धनपति तोयेशा ॥
आदिकसुरगणअगणितजाती । मातुहिं घेरे भांति सुभांती ॥
पूजहिंविनवहिं मिलिसबदेवा । भया काज कस आनहिं सेवा ॥
महिपति मुनिसुरआदिकरीती । सास्तुतिपूजहिंहरषिसभीती ॥
कृपा खानिकर कृपाहिं पावें । प्रबलातजिपर ढिगकिमिजावें ॥

सिरनवाइ सुरकरहिं प्रणामा । नम्रनम्र ले निजनिज नामा ॥

दो० कंज अमर गण विकसहीं निरखि भानु श्रीमाय ।
गत अन्तर यदिदिनपहो सकुचहिंजलजसुभाय ॥

चौपाई ॥

महिषारातिनिरिसलखिभारी । जहंतहं जहंतहं सुरसुरनारी ॥
विधि बिधिसेवा मनमहँठाने । कैसहु देविहिं तोषन आने ॥
सबमन मांगहि कोप न माया । कोप त्यागि बहुकरहिंसुदाया ॥
बरत देविमुख रिसवति नाई । लखि रिसजाहि शन्तहोजाई ॥
सरल सारथी सुरस्व भाऊ । चाहहिं निज तिजधात पसाऊ ॥
जिमिकिंकरगणसुखभयमाहीं । कल्प वृक्षतर औचक जाहीं ॥
कौतुक लखि जगअन्तरज्ञाता । विहँ सतयदि बपुकोपितमाता ॥
हँसत दशन मिस्सी दरसावे । दाड़िम बीज अरुण करियावे ॥
तबसुरसुरतियहियदृढ़कीन्हा । सकल भांतिसेवा करलीन्हा ॥
सनातनी सन कहा दुरावा । भक्ति भाव मानत भल भावा ॥

दो० ताहिकाल तिहिठाममहँ शोभादिक बहुकार ।
निजतिज निजतिजरूपसों साजेविविधिप्रकार ॥

चौपाई

ताहिठामकहँ निर्म्मलकीन्हा । साजननिजनिजपाणिन्हकीन्हा ॥
मुक्ताविक मणि चौक पुराये । हेम जटित मणि खंभ लगाये ॥
विविधि रतनमय छत्र बनाये । ब्रह्मा निज निपुणाइ जनाये ॥
मुक्तायुत बहु वन्दन वारे । कदलि वृक्षमणिजटित सँवारे ॥
नाना मणिमय कलशसजाये । ध्वजपताक बहुविधिनिरमाये ॥
रतन जटित सिंहासनसाजी । कोमल निर्म्मल शय्या राजी ॥
मध्यहि राखेविधिविधिसाजे । जापर जननी सादर राजे ॥
उतरत बाहन देवी तहँवा । सोशोभालखि सकचखु जहँवा ॥

दो० सुनिधुनिनूपुरतिहिसमय काम अमरकरनारि ।

अजआदिकअजप्रियादिकमोहहिं वारम्वार ॥
बहुत बेर भइ गमन महँ करतकटाक्षअनेक।
सोदरशकजगअवनिपति भांतिकटाक्षनएक ॥
सो० सोहसुरन्हकरभीर चाहिं मातामुखहिंलखन।
मणिन्हजटितसोतीरतीरबीचजहँतहँझलक॥
चौपाई॥
असवस मण्डप आसन राजा। अमरअमरनी निजकरसाजा॥
सोकछुनहिं शोभा सत माहीं। शोभा युत भा पामायाहीं॥
सुरगण जनित शक्ति वररूपा। जन्म रहित तहँ सोहअनूपा॥
सो शोभाकिमि वरणीजाई।चकितचितहिंअजतजिनिपुणाई
इक अजका कोटिन अज आवें। मातु जनित शोभा नहिँ पावें॥
गावहिँ किन्नर बाज बजाई। नाचहिँ नृत्यकादि हरषाई॥
सुर मुनि आदिक सहन मनाई।निजनिजदशनन्हतृणधरिराई॥
लागे पूजन सुर सुर नारी। पलक भार रचना धिक्कारी॥
दो० शोभायुत शोभामयी शोभा खानि भवानि।
ढिग वाहनमुखतेजमय दरसतकाल समान॥
शोभा निरखतसनहिंमन शोभामनहुलजाहिं।
रोम रोम लोचनलगे सब मांगहिनिमिनाहिं॥
चौपाई॥
पूजहिं श्रीदेविहिं बहुभांती। साजिपूजसजि सुरगण जाती॥
चोवा चन्दन बलि सुपाना। नवनवजिनिस सुगन्धितनाना॥
धूप दीप वर पुहुपन्ह माला। श्रीफल पुंगि आदिवसुपाला॥
भूषण वसन रतन बहुलाये। जे जे पूजन साज कहाये॥
पूजहिं सुर अरु अरु हरषाई। करहिं आरती मन न समाई॥
सुर सब पुलकावलि बहु फूले। लोकहिं मातु भानु अनुकूले॥
निम्न निम्नकरि सुर सबठाढ़े। जनु बहु पंकज रविलखिबाढ़े॥
भांतिभांति निजनिज करबांधे। जोरिजोरिकर अस्तुतिसाधे॥

दीन सरल मृदु मधुरी बानी। भाषहिं विनयरूप तुषदानी॥
दशमन्ह तृण गर फेंटा बांधे। निम्न वेष मनु सेवा साधे॥
दो॰ सुन्दर सुन्दर सुर सुरनी शोभा सोह समाज।
अमित कमाछवि मध्य महँ देवी छवि छवि ताज॥
चौपाई॥
बोले सुरगण मुनि बड़ भागे। विपुल मेघ नभ बरसन लागे॥
मंजुल सुन्दर वचन सुनाहीं। देवी बल मय निज बल गाहीं॥
सोमनु बूंदन पुष्पन केरी। वरषहिं तोषक शीत घनेरी॥
वरष सुमन पुष्पन्हकरमाला। गिरहिंगार बहु मनुमहिपाला॥
कभु कभुसुरबहुगड़गड़करहीं। मनुबिजली नभआहट भरहीं॥
सुर सुरनी मुख कभुचमकाहीं। जनुदामिनिअति शयनभमाहीं॥
दीनआरती कभु कभु बानी। बहत वायु शीती तुषदानी॥
भयानन्द कभुकभु सुर कापे। नीज समीर मनुशीतहु व्यापे॥
विविधविविधबाजहिंबहुबाजा। रव बरषा पशु पक्षि समाजा॥
सुर सुरतिय हियक्षेत्रहिंनाना। निज निज इच्छा बीजसमाना॥
सो बोवहिं निजनिजमनमाना। लवहीं फलदेवी वरदाना॥
भूप भांति भलसोचहु वातो। कसबरषा रवि आदिक जाती॥
दो॰ जगजननीदेवीशिवा मुखअगणित शशिभानु।
विकसहिंछपहीहोयइकअसशुभनभमहंजानु॥
चौपाई॥
भूप बखानहुं कावित लागी। देवीकिमि रविशशि दुरभागी॥
यदिकलंक शशि महंनहिंहोवे। अस अगणितशशिराकाजोवे॥
सार सार कछु लै दरसावें। तबकभु देवी लेशन पावें॥
असदेवी जग जननि भवानी। महान दुर्गा सब गुण खानी॥
निरंकारिनी रूपिनि माई। अम्बा बपुले शुचि शोभाई॥
सो शोभा कहि जावे कापे। मुखर गिरा रसना बहु दापे॥
विधि धिक्कारे निज निपुणाई। चह चिउँटी नृप मेरु बनाई॥

रवि ढिगमहिजनपहुंचकिजावे। रचना वेदकि मूढ़ बनावे ॥

दो॰ नीलाम्बरिबहुभूषिणी भुज अठदश तीनैन।
सिंहयाननी कमामुखी सदयसुनहि शुभबैन॥

चौपाई ॥

जयति जयतिजयमातुभवानी। जयतिशिवा जयमुक्तिप्रदानी॥
जयआदिनि जयसत्यधामिनी। जयजगदम्बासुरनिस्वामिनी॥
नित्या सत्या अनन्तनि माई। जयश्रीअगणित जगउपमाई॥
आदिनिज्योतिनिभवलयकारिनि।सुरमुनिजनहितबहुवपुधारिनि
जय श्रीदुर्ग्गे महान माया। उपजावति हरि शंभु निकाया॥
असदुर्ग्गाकहँ बहुनमस्कारा। नमो नमो पुनि पुनि बहुबारा॥
शतशत सहससहसलखवानी। कोटिन्हआदिन्ह नमनभवानी॥
जयति नमामी जयति नमामी। जयति नमोजय अन्तरयामी॥

दो॰ कोमलासुन्दर रांगिनी पीतांगिनि सुकुमार।
कर परसत लग देहमल अस सुन्दरतासार॥

चौपाई ॥

अबअस्तुति मुनिकरहु वखाना। सोसब गूढ़ अर्थ विधि नाना॥
जस संयोग बने जस ठाईं। सो सबजानहु तस विधिनाईं॥
सत रज तम बल माया आदी। प्रकृति स्वभावतत्वसबबादी॥
बहुजग भवलय आदि कहाई। बाढ़ब घाटब रहब नशाई॥
अगणित कार हेतु दरशाही। लखितज्ञानमय श्रुतजेआही॥
दरश मानसिक विद्या भूपा। पुनि साधारण कथन अनूपा॥
अगणित अद्भुत करणी राई। सकल सरलसांहोय जनाई॥
सब आवहीं मुनि अस्तुतिमाहीं। इह महँ संशय लेशहु नाहीं॥

दो॰ सुरथ बनिक बुधि ज्ञानते थिरता मनमहँलाइ।
सुनि बिचारहु धैर्य्य ते कारण कार सुभाइ॥
साधीनी बहु नम्र हो भाषहि सुर समुदाय।
सुनि सुनिश्यामादेविअतिहरषहिंअमरलुभाय॥

॥ चतुष्पदाछन्द ॥

जयशुभतादायिनि सुरमुनिभायिनिलेहुजननी प्रणामा।
हरि शंभु पूजिता तेज भूषिता शुभकारिनि शुभकामा॥
अजहरि शिव शेषा गिरा गणेशा बेद पुराणहु गीता।
तव अतुलप्रभावाबलअतुलावाकिहि न सकहिंमनभीता॥
बहुजगविस्तारिनिबहुजगपालिनिजयतिजयतिजयदेवी।
अशुभ भयहारिनि बुद्धिकारिनी सुर सुरतियतवसेवी॥
स्वयम् स्वरूपा दुर्ग्गानूपा पुण्यन्ह गृह कमलाहो।
स्वयम् स्वरूपा शिवा अनूपा पातकि गृह दरिद्रा हो॥
श्री स्वयम् रूपा ज्ञान सुरूपा निर्म्मल हृदय न माहीं।
श्री स्वयम् अनूपा श्रद्धारूपा सत जन हियकर ठाहीं॥
श्री स्वयम् स्वरूपा लज्जारूपा सुवंशहिय कुलजनके।
महाकाल कालिनिरोगसुगालिनि निरोगता गृहमनके॥
श्री दुर्ग्गा जैसी चंडिक वैसी नमो नमो जयमाता।
अखिलविश्वपालहुभरजगजालहुजयतिजयतिजयत्राता॥
सुरासुरगणन्हमहँतववपुवरइहहमकसकरहिं बखाना।
असुरगणनाशकिनिअत्युत्कृष्टिनिअसवीरनिकसजाना॥
अघोररण माहीं अत्युत्तमाहीं चरित्र हमकिमि कहहीं।
साक्षात परमेश्वरीसबसुरेश्वरी हमतव दाससुअहहीं॥
दो॰ सोचहु स्तुतिभूपतिइहपद पदभांति सुभांति।
सर्व्व व्यापता सर्व्वबलसबकारण दरसाति॥
बहुसुख सम्पतिआदि सबबढ़तीघटती आदि।
ज्ञान बुद्धिसबमोल्यसबदरसहिं सबसम्बादि॥

त्रिभंगीछन्द॥

सत रज तमजाई दुर्ग्गामाई जग उपजाई गुणखानी।
श्री आदिनिसहिताअन्तहुरहितामध्यन कथितातवरानी॥
अजहरिपंचाननशेष गजाननशारद समन भजतोही।

पर कौन चलावेतुमहिं नध्यावे तुमकहँपावेजगमोही ॥

दो० । जैमिनि यामहं दरसहीं सर्व्वोत्तमता आदि ।
अमित प्रभाव प्रतापपुनि जो सबवेदन्ह वादि ॥

॥ तोटक छन्द ॥

जयमातु हरि ईश सबे । गुणाती अहहींनहिंजानहिंते ॥
निजरूप सुआदिकतेसबरे । नहिंजानहिंतोहिसुमातुबरे ॥
जयदेविअपारप्रभाव अहे । सुब्रह्मजुअपार न पारलहे ॥
जयआश्रमदायकदेविवरी । अखिलजगतोरसुअंशभरी ॥
षटजे कुविकारसहींजगती । परमेउतमे प्रथमे प्रकृती ॥
अजनी लक्ष्मीशिवनीबहुते । तवअंशसुपाकरहीं जगते ॥
सृजपोषणनाशनमूलअहो । सुनमोसुनमोसुनमोसुगहो ॥
दुर्गेदुर्गे जयदेवि महे । सबरेहमदेव गहे सुमहे ॥

दो० । जेजे अस्तुति कथित इह दरसत प्रकट प्रभाय ॥
तेते यामहं दरसहीं भाव प्रताप जनाय ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय दुर्गे महान माया । सुख बलतोषण जीवनदाया ॥
सुरगण यज्ञ तुष्ट होजावें । सो तुमभाषित स्वाहा आवें ॥
पितृगण कहं तिलांजलिदेही । सो स्वधा तुम भाषणएही ॥
सुरकाराज जन स्वाहा भाषे । सो स्वाहा तुम निजपणराखे ॥
पितृकाज जन स्वधा उचरहीं । सो तुम स्वधा नेमतवअहहीं ॥
मुक्तिहेतु तुम विद्या माई । अत्युत्कृष्ट व्रता महाई ॥
सो तुम विद्या परमा माया । भगवतिनाशहु जगतनिकाया ॥
दोषन्ह वशी भूतजे इन्द्रिय । तातत्वसारसुरमुनि शुभहिय ॥
तुमकहं जपहीं नेह स्वरूपा । शब्दात्मिका ब्रह्म स्वरूपा ॥
विमल वेद ऋगशाखा जोई । यजुरवेद शाखा पुनि होई ॥
भक्तिमनोहर पद पारनकर । सामवेद शाखा विद्यावर ॥
तीनवेद भगवति तुमजोई । सो तुमअविगति रूपिनि सोई ॥

दो० जामहं आवत जगतसुख पोषण बढ़न प्रकार ।
जीवन पुनि बल वृद्धता जाते जग विस्तार ॥
सब कर कारण एकहै जगमय जगदाधार ।
रूपरहित श्री अम्बिका दुर्गा मूल अपार ॥

॥ पद्मावति छन्द ॥

हेवातारूपा कृषी अनूपा पालन रूपा सुभमाया ।
सबप्राणिन्हलागी जीवनभागीतुमहीं जननीप्रददाया ॥
जे सब जगमाहीं कुरोगआहीं विदिता तुम नाशनकारी ।
सब शास्त्र सुसारा पार अपारा सरस्वती तुम भारी ॥
हेदुर्गा माया अस अर्थाया दुखते को जीतन चाहीं ।
सा असकहुंनाहीं लोकन्हमाहीं दुर्गावददुखकटिजाहीं ॥
असम्बन्ध सागर अपार बड़तर तुम नौकाहोमय ज्ञाना ।
सुरगणबड़भागीतिनकरलागी करहोकौतुकशुभनाना ॥
कैटभरिपुहरिजो ताकेहियमो एकरूपजो लक्षिवासा ।
सोतुमश्रीमाया लक्ष्मीमाया सोपोषण शक्ति निवासा ॥
शशिमस्तकजाके सुशिवसदाके प्रतिष्ठित पारवतिजोई ।
तुमगिरिजासोई सुशिवाजोई नाशन शक्तिहो तुमसोई ॥

दो० पोषण जग विद्याजगत दुर्गावद दुख जाय ।
ऐश्वर्य्य सुख जगत्कर मरन काल पुनि आय ॥
सो सब ऊपर दरसहीं शोचहु गूढ़ अनूप ।
जग महँ दुर्गा एकहै कारण सबकर भूप ॥

॥ लवायी छन्द ॥

देवितवाननकोह अमितमय महिष जब निरखत रहा ।
कठोरता सह निरख्यो सोई वदन सो सुन्दर महा ॥
सो मुख सन्मुख हमरे राजत अमल पूर पूरण ज्यों ।
राकाशशि मण्डल इव दरसत वरहीं छवि आभाज्यों ॥
उत्तम हाटक हाटक वर वर पीत पीत काश भरे ।

क्रान्ति तेज मय वदन दरसत मन हरता मोह करे॥
जामुख कहँलखि महिष दानव प्राणतजो स्वक्षणमही।
सो आनन अद्भुत अति देवी अचरज प्रद बहुत सही॥
सो मुख भृकुटी वंक भयंकर काल जाकहँ लखि डरे।
सो शशिराका लाग अरुण सम लोकहिं सो मन न भरे॥
दो॰ जग सुन्दरता यामहीं पोश काल जग रूप।
जहँ तहँजहँ तहँ आवहीं जगत चराचर भूप॥

हरिगीतिका छन्द॥

मातु जबहिं तुम दरसी कोपित लखत को जी पावहीं।
सो जननी प्रसन्न भलहोवहु परमा हम सुगावहीं॥
कोहवती तुम होत जबहिं अति जगनिमित सुरनाशहो।
जानत हमरे महिष कटकसह नष्टकरी हम पासहो॥
मनोरथ सब दायका देवी लोग प्रसन्न आवहीं।
जेजन देशन्ह महा जनन्ह ते स्वीकृत होजावहीं॥
तिन ढिग वित यश धर्म्म कर्म्म सब नष्ट होवन पावहीं।
तिनकर सुत वनितादिक सगरे धन्यधन्य होजावहीं॥
दो॰ मुनि यामहँ भल लोकहो आवत जग व्यवहार।
भांति भांति सुख जगतकर जननी करहिं अपार॥

चौपाई॥

सुकृती यशवी जग नर नाना। तेहोवहिं अतिविदित विज्ञाना॥
सबसो सत्या तवसु प्रसादा। पावहिं स्वर्ग वेद सम्बादा॥
इहि कारण हम भाषत जाहीं। निश्चिततुमहिंलोकतिहुंमाहीं॥
सुफल दायका सुफल दायका। सुरमुनिजनगणसुमनभायका॥
हे दुर्गे चण्डी जगदम्बा। दीन अमर हम तव अवलम्बा॥
स्मृति रूपिनी हे श्रीरानी। हरहोजनभय छविगुणखानी॥
स्वस्थचित्त जनतुमहिंसुमिरहीं। बुधि कल्याण पाइ पुनि टरहीं॥
दारिद्र कर दुःख जब होवे। सोदुखजनित कुभयबड़जोवे॥

तिनकर दुख भय हरहो माई। सत्य धामिनी सुखमा छाई॥
नित नित सब उपकारज हेतू। कोमल चित्ता नेह समेतू॥
असको ईश्वर तुम इव आहीं। कतहूं कोऊ तुम समनाहीं॥
जबसुर रिपुगणमीचहिं जाहीं। सबजगतवअतिशयसुखपाहीं॥
करहिं कुपात असुरविधिनाना। नरक गमनकहँ पात समाना॥
ते सुरारि रण महँ तुम पाहीं। पाइ मीच सुरधाम सिधाहीं॥
कृपा दायका तुम कहँ त्यागी। जाहिंकहां हम हीनअभागी॥
जो कछु अहहो तुमहीं माई। कारुणिका सुख अम्बसदाई॥

दो० मीमांस यामहँ भरी लोकहु भूप विचार।
सोसब जगमहँ दरसनित भावसुभाव प्रसार॥
अन्तरहिय सुमरण सकल सत्यआदिस्वभाव।
सब ज्ञाता सब कन्दनी श्रीदुर्ग्गा शुभ भाव॥
सो० पति कंचुकिनि माय नव वसनो शुठि भूषणी।
दुर्ग्गा नाम कहाय सोहत हीरा स्वामिनी॥

रोला छन्द॥

तव दरशन ते माय सुर रिपु भस्म होजाहीं।
हतहुतिनहिंनिजशूल शुचिहोय स्वर्गसिधाहीं॥
एक अनेक प्रकार भाग उन रिपु कर माहीं।
तुम्हरी मातु अपार मतिअति समीचन आहीं॥

छुत्तानन्द छन्द॥

तवखंगनकर यूथ काशवरूथ प्रहारते अगणितअसुर।
तवतिशूलभयकारअगूअगूसारप्रकाशलोकनहिंनष्टजर॥
जातेसबमनमाहिंअचरजलाहिंआपितहोवहिंअसुरगण।
लखिमुखारविंदसोइअधशशिजोइसोचहिंसबसाश्चार्य्यमन॥
दो० इहमहँ बल सुप्रभावहै खलगण जाहिं विलाय।
सो बल रूप स्वरूपता श्री दुर्ग्गा श्री माय॥

॥ चतुष्पदा छन्द ॥

तवगुण स्वभावा महा प्रभावा पतित अचारन माहीं।
विविधनाशकारी सबकहँजारी असतव स्वभाव आहीं॥
अलौकिक सुरूपा अमितअनूपापरन्हअविचिन्त्यआहीं।
सबसुरकरबलकहँतवबड़बलतहँबहुविधिनाशतजाहीं॥

दो० महिषदनुज दाहनीनृप सुनि सुनि भाषण टेर।
मुसकुराइ विहँसत बहुत शोभा शोभा हेर॥
कपोलादि महँ मोड़पर सुरहिय मोहत जाय।
अविक जटित सन्मुख दशन दोऊदरशहिं आय॥
सो शोभा कवि बरनहीं मयी इन्दु कर सार।
सो दुइ तारा दशन नभ सेत कृष्णामहँ धार॥
यहलखि सुरमुनिमोहहीं त्यागहिं जबतवध्यान।
पुनि विनवहिं सँभरिकर शिशु गणपढ़ अज्ञान॥
लोकहु मनुपति अमर गण भलपाये जगदम्ब।
कारुणिका अतिजानकर चाहहिं शुभअवलम्ब॥

॥ चौपाई ॥

सो देवी तव कृपा अपारा। असुरहुमाहिं प्रकटविस्तारा॥
वरदायिनि क्रम महा सुहाई। जाकर उपमा कहँकहिजाई॥
रूप तुम्हार विपुल बहु भारी। रिपुमन त्रासन नाशनकारी॥
बहुत मनोहर सुन्दर सोहे। रूप विशाल अमरगण मोहे॥
लोक काल सब तीनहु माहीं। कर्म्म असाधारण जे आहीं॥
कृपा दृष्टि तव सब चित माहीं। परहिं रीतिशुभसदासदाहीं॥
नाश हेतु पुनि रण सब माहीं। दृष्टि कठोर परे भल नाहीं॥
पर भल नाशहु असुर घनेरे। तीन लोक सब जग बहुतेरे॥
होवहिं रक्षित विविध प्रकारी। समर ठाममहँ असुरन्हमारी॥
ते सुरारि सबगे सुर लोका। विनुश्रममनहितसोचनशोका॥
असुर जनितभय हमअवत्यागे। नमहीं तुमकहँहमसब जागे॥

दुर्गे नमन नमन हम करहीं। हीरास्वामिनि जयउच्चरहीं॥

दो० त्रिलोचनि भुज अठारनी देवि महा कमनीय।
सुन्दर भाल विशाल अति चमकत मनुदमनीय॥
सोहत अति सिंहासनी सह कटाक्ष वर वेष।
शोभा वर्णत सकुचहीं गणप शारदा शेष॥

सो० आदि नाम जग माहिं कोह प्रबलता वीर रस।
कारज साधन लाहिं मुनि या महँ सब दरसहीं॥

दो० विविधविविधतहँविबुधगण निजनिजहितकेहेत।
बोलहिं भाषण सत्य सब होय अचेत सचेत॥

चौपाई॥

वर त्रिशूल ते जननि भवानी। पाहिपाहिहमकहँ बरदानी॥
घण्टा ते रक्षहु श्री माई। पाहि पाहि सह बाणसुहाई॥
धनुरज करि कठोर टंकारा। पाहि कृपाकरि मातु अपारा॥
आत्म शूल ते देवि हमारी। रक्षा करहो सुख दातारी॥
परमेश्वरि चण्डिके माता। पाहिपाहि जगसुरगणत्राता॥
हम सुर पूर्व दिशा के वासी। पाहि पाहिश्रीश्रीसुखमासी॥
पश्चिम दिशिमहँ हमसुरलोगा। वसहीं करहो रक्षा योगा॥
हमसुर उत्तर दिशि शुभ माहीं। वसहां रक्षा करहो सदाहीं॥
दक्षिण देश अमर हम वसहीं। रक्षहु मात आस तवअहहीं॥
तीन काल तीलोकन माहीं। जो तवरूप प्रदर्शित आहीं॥
जग सृज पोषण नाशन हेतू। रूप महा तव सुखमा केतू॥
सोइ रूपते सुख वरदाई। हमकहँमहिकहँ राखहुमाई॥
सोहत अति तव भुजा अठारा। सुन्दर शाखा नव विस्तारा॥
खंग गदा शर आदिक शूला। नवपातन्हलगशुचिशुचिफूला॥
सो उन अस्त्र शस्त्र ते माई। रक्षहुहमकहँ सर्वत्र सदाई॥
पाहि पाहि जग श्री जगमाया। पाहि पाहि देवहु तव दाया॥
जहां जहां पुनि निज तिजरूपा। रक्षकरहु करि कृपा अनूपा॥

सुरथ वनिकती गति सबदेवा । विनयसुनावहिंहरषिसभेवा ॥

॥ हरिगीतिका छन्द ॥

वसुपर्वानिक त्रिअवस्था सुरगण विनयबहुत सुनावहीं ।
जग जननि मातु श्री दुर्ग्गाप्रति मातुश्लाघ्य गावहीं ॥
देवी मुख प्रसाद तोषण ते शोभित अमित सोहहीं ।
सकल अमर अमरनी बहुतसो लोकिलोकि विमोहहीं ॥

॥ दो० ग्रामहँ चार प्रकार कर आयुध रक्षण केर ।
चारहु दिशिमहँ व्यापित सोनृप सोचहु हेर ॥
सत्व व्याप बल रक्ष जग नाना दिक जे ठाम ।
ऊपर सुर सब गाय मे श्री दुर्ग्गा इक नाम ॥

सो० जगधात्री श्रीमाय शोभितसोहत अमित अति ।
विनय भाष तुष पाय हंस बदना शुभ्र सुन्दरी ॥
भक्तिलोकसुरमाहिं वन्दितपूजित विविध विधि ।
चन्दनादि लेपाहिं भाव स्वभाव ते अर्च्चिता ॥
माला शुचि नव फूल उत्तम धूप सुधूपिता ।
शिवादेवि जग मूल नील सुवसनी मातु वर ॥
सुनि सुर वचन सुमानि देवी बोली सुधा सम ।
रति तरुसम मुखमानि झरहीं सुन्दर पुष्पवहु ॥

॥ चौपाई ॥

कह माया सुरकहँ बड़ भागी । ठाढ़े जे तहँ स्वारथ लागी ॥
हे सुर सुरनी सुनहु सध्याना । त्री अवस्था अमर प्रमाना ॥
जस मम इच्छा होवे सोई । कोटिन युक्ति आन नहिं होई ॥
पुलके सुर गण आनँद फूले । ताहि काल सब अपान भूले ॥
मरत तृषा मनु सुधा पिआई । मरत क्षुधा संजीवन लाई ॥
बोले सुर गण हे जगदम्बा । भगवति देवी माया अम्बा ॥
तुम करके महिषासुर जबहीं । बधित भवा होगे सब तबहीं ॥
कछु न रहा शेषहु तव माया । देवहु वर अब कारि वरदाया ॥

दो० कविकोविदजन युक्तिकरि दशनअविक असभाष।
बोलत जननी हँसत पुनि जे सन्मुख दुति राख॥
सो० गुण बड़ अविकन्ह माहिं फूटहिं नहिंकभु वजूते।
दावत सुरहिय जाहिं दशन अविक जगदम्ब कर॥

चौपाई॥

महेश्वरी परमेश्वरि मातू। होहु प्रसन्ना सुरगण त्रातू॥
सत्यकारणी सतसत सहिता। तुमदीन्हीवर कछुनहिंरहिता॥
श्री श्री दुर्ग्गा शिवा अनूपा। संस्मृता संस्मृता रूपा॥
उत्कृष्टा कलेश हो जबहीं। तुम काटो हमरो तब सबहीं॥
पुनिपुनि जबजब संकट आवे। काटहु तुम तब सब सुर भावे॥
सदा करें सुख चैन वरूथा। तुम वरते माता सुर यूथा॥
शुभवर देहु हमहिं पुनि एही। भक्तितुम्हार कभुभूल न जेही॥
पुनिहँसमुखनी श्रीजगदम्बे। दुर्ग्गे दुर्ग्गे इह अवलम्बे॥

हरिगीतिकाछन्द॥

हंस मुखनी श्री अम्बे दुर्ग्गे जो इह स्तुति गावहीं।
सो जन ज्ञानोपचयैश्वर्य्यते स्त्री वित्तादि पावहीं॥
जाते होहिं हमरी वृद्धि वहु सो जस हम सुभाषहीं।
याते प्रसन्ना द्रवहु जननी ध्यान तव हम राखहीं॥

सो० वदित स्तुति श्रीमायजस ऊपर सबभासगे।
नित नित हो हो जाय तीनलोकतीकाल महँ॥
यामहँ संशय नाहिं जस रचनातसकही हम।
तववरते हम आहिं जसजस भाषणप्रकटतस॥
दो० भद्रकालि सुरपूजिता नित कल्याण स्वरूप।
हो प्रसन्न अमरार्थ हित भाषी भाष अनूप॥
तथास्तु कहि श्रीभगवती गमनी अन्तरध्यान।
मनु अगणित रविशशिमहा होयएकबिलगान॥
नृपउपमा असआहिं पुनि अस्तुति दीपक राग।

तालन्ह समजब पूरभा जननि प्रकाश अजाग ॥

चौपाई ॥

कवि विचारहीं उपमा ऐसी । स्तुत्यारंभ सुर कर जैसी ॥
सोइ राग दीपक नृप जानो । प्रगटी माता दीपक मानो ॥
रण सुर चुपरह ताल विभंगा । खलदलमहँ सकुचाना अंगा ॥
पूर स्तुति भा दीपक रागा । सकुचत जननी प्रकाश भागा ॥
अन्तरगतसकुचतमहिषारिनि । कछुवहुलगतबसुरअसुरारिनि ॥
तदपि दान वर पाइ आनन्दू । जलपतिगणलखिमुखमनुइन्दू ॥
तौहू मनमहँ पुनि पुनि लाहीं । काहे बेर न लग रणमाहीं ॥
जाते जग सुखमा मुख माया । भले निरखते अमर निकाया ॥
नरपति मनमहँ सुरसब फूले । जलनिधिवीचिनिशिपअनुकूले ॥
लौटे सुरगण वर भल पाई । मातु चरण रज शीश लगाई ॥
पारस परस लोह मनु पाई । दारिद्रगृह सुख सम्पति छाई ॥
सुर सुर तिय प्रसन्न बहुतेरी । धेनु काम किंकर गण घेरी ॥
सोइहिंसुरनिज सुरनी साथा । वर्णहिं वाटहिं श्रीगुण गाथा ॥

दो० मनमहँकल्प अनेकविधि कभुकभु सुरगण लाहिं ।
जाते माया सुन्दरी आवहिं दरशन माहिं ॥

चौपाई ॥

कोऊ सुरसोचहिं अस मनमहँ । वेगप्रकट कोऊ निशिचरइहँ ॥
सोखलक्रिहिविधिजायनजीता । जातेहम अति होहिं सभीता ॥
रोइ गाय हम जननि मनावें । जाते सुर सुख दरशन पावें ॥
पुनि पुनि कपट सहितसुरराई । जिनकहँसुखवहु लोभदिखाई ॥
असनहिँ लावहिं ते मन माहीं । तदपि वेगभल मातहिचाहीं ॥
अजहरिशिवजे नितनितध्यानी । पाइशक्ति बल शक्तिहिं जानी ॥
चितमहँहितसह करहींध्याना । सोमनु अम्बा रूप दिखाना ॥
पुनि इह सोचहु निराकारिनी । श्रीदुर्गा दुखअशुभजारिनी ॥
सुरमुनि ध्यानरमी जसकाला । सो अवतार भया नरपाला ॥

सत्य विविधविधि वेदन्हगाई । सोकोविद गावहिं कविताई ॥

दो० भक्ति भाव वर जानहो भाषण एक अनेक ।
समझ बूझ मरियाद जहँ आवत ज्ञान विवेक ॥
अमरज बलसो अमर बल दरशी शक्ति अनूप ।
समरभयोपुनि भक्तिवश आदिशक्ति असरूप ॥

चौपाई ॥

आये निज निज लोकन्ह देवा । भोग विलासहिं भूले सेवा ॥
अजआदिकनिजनिजजसकर्म्मा । लागेशक्ति जनित करधर्म्मा ॥
सुरपति अमर राज तब पाये । शची समेत विलास रमाये ॥
उगहिं भानुशशिबहहिं समीरा । जो जस इच्छित रहेनधीरा ॥
वरुण कुबेर आदि सब भूपा । विधिविधि मा ग्रनिमग्न अनूपा ॥
अमरपितर सबनिज मखभागा । लोक कमंदिमाहिं मग्नागा ॥
सुख विलास जे जग व्यवहारा । जननी रचना जस संसारा ॥
बहहीं सरिता तरवर फूले । जगसुखसमाहि गिरीमनभूले ॥

दो० अगणितजगमहँ तेंरतसुख माहिप मरत गोहाय ।
सो करुणी दुर्गा करी सब बिधि जननी माय ॥

चौपाई ॥

मातुहिं भूले भूले सेवा । विविध विलासरमे मुनिदेवा ॥
लोकहु नृप कस नीच कुचाला । सूगा मैना वानर हाला ॥
सोनहिं कछु देवी कहँभाई । वरसो कस असोय हेजाई ॥
ताले सुर राखहिं नहिं आना । करतब करहीं जो मन माना ॥
सो सब देवी वर सुप्रभावा । काल करे यदि आवा जावा ॥
नहिंकछु होइनकहँ महिपाला । फेंके भवयदि वहु भव जाला ॥
इक वरका अगणित वरआहीं । ते सब सेवक देवी पाहीं ॥
देवत वरका होत भुआलू । अथाह सागर सीप दुकालू ॥

दो० अगणित वर सब देवि कर लोकहु नृप सविवेक ।
भयलय जगकर होत नित छाये एक अनेक ॥

चौपाई ॥

इक वरते जग होत पसारा । सोसबविविधविविधविस्तारा ॥
इक वरदान महा जग छावा । सोस्थित गति वेदन्ह गावा ॥
सोसब प्रकट रहत जगनाहीं । नितनित संशय देखहिंनाहीं ॥
तामहँभांतिभांतिसुखदुखगया । विचरतसुधरत होतलीनमन ॥
सो वरदान एक विख्याता । जाते नाश सकल जगजाता ॥
अस अगणित वर भरे अपारा । अगणितमहिरजकरवरुपारा ॥
महिप बनिक देवी ना भांती । सुरहितहेतु प्रकट विख्याती ॥
सो मैं तुम सनकही बखानी । नित नितदाहनिमातु भवानी ॥

दो० निजबल रखि श्रीब्रह्ममहँ अगजग विपुल चलाइ ।
आदिदेवि श्रीविष्णु कहँ नितनित देत बड़ाइ ॥

चौपाई ॥

जैमिनि बोले सुरथ समाधू । धन धन मेधस मुनिवर साधू ॥
सुधा सरिस रस जीवन मूरी । पान कराये भक्षण पूरी ॥
जब असमुनिवर कसपरहाला । कल्प रूखतर कबहुं दुकाला ॥
अरुकछु करणी माया केरी । गावहु मुनिवर शुभहिय हेरी ॥
कह मेधस सुनु वनिक नरेशा । गाहुं कथा भंजनी कलेशा ॥
आगिल सुनहु सुकथा सुहाई । शुंभ निशुंभ भये दो भाई ॥
देवीवर पा बल अधिकारा । कीन्ह राज अगणित संसारा ॥
सो सब होवहिंविविध बखाना । जस जस योगबनेतिहिनाना ॥

लवायीछन्द ॥

जस जस योगबने तिहिनाना गावहिं श्रुति सदासदा ॥
गावहिं जनमन तन हितसोई पावहिं गति परमतदा ॥
वाराह प्रभु कहँ शक्ति दीन्ही धरा राखे जे बला ॥
दीन्ही प्रहलादपतिहिंसोई हिरणकशिपुहिं हतभला ॥
सोइ शक्ति बलवारी माया देहिं जनहिं सदासदा ॥
जेगावहिं इह स्तुति हितचित पाव मुक्ति तदा तदा ॥

कहत यही हीरा हित चितसों यामहँ सन्देहनहीं।
जपहुभजहुध्यावहुश्रीदुर्ग्गहिंअतुलितबलीभवमहीं॥

दो० गावहिं स्तुतिश्रीदेविकर जनपद रजमन राखि।
पावहिंजगसुख मुक्तिवर सकलजगतहै साखि॥

सो० जयजय श्रीजगदम्ब आदिज्योति श्रीचण्डिका।
केवल तव अवलम्ब वपुरा हीरालाल कहँ॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्ग्गायणःतृतीयकाण्डःसमाप्तः॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायण ॥

हीरालालकृत ॥

नवकाण्ड ॥

चतुर्थकाण्ड ॥

सो० सत्यानन्दिनि देवि निजजनहित वपुविपुलधर ।
हरिहर जाकहँ सेव दुर्ग्गा अम्बा चण्डिका ॥
कोऊ न असस्थान शक्ति जहां व्यापित नहीं ।
भजहु न असमन आन श्रीमाया श्रीदेवि कहँ ॥

दो० जिहिविधि आदिनि शक्ति श्री पारवती धरिदेह ।
शुंभ निशुंभहिं वध करी भूपति सुनहु सनेह ॥

चौपाई ॥

वसुप सुनहु अब कथा सुहाई । शुंभ निशुंभ असुर दो भाई ॥
देविदया पा बल अधिकारा । कल्प एक जीते सन्सारा ॥
शुंभ निशुंभ महाबलि भूपा । भोग विलासकरहिं मनऊपा॥
दोउ दनुज दारुण दुखदाई । बाढ़े अविवुध पद बल पाई ॥
गणहिं न कालहु मातिसमाना । काजअकाज करहिंविधिनाना॥
जीते सुर गणहिं न कछु वारा । निडर निशंक राज विस्तारा ॥
त्रासहिंविवुधहिंविविधकुभांती । दुख असह्यसहहीं सुरजाती ॥
शुंभ निशुंभ लीन्ह सुरलोका । भये सुरेश दोउनहिं शोका ॥

दो० अमर पितृगण आदिकर लेहिं सकलमखभाग।
मनहुं काल दो देह धरि राजहिं अभय विजाग॥

चौपाई॥

रविशशि आदिककरअधिकारू। निजाधीन कर सकलप्रकारू॥
रविशशि ऊगहिं आयसु पाई। शुंभ निशुंभ जबहिं मनआई॥
कोष कुवेर सुलीन्हे जाई। पालहिं आयसु यममन लाई॥
वसहिंवरुणतहँनिजवशजिनके। देव चराचर भय वश तिनके॥
पवन चलावें जब मन माने। पावक जारें इच्छा जाने॥
पावकू पवन वसहिं वश जाके। शुंभ निशुंभ महाबलि बांके॥
सुर कांपहिं दुइ रूप निहारे। सुरतियरहहिं सदा भयमारे॥
अवनी नाथ भुवन दशचारा। को असजोसकइनहिंनिहारा॥
भोग विलास विपुल सुखदाई। ऋधिसिधिसबआयसुनिरमाई॥
कीन्ह न असशतशत सुरपाला। सपन न आससखद असकाला॥

दो० मुनि जैमिनि जीते सकल अमर चराचर झारि।
शुंभ निशुंभ महा बली नेक न मनहिं विचारि॥
शचीनाथ के धाम महँ दनुज दोउ विकराल।
राजहिं भोग सुखादिले अँगुठन्ह दाबे काल॥

चौपाई॥

रविशशि पावक वरुण कुवेरा। बहुल विबुध गण बड़े बड़ेरा॥
आयसु पालहिं जिनके दांवा। आदि कथा ऊपर जिमिगावा॥
तिन सब कर कमु अर्थकहाई। शुंभ निशुंभ भये बड़ राई॥
दुष्ट असुर जिन केर समाना। भये न दूसर कबहुं कुनाना॥
मारहिं जीवन जब मनआवे। रविजलपवनसाविशितकहावे॥
कोष कुवेर अपन वश भाषे। मनहुं वित्त बहु निजगृह राखे॥
दिनपतिनिशिपतिकोअधिकारा।दिननिशिनिशिदिनमनअनुसारा
या विधि अपरअपर कहनाई। दरशक बुधिसह बुधगणगाई॥

दो० त्रिविध विविध विधि विचारहु ज्ञान समेत अनेक।

॥ सार अर्थ सब आनहो जस जहँ बने विवेक ॥

॥ चौपाई ॥

सुरगण बुध नागर बहुभांती। जानहिं सुख उत्तम सबजाती॥
सो सुख आदिक बलवश भूपा। लीन्ह असुर गण बनीकुरूपा॥
सोइ सत्य सुरलोक कहावा। छीन्हि लीन्ह खल जसमँगावा॥
ये खलनानहि नहिंकस योगा। सुख आदिक उत्तम सबभोगा॥
मख आदिक जे काज कहावे। सो जग वृद्धि कुरोग नशावे॥
लेवहिं से ये असुर उपाधी। मनुनिजवाढ़चहहिंखलव्याधी॥
थोरे महँ मैं गावहुँ जाही। धरानाथ बहु समझहु ताही॥
इकइक तर्कभरा बहु भांती। ज्ञानीजन जानहिं सब जाती॥
अमर असुर कर दशा महीशा। किंकर धनद दास भूतीशा॥
पद खद्योत भानु कर पाई। भिक्षा मांगे दानि कहाई॥

दो० सुनहु धराधव राज्ययह भयोनहीं किहिठाहिं।
वेणु आदि दुष्टन्ह गृह जस इन के रजमाहिं॥

॥ चौपाई ॥

पातक हत्या आदिक कर्म्मा। साधहिंअमरपरिपु अपधर्म्मा॥
मनहुं कलपइक कलियुग आवा। कलिहु न पातक सकापुरावा॥
पाप खानिअसअस कभुनाहीं। जस प्रगटी इनकर दिनमाहीं॥
शुंभ निशुंभ पातकी भारी। कश्यपसुतन्ह न असवपुधारी॥
अगणित अनीक रखिविस्तारे। मरहिं बाझअहि कमठ विचारे॥
एक एक भट भय प्रद ऐसे। निरखि देहतज प्राणहिं तैसे॥
शुंभ निशुंभ राज रचनाई। कहँ लगि गावहुंगाय न जाई॥
सकल धामलोकेहु अपनीती। पापहु भूल परा लखि रीती॥

दो० धूम्र लोचन दूत बली चण्ड मुण्ड सेनेश।
रक्तबीज कुल कटककर अगणित दलकटकेश॥

चौपाई ॥

करनी इन कर देख न जाई। निरखत तुरत कालडर खाई॥

करहि महा योधन्ह कर यूथा । संग सबहिं ले पाप वरूथा ॥
महा महा परवत तरु यूथा । पटकहिं फेंकहिं एक वरूथा ॥
बहुत प्राण मारहिं सह जाई ।विपिनी जीवहिंघातहिं खाई ॥
शोणित बीजादिक स्वरूपा । सुरतिय देखडरहिं नितभूपा ॥
कालविपुल लावहिं मन माने । आपन कालहिं रखि अनजाने ॥
देखि दशा दारुण दुख दाई । निराश जहँ तहँ लोकनछाई ॥
अस आपति तीलोक तिकाला । कबहुं न दरसी बसुधा पाला ॥

दो० भयेदोउ बनिकेशअस लखि लखिविधि सुरआदि ।
कांपहिं थरथर भीतिवश करि अनेक अनुवादि ॥

चौपाई ॥

अज मधुरिपुपुररिपु बहुभांती । विस्मित सोचहिंबासर राती ॥
अमरप आदिक अमर घनेरे । भ्रमण करहिं इतउत बहुतेरे ॥
बहुत विचारहिं वारम्वारा । किहिविधि होवेखलपसँहारा ॥
सोचत सोचत मनमहँ आई । वन्हिढेर चिन्नगारि लगाई ॥
मनुझपकनि महँ पाव बिछाई । आदि देविकहँ सुमिरहुभाई ॥
अपराजिता सुशक्ति भवानी । रूप तेज बल बहु बल खानी ॥
कटिहैं दुख अब बिनु संदेहा । होत विलम्बन करह्रो येहा ॥
असगुण शुंभ निशुंभहिं होवे । काल वशितहो गणहिं नसोवे॥
काढे सो देवी वर दाना । भयो भयो हमकहँ मनआना॥
करहु स्मरण देवी अस भाषी । ताही हमतब निजमन राखी ॥

दो॰ सुनहुविवुधगण सकलअस आपति जबंज बआय ।
सुमिरहु सुमिरहु मोहिं तब करिहौं आयसहाय ॥
महा महा विघ्नादि दुख नाशहुं क्षण महँ सोय ।
सत्य मोर वरदान यह नहिं संशय कछु होय ॥

चौपाई ॥

सुनहु अमर सो अस वरदाना । पाये हते विवुध हम वाना ॥
ताते कस सुमिरहु नहिं भाई । प्रगटहिं देवी विनती पाई ॥

असविचारि सब विबुधसिधाये। गिरिपति तुहिननाथपहँआये ॥
लोकहु नृपकस इनकररीती। चाहहिं स्वारथ सदा कुनीती ॥
सुखबहुभोगि जबहिं सबहारे। आये विनवन श्रमहित सारे ॥
कृषिकक्षनुजजिमिवरषालागी। दैवदैवकरि मरहिं अभागी ॥
पावत बरषा दैवहिं भूले। तससुर सब साधन अनुकूले ॥
धन्यधन्य सुरगण बड़ भागी। मनमाने देखहिं दुति जागी ॥
सो सुर सबनृप तहँ भय ठाढ़े। रविलखि पंकजगण चहबाढ़े ॥
जोरि जोरिकर नवाय माथा। तृणधरिदशन अमरतियसाथा॥
सत्य कहहिभल अरथसुभाऊ। अरथलागि बल करत उपाऊ ॥
नाना दुख उपजहिं आराती। त्रास दुःख प्राणन्ह करघाती॥

दो० हिरण्याक्ष्य हिरण्यकशिपु महाबली दनुजेश।
इनते कबहुंन सुर डरे जसडर अबहिं नरेश ॥
कबहुं न अस भय भीतहो गये रमापति पास।
जस आये श्रीदेवि पहँ रमेशहु दुखपुनि त्रास ॥

सो० इक घटना इहठाहिं गिरिजा शक्तिसंहार कर।
याते पर ढिग नाहिं जानिमन सुर गमनकिये ॥

चौपाई॥

महिषासुर मधु कैटभ माया। वादि बधी सहकटक निकाया॥
नहिं तरसुरनिज अरथीसाजा। कबहुँ नआवते श्रमलगि राजा॥
कबहुं न माया परिश्रम पावत। जो जगदम्बा प्रकट न आवत ॥
सदा सदा सुर विनती करहीं। सुरस्वामिनिकहँश्रमवहुपरहीं॥
नहीं नहीं यह बड़ अज्ञाना। मनकल्पहिं वश नेह जहाना ॥
हीरास्वामिनि जब बल रूपा। रोम रोम बहु जगत अनूपा ॥
ताकर सेवक दुख कस पावे। विपदिजाहिढिग कहुकसआवे॥
खगपतिढिग किमि पन्नगजावे। सूर्य्यसमीप तिमिरकिमिआवे॥

दो० मारि झारि मन तन सबे विबुध पादि ती देव।
ठाढ़े विधिविधि वेषकरि सहित सहरष सभेव॥

चौपाई॥

सोहहिंसुर सुरतिय कसराजा। शवगणप्राण सहितअपभ्राजा॥
रोगग्रसित मानहुंसब सुरगण। धन्वन्तरि पहँआये बहुजन॥
लगें बजावन बाजा सारे। नमन नमनकरि कलरवधारे॥
तहँ श्रीमाहि बिनवन लागे। प्रीति सुरीति नीति रसपागे॥
मन बच मन महँ पूजा करहीं। हरषसहित सुरवचउच्चरहीं॥
साजे पूजा विविध प्रकारा। करहिं नमन ते वारहिंवारा॥
लोकहु नृप कस करहीं सेवा। बांधे पाणि खड़े सब देवा॥
बोले स्तुति चार फलदाई। रोवहिं बालक मातु सुनाई॥

दो० वहु प्रकार हो स्थित सुर बोले विनय सुवैन।
पुलकहिं भेवहिं पुनिहिपुनि अश्रुबहावहिं नैन॥

सो० भूधव भाव प्रकार स्तुति भाषण विधि कथा।
सोदरशकअनुसार भवथिरतालय प्रकटजग॥
जिमि बरनी मैं गाय ऊपर भाष वखान महँ।
अबमहँवहुअधिकाय दरशकमयकरणीजगत॥

तोटकछन्द॥

जयमाय महा करुणा करनी। सुखदे तुपले जयज्योतिमणी॥
अस देवि वरी हरनी विपदी। सुरहैं सबरे अब मातु अदी॥
नमहीं नमहीं हम मातु सदा। करहो करहो सुदयाहु यदा॥
वरदायिनि पोषण देहु अबै। असुरारि सबै शरणागत पै॥
तव आदि नहीं पुनि बीच नहीं। अवसान नहीं वर देवि सही॥
द्रवहो द्रवहो वर मातु वरी। सृज पोष संहार सदाहुधरी॥
वपुले जगकी करनी हरनी। प्रगटो वर मातु दया धरनी॥
अज देव हरी शिव आदिक जे। तुमहीं नित सेवहिं ते नितते॥
अजनी हरिनी शिवनी सबरी। तव सेवकनी नित शोभभरी॥
दुर्गे सुशिवे स्वम्बे चंडिके। दरसो दरसो विपदी खंडिके॥
जय ज्योति तव पावक जों। जयकालन्हकीवर कालिनिसों॥

शरणागत आयं सबे सुरहैं। दय आश्रम मातु अधीनहिंहैं॥

दो० इनशब्दन्हमहँ प्रबलजग भवलय महिमापार।
सोबल कारण शक्तिश्री बरने विबुध विचार॥
सुखपोषण करुणाकृपा आदिजगत आनन्द।
सब दुर्गा महँ दरसहीं जो विराट वपु कन्द॥

त्रिभंगीछन्द॥

जयदेवीमाया दायिनिदाया कारिनिकाया सुभवानी।
नमननमनकरहींहमसुरसबहींचरणन्हगिरहींवरदानी॥
शुंभनिशुंभअसुरजीतेसबसुर हमजोरेकरनमहिंसदा।
सुदीनदयालिनीजगतपालिनी कालकालिनीप्रलयप्रदा॥
जयसदानन्दिनी नितानन्दिनी चिदानन्दिनीजयदेवी।
अजआदिकदेवा करहींसेवा मनरखिभेवा हमसेवी॥
जय जोति सुरूपा बरतअनूपा अगम्यारूपा जयमाया।
जयजगदाधारा चरितअपारा भयसन्सारा करुदाया॥

दो० यामहँ बड़पन देबिकरजोव्यापित जगमाहिं।
वरनी रूप विधानते उदाहरण दरसाहिं॥

चतुष्पदाछन्द॥

जय जय श्रीमाया दायिनि दाया महादेवि जय माई।
शिवा मुक्ति रूपा अमित अनूपा नमिहैं हमहुँ सदाई॥
सृजशक्तिसुरूपिनीप्रकृतिरूपिनी करहींसबनमनसुरा।
रक्षा शक्तिदाई सुभद्रामाई नमन नमन निरन्तरा॥
श्रीरौद्र अपारा शक्ति संहारा श्रीनित्ये नमो नमो।
चित्तएक सुरगण सहवच तनमन सदासदा नमोनमो॥
गोरवर्ण अपारा जगदाधारा हमरो सुनमस्कारा।
जय सुरपतिरूपा इन्दुअनूपा नमनतुमहिं नितवारा॥
परमानन्दरूपा सुखा सुरूपा नमहिं नमहिं हमसबरे।
कल्याणकारिनी वृद्धिधारिनी करहिंनमन सुरसगरे॥

अणिमा सिधिरूपा भावअनूपा नमहिंप्रणत हमसोई।
नैर्ऋत्या रूपिनि सुरक्ष शक्तिनि नमहिं इम नम्रहोई॥
नृपलक्ष्मीरूपा शिवास्वरूपा नमन करहिं सदा सदा।
दुर्ग्गा अपारा सुदुर्ग्गा पारा नमन नमन सदा यदा॥
श्रीकालजारिनी जगतपारिनी तुमहिंनमन सुरकरहीं।
बलवतिप्रबलनी दीपकमलिनी नमननमन हमधरहीं॥
सुतंत्रता रूपा ज्ञान सुरूपा नितनित नमहीं तुमहीं।
प्रसिद्धिनि अनूपा आदिनिरूपा तुमकहँ नमहीं हमहीं॥
श्रीकृष्णावरणा धूम्रा वरणा सदा सदा नमस्कारा।
सौम्या सुरूपा रौद्रा रूपा नमन नमन नित वारा॥
अविद्या अनूपा विद्या रूपा नमो नमो जय माया।
प्रतिष्ठ सन्सारा क्रिया अपारा नमहिंनमहिं श्रीदाया॥
श्रीदेव शक्तिनी दान भक्तिनी नमहिं नमहिं श्रीदेवी।
जय जय श्रीमाया करहोदाया सुर सुरतिय सबभेवी॥

दो० मुनि ऊपर बड़ भेदहै रूप व्याप सन्सार।
सो सब कारण प्रबलमहा श्रीदुर्ग्गा निर्धार॥
इकइकशब्दहिं वाक्यमहँ गूढ़ भेद दरसात॥
नानारंग सुरूपते विधि विधि भांति सुभांति॥

सो० सुर अस भाषणभूप दीपराग मानहु जमत।
जब सुरमयहो रूप देवी प्रगटहिं दीपसम॥

चौपाई॥

जग कारण प्रकृती समझाई। सो मैं गावा प्रथमहिं राई॥
रक्ष संहारन आदिक भावा। सोसुरऊपर विविधसुनावा॥
सुन्दरता जग प्रगटत नाना। सो सब देवी महँ सुर आना॥
धराप किंकर सुख दुख रूपा। देवि शक्ति जो प्रकट अनूपा॥
दुर्ग्ग निगम जे ज्ञान विधाना। सकलअमरगण करहिंबखाना॥
बल महान आदिक इक एका। सर्व्व भांति जग सोह अनेका॥

विद्या विद्या तिमिर प्रकाशा । ज्ञानाज्ञान जगत महँ वासा ॥
सुरथ ज्ञानमय सुर सब गावें । ज्ञानी तुम इव मन महँ लावें॥
तुमते ज्ञानिन्ह ते मैं गाऊं । सार सारले अर्थ लखाऊं ॥
सो तुम अब सब लेहु निबेरी । कथिता कथित बुद्धि बलहेरी ॥
बढ़त कथा बहु विविधि बखाने । समझहिं तद्यपि ज्ञान समाने॥
आगिल अस्तुति अमरन्ह केरी । श्रवणकरहु तिहिभांतिनिबेरी॥

दो० जय श्यामा जयमालिनी जय दुर्ग्ग जय माय ।
कोटिकोटि गणनामयी नमनकरहिं हमधाय ॥
निरंकारिनि अदेहनी साकारनि होमाय ।
करहुदया प्रगटहु इहां जाते विघ्न नशाय ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जोदेवि सकल प्राणिन्ह महँ हरि शक्ति होय कहावहीं ।
ताकहँ नमन नमन नमन नमन नमन हमहुं सुनावहीं ॥
जो देवि सकल प्राणिन्ह माहीं चेतना सुकहावहीं ।
ताकहँ नमन नमन नमन नमन नमन हमसब गावहीं ॥
जो देवि सकल जग जीवन महँ ज्ञानस्थिता कहावहीं ।
नमन नमन ताकहँ नमननमन हमहुं नमन सुनावहीं ॥
जो जीवन महँ निद्रा रूपा सपन स्थिता कहावहीं ।
ता देवी कहँ नमन नमन वर नमननमन हमगावहीं ॥

लवायीछन्द ॥

जो क्षुधा रूपा सब जीव महँ स्थिता जो अस कथिता ।
ताकहँनमननमन सुनमननम नमनकरहिं हमसहिता॥
जो छायारूपा भाव तपो जग स्थिता अस कथिता ।
तादेवीकहँ नमननमननम नमहिं नमहिं हमसहिता ॥
जोप्राणिन्ह महँ शक्ति सुरूपा स्थिताभव अस कथिता ।
तादेवीकहँ नमननमननम हमनमहि नमहि सहिता ॥
जो देवी तृष्णा जीवन्ह महँ स्वीकृता वर कथिता ।

ताकहँनमननमनहमसबकरनमनकरहिं नमसहिता॥

दो० यामहँमनुपतिमानहो अगणित जग विस्तार।
तामहँ जीव अनेकन्ह एक अनेक प्रकार॥
ज्ञान ध्यान तृषा क्षुधा निद्रादिक जे रूप।
सबमहँ व्यापित विविध रस शक्ति सुरूपअनूप॥
अस प्रकार सबव्यापता जगतविदित दिनरात।
सो सब अमर सुनावहीं एक बिपुल भलभांति॥

चौपाई॥

देवी जीवन्ह क्षान्ति सुरूपा। ताकहँ नमनम नमतअनूपा॥
जो अपकाजहिं कारज रूपा। ता देवी कहँ नमन अनूपा॥
जाति रूप गोत्वादिक रूपा। नमननमन ता कहँ अनुरूपा॥
जो देवी लज्जा आकृतिनी। ता कहँ नमननमन नमनमनी॥
देवी निज काज अव्य ज्ञाना। ता कहँ नमननमन नमनाना॥
देवी जीवन्ह शान्त्या कृतिनी। ता कहँ नमननमननमनमनी॥
जो देवी जग श्रद्धा रूपा। ता कहँ नमननमनअनुरूपा॥
क्रान्ति रूप वा शोभा कारा। ता कहँ नमननमन बहुबारा॥
जो लक्षि सम्पति विताकारा। ताकहँ पुनिपुनि नमनमकारा॥
मोक्ष रूप जो देवी आही। नमिहैं नमिहैं नमहीं ताही॥
वृत्ति रूप वा जीविक रूपा। ताही नमन नमन अनुरूपा॥
स्मृति रूप जो देवी आही। नमहींनमहीं नमिहैं ताही॥
विषय अनुभूत ज्ञान सुरूपा। नमिहैं ताहि नमन अनुरूपा॥
दया रूप जो स्थिता आही। नमिहैं नमहींनमहीं ताही॥
दुख प्रहारनी जो आकारा। नमिहैं ता कहँ बारम्बारा॥
तुष्टि रूप जो देवी आही। नमिहैं नमिहैं नमहीं ताही।
जननी रूपा पोषण रूपा। सो देवी कहँ नमन अनूपा॥
भ्रान्ति रूप जो माया कारा। ता कहँ नमहीं बारम्बारा॥

सो० सुनिमुनि पुलक शरीर जैमिनि वसुप बनिककथा।

बरसअनिच्छित पीर सूख खेत महँ जलामृत ॥

दो० नरनाहा लोकहु इहां रूप मान्सिक लाइ ।
भिन्नभिन्न पुनिएकमहँ सर्व्व व्यापखल जाइ ॥
श्रद्धा क्षान्ति मोक्षादिक शोभादिक पुनिलाज ।
दया कृपा सुख पीर सब ज्ञान मानसब काज ॥
असअसजेगव्यवहारजे नितनितदरसहिं आय ।
सब महँ व्यापीशक्तिनितसंशय रहित कहाय ॥
ज्ञानी मूरख जानहीं बिन अन्तर इह बात ।
शक्ति रहित कछुकतहुं नहिं सोमायावरभांति ॥

चौपाई ॥

लोकहु विबुधन्ह कर चतुराई । करहिं विनय पुनिपुनिवसुराई ॥
देवी विनती कल्प वरूथा । निजभाषण मांगहिं सुखयूथा ॥
विधिविधिबोलहिं पावन वाणी । विपुलविमलशुचिचरितभवानी ॥
मनुजरहीं फलफूल घनेरे । भोजन भूषण वस बहुतेरे ॥
ये सब सुधा रूप वसुपाला । पानकरहिं सुरश्रवणसुकाला ॥
हिय लोचन सुर खोलहिं नाना । पावन चरितहिं करहींपाना ॥
कस अद्भुत इह करणी सोही । कल्प वृक्षसम मांगहिं मोही ॥
भाषण तरुसुरगण मंगनारे । माय मूल तरुकरनिरधारे ॥
अस वरसुधापीवहीं सुर सब । निधिजसुधान्रप कहारहाजब ॥
विविध साचरज पान सुहाई । सो पावन शुचिसुखगुणदाई ॥
सत्यासुहतुति सुधा समाना । या महँ संशय कछुनहिं आना ॥
देवी कर अस विदित प्रभावा । कालहु खावे कालहु आवा ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

खावहि कालहिं काल आइतुर श्रीदेवी प्रभावते ।
सुरनिज मुखते चरित गायवर देवीकहं सुनावते ॥
निजमुखगुणदेवीकरकहिं कहिसुधा पानहिंलेवहीं ।
कहा सुधासतपीहिंसुधायहनाहिंकालकहं भेवहीं ॥

दो० वसुप वनिक बोलहिं विनय सुरगण लगाइ तार।
रविशशि रथनहिं थाकहीं मनुचलहीं पुनि बार॥
धन्य धन्य सुर धन्य अति वरदायिनि जगमात।
हीरास्वामिनि पाइभल देवहिं दुख न अघात॥

तोटक छन्द॥

सब जीवनहीं हियजामियदा। नमहींनमहींनमहीं सुसदा॥
सब प्राणि नहीं रस ज्ञानकरी। नमिहैं नमिहैं नमिहैं सुघरी॥
लघु दीरघजो जननो थिरता। नमहींनमहींनमहीं सहिता॥
सब आपिनि देवि सदा सुसदा। नमहींनमहींनमहींसुसदा॥
वृधरूपअनूपबसी जु धरा। नमहीं नमहीं नमहीं अमरा॥
जग व्याप रहीजग मायभली। नमहीं नमहींनमिहैं सुफली॥
चिति रूप बसीजुभवानि सदा। नमिहैं नमिहैंनमहीं सुयदा॥
चर रूपकरी अचरा कृतिनी। नमिहैं नमिहैं तिनहीं नमनी॥
वर काल सुरूप धरी जननी। नमनी नमनी तिनहीं नमनी॥
बलरूप महा बलजोर रही। नमिहैं नमिहैं नमताहि कहीं॥
छविरूप अनूप तिलोक मही। नमिहैं नमिहैं नमताहि सही॥
दुर्ग्गे जगज्योतिप्रकाश धरी। नमहीं नमहीं नम ताहिबरी॥
शतवार हजार सुलाख सही। पुनि कोटिन वार नमो नमहीं॥
नमहीर स्वामिनिहीं नमिहैं। दुर्ग्गे दुर्ग्गे नमिहैं नमिहैं॥

दो० नमन नमन करही विनय सुर सुरनी बहुबार।
सुधा रूपमहं टपक रस सुधा सुधा करचार॥
वसुधव बनिक याहूमहं देवी रूप अनेक।
सकल व्यापिता सर्व्वरमी नित्यकहावतएक॥
बारबारमैं गायरह्यों सो जग दरसहिं आइ।
भलीभांति सुरगावहीं विधिविधि कथालगाइ॥

सो० भाट अमर मति एक बड़बड़ाहिं बहुते प्रथम।
गावहिं चरितअनेक जगमाया श्रीकालिकर॥

गावतजबथकजाहिं स्वार्थलागिमांगननिमित।
तब यांचहिं गुहराहिं भूपप्रशंसा गायभल॥

॥ चौपाई॥

हे देवी तव प्रथमहिं बारा। कीन्ह गई विनती जगधारा॥
इच्छा अनुपम करहीं सेवा॥ वासर यामिनि हमसबदेवा॥
सो हमरे सब सुख हितलागी। तुम्हरे दरशन होवें भागी॥
प्रभुनि करहुशुभशुभ कल्याणा। पुनि नाशहुबहुआपति नाना॥
बली मदान्धे सुर आराती। पीड़ितकीन्हो सबसुर जाती॥
हम सबदेवि काल वर्तमाना। भोगहिंदुःखबहुतविधिनाना॥
ईशा देवि लेहु नमस्कारा। नमन करहिंहम बारम्बारा॥
भक्ति जनित सुमिरत हमदेवा। सुमिरहिंतुमकहंकरहीं सेवा॥
तात्क्षण तुम देवी दरसाई। नाशहु आपति रूप बनाई॥
अस मायाकहंपुनिपुनि बिनहीं। नमहीं नमहीं नमहीं नमहीं॥
अस देवीकहंनित नित नमिहैं। नमिहैंनमिहैंनमिहैं नमिहैं॥
हीरा स्वामिनि दुर्गे नमिहैं। नमहीं नमिहैं नमहीं नमिहैं॥

॥दो० नमिहैं नमिहैं करहिंसुर पीवहिं सुधा अघाय।
पेट भरो बहुकंठ लों जहँ लग वलते पाय॥
नृप कबहुंनहिं कीन्हीअस हरिविनतीसुरजोर।
संकट पर सुमिरे अमर हरिहुदेवि कहँ घोर॥

॥सो० सत्य कहहिं मुनि वेद विपदिपरेहो हायबहु।
यामहं नहिं कछु भेद दुखबीते भूले सकल॥
इहहै नित नितरीतिसुरमुनि नर पशु जीवकर।
काज परे पर प्रीतिनहिंतरभोगहिंबहुत सुख॥

दो० दीप राग सुरताल मय वरहीं दीपक देवि।
जय जयकरिसुरथामहीं शुंभ वधनलगिसेवि॥
कबहुं कबहुं देवी शिवाआड़ असुर रण माहिं।
आकुल सुर सुर तोड़हीं दीपक चाह बुझाहिं॥

चौपाई ॥

नृपजब सुरअसविनती कीन्हे । अपान भूले निजहिंन चीन्हे ॥
मगन हृदय सुर अघाय फूले । हरषिहरषिअतिशयअनुकूले ॥
अस लागे अब माया आवे । भय हमरोअब दरश छुड़ावे ॥
दीपक राग थमो कस भूपा । कहे नमननितअमर अनूपा ॥
गायक जन जे गावहिं रागू । नमकरिकभु सुरधरहीं आगू ॥
नमन नमन भाषहिं सुरभारी । ताहि समयवर शक्ति सँहारी ॥
गिरिजा पारबती वर माई । निकसी गिरिते सुखमाछाई ॥
सो सुरसरिजलगि अस्नाना । प्रगटी देवी रूपा ज्ञाना ॥
सुन्दरता छवि आभा छाई । रूप बिशाला अमित सुहाई ॥
भृकुटि मनोहर रति धनु बांकें । होवे धक धक निरखतजाके ॥

दो० लोचनदोउ विशाल अति भरितकटाक्षघनेर ।
मृगनी खंजनिमीनरति मरहिंलाजबहुतेर ॥

चौपाई ॥

मरहिं लाज पुनि पंकज पाना । गिरिजानयनहिंलोकतमाना ॥
नासिका रति कीरनी लाजे । दाड़िम पांति दशनरतिभाजे ॥
केश कृष्ण बहु सुन्दर लागे । अलिअवलीसबनिरखतभागे ॥
देखत ग्रीव कपातनि रोवे । अधरनिरखिफलविम्बासोवे ॥
आनन लखिरवि शशि बहुतेरे । छपहीं नभ महं मेघन्ह नेरे ॥
छवि आभा चमकत स्वरूपा । दामिनिपरहिं जायनभ कूपा ॥
हृदया निरखत श्री फल फूटे । मृगपतिनी कटि लोकतछूटे ॥
निरखि जांघ कोमलता पावे । केदलिपुनिबहु लाजहिं जावे ॥

दो० सोह पीत शुभरंग वपु हाटकवर लजजाय ।
करपद अरु अंगुरी सबै सुन्दरता मय छाय ॥

चौपाई ॥

निरखत चालन डोलन जाकी । लाजहिं गजनी हंसनि बांकी ॥
पुनिबहु भूषण विविधि सुहाये । अंग अंग बहु रंग बनाये ॥

सुन्दर वसनहु सुन्दर सोहे। लखि सुवेषमोहहु अति मोहे॥
वसनसुपहिरनकिमिकहिजाई। काको पहिरे अस पहिराई॥
निमते निकसत सोह भवानी। मत्त मंजु ठाढ़ी मन मानी॥
जनु बहुरविशशिदामिनिआई। एक होय तिय वेष बनाई॥
सोसुन्दरिनिकसी गिरिनभते। निकर प्रकाश भयो बहुतरते॥
निरखत पारबती कर शोभा। तुरतहिं शोभा पावे क्षोभा॥

दो० मुनि बोले तब वनिक नृप कहहु अर्थ मनहेर।
पारबती ईशा शिवा कौशिकि नामन्ह केर॥

चौपाई॥

मुनि कह भली भांतिमैं गावा। अर्थ व्यापता तुमहिं सुनावा॥
सकल व्यापता शक्ति कहावे। जगत सोइ बल विष्णुबतावे॥
सोइ व्यापता शक्ति अनूपा। प्रकटत इन नामन्ह अनुरूपा॥
जगदावी बहुसुख वधलागी। सोई पारवती जग जागी॥
निज वश कीन्हींबहु संसारा। बलप्रभावपुनि सत्रविस्तारा॥
सोइ व्यापिता ईशा आहीं। व्यापरही चर अचरन्ह माहीं॥
बहु जगमहँसोवत जो माता। मनहुं काल वपु जगविख्याता॥
व्याप रही लघु बड़ स्वरूपा। शिवा शक्ति सा आहिं अनूपा॥
पुनिसो बहुकल्याणहिंकारी। ऋद्धि सिद्धि बहु रूप प्रसारी॥
बहुजग लपटी ले संसारा। सोइ नाम कौशिकि विस्तारा॥
पुनि इन सबकर अर्थ कहावे। सुखदुख व्याप भाव जोआवे॥
भांतिभांतिगुणशक्तिजुव्यापी। जीव चराचर आदिक आपी॥
सोसब पारबती बपु आदी। वेद पुराण आदि सम्बादी॥
न्यायादिक जे शास्त्र विधाना। शक्ति व्याप कर साक्षी नाना॥

दो० सोसब दुर्गा एक महं रमीविपुल जगमाहिं।
सो बल मयहो विष्णुता विष्णु ईश होजाहिं॥
ऐश्वर्य्य सो शक्तिश्री पाहिं ईश्वर जाहिं।
ईश्वरता यदि रहनहीं कहहु ईश कसआहिं॥

सो० सुनहु भूप इह ओर कहहुं कथा आगिल करी।
सुरठाढ़ कर जोर पारबती शोभा लखत॥
मोह गये सुर ढेर निरखत हिमजा देवि कहं।
राका शशि जिमि हेर लघु लघु बाला बाल गण॥
दो० पारवती तब विहंसि कह रतिकोयलनीलाज।
हांसननिरखत तुरतहीं फूले पुलकेअमर समाज॥

चौपाई॥

बोलीं गिरिजा गिरा सुहाई। मनुरस पुष्प सुधा बरसाई॥
पीवहिं सुर सब हो अनुकूले। पुलकावलि अपान सबभूले॥
गिरिजामुख रवि तुल्यनिहारी। सुर पंकज विकसेतहं झारी॥
सुरसरिजलमहं हिमजारेखा। मनुनीरज रति उत्तम वेषा॥
विहंसनविकसनलगबहुप्यारी।सुरबहुमोहहिं तिनहिं निहारी॥
अमर सुखीअतिसुखमनआवे। रोवहिं बालक जननी पावे॥
बोली पारबती शुभ बानी। सुरगण आये इतका जानी॥
किहिकरस्तुतिकरहुइह ठाहीं। भय सन्देह कछुहु अब नाहीं॥
दो० पारवती अस कहत नृप तातन ते तात्काल।
निकसी देवी शिवा अति सुन्दर रूप विशाल॥
रूपबनो जब महिष वध तीचखु भुजा अठार।
भूषण वस्त्र सुवेषते सो दरसी अब बार॥

चौपाई॥

मानोरवि शशिदामिनि रूपा। एक होय बर दरश अनूपा॥
जाते पर निकसी वर वैसी। प्रथमा देवी शोभित जैसी॥
सोइ शिवा श्री माया अम्बा। दुर्गा चण्डिका जगदम्बा॥
वेद पुराण सुगीतन्ह माहीं। शिवा देवि कहंकौशिकिगाहीं॥
सो श्री कौशिकी शिवाबोली। मनहु घटामृत सुरहितखोली॥
हे गिरिजे ये सुरगण जाती। पीड़ित हैं असुरन्ह ते भांती॥
जीते इनकहं महिरण माहीं। शुंभ निशुंभ असुर जे आहीं॥

लीन्हे इनकर लोकहिं छीने। कीन्हे सब सुख सम्पतिहीने॥
दो० गिरिजे सोये अमर मर्म करहिं स्तुति करजोर।
जाते इनकर विपदि कट पावें राज बहोर॥
सो० माथे अमरगणआय हिमगिरि सुन्दरतोयपति।
शिवा सुधा घट पाय गिरिजा धन्वन्तरि भई॥
कर्ण नयन पथमाहिं सो देखतसब अमर गण।
पीवहिं सुधासराहिं मरहिं असुरगणसमरमहं॥
चौपाई॥
मनि जब निकसी शिवाअनूपा। भई पारबति कृष्णा रूपा॥
तिनहिं कहहिं श्रीकालिकालिका। विदितादेवीअमर पालिका॥
सुर गिरहीं पद दोऊ केरो। करिकरिविनतीविविधघनेरो॥
कृष्णाहिमजाकरि परितोषा। आश्रित हिमगिरिजोमणिकोषा॥
शोभित कोशिकि सुन्दरिभारी। मोहहिं सुरसबरूपनिहारी॥
पाहि पाहि हे वर जगदम्बा। पाहि पाहि हे जननी अम्बा॥
नमिहैं पाहि भवानि भवानी। पाहि पाहि नमिहैं वरदानी॥
शिवा चण्डिका दुर्गा माया। हीरा पालनि तारनि काया॥
दो० दुर्गे देवि दयालिनी कारुणिका श्री कालि।
पाहि पाहि रण वीरनी पाहि मातु जग पालि॥
सो० प्रह्लादहिं सुखनाहिं खंभ फटो जब धराधव।
सुरसुर तियमन माहिं जस आनन्दअबहिं भयो॥
चौपाई॥
गिरिजा रूप शक्ति संहारा। प्रथमहिं मैं गावा विस्तारा॥
तिनकर सार शिवानिकसीअस। श्रीश्रीदुर्गाखलकालिनिजस॥
सतमहं एक दोउते आहीं। भिनवपु दरसो सुरहियमाहीं॥
सो सुरादि सत भाषण भाऊ। लखहिं इन्दु दो नयनभ्रमाऊ॥
उमा रूप जो कृष्णा भे भूपा। सो प्रगटो मनु काल सुरूपा॥
याविधिविधिविधिसारनिकारी। समकहु खेलमानसिकभारी॥

चण्डमुण्ड महाबली दोऊ। शुंभ निशुंभ कुसेवक सोऊ॥
आय परे ता ठामहिं तबहीं। सुरगण दूर भये नभ तबहीं॥
दो॰ तेसेवक देखे तबहिं अम्बिका जग माय।
मोहित निरखत पलन लग भूलगये अपनाय॥
सो॰ हीरा टीक पुकारि दीठ न लागे देवि कहं।
सुर सुन्दरता वारि लवण मिरच राई इव॥
चौपाई॥
लोकहिं मनुदो कीट पतंगा। दीप शिखा वर अद्भु तरंगा॥
बड़ी बारलगि रहे निहारी। पलक नयन पुटते नहिं टारी॥
औचकचितवहिं पुनिपुनिरूपा। छविगण शोभा सोह अनूपा॥
समय गये कछु सेवक दोऊ। चेतहिं आये मनमहं सोऊ॥
धावत आये असुरप पासा। शुंभनिशुंभ जहां रह बासा॥
चण्ड मुण्ड दोऊकर जोरे। बोले गिरा अशुभ नहिं थोरे॥
कुशकुन होहिं बहुत वसुपाला। शुंभनिशुंभ गया बश काला॥
हे असुरेश सुनहु इक बाता। बोलहिंहमअतिपुलकितगाता॥
दो॰ हिमगिरि महं इक नारि है करत प्रकाश घनेर।
अतिशय वदन मनोहरा छविशोभा बहुतेर॥
सो॰ नारिकहत बड़दोष दोष मयी कछु कथाहो।
करत क्षमा नहिं रोष भाव जानि श्रीअम्बिका॥
चौपाई॥
तीनकाल लोकहुती माहीं। सुन्दरि तिहि समकोऊनाहीं॥
कोउन कभु अस रूप निहारी। जस अनूप सुन्दर वहनारी॥
सुरजन कहहिं जाहिजगदम्बा। देवि अम्बिका माया अम्बा॥
मनोहरा महंगी सोई। बहुदीपक सम प्रकाश होई॥
करत प्रकाश तहां सो भारी। तुम्हरे योगीसो बर नारी॥
पाहिप्रभो तुम्हरे बश माहीं। तीनलोक कर मणयादिआहीं॥
हस्ति अश्व आदिक वरयाना। सब तुम्हरे गृह विराजमाना॥

तुमराखे सुरपति ते लाई । ऐरावत गज श्रेष्ठ छिनाई ॥

दो० चण्ड मुण्ड बहु निडरही भाषहिं वहमन हेरि ।
सुनि सुनि शुंभ निशुंभ नृप हरषहिंमनबहुतेर ॥

॥ चौपाई ॥

चण्डमुण्ड बहु बोलत जावैं । मानहुं कालागमन सुनावैं ॥
लाये पुनि तुम हे अमरारी । पारिजात तरवर अतिभारी ॥
आने उच्चैःश्रवा सुवाजी । थेसबमणितवअजिर विराजी ॥
शुभग हंस युत ब्रह्म विमाना । आने राजत तुम्हरे ठाना ॥
लाये कुवेर ते पद्महु कोषा । राखे निज मन्दिर सन्तोषा ॥
अमलकमल किंजल्किमिमाला ।ज़लनिधिदीन्हितुमहिंजगपाला॥
कांचन दायक वरुणहु केरा । सुन्दर छत्रक तुम्हरे नेरा ॥
दक्षप्रजापति रथ अभिरामा । राजहितुम्हरे गृह सबसाजा ॥

दो० पुनिराखे यमदेवते हतन शक्ति वश आज ।
जलपतिवरुण सुपाशपुनि करनिशुंभकरसाज ॥

॥ चौपाई ॥

जलधि जनित जेरत्नसुभांती । शोभित भ्राजे सुर आराती ॥
पावक राज वसन वर नाना । पावक निर्म्मलपुनिसो आना ॥
कालादिक तुम्हरे वशमाहीं । अपर जीव का लेखे माहीं ॥
भांतिभांति भूषण मणि नाना । राजहिं तुम्हरे मन्दिर थाना ॥
सो नारीकहं कसनहिं आनो । हैतुम्हरेलगि विधिभलजानो ॥
चित्रलिखितजग वस्तुकहाहीं । तेसब शोभित तवगृह माहीं ॥
दीप बिना फीको सब लागे । ऐसहि अम्बा नहिं तव आगे ॥
सुनिअस सुनतशुंभ अतिहरषे । उष्णकाल निराशजल वरषे ॥
सुररिपु असुरप शुंभ पुकारा । दूत सुग्रीवहिं निपुण विचारा ॥
जोरि पाणि सुग्रीवहु आवा । जावा चह मनु काल बुलावा ॥

दो० कहत शुंभ मन पुलक अति सुनहु सुगृीव हमार ॥
सुजानी बहु ज्ञानी तुम करिहौ काज सुधार ।

सो० खात शुंभ मन माहिं देखहु नृप मोदक मधुर।
शठ यह जानतनाहिं विष लग मोदक मीठ महं॥

चौपाई॥

जावहु देवि नारि करपासा। सहित सनेह सज्ञान सआशा॥
प्रीति रीति समझावहु ताही। जाते सो सुन्दरि आजाही॥
आयसु पावा कीन्ह जुहारा। चलासुकशठ अनन्द अपारा॥
आवा तहां तुहिन पति राजै। सुन्दरि देवी शोभित भ्राजै॥
ताकहँ लखत सुग्रीवमुहाना। अपान भूला भवा अयाना॥
कछुक बेर बीते तब बोला। मनहु काल प्रह थैली खोला॥
जाते हिसाब होवे वेगी। खलहिं खान हो देवी नेगी॥
बातबना बोला तब बानी। व्याज हिसावहिं मनहु बझानी॥

द्रो० दैत्यराज परमेश्वर आहुं दूत तिहि केर।
नाम मोर सुग्रीव परो देवि कहहुं अस टेर॥

सो० गूढ़ सत्य इक भूप देवी अम्बा नाम सब।
बदत तरहिं भव कूप शुंभ दूत खल आदि सब॥

चौपाई॥

शुंभ नाम पुनि निशुंभ भाई। निशिचर अमर चराचर राई॥
काल रहितजे सुरगण आहीं। विद्याधरादि योनिज माहीं॥
जाकर आयसु पालहिं सारे। तीनलोक नहिं कोउ निहारे॥
सोपठये तुम पहं अस बोली। सुनितव सुन्दरताबहु मोली॥
सकल लोक मोरे वश माहीं। सेवक धावन सुर सबआहीं॥
सुरपादिक करअलग विलागा। लेवहुंविधिविधिमखकरभागा॥
तीन लोककर रतनहु भ्राजें। सब मोरे मन्दिर महं राजें॥
सुर पयान ऐरावत जोई। मम करते आनागा सोई॥
क्षीरजलधि उच्चैःश्रवा बाजी। अश्वन्ह महं जोरन सुसाजी॥
प्रणातहोइसुरन्ह मोहिं दीन्हा। सो मोरे गृह सुन्दरकीन्हा॥

द्रो० त्रिधिविमान पारिजातक सकल सोहमम पास।

मनोहरे हे शोभनी हरिहर कहं मम त्रास ॥

सो० सुनतहि अस जगदम्ब मुसकाई वर वदन लगे।
नथ लटकनि अवलम्ब अधरकपोल हलत हले ॥
निरखि दूत तब मोह बने न बोलत बोल पुनि।
उलका अतिशय सोह मूरख कीट पतंग जिमि ॥

चौपाई ॥

सुरमुनि सब किन्नर गन्धर्व्वा। उरग अप्सरादिक जेसर्व्वा ॥
तिनकर वरवर रत्न जे आहीं। सब मम मन्दिर शोभा पाहीं ॥
चंचलनयने जग मम मोही। रतनतियन्हमहं सुन्दरिसोही ॥
नारि रतन तुम रतन सुहाई। विधु वदनी तुम शोभा छाई ॥
कालविवश सुररिपु महिराई। नारि समान गनहिं श्रीमाई ॥
कुक्कुट कण चुनि जन्म गवांवे। मणिकिमि परखें यदिसोपावे ॥
याते वसहो हमरे पासा। रतन भजा जहं हमरो वासा ॥
मोकहँ चाहे मम लघु भाई। निडर निशुंभबली बल खाई ॥
दाऊ महं जाते मन राचे। गृहण करहु अवसांचे बाचे ॥
हमरेगृह वरतियन्ह मँझारी। होहु रत्न अति सुन्दर भारी ॥

दो० पुनि पावहु तुम अतुल अति बहु सम्पदा महान।
सुन्दरि पतिनी होहु तुम भल आपन जिय जान ॥

सो० होरी महं जरि जाय अस हीरा अस लेख यह ॥
जो लेखक अस आय नहिं वरु प्रभुनी क्षमाप्रद ॥

दो० मूरखता वश मूर्ख जिमि तिमि दूतहिं नहिं लाज।
सिंहनी अहिनी कोउ ढिग बालन्ह कर अपकाज ॥

सो० कस लागे उपदेश जाल वशित नित जगत रह।
प्रहलादहिं मनुजेश शालामहं सिख दीन्ह गुरु ॥

चौपाई ॥

सुनत देवि सोहत मुसुकावे। कोपिनियदिकछु कोप नआवे ॥
सुरथ वनिक सो कोपै कैसी। जो राखे सुन्दरता ऐसी ॥

मोहहिं सुर मुनि नरसबवाके । निरखत स्वरूप सुन्दर जाके ॥
कह देवि कोपांश मृदु वानी । कोकिलग्रीवायदिरिससानी ॥
भाषहिंभाषण भल असभावा । वारिज मुक्ता अरुण झरावा ॥
भृकुटि नयनकरकटिसबकीरी । कटाक्ष वर वर मोहनि धीरी ॥
करिकशिविधिविधिकहत्तहिजावे । जिनकहंलखिचेतहुमुरछावे ॥
रसनाअधरदशनकपोलवर । चलनिनिरखिविधहियसुकयठकर॥
॥ दो० सुनहु दूत तुमसत्यवद नहिंमिथ्या कछु एक ।
॥ शुंभ निशुंभ महाबली रख वश जगत अनेक ॥
॥ चौपाई ॥
परलोकहु मन माहिं विचारी । भक्षहिं पन्नग कस उरगारी ॥
रवि कहं तम किमिनाशनपावे । विन जलपवनकिजीवनआवे ॥
मधु मल पिघलन पावक आचे । काल जाहि लगसोकसबाचे ॥
रजकि उठावे गिरि कर भारा । लघुतलवाकिमिजलनिधिपारा॥
संभव कसहु असंभव होवे । असंभवहु कस संभव जोवे॥
पुनि ममपणहिं कहहुंसमुझाई । मममनमहँ इहिप्रतिज्ञाआई ॥
सोनहिं मृषा होय हे दूता । नहिं भावी वरु भावी भूता ॥
अपन नाथ कहं बोलहु जाई । रेख पषाण जानि हियलाई ॥
॥ दो० रणमह जीति मोहिं जो मम समप्रबली जान ।
॥ तीनलोक ती कालमहँ टारै मम अभिमान ॥
॥ सोहोवे भरतार मम करे पाणिग्रह आय ।
। याते शुंभ निशुंभ अब लड़हिं आय दल लाय ॥
॥ चौपाई ॥
लड़ि संग्राम जीति लेजावें । तुरतहिं ते मोकहं तबपावें॥
का अभिप्राय रहा अब यामें । जाय कहो कछु बेर न जामें ॥
विष्णु विना नृप सो वलनाहीं । शक्ति जनित वशईशकहांहीं॥
लिंग भेद रह होऊ माहीं । देव देवि जो विदित कहाहीं ॥
देव शक्ति श्री देवि कहाई । सो कस देवन शक्ति कहाई॥

सुनत वाणि सुग्रीव रिसाना। मनुमृग सिंहनिडरनहिं माना॥
बोला तब मनकछु झुंझलाई। मनहुं रेणु चह भीत उठाई॥
हे गर्व्विनि मम सन्मुख ऐसे। जनि भाषहु भाषी तुम जैसे॥
को अस प्राणी ती जग माहीं। शुंभ निशुंभहि सन्मुख आहीं॥
प्रणतनमितसुरकांपहिं जिनते। अगणित सैन कालडरतिनते॥
पुनितुम कोमल बहु सुकुमारी। कसहोसकहु ठाढ़ तुम नारी॥
ताऊपर रणमहं तुम जिनके। एकबचहुकस सन्मुख तिनके॥

सो० कटि मर्टकिनिका सोच भली भांतिमत्तलोकहो।
जनिभाषहु बहुपोच सादर चलहु विचारिभल॥

॥ चौपाई॥

भूपदूत शुंभहिं अनुमाना। टिट्टिभ थामे जीव जहाना॥
जिनके सन्मुख सुर रण हारी। ते शुंभादिक ढिग का नारी॥
अस मम भाषित ते अमरारी। तिनके निकटचलहुसुकुमारी॥
नहीं अनादर मैं मन लावों। जोकच धारि तुमहिं लजावों॥
अमरसुनत अस मंदहिं काना। खल बचते लग पातक जाना॥
लोकेहु नृप इन कर चतुराई। मनमहं कैसहु काज सराई॥
कपटी भीरन्ह कबहुंकलाजा। तिमिचाहहिं सुरआपन काजा॥
मुक्ति कातिनढिगअसबलनाहीं। जाते दूतहिं यम गृह लाहीं॥
सत्य कहहिं जग दूतसुभाऊ। प्रभुते बढ़कर उतर उपाऊ॥
मिथ्या भाषहिं युक्ति लगाई। विधिबिधि बोलनबोलहिंआई॥

दो० असकस होवे कबहुं नृप क्षुधितायुध श्रीकेर।
कालगेह पुनि सूनहै पावहिं सुर रिपु ढेर॥

॥ चौपाई॥

अरु पुनिदोषभरितसुर सवरे। खोटवचन सुनहीं तहँ सगरे॥
अमरावति कहं हारि जरावें। जालगिप्रभुनिहिं कुवदसुनावें॥
लेखक कर लेखनि दोउकहं। विषमयअहिनीडसंतुरहि इहं॥
जोअस ठाम कुशब्द लिखावे। जाबिन इहं कछुहुन अटकावे॥

कोपि विहंसि श्री उत्तर देवे। जाकहँ महिप काल नित भेवे ॥
सुनहु दूतपुनिममभल बाता। प्रणमम रहत सदाविख्याता ॥
शुंभनिशुंभ बली अति आहीं। तो का करिय मम पणजाहीं ॥
यदिअविचारिता प्रतिज्ञामोरी। सोगिरिरेखा लिखित बहोरी ॥
देख दूत मन माहिं विचारी। किमि जुगनीमहंरहतिभिरारी॥
टेकधरी मैं यह नित दूता। अनहोनी कस भावीभूता ॥
दो० मोहन दूत अचेत नृप यद्यपि बोलत जाय।
जिमिजगव्याकुलहोवहीं मोहफांसमहँ आय ॥
बड़ कवि सन्मुख कविन्हकरकाबपुरीचतुराइ।
चक्रवर्त्ती भूपाल ढिग का लघु महिप बड़ाइ ॥
चौपाई ॥
याते मम पण देहुं जनाई। भाषहु निज नाथहिं पहंजाई॥
इहिमहं अन्तरतिलन तिलाई। उचित जानिते करहीं आई ॥
बहुरि दूत बोला कटु बाता। नहिं जाना जननी विख्याता ॥
नहिं मानहु यदि मम उपदेशू। कोप करहिं तुमपर असुरेशू ॥
पछितैहो अन्तहिं सुकुमारी। राखहुयदि आपन हठ भारी ॥
मातु कहा सुनु सत्यहु बानी। निजस्वामिहिंप्रणकहहुंबखानी॥
सुनि देवीकर भाषण दूता। चला नयन महं कोप बहूता ॥
बारबार मम मन महँ आवा। अमरअसुरभल स्वामिनिपावा॥
लवायीछन्द ॥
पाये स्वामिनि अमर असुरभल हीरा प्रभुनि सुखप्रदा।
कहिकहि वानी दूत बहुत कटु पावहिंगतिमरिहिंतदा ॥
बड़न मरही अमर सकल मुनि मातुकहं कुवचन सुने।
नहिं सो होवे काहे माता क्षमा प्रदा कृपा घने ॥
जयजय जननी अगसुख करनी करहु अबहिं क्षमाइहां।
कुलेख जेतो होवे मिथ्या देहु कृपा मोहिं जहां ॥
कृपा क्षमाकरुणा सुखगतिवर मुक्ति विपिनि रहाजहां।

हेस्वामिनि दासन्हहित नितहीं दुकाल लकुटरहकहां॥

दो॰ जय भवानि जयरानि वर महा देवि जगमूल।
जय दुर्गे जग तारिनि सुचण्डिके अघ शूल॥
देवि दूत संबाद कर प्रथम स्तुति जो गाइ।
जनपावहिं जगदेवि कर अबिरल भक्ति सुहाय॥

सो॰ हेदुर्गे तव नाम हीरा वारत शीश निज।
जिमि तुलसीकहं राम लागहु बसहो हृदयमहं॥
सूररखे नंदलाल व्यासकहिं राधा जस भई।
तसहित हीरालाल होवहु स्वामिनि मातुबर॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्गायशःचतुर्थकाण्डःसमाप्तः॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायण ॥

हीरालालकृत ॥

नवकाण्ड ॥

पञ्चम काण्ड ॥

सो० नितनित भाषहिं वेदसुन्दरतावरगुणन्ह महं ।
इतनाहीं कछुभेदविदित जानसुर नरसबैं ॥
सो सुन्दरता खानि श्री माया जग मूलवर ।
दुर्गादेवि भवानितिनहिं याचिये नमियनित ॥

चौपाई ॥

सुनि देवी कर भाषण दूता । चला नयन महं कोप बहूता ॥
शुंभ निकट सुकण्ठ कसआवा । कालिनि समाचार पहुंचावा ॥
ठाढ़ होय दोऊ कर जोरे । जैमिनि त्रास नहीं मनथोरे ॥
निरखि दूत कहं खल हरषाने । मनु देवी आई मन माने ॥
सोन्टप कबहुं कि होवन पावे । दीप कीट ढिग कस आजावे ॥
शशि किमि आवे बाल बुलाये । मामा मामा कहि गुहराये ॥
गज किमि चाहसिंह नहिंपाले । दूत भाष पीयूष विषाले ॥
शुंभ निशुंभ अमर आराती । सुनहु देविकरवयनकुबाती ॥
महा महा सो बात बनावे । मनहु रेणुकर भीति उठावे ॥
चाहे भक्षण सब संसारा । बूंदतोयचह वह्निहिं जारा ॥

इक इक उपमा देइ सुनावे। अनहोनी कहं भावी गावे॥
दनुजराजअस सुन्दरि सोहै। जाकहं लखि सुन्दरता मोहै॥
॥दो० हिमाचलोदय मेरु ढिग वालभान इवहोय।
॥ ताकर वरसुन्दरवहुततियवपुनीमनु सोय॥
॥ भूषणसुन्दरवसनसजिमोहनिवयसकिशोरि।
॥ निरखत आवतमूर्छा लोचन रत कर डोरि॥
॥ चौपाई॥
कोमलांगिनी कमा कुमारी। छविप्रकाशशोभा अतिभारी॥
चमके दमके विजुलि समाना। कर कटाक्ष फाटत हियताना॥
अस सुन्दरता कहुं कभु नाहीं। जस सोहेअतिशय ता पाहीं॥
छूवत तन महं मल लग जाई। असनिर्म्मलविमल सुहाई॥
सो पठई स्वप्रतिज्ञा ऐसी। विनुजलपवनजमहिं तरुजैसी॥
जो मो कहँ संग्रामहिँ जीतै। सोई वरै नतु जावे रीते॥
बहुत चुझाय बलावों वाहीं। सोमानत मम एकहु नाहीं॥
हँसि हँसि कोपितवातबनावे। बार बार निज पण समुझावे॥
॥ दो० सुनतहि शुंभनिशुंभतब रहेकोप महँ छाय॥
॥ अरुणनयनभृकुटीविकट नाका धर कम्पाय॥
॥ चौपाई॥
दनुजराज सोचहिँ मनमाहीं। मनुसुरसरिकहँ अधरबहाहीं॥
महाकाल कर कालिनि माया। ताते पार पाहिँ कसराया॥
शुंभ सेनपति तब हँकरावा। लोचन धूम्र तहां चलिआवा॥
कहत सेनपति आयसु काही। करहुंजाय मैं क्षणमहँ ताही॥
बोला शुंभ वचन करि क्रोधा। मानो कालहिँ जीव प्रबोधा॥
लोचन धूम्र अबहिँ तुमजाहू। दुर्वचना देवी कहँ लाहू॥
लेइ सेन निज जावहु बेगी। लान व्याकुला होवहु नेगी॥
कच धर करि करिआकुलताही। तुरतहिँ जायलाहु इह ठाहीं॥
॥ सो० रसना जोअसभाष काटियताकहँ शक्ति भर।

चाही कर्णन राख सुनहीं बचन कुयोग जे ॥

चौपाई ॥

अग्नि बरो अस कविता लोगू । हीरास्वामिनिकथित कुयोगू ॥
काह करे जो वश नहिं चाले। भाषतहीरा स्वामिनि पाले ॥
स्वारथ लगि देवी गुण गावे । अशुभ भाष फल प्रद होजावे ॥
सुरथ शुंभ भाषा मन माना । महिश्रजगरदिनपतितियराना॥
देवी रक्षक होवे कोऊ । सुरनरयक्ष गन्धर्वहु सोऊ ॥
हतहु ताहि तहं बलकरि भारी। जाहु बेग नहिं आयसु टारी॥
देखहुं धौं कस देवी आही । धूम्र नयननहिं विलम्ब चाही॥
मुनि खल चाहत मीच पियारी। सोकसरोंक सकत अमरारी॥

दो० धूम्रचक्षु हंसि कहातब दैत्यराज जगराज।
आनहुं अबहीं देवि कहं करिके साजकुसाज ॥

चौपाई ॥

धुम्राक्ष तब आज्ञा पाई। सहस असुर ले कटक बनाई॥
जिनकेभय यम कहँभय लागै। रूप भयंकर पर बड़भागै ॥
लोचन धूम्र चला मन फूली। सहस दनुज कहँ चघानशूली ॥
पुनि निज तनते मरहीं जाई । अत सन्देह न कछु मुनिराई ॥
चले असुर गण करत हुंकारा। रेणु उड़ावें प्रवल पहारा ॥
कह कहके खल बचन अनेका। सहस राहुचल यदिरविएका॥
रविकहं कछुनहिं पहुंचेतहँवां। हिम ढिग राजी अम्बाजहँवां॥
निरखत देविहिं धूम्र लोचना। सहित सेननिज मोहपोचना॥

सो० राहुधूम्र चखुआय मनहु सुदर्शनचक्रनिकट।
मथितजबहिं जलराय धूम्रमरी परराहुनहिं॥

दो० ठाढ़रहे निरखत बहुत चेतन होय अचेत।
पुनिसँभरेदलसुभटगणगर्ज्जहिंनिजनिजहेत॥

चौपाई ॥

धूम्राक्ष तब बोलन लागा। सुर पुर गमन चहे बड़भागा ॥

ऊंच ऊंच सुर करि गुहराई । चिउंटी सांसहि मेरु उड़ाई ॥
चंचल लोचनि हे विधु वदनी । तरुणी तनवी कोमल कमनी ॥
कसन चलहुढिग दानव राजा । सुखसम्पतिशुचिसकलसुभ्राजा॥
कोपि बिहँसि श्रीदीपसमाना । निरखहिं सुररिपु पतंग नाना ॥
शिवानयन वर शर बहु मारे । नृपकटि मोहे खल गणसारे ॥
सेन नाथ धूम्र चखु कहहीं । मनहु भीत निज तोषनचहहीं ॥
नयन कटाक्षी सुनहो बाता । प्रीति रीति सुनुसुन्दर गाता ॥

दो० सिंहकटिनिमृगलोचनी वरमानिनिसुनुमोरि ।
यदिनचलहुरसप्रीतिसों धरिहौंकेशकिशोरि ॥

चौपाई ॥

बज्र परो इह लेखन माहीं । ममस्वामिनिकहँकुवचलखाहीं॥
पर मम माता क्षमा कारिनी । करहिंक्षमाममकृपा धारिनी ॥
सुरथ वसुप समझहु इहि ठाहीं । खल बोला बहु देवी काहीं ॥
किशोरि आदिक बिधिजेनाना । तिनमहँभरितरहतसतज्ञाना॥
सुन्दर वयस भरितइहिमाहीं । लक्ष निरोगता आयजताहीं ॥
सोजग जननी प्रकट दिखाहीं । लेखन रूप दरस इह माहीं ॥
सिंहकटिनि आदिक जो बानी । सबमहँ भांतिभांति निरमानी ॥
समझहिं बुधजन संशयत्यागी । जे जगदम्ब भक्तिकर भागी ॥

॥ दो० पुनिबोला खलमोह पुनि भूलभूल मन माहिं ।
मरनकालजिमिरोगीबश यांचत भोजनजाहिं ॥

चौपाई ॥

इहि बिधि हौं लैजावहुं तोहीं । कौन सहायक तोरा होहीं ॥
मरनकाल मुनिकहि हरिनामा । संशय कभु पावन सुर धामा ॥
कसअचरज कहिकहिदुरबादा । खलचाहत सुरलोक बिशादा ॥
सो सब देवि दया बिस्तारी । तारन जीवन्ह जगमहँझारी ॥
जेनजपहिं अस सुखदा माता । तिन सम खोट रहेको ताता ॥
सुनके जननी मन मुसकाई । पंकज विकसत लघु समटाई ॥

कछुकछु रिसमय मधुरीबानी। वारिज पावक मय झरलानी॥
सेनप धूम्र नयन करु काहा। जो तुम्हरे मन अग्निहु दाहा॥
शुंभ पठायो तू अत आवा। पुनि बहु प्रबली सेना लावा॥
अस चाहत लेजावन मोही। काह करहु परपणमम सोही॥
पण असत्यममकभुनहि होवे। यदि भावी संभव नहिं जोवे॥
सुनत बयन अनीक पतिधावा। मनहुकीटलघु गिरितरआवा॥
॥ दो० तबकोपी श्रीअम्बिका हूंक हुंकारि हुंकारि।
बरसाई शर शक्ति वर तेज तज दल झारि॥
सो० नृपजानहु इहठाहिं आवा कालद वीर रस।
अशकुनसुररिपुपाहि शकुनभयोनभअमरकहँ॥
॥ चौपाई॥
देवी अगणित शर बरसावें। मनु नभते उड़गण महि आवें॥
अम्बयान तब सिंहहु बिगरा। सुरारि मृग करभक्षक बंकरा॥
कण्ठ केश कम्पि करि क्रोधा। शब्द महान करा नहिं बोधा॥
चलादहड़ दह कटक मँझारी। बहु रिपु मारा पाणि प्रहारी॥
मुखभक्षत बहुदिति सुतमारा। बहुतन्ह अधर दशन ते फारा॥
नखते उदरहिं बहु रिपुकेरा। फारा भांति भांति बहु पेरा॥
बहुतहिं अँगुरिन्हतेंबिधिनाना। सुररिपु तनते शिर बिलगाना॥
बहुकरचरण बाहु शिरलीन्हा। कम्पित केश केशरी कीन्हा॥
दो० फारिबिदारिबिगारिबहु रुधिर पान बहुकीन्ह।
क्षणमहँरिपुदलबधितकर सबकहँसुरपुरदीन्ह॥
॥ बाहनकर कौतुक लखी कौतुकिनी श्री माय।
॥ पुचकारी चूंबी बहुत कुण्डल नथनि झुलाय॥
॥ चौपाई॥
देवि यान सिंह विकरारा। सहसअसुरगणदलजिनमारा॥
एक पुरुष वर जिमि जनराई। कमल नाल बहुकाट गिराई॥
बनिक सकलखल सुरपुरजाहीं। मुनितपसीजोश्रमकरि पाहीं॥

सोसबदयानिधिन कर भावा। पापकरतरिपुगणमतिपावा॥
सेन वधित लखि अनीकराजा। रूप भयंकर काल कुसाजा॥
धाव धूप अम्बा ढिग आवा। भांति भांति करशस्त्रचलावा॥
काटि काटि क्षणजननि गिराई। खेत क्रत्रजिमिअविकन्हराई॥
दलपति धूम्रहिंअस अभिमाना। शेष प्रिया गह भेक कुजाना॥
कालद शूल शक्ति श्री माई। कोपित कोपी देवि चलाई॥
धूम्राक्षहिं मारी श्री माया। रविलखिमनुतमचलापराया॥

हरिगीतिकाछन्द॥

निरखि भानुजिमिजाततिमिरभज कारिरातिनिशेशहीं।
उल्का निरखितिमिरगृहभाजत कुनीतिभल नरेशहीं॥
पवन भकोर भजावत धूम्रहिं धूम्र चखु सुर धामहीं।
हीरा स्वामिनि मातुअम्बिका हतीखलहिंसुरकामहीं॥

दो॰ मारि कटक धूम्राक्ष कहं विहंसी अम्बामाय।
धूम्रसदल सुर पुरगयो जो याचहिं मुनिआय॥

चौपाई॥

जय जय बोल उठे सुर गाढ़े। स्वारथ मरति जे तहं ठाढ़े॥
पाणि जोरि बोलहिंशुभ वानी। जयतिजयतिजयमातुभवानी॥
जय जगदम्बा जगअवलम्बा। यामहं संशय का कछु किम्बा॥
कष्ट काटनी दुःख हारनी। सुख सुपाटनी जगत तारनी॥
नित नित रीति देविचलिआई। संकट हरत हमारि सदाई॥
भली कीन्ह मारी धूम्राक्षा। कोमल अंगातीजलजाक्षा॥
जगकर संशय तम सब झारी। क्षणमहँ काटी काटहु भारी॥
जयतिजयतिअव विनयहमारी। शुंभनिशुंभहिंमारहु भारी॥

दो॰ जैमिनि भूपति बोल तव धूम्रनयन करज्ञान।
गूढ़ सत्य जो अर्थहै समझावहु सब आन॥

चौपाई॥

धूम्र नयन ते अस अर्थाई। धूम्र रहा जिहि लोचन छाई॥

जाते जानहु जगत मँझारी। संशय तम दम आदिकभारी॥
अन्धकारजहंलगि श्रुति गावा। जाते जीव चराचर छावा॥
जिनकर नाशकतम गुण भारी। सो प्रगटो इह ठाम मँझारी॥
मीमान्सिक अस ज्ञान अनूपा। सत्य कथाजस भईस्वरूपा॥
धूम्र नयन खल रूप कहाई। ताहि हती बपु मातु बनाई॥
श्री माता असखल कहं नाशो। भक्ति पाथ चाहहिंगुणराशी॥
काहे नहिं भजहो अस माता। जोनितनित अगजगविख्याता॥

सो० करहुश्रवणशुभबात सुन्दरचरितभवानिकर।
होतमुक्तिविख्यात पातककहंलगिअघहुकर॥

चौपाई॥

कटक सकल वरसिंह प्रहारी। धूम्र नयन कहं अम्बामारी॥
इतनो सुनो शुंभ दानव जब। फरकत अधरकुकोपीभा तब॥
चण्ड मुण्ड दुइ दैत्य कराला। मीचलिखीतुर जिनकरभाला॥
तिन कहं दानव पति बुलवाये। आयसु सुनत चलेते आये॥
प्रबलीसेन सहित तुम जावहु। कच धरिबांधिदेविकहंलावहु॥
अहिनि डसे इह लेखन लोगू। कवहुं कवहुं ममलेख कुयोगू॥
सुनिसुनि सुरसोचहिंसबभांती। कटुभाषणयहकिमिसुनजाती॥
पातक लागे अस सुनपाहीं। परमाया अस करहिंक्षमाहीं॥

सो० कबहुंनमहिरजजायराकाशशिअतिविमलढिग।
यदि कोउदेइउड़ायदुर्भाषण तस मातु प्रति॥

चौपाई॥

करि करि कोपशुंभ बहुभाषे। गर्व्वितखलमनमहँअतिमाखे॥
यदि होवन चह कछु संग्रामा। हटहु नहीं करहोपरिणामा॥
मारहु सिंहहिं कससो आही। दुर्वचनी जो नारि कहाही॥
वन्धित करि तैसहु तुर लाहू। देखौं धौं कस सुन्दरि वाहू॥
अस मन लागे लेखन येहू। प्राणिजलहिं तजहुँ न सन्देहू॥
बार बार दुर्वचन लिखावत। सो मोरे मनक बहुँकआवत॥

पर जगदम्बा क्षमा सुराशी । क्षमहिं मोहिजोयदि अघनाशी ॥
लोकहु भूपति असुर कुभाषा । जिमिटिट्टिभखगनभषहराखा॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जिमिटिट्टिभखगनभ रखचाहत जुगनि जगतममेटहीं ।
उरग गरुड़ भक्षण चह कुकुट चह पताल खरेटहीं ॥
इमि अमररिपु अनुमान मनमहँ सो कस नृप होवहीं ।
अति विशाल श्री अम्बा दुर्गा हरिहर जाहि जोवहीं ॥

दो० सत्य धामिनी अम्बिका श्री दुर्गा जग रूप ।
चण्डिका नित अखण्डिका लीला करत अनूप ॥

सो० वसुप वनिक भलजानि आदिभवानी जननि कहँ ।
सदा टेक मन मानि जपिये भजिये सेविये ॥
मीचहिँ मारत माय अनहोनी कहँ भाविकर ।
रज कर शैल बनाय गिरि कहँ रजकर देविवर ॥

चौपाई ॥

शुंभ दनुजपति कर मुनिराई । चण्ड मुण्ड रजायसु पाई ॥
पुरगामी ते दैत्य विशाला । कठिनकठोर कुविकटकराला ॥
गजरथ पदचर अश्व बहोरी । चतुरंगिनी अनीक बहुजोरी ॥
अस्त्र शस्त्र बहु विधि कर धारी । गमने चण्ड मुण्ड बलभारी ॥
जनपति जिनहिं कालतहँ प्रेरे । जाहिं चले ते माया नेरे ॥
मरहीं ते देवी शर खाई । अमनहिंकछु सुरलोकहिंपाई ॥
आये असुर विमूढ़ पतंगा । दीप देवि ढिग सेना संगा ॥
तुहिन धाम शिखा कांचन पर । देखे देविहिं सिंह यान वर ॥

दो० हिरण्यकशिपु हिरण्याक्षसम चण्डमुण्ड नृपआहिं ।
वाराह नारसिंह तहां श्री सोहत इक माहिं ॥

सो० करप्रकाश श्रीमाय हिम गिरि उदयाचल विमल ।
भेष बनाय सुहाय रवि अनेक इक नारि कर ॥

चौपाई॥

सुर पंकज विकसन तब लागे। सुरतिय अलिनी पीवपरागे॥
असुररूप यामिनी नशाहीं।असुरतियन्हकुमुदनिसकुचाहीं॥
चण्ड मुण्ड निज सेन समेता। निरखतदेविहिं भये अचेता॥
कछुक वेर पाछू ते जागे।दीप पतंगन्ह गिरिउड़ि लागे॥
लोकहिं सोचहिं बहुमनमाहीं। सुन्दरता अस कहुं कभुनाहीं॥
यक्ष कुबेर आदि गन्धर्व्वा।एकएक तियादि सुर सर्व्वा॥
सबराजहिं प्रभु मन्दिर माहीं। सुन्दरता असलखपर नाहीं॥
नभ महँ सुरसह सुन्दरतीया। एकहुनहिं असलखकमनीया॥
तीन लोक पुनि बहु सुंदराई। कतहुँ नहीं असरूप लखाई॥
शूल चाप शर असी सँवारी। आये देवी ढिग असुरारी॥
भाषहिं वचन अनेक कुबानी। हीरक वेधन चह्ह खलपानी॥
तबश्री अम्बा रिस बहु कीन्हा।मनुरिपुदलहि कालशनिकीन्हा॥

दो० कोपत देवी भई पर श्याम मुखी विकराल।
भृकुटी वंक कालीमहा चमकत हाड़ कपाल॥
सो० नृप इहिठाम विचार कोप चिन्ह भा देविकर।
सोमित नहीं अपार गावहुँ आगे सुनहु भल॥

चौपाई॥

महा कालि अतिवेष बनाई।काल जाहि निरखतडरजाई॥
खांड़ा शर पासादिक हाथा।शुष्कमांसिनी विशालमाथा॥
वाघम्बरी भयद महिपाला। धारी कण्ठ मुण्ड नर माला॥
अस्थिपसुलि लखिये तनमाहीं। लोकत जाहि बाल मरिजाहीं॥
रसना चालनि भयंकारिनी।उरमयवदनवहु विस्तारिनी॥
नयन डरंकर मनु गिर परहीं। नादकरतसुनिदिशिसबभरहीं॥
महाकालि कर वेष अनूपा। मानहु मीच बनाई रूपा॥
शस्त्र अस्त्र कर चलनि बहोरी। करतकटाक्ष भयद बलजोरी॥

दो० ये मानहु अगणित अमित रोग राइ बहु आहिं।

भीच कालिका भक्षका असुरहिं रोग लगाहिं॥

चौपाई॥

अवनि नाथ काली करज्ञाना। मानसार्थइहिविधि निरमाना॥
अमितजगत व्यापित श्री माई। श्री दुर्ग्गा माया सुखदाई॥
ताकर कोप जान कस आवे। सोइ रूप काली प्रगटावे॥
करनी कोप विदित जगमाहीं। सो करनी वपुकाली आहीं॥
नृप शिव वेष प्रथम मैं गावा। जसजसकालकरनिप्रगटावा॥
बहुत घटे अस काली रूपा। भांति भांति हानिदस्वरूपा॥
सहित ज्ञान मीमान्सिक ज्ञाना। सकल साधना अन्वय नाना॥
भक्ति हेतु वपुलाइ वखाना। कोविदकहहीं करिनिरमाना॥

सो० वसुधव वारम्वार गावहु मैं निरमाय करि।
लीला अपरस्पार श्री माया जगरानि कर॥
देह रहित श्री माय एक अखण्डिनि आदिनी।
भक्त हेत रम आय सो वपुनी जग गावहीं॥

दो० सगुण अगुण दुइ रूप हैं गावहिं ज्ञानी लोग।
भक्त जनहिं जसभाव है मानहिं तस शुभयोग॥
सुनहु जनप अबकथा शुभ समर महा कसहोय।
बहुतज्ञान दरशक प्रगट समझहुआगिल सोय॥

चौपाई॥

तब श्री काली अति गुहराई। कभु न भयद असनादसुनाई॥
ऊंच ऊंच सुर अस हुंहुंकारे। असुर गर्भिनी सुनि तरपारे॥
सोदेवी चहु तुरदल मारी। जिमिरविनाशतजगतमझारी॥
कोपि असुरगण भक्षणलागी। अगणितनिशिचरघातनपागी॥
हांकसुनत रिपुगण घबराहीं। चरितदेखिमनमहँ विलपाहीं॥
नभ सुरतियसबमनहिं मनावें। वेगहिं देवी वेष लुकावें॥
काली अस कीन्ही ताकाला। मीचहु विधिनकीन्हवसुपाला॥
अस काली भय भेष बनाई। निरखत धीरज धीर गमाई॥

लवायीछन्द॥

धीरनिरखतनिजजानिभाजे शोकहिंशोकउपजहीं ।
भय महा कहँव्यापेबहुतभय कल्पनाअतिकल्पहीं ॥
चिन्ता कहँ चिन्त बहुव्यापे जाय मीचहुमी चमरी ।
काली कालिनीकरालिनि बहु विशालिनीभयंकरी ॥

दो० सुर सुरनी सबकहहिं मन असुरहिं वेगमिटाय ।
जननी रूपलुकावहो रूप निरख नहिं जाय ॥

सो० ममप्रभुनिहिं नहिं चैनकसमानहिं सुरविवुधतिय।
बोलहिं दुइ दुइ वैन मारहु असुरहिं जावहो ॥

चौपाई ॥

गगणासिन करि बात बनावें। यहनहिं जाने दरशन पावें॥
हमरे हित अस रणसुखदाई। राची कौतुकिनी श्री माई ॥
नहिं तरकरिलयभृकुटिवंकाई। नाशत खलगण कहँ नरराई ॥
देवी अरु काली कस भारी। नारसिंह वाराह अवतारी ॥
दलपति चण्डमुण्ड रणआये। हिरण्यकशिपुहिरण्याक्ष सुहाये ॥
यदिते मरहीं काली हाथा। पावहिं सुरपुर पदगतिसाथा ॥
काली देवी एकहिं आहीं। मनु अवतारी विष्णु कहाहीं ॥
बाजहिं भयद जुझाऊ बाजा। खलडरिसाहसकरहिं कुसाजा॥
रणकौतुक लखि वीरहु लाजे। कतहुं नलखनिजगणनासाजे ॥
सोसब दुर्गा भाव प्रभावा। नाकहँ भजिये वेदन्ह गावा ॥

दो० ऐसी जननीपायकरि जो न जपे निज हेत।
तासमपापी कतहुंनहिं लोकहु ज्ञानसमेत ॥

चौपाई ॥

दलमहँ अगणितरथ गजबाजी। अंकुश घंटा पाश सुसाजी ॥
कालीसबकहँ इक कर धारी। लेइ लेइ मुख मारि विदारी॥
वहुभट रथ गज अउठाई। मुखहिं धराइदशन ते खाई ॥
खावब मारब देखत ऐसे। डरहिं असुरगण होवत कैसे॥

नृपसोचहु असचरित निहारी। भयकहँ भयनहोयकसभारी॥
बहुतहिं केरकेश धरिहाथा। बहुतहिं कण्ठचरणधरिमाथा॥
भयंकरी चपि बैसी छाती। भक्षतजावे करि करि घाती॥
रिपु दल अस्त्रशस्त्र सबजाती। जाहिं प्रहारतविधिविधिभांती॥
दो० रविशशि कबहुं न डर करे राहु दुष्टते भूप।
जसनिश्चर अब भेवहीं लखिकाली कररूप॥
अगणितआयुध प्रहारित देवी मुख महँ डारि।
दशनाधरहिं मलनलगी कोपितकरतहुं कारि॥
चौपाई॥
अति डरंकरा माया काली। खांवेबहुतहिं मुखमहँ घाली॥
मरदे बलवत असुर निकाई। बहुतहिं ताड़ित भक्षहिं जाई॥
बहुतहिं शरते रणमहँ मारी। खांड़ाते बहुखलहिं प्रहारी॥
बहुतहिं हतीदशनाग्र भागा। बहुतहिं रगड़ोतननिजलागा॥
जैमिनि मुनिअसुरन्हबड़भागे। जग मायाते जूझन मांगे॥
लरिकेपुनि सुरलोक सिधाहीं। विना सुधा खल सुर होजाहीं॥
देवी तन शोणित बहु पूगे। मेघघटन्हरवि बालन्ह ऊगे॥
नृपक्षण महँ कुलसेना नाशी। महाकालि असकालन्ह राशी॥
हरिगीतिकाछन्द॥
महाकालि कालन्हकर राशिनि क्षणहिमारीसेनहीं।
विदारि उपारि मारिफारिकरि सो होवहीं जेनहीं॥
चण्ड दुष्ट तबदेख सेनहत काली सों अस भाषहीं।
दुह दुह करत बहुतभल धावत तौंहुभयमनराखहीं॥
दो० अगणित शरले चण्डपुनि मुण्ड सहस शरजोरि।
वेधहिं मारहि कालिकहँ कोपि बहोरि बहोरि॥
चौपाई॥
देवीमुखमहँ अगणित जाई। चक्र शूल शर बहु भय दाई॥
तेसब सोहहिं अस नृप जानू। मेघ मध्य वहु मण्डल भानू॥

पुनिअति कोपी मायाकाली। कोपहुलाजे कालहिं घाली॥
काली भई महाबहु काली। श्यामारंगा घोर कुचाली॥
देखत रंग अमावस लाजे। श्रीकाली भयंकरा भ्राजे॥
नादकरे गुहरा गुहराई। सुनसकजोअसनहिं मनुसाई॥
उरप्रदमुखमहँडरप्रद दशनन। करतप्रकाशघटादामिनिगण॥
रूप भयंकर अरु अरु राई। होत जात अति कोप बढ़ाई॥

लवाणीछन्द॥

होतजातअतिबाढ़तरिसबहु रूपभयंकराकरी।
सहायदैवयदिजातिनिजते करहींनहींवनपरी॥
वाहनउतरिदेविधरिकेशहिंचरडकरतबअसकरी।
लैनिजबलमयखंगचरडकर काटीशिरकोपभरी॥

दो० चरडवधितलखिमुरडतब हाहाकरिढिगआय।
फेकत पुनिपुनि आयुधहिं बहुतबहुतगुहराय॥

चौपाई॥

देवी ताकहँ खंगहु मारी। सोहु दैत्य कहँ अवनी पारी॥
रहे सहे जे सुरारि झारी। क्षणमहँ सबकहँ जननी मारी॥
अगणित शवमहँ काली कैसी। निजसेना महँ मीच सुबैसी॥
हरषे अमर सुमन बरषाहीं। जयतिजयति करिवैनसुनाहीं॥
सुरपतिनी भाषहिं घबराई। यद्यपि हरषित ते मुनिराई॥
भयंकरा जग जननी माता। अन्तरगत अब होवहुत्राता॥
नृप देखहु देवन्ह चतुराई। सेवा लावहिं काज सराई॥
इन करगति कसकहिये राया। पालिय मैना कीर निकाया॥
समय पाय ते सब उड़ जाहीं। पुनिनहिंनिकटनाथनिजआहीं॥
सोवत कछु न दोष इन माहीं। हीरा पालिनि भल इनकाहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

पालिनिहीरा भलइनकहँ भल मिलीभागसुयोगहीं।
एक शब्द जय रसना राखी मोहहीं सुखभोगहीं॥

सत्यकहहि श्रुतिवेद पुराणहु हरिहिंदुर्ग्गअपारहैं।
मितनितभजतनामसबव्यापी दुर्ग्गाशक्ति अधारहैं ॥

दो० सेनहली जगदात्मिका जबक्षणमहँमहिराइ।
अमर अमरतियहेतुनिज कहे बचन गुहराइ ॥

चौपाई ॥

जयजय माता कालिकालिका। विपदिपीरदुखसकलघालिका॥
जयदुर्ग्गे जय कालि भवानी। महारानि जगस्वामिनिरानी॥
कोअसकहँ जी विनुतुम माता। टारि सकत हमरो दुखजाता॥
हरि यदि आति सकते नाहीं। तव बल माता तेहू आहीं॥
जयतिजयतिजयरणसुखकारी। जय वीरनि सुररिपु दलमारी॥
इहि तव रूप भयंकर भारी। देखत मीच मरे अस धारी॥
रिपुमरहीं क्षणमहँ जग माता। परतव कौतुक भवविख्याता॥
अब मारहु रिपुराज भवानी। जयतिजयति दुर्ग्गेजयरानी॥

दो० इतनी ही काली महा चण्ड मुण्ड शिर हाथ।
धरिगमनी चण्डिका ढिग बोली कृष्णामाथ ॥

चौपाई ॥

प्रथमहिंते मिश्रित शब्दभारी। बोली बचन कीन्ह हुंहुंकारी॥
दुर्ग्गे स्वामिनि चण्डिक माया। चण्डमुण्डपशुअसुर निकाया॥
मारी सब कहँ करि संग्रामा। गमने सकल प्राण सुरधामा॥
लेवहु चण्ड मुण्ड शिर दोऊ। वलि प्रसाद मैं देवहुंसोऊ॥
समर घोर भा यज्ञ समाना। खपे तहां सुर रिपु विधिनाना॥
इतहु देवि तुम भांति सुभांती। शुम्भनिशुम्भहि सुरआराती॥
सुनतबिहँसितबकहतचण्डिका। सुरपालिनी देविअखण्डिका॥
यहलीला कस कहिय बखानी। जगजननी श्री दोउ भवानी॥

दो० कल्याणकाश्रीचण्डिकाकौशिकिअजजगमाय।
बोली वहु मंजुल बचन मनोहरा मन भाय॥

चौपाई॥

महाकालि अससुनहु तुम्हारी। अतुलितजगयशकीरतिभारी॥
होवहिंबहुत सहित बिस्तारी। नितसुरनरमुनिसकलमझारी॥
चगड मुगड शिरअसगहिलाई। चामुगडा तव नाम कहाई॥
विदित होय चामुगडा नामा। तीन लोक तिकाल परिणामा॥
युगयुग कीरति रहही छाई। सकल जपहिं चामुगडा माई॥
अर्थ एक अस आवत राजा। काली देवी जब इक साजा॥
सो जग माता चगडी माई। चामुगडा पुनि नाम कहाई॥
चामुगडा मनु इन्दु समाना। मुखचमकत जाकरबिधिनाना॥
सो श्री जगत भवानी माता। अगजग रूप सकलविख्याता॥
लेखन लेखन अचरज आवे। सो सब संशय ज्ञान बतावे॥

सो० जैमिनिमुनि अतिगूढ़ पावनचरितभवानिकर।
सुरमुनि होहिंबिमूढ़ मायागुण परतर्ककरि॥
सत्य जानिमनमानि श्रीदुर्गा श्रीदेविकहँ।
ध्यायियनित्याजानि दारुण दुखनितदाहनी॥

चौपाई॥

चगड मुगड निजसेन समेता। हतगय सुनत शुंभ नहिंचेता॥
कोहित अपर तंत्र चित बाला। महा विदि तावनि पाला॥
दानव सेना तव हँकरावा। विधिविधिआयसुश्रवणसुनावा॥
मनु पिपीलिका लघु लघुयूथा। चहहिं उड़ावन मेरु बरूथा॥
ताय तेलते दीपक वारे। घृत दिनपतिकहँ चाहत जारे॥
सेमिवेल चह अमरहु बेला। असुरन्ह शिरमहँ कालहुखेला॥
चाहहिं सबरे सुरवर लोका। बिनायासकछुसोच न शोका॥
शुंभ दनुज तब बोलन लागा। नभ अमरन्हकरधीरजभागा॥

दो० सेन असुरगण सुनहु इत अगणित सेना जोरि।
मारहु अम्बा कालिकहँ फिरहु न बहुरिबहोरि॥

सो० अस रसना कहँभूप अहिनि डसे पुनि कीटलग।

मन मोदक मनऊप खावतशुंभ दुरात्मखल॥

चौपाई॥

गमनहु शीघ्र सेन ले साथा। तुम्हरीनाहिं मीच ममहाथा॥
षट अस्सी असुरायुध धारी। सेनाहोय जांय बल भारी॥
कम्बूदल चतुरास्सी होई। निज अनीक लेजावें सोई॥
पच शत कोटि वीर्य्यहु नामा। मम आज्ञा जूझहु संग्रामा॥
धौम्र वंशी शतन वरूथा। दुरदर वंशी कालक यूथा॥
मौरय कालकेय भट भारी। मम आयसु जा सेना सारी॥
सबल सकलमिलिकरहुलराई। नहिं तर यमगृह देहुँ पठाई॥
बहुत भयद खल आज्ञा करई। सुनिसुनि योधन्हधीरजटरई॥

सो० बकतज्ञकतमति मन्द सुधाचहतदुहछांछकहँ।
दषादेवि मुख चन्द छांछ दुहतदेवहिं सुधा॥

चौपाई॥

धौम्रआदि जे विधिविधिनामा। तिनकर कल्पभरा परिणामा॥
एक अर्थ निरखहु नरराई। जगतविदित जे तिमिर कहाई॥
मृषाकार कपटादिक आहीं। तिनकर रूप लखो दलमाहीं॥
कम्बू आदिक तसकर कामा। दरसावहिं अस भेपन्हनामा॥
होहिं नष्ट सब जब वधमाया। कथाविविध विधिभक्तबताया॥
मौरय वीणादिक जेआहीं। ऐसहिज्ञान लाइ मन माहीं॥
समझहु सारसत्यवसुपाला। विधिविधिहानिदलखिजगजाला॥
ओ माता जग मूला रानी। सबविधिनाशतविदितभवानी॥
शुंभ दनुज कहँ नहिं कछुसोचा। अहमित ज्ञानसदामनपोचा॥
सो नृप अब कस मेटन पावे। काल जाहि नित नाचनचावे॥

दो० शुंभकुबलिअतिदानवय सहसकोटिदलजोरि।
अगणितअमितअपारअति जोराकटकबहोरि॥
सादर निशुंभहिं संगकरि चलानिशंककुसाज।
अशकुनहोवहिंवाटमहँगणहिंनखलमहिराज॥

चौपाई॥

अशकुन कसगणहीं जनपाला। गमनेसकल होय वशकाला॥
प्राणी बहुत दूत यम कैसे। धर्म्म राजपहँ लावैजैसे॥
तैसहि शुंभ चमू हँकरावा। मनहुं कालकर आव बुलावा॥
विधि विधिलीलाखलगणकेरी। करहिंचलहिंमगमाहिं कुबेरी॥
पहुँचे जहां चण्डिका राजी। शोभा खानिनि वीरनिभ्राजी॥
निरखिनिरखिखलअचरजकरहीं। अस सुन्दरताकतलखपरहीं॥
देवि विलोकी जब दल आवा। कोप वती मुखकोपबिछावा॥
नृप अब दण्ड कोप बहुताई। जसछावाकछुकहिनहिं जाई॥

लवायीछन्द॥

जस छाव कोप कहि जाय नहींमनु पावक अरुणवरे।
अगणितपतंगखलदीपजानि क्षणमहँ अबहिं जरमरे॥
तबहिं तो श्री चण्डिकाअम्बा स्वधनुरजु आहटकरी।
सुनतबधिरभयदिगपालादिक अवनि नभ पूरणभरी॥

दो० बारबार लखिदेविकहँ दुष्ट करहिं मनमाहिं।
कोमलांगि सुकुमारनी कसजीतहिं हमपाहिं॥
लखि सुन्दरता बहुतखल पुनिपुनिहोहिं अचेत।
बहुत गिरहिं बहु परहिं तरमुर्छातेपुनिचेत॥
पुनिपुनिसुरछहिंउठहिंपुनिकितइकखलसमुदाय।
जहँतहँ जिमिअमलीबहुतसोवहिंजागहिं धाय॥
गरजेसि अमित सिंहपुनि शब्दकीन्ह अतिघोर।
श्री अम्बिका सो नादकहँ दीन्ह बढ़ायबहोर॥
देवी घंटा शब्दते बढ़ो नाद बहु ताइ।
सुनि सुनि कायर कांपहीं भय मनकर नहिंजाइ॥

चौपाई॥

धनु रजु मृग पति घंटानादा। बहुत भयंकर उपज विषादा॥
ऊपर कीन्ह शब्द महकाली। कालभेषनी खल गृह घाली॥

ताकर नाद बढ़ावहु भारी। धनुपादिक कर नादहिंटारी॥
सुनत दैत्य गण होहिं अचेता। डरहिंगगणसुरसुरनिसमेता॥
अस शब्दन्ह ते काल डराई। विधिहरिहरसबहिय धरकाई॥
सोनृपअविवुध कससुनसकहीं। सदा कालकर भोजन अहहीं॥
सो काली बहु कृष्णा गाता। श्री देवी ललाट जामाता॥
कलपन विलपन भयबड़ त्रासा। डारहुई खलगण तिय सांसा॥

सो० सोहकि समर समाज श्री देवी सन अमर रिपु।
सोइदशा महिराज जिमि सिंहनि सन भेक गण॥

चौपाई॥

जैमिनि इतमहँ बोले भूपा। ललाटजा काली जगरूपा॥
यामहं का ऋषि कहहु बुझाई। संशय होत न कछु तरकाई॥
सुनहु धरापति नित मैं गावा। दरशक कविता दोउ कहावा॥
इनकर लक्षण सदा सदाई। निजनिजभांति कथातिनगाई॥
जग व्यापता शक्ति जु आहीं। वैष्णव रूप रमी जगमाहीं॥
सो दुर्गा कभु गन नहिं आवे। जो नित्या विन देह कहावे॥
जब नहिं जपहीं निर्गुण रूपा। भक्त हेतु कवि कह स्वरूपा॥
दरसी भक्ति पाथ अनुरागी। मनतोषण दुख काटनलागी॥

दो० श्रुतिपुराण गीतादि कह अस शक्तिहिं निरधार।
अन्वय देह लगावहीं सो दरसत अवतार॥
लोकहु बात विचार के सकल जगत महँ झार।
जीव चराचर राशि महं एक शक्ति आधार॥

चौपाई॥

पुनि नृप सोचहु दूसर बाता। जस संयोग बने तस ताता॥
तस तस ज्ञान लइ तहँगाहीं। जाते जग मनतोषण आहीं॥
अस कथिता श्री देवी केरा। रूप भयंकर रूप निवेरा॥
दरसत कभु रिस ललाट माहीं। पुनि कभुआव नयन दृगपाहीं॥
लोचन वसहिं भाल तर ऐसे। बुद्धि कोप भल आवहिं तैसे॥

नयन द्वार कपाल महं जाहीं । सो जगदम्बा देवी ठाहीं ॥
सो ललाट कर भय प्रद रूपा । दरसो काली देवि अनूपा ॥
निजतिजविधि जानहुअबजेती । महिरण उपजहिं काली तेती ॥

दो० सुनहु कथा अब समर करि कस जूझहिं दितिपूत ।
अगणित रूप भयावने संग पिशाचहु भूत ॥

सो० सुनतहिं शब्दमहान क्रोधित दानव सकल तब ।
कालिहिं सिंहहिं जान आये घेरे देवि कहँ ॥

चौपाई ॥

मनहु घटा घेरे घन आई । रविमण्डल कहँघनहिंलुकाई ॥
अत अन्तर वर लीला भूपा । कौतुक कारिनि कीन्ह अनूपा ॥
अज हरि शंकर सुरपति आदी । कार्तिकेय वाराह सुवादी ॥
नरसिंहादिक अति बलवाना । विस्मितसोचहिंविविधविधाना॥
कोप नयन करि नभ सब ठाढ़े । कोप लोकि कोपाग्नि बाढ़े ॥
वली वली रिपुनाशन हेतू । स्वारथ विजय लागि सुरजेतू ॥
निजनिजतनते भिनभिन रूपा । शक्ति निकारे बलिनि अनूपा ॥
जे जे सुरकर जस जस भेषा । जस जस भूषण यान अशेषा ॥
जस जस आयुध करनीजैसी । तिहितिहिभांतिशक्तिलखतैसी॥
सोचहु भूप लख कविताकी । जो कछु कहिय थोरसबताकी ॥
परनहिं असत सदासब सांची । मायाइच्छा अस रण रांची ॥
समझहिं ज्ञानी संशय नाहीं । भक्तिभाव सतपथ मनमाहीं ॥

दो० जुरआई सब देवि तहँ देवी दुर्गा पास ।
सोहहिं अमितअपार सब इकइकतेवरवास ॥
सुन्दरमुखसबमातुकर मोहहिंअतिचमकाहिं ॥
मनुअगणितरविघरकर मह्यादिकशशिआहिं ॥
शनिआदिक करइन्दुमहँ दुर्गा मुखकससोह ।
इननिशिपन्हकर सार है सारकाम रतिमोह ॥
मायापुनिसबदेविसह असुरन्हमहँकसआहिं ।

उड़गणसंग राकाशशि दरसोनभ घनमाहिं ॥

चौपाई ॥

देखहु मुनि सुन्दर विधि नाना। सोहहिं शक्ति मातुरण ठाना ॥
ब्रह्म शक्ति वर हंस विमानी। माला जपत कमण्डल पानी ॥
चधिधरिकरमहँरण महँ आई। सोइ शक्ति ब्रह्मानि कहाई ॥
वाहन वृषभ शूल कर धारी। अहिनी कंकण भूषण भारी ॥
शंभु शक्ति शशि कला सुहाई। भूषिता माहेश्वरी आई ॥
पारबती गिरिजा श्री नामा। गावहिं वेद सदा शिव वामा ॥
करमहँ शक्ति मयूर सवारी। कार्तिकेय शक्तिअति भारी ॥
सो कौमारी अम्बा आई। अविबुध ते रण लड़न सहाई ॥
गरुड़ यान हरि शक्ति बनाई। पटकर महं वरगदा सुहाई ॥
शंख चक्र धनुशर वरनाना। भूषणविधिबिधि रूपसुहाना ॥

दो० वररूपिनि श्री वैष्णवी लक्षी देवी सोह।
महा लक्षि सब देखिये मोह कहा नहिंमोह ॥

चौपाई ॥

पुनि हरिकर अवतार अनूपा। अतुलितकल्पित वराहरूपा ॥
नीन नासिका धरा उठाये। अमरन्ह हित जेलाघवलाये ॥
असतन धारित वेष बनाई। वाराही तहं शक्ति सुहाई ॥
भयदायक नरसिंह अवतारा। हेतुप्रहलाद कथित विस्तारा ॥
ग्रीवकेश बगरत विधि नाना। भयावनी वपु काल समाना ॥
अस कथिता वर वेष बनाई। शक्ति नारसिंही रण आई ॥
वज्र पाणि ऐरावत याना। सहसनयनसुरपति सवजाना ॥
असवर सुन्दर वेष बनाई। सहस्राक्षी इन्द्राणी आई ॥
अमर शक्तिपर ऐसहिं भांती। दरसींरणमहंनिजनिजजाती ॥
शोभा अमित अपार प्रसारा। कविता वपुरी करका पारा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

पारहिंकहंलगि वपुरी कविता दुर्ग्गा उल्का जागहीं।

मानहु गाई सुरभरि माया मधुर दीपक रागहीं ॥
निकसीं सुन्दर देविगण सब मनुदीप वरसोहहीं।
पुनितापर शोभा युत सुन्दर रूपधरि मन मोहहीं ॥
दो॰ सोहहिं देवी बहुतसी कस कहिये महिराय।
शोभित अमित अपार छवि इकते एक बढ़ाय ॥
चौपाई ॥
मालकौंस श्री इच्छा गाई। सु हिय पघलहिंपषाण नाई ॥
आइ मिलेपुनि सुर श्री रागा। सुरतियहियतरुहरितविजागा ॥
तामहं मेघ राग पुनि आवा। असुरन्ह अत्रशस्त्र बरसावा ॥
रागहिं डोलमिले पुनि आई। देवी नाचहिं झूलझुलाई ॥
भैरव राग आय दरसावा। कायर मनमनु कोल्हुचलावा ॥
काकहिये लीला अति भूपा। देवी इच्छा कीन्ह अनूपा ॥
षट रागन्ह असकौतुक आवा। सुखाकरनिबहुसुखदरसावा ॥
जो कबिदा नहिं बुद्धि चलावे। ता कस बपुरा हीरा गावे ॥
दो॰ कविता बपुरी सत्य महं श्री गुण सकहिंनगाय।
असकौतुक कछु बहु नहीं मायाअग जगमाय ॥
बेदहु गायन बहु नहीं देवी कहं मुनिराय।
हरहिं नचावत जो सदा कीन्ही इतनो काय ॥
चौपाई ॥
पुनि मुनि जैमिनि बोले भूपा। गूढ़ अर्थ समझाहु अनूपा ॥
भाषेऋषि बड़ कौतुक आहीं। सबविधि अर्थ भराइनमाहीं ॥
भांतिभांति जे शक्ति कहाहीं। नाम सहित गुणरमइनमाहीं ॥
ब्रह्म शक्ति कही जगराई। जो सृजवल्लरमता श्रुतिगाई ॥
यद्यपि नाश रहित जगरूपा। मनहु अपर महं हो स्वरूपा ॥
अपर रूप दरसत ताकाला। आवत सृजवलअस नरपाला ॥
रहनि शक्ति जो स्थितिकहाई। ताकहं वैष्णव वेदन्हगाई ॥
नाशत सो सुरूप जब उलटे। सोइ शक्ति महेश्वरि पलटे ॥

शक्ति वराह वसुपजो दरसे। नाशन रूप सोउ हरिहरसे॥
नरसिंही जो नाम कहाई। प्रबलसिंह इव बल दरसाई॥
जगकौतुक जो हरष सुरूपा। सो दरसत कौमारी भूपा॥
वृष्टिआदि जो जगकरपोषक। ऐन्द्री देवी जग मन तोषक॥

दो॰ पुनि इनमहं बहुरूपहैं गणना अंगन्ह केर।
चारअष्ट भुज आदिहैं नयन तीन बहुतेर॥
इनमहं बल अरुदष्टिकर भांति भांति व्यवहार।
कवि कोविदमुनिआदिसबविधि विधिकथाप्रसार॥
इनकर कारज करनि पुनि जो जस योगी होय।
निज निज अवसर पायकर प्रगटहिंगुणसबहोय॥
ब्रह्मानी जल फेंकहीं मरहीं दुष्ट वरूथ।
नाशत खलता होत सुख सो उपजन गुण-यूथ॥

चौपाई॥

जो मानहु उपजाव अनन्दा। जोमुनिगावहिंबलगतिकन्दा॥
ऐसहिं वैष्णव शक्ति प्रसारी। चक्र आदि जो आयुधधारी॥
सो सब रक्षाकर आकारा। जाते नाम शक्ति जगधारा॥
गही शूल गिरिजा कहं गावे। नाशन गुण जो वेदकहावे॥
इहिविधि भांतिभांतिकरयाना। अपररूप आदिकविधिनाना॥
ज्ञानीमुनि जन गावहिं सबरे। विधि विधिज्ञानलायमनसगरे॥
कहहु कथा अत बाढ़त जाई। समझहिं ज्ञानीबुधि बलपाई॥
थोरेमहँ बहु समझहिं लोगा। जस संयोग बने तस योगा॥
रणशोभा किमि जायबखानी। जहं जगदम्बा बहुत भवानी॥
करहिं कटाक्ष बधहिं रिपुयूथा। सदा बशितजेमदनबरूथा॥
प्रथमहिं कितइकमुक्की खाहीं। समर रहा कहुं दूसरठाहीं॥
पुनिपुनि करहिं चरित्र अपारा। को अस ठाढ़ा चाहनिहारा॥

दो॰ सुरथ समर रचना शुभग कापै वरनी जा[illegible]।
जहां रूप श्री मातुकर दरसाविधिविधिआय॥

सो० भूले सकल अपान खल दल अगणित ठाढ़ जे।
मनु मदिरादिक पान सबकीन्हे अतिशय भले॥

चौपाई॥

चतुराननि पंचाननि माई। षट करनी षड़ाननी सुहाई॥
सहसाक्षी वाराही रूपा। सिंहाननि वर महा अनूपा॥
वसुरण देवी सबहिं सुहाई। उपमा नहिं किमि कहिये गाई॥
मनहुं वीररस सुन्दरि रूपा। आयेरण वपुनारि अनूपा॥
अगणित असुर कटकवलमाहीं। देवी सब प्रकाश चमकाहीं॥
सोहहिं सेन घटा अंधियारी। दामिनि रविशशिअनेकनारी॥
सुन्दर सुन्दर वेष बनाई। निकसहिंसकुचहिं एकइकाई॥
इत बहु शेष शारदा आवें। शोभा लोकत मनहिं लजावें॥
यदिते चाहें करन बखाना। रसनाकाटिजाहिं विधिनाना॥
शारदादिक का इहि ठाना। वेद अर्थ किमिअस वसजाना॥

दो० रहत सदा लघुताल महं मेंडक गण महिराय।
महाप्रलय अतिप्रलयपुनिकिमितिहिजानोजाय॥
ऐसहिं शारदादिकर कविहिं देहिं बलभूरि।
कभु संयोग बनहिं अस कवि मति होवत चूरि॥

चौपाई॥

हंसि हंसि माया महिरणमाहीं। कटाक्षकरिकरि आवहिंजाहीं॥
असुर अनीक घटाकरि आई। बहुतदिनपविकसहिं सबमाई॥
सुरहिय पंकजविकसहिंनाना। परमानन्द नहीं परमाना॥
सुरनी सुन्दरता रसनाना। सुरलोचन अलि रसकरपाना॥
लोकन बहुत असुर गणसारे। दिवस नखतरवि प्रकाशमारे॥
असुरतियन्ह घृतमोमसमाना। तापपायपिघलहिं विधिनाना॥
नृपसब देवी केतकि जानो। असुर करणि बहु कंटकमानो॥
असुर कोह वश करनि घनेरी। कूदन फांदन चलनी फेरी॥
केतकि कंटक तीक्षणबढ़हीं। अलिन्हअमरलोचनयदिगड़हीं॥

सब देविन्ह महँ दुर्ग्गा माया। विदितचण्डिका अवनीराया॥
सब रानिन्हमहं महिषी रानी। शोभा धाम रूप गुणखानी॥
अमित अपार मनोहर रूपा। सब प्रकाशमहंशिखा अनूपा॥

हरिगीतिकाछन्द॥

शिखा अनुपम सब प्रकाश महं उड़गकाशशि सोहहीं।
दीपक गण महं उल्का शुचिवर घाम उल्कन्हबरोसही।
दुति देवि दुर्ग्गा चण्डिका अति सुन्दरि शोभ खानिनी॥
इहिसम येही सुन्दर देवी कह सब जग जानिनी॥
दो०या महं कछु न प्रशंसयदि अस सुन्दरिबलजोरि।
महा प्रभावनि तापनी जो करहीं सो थोरि॥

चौपाई॥

लोक चारदश जगती काला। चारहुयुगजहंलगिअसहाला॥
अस असअगणितअमितगनाई। जहंलगिहृदयदौरभलजाई॥
तहं लगि अससुन्दरता भूपा। महाअमितअतिनहिंअसरूपा॥
जस श्री दुर्ग्गा महं दरसाहीं। हीरास्वामिनि विदितसदाहीं॥
सो सुन्दरता लखि सब जाती। अमरअसुरगण इकइकभांती॥
मोहहिं लोभहिं वारम्वारा। ताकहिंपुनिपुनिनिमिषनपारा॥
भेवत हीरा रतमन पागे। ममस्वामिनि कहंदीठनलागे॥
सुन्दर सुन्दर वारम्वारा। मैंहूं भाषहुं जब आकारा॥
मारिहु टोकिन लागे देवा। यदि दरशन नहिं तौहू भेवा॥
अहा अहा तव सुनिये माता। मोर वचन निज कारहुत्राता॥
दो० विबुधा विबुध सबकरपुनि तनमनशिरनिजवारि।
मनहु लवण राई मिरच देवहुं पावक जारि॥
सो पावक जग कालहै ताकर काल भवानि।
कामो कहं इत भेवहै जीव मरन समजानि॥
सो० तनमन कछु नहिं माल भक्तिकृपा जब देहिंश्री।
का बपुरा जग काल अन्तकाल श्रीरक्षका॥

चौपाई ॥

नृप लोकहु देविन्हकरकरनी । जसकरहीं तसजायनवरनी ॥
मोश्रस लागे कहिय न जाना । मूकस्वाद कस सुधा सुपाना ॥
मूल व्याजव्याजहु कर व्याजा । ताकर लेश त्याज कछु राजा ॥
जैमिनि कभु कभु सुधश्रसश्राई । सुन्दरि देवी सुन्दरताई ॥
छवि श्राभा शोभा दुतिसबरी । सुन्दरता प्रकाशता बगरी ॥
मानहु बिधि विधिनारि वरूथा । सुन्दर तन धरिफिरहीं यूथा ॥
तिनमहं दुर्ग्गा चण्डी रूपा । भेषसार श्रृंगार अनूपा ॥
सुनहु धरापति कथा प्रसंगा । होवहिं लीला रणबहुरंगा ॥

दो० दोपहिँ देवी समर महँ सुन्दर सब कमनीय ।
लोकत केतिकश्रसुरगण त्यागहिँचेतन जीय ॥

चौपाई ॥

कमल कलिनि तहँ देवीसारी । विकसहिँदुर्ग्गादिनपनिहारी ॥
सुरतिय सह विस्मयतमनाहीं । बीत रैनखल कामिन्हजाहीं ॥
श्रसुर नारि कुमुदनि सकुचाहीं । देविन्ह महँ शोभाश्ररुछाहीं ॥
वाणी वपुरि शाक विकनारी । सोकिमि परखदेविमणिचारी ॥
तिन महँ दुर्ग्गा रतनन्हहीरा । परखि न जाय सुन्दरी वीरा ॥
क्रोधित समर देवि सब भूपा । करि करिन्नाद करालश्रनूपा ॥
शंकर कहँ सब शक्तिन्ह घेरे । श्रठ देवी श्रठशशि शनिनेरे ॥
बोले शंकर मंजुल वानी । हे माया चण्डिके भवानी ॥

दो० सुरशक्तिन्हतेतुमहिं ते सहित प्रीतिवरमोरि ।
बधितहोहिँसबश्रसुरगणातवहतशक्तिन्होरि ॥

सो० समझहुनृपइहिठाहिंशिवगुणप्रथमहिँकहामैं ।
सोवध शक्ति कहाहिँ पुनिमायाहतशक्तिवर ॥

चौपाई ॥

श्रस भाषत चण्डिका देह ते । निकसी देवी एक तेज ते ॥
सो जग माय श्रनूप श्रपारी । श्रति उग्रा श्रृंखाली भारी ॥

शत शत शब्द करत हहुंकारी। कोपवती तेजस्वी भारी॥
बहुत भभूका पावकहु जरी। देवीते देवी तस निकरी॥
सो रिपु अजिता बोली वानी। सुरकहँसुखदअसुरगतिदानी॥
धूम्रवर्ण जटिल शिव शंकर। भगवन होवहुअबहिंदूतवर॥
गर्व्वित शुंभ निशुंभहु जहँवां। अपर दनुजगण आयेतहँवां॥
जाहु तहां अस भाषहु वानी। जीते सुरप लोक रजधानी॥
सबसुरपितर भाग मखखाहीं। काहे मरहो तुम रण माहीं॥
धन धन दीनदयालिनि भूपा। कारुणिका कृपा प्रद रूपा॥
निज मुखते समझात भवानी। नहिँसमझहिँतबअसुरखुटानी॥
सो कहुअसकस होवनपावे। चाहहिँ खलगणसुरपुरजावें॥

सो० उपना पुनि सोहाहिँ वराहनिकसे छींकअज।
देवि देवितेआहिँ जिमि प्रगटेशिवविधिहुते॥

दो० पाहिँ मुक्ति खल देविते मुक्तिप्रदा वरदानि।
बोली अम्बा बहुरि अस मोहहिँ शंभु सुजानि॥
यदि चाहहिँ जीवनअपनवसहिँपतालहिं जाइ।
नहिँ तर समरधरा इहां आवहुसब बललाइ॥

चौपाई॥

मम देवी तृप्ता बिनु वारा। होहिँ खाहिँ खलकहँजेसारा॥
जो देवी शंकरहिँ पठाई। पुनि शिव गमनेदैत्यसुभाई॥
सो देवी शिव दूति कहावा। जासु यमहिँसुरनरमुनिगावा॥
आयशंभु दैत्यन्ह प्रति बोले। मनहु कालसन्देशहिं खोले॥
शिव मुखते देवीकर वानी। शुंभनिशुंभ सुनत रिसमानी॥
अपर अपर दिति सुतबलवाना। सबकोपे सुनि वचन बखाना॥
शिव बहुरे अस वयन सुनाई। आये जहँ सुर यूथ सुहाई॥
तेकस शिववचसुनहिं नृपाला। जिनसन खेलत कालकराला॥

दो० पीतहरी अरुणादिकी कंचुकि सुन्दर भूप।
बाहु आठ दश सोहहीं भूषण मयो अनूप॥

॥ चौपाई ॥

टेहुन्हा ते लगि अँगुरी पाणी । पीत पीत कर रंग सुहानी ॥
साउपमा कस जाय बखानी । सकुचगिराजहँमतिहिचकानी॥
तदपि सुनहु इककथा बनाई । जगतवस्तुसब विधिउपजाई ॥
शशि रति दामिनिसबउपजाई । सार सारविधिलीन्ह खिंचाई ॥
सो सब कमल नाल महँलाई । जलज रूप सुन्दर उपजाई ॥
सोय रूप निज भुजार्ध भूपा । मातु बनाई बहुत अनूपा ॥
कस निर्व्वललग नाल कुरूपा । सबविधिसुन्दरकमलसुरूपा॥
पुनि माताकरअँगुरिन्ह माहीं । विधिविधि आयुधशोभापाहीं ॥
अँगुरि गठन पुनि रूपबनाईं । मनुकमलन्हसमटनिसकुचाई॥
इहि कारण ते विकसहिं भूपा । मानहु लजहिंविगारहिंरूपा ॥
कमलनाल असकमल सुरूपा । भुजार्ध सोही देवि अनूपा ॥
नहिं नृप मायआदि छवि माई । भूलहिंअगणितअजनिपुणाई ॥

दो० महिमा मातु अपारअति कावपुरा विधिआहिं ।
करिमारतओदेविनितकोटिविधिहिंक्षणमाहिं ॥
होवहिं कोपित असुरगण आये रंग समाज ।
श्री कात्यायनी जहां शोभित महा विराज ॥

॥ चौपाई ॥

देखे सुर रिपु विदिता माया । सुन्दरता शुभ रूप निकाया ॥
बहु आयुध वर कर महँ धारी । मानहु भानु किरणछटकारी ॥
रिपुगण पुनिपुनि कोपहिंभारी । देवीकहँ शर शक्ति प्रहारी ॥
नृप पुनि असि इक धारा यूथा । बरसाये बहु दनुज बरूथा ॥
देवी वदन भानु सुखदाई । आयुध राहुन्ह घेरे आई ॥
चण्डिक लाघव धनु टंकारी । महा महा वर वाण प्रहारी ॥
वेधी पुनि रिपु आयुध नाना । जिमिकाटे बहु खेत किसाना॥
रहतसदा जो हरि चखु माहीं । कोमलठांव नयन नितआहीं ॥
राज तहां सुकुमारा माता । कोमल को अस दूसर ताता ॥

जगत मूल हरि थिरता जानो। स्थिति मूल सो माया मानो॥
स्थिति दशा दरशन दरसाई। सो श्री देवी नयन बसाई॥
दो० हरे हरे जगस्वामिनी हीरा स्वामिनि मातु।
असकोमलकसगातदृढ़मरहिंनसकलकुजातु॥
रतनजटित भूषणगरे कसे सोह नहिं पार।
तापर मुखड़ा तेजयुत राका शशि झकमार॥
चौपाई॥
कंचुकि तरते कटि लगि अंगा। दहिनओर लख पीअर रंगा॥
रेख पर्शुका दूबर अंगी। शरइव बेधत हिय रत रंगी॥
भुजन्ह उठावत जबमारत शर। सरकतबान ओर नीलाम्बर॥
दहिन तुल्य लखिये तब अंगा। हिय विध जावे शोभा रंगा॥
रुधिर बुंद तिन रेखन्ह माहीं। नामांकित भूषण दरसाहीं॥
बँधी जकड़ करि साड़ी कसो। सुन्दरकटिढिग अनुपमवैसी॥
ताते अरुणी पिअरी सुन्दर। दाऊ ओर रेख बहु बढ़तर॥
साड़ी तरते लखिये चरणन। भूषणभरितचुरावहिंजनमन॥
सो पद राजहिं हिय हीरा के। जाभिन द्वार जग न पीराके॥
ये शोभा अनुपम दरसाहीं। का करिये यदिउपमा नाहीं॥
खलगण फेंकहिं बहु हथियारा। जावहिं काटत जगदाधारा॥
बहु रिपु गिरहिं शूल बरषाई। बहु परहीं शरते महिराई॥
बहु खावहिं गर वर तलवारा। वसुपरहीं बहु बिन आधारा॥
खांड़ा ते बहु अवनी माहीं। गिरहीं मरहीं सुरपुर जाहीं॥
हरिगीतिकाछन्द॥
गिरिमरिजाहिं अमरपुर सुररिपु शोभाशव सुहावहीं।
ललाटजा श्री काली जननी रिपु अरु शवहिं खावहीं॥
श्री सन्मुखा चण्डिका काली अवनि रण महँ धावहीं।
भक्षत असुरहिँ भागमानी वाट जे चलि आवहीं॥
सो० बारबार मुनिराय लखिलखि वदनभवानि कर।

रिपुगणकितमुरछायउठिसंभरहिँपुनिलड़हिँ तहँ ॥
तोहुन कछु इनलाज जिमि पापी हरि हरन डर।
करहींरिपुता काज पर धन्य भल पावहिँ गति ॥

दो० ब्रह्मानी पुनि डारहीं सुवर कमण्डल तोय।
जाबेरिपुवलहतभये वधहिँरिपुहिँपुनिसोय ॥

॥ चौपाई ॥

जाजा मग खल भजहीं जाई। ताहि डगर ब्रह्मानी धाई ॥
माहेश्वरी शूल प्रहारी। बहु सुररिपुकहँकोपितमारी ॥
वैष्णवी निज चक्र भ्रमाई। बहुखल ताते मरे भ्रमाई ॥
कौमारी निज शक्तिन्ह छांड़ो। मरे बहुतअरि आड़ी बाड़ी ॥
इन्द्राणी निज वज्र प्रहारी। शतशतदानव दनुज विदारी ॥
बहहिँअरुणगिरहीं महिमाहीं। प्राणसकलसुरलोकसिधाहीं ॥
धन्य धन्य श्री दुर्गा माई। विनुश्रमखलगणमोक्षहिँ पाई ॥
सुरमुनि याचहिँ जे नित भागी। सो असुरन्हप्रतिपाछेलागी ॥

दो० जेनभजहिँअसदेविकहँ तिनसमपातकि कौन।
इत उत भटकहिँ व्यर्थते करहींजसमनतौन ॥

॥ चौपाई ॥

धाव भयावनि श्री वाराहा। तुण्ड प्रहार असुर दलगाहा ॥
दशन नाग्रते पुनिबहु मारी। खण्ड खण्डकरि वसुपरपारी ॥
चक्रन्ह ते बहु अति तर परहीं। काली सब कहँभक्षणकरहीं ॥
नारसिंही कोपि अतिभारी। उछलत महानाद बलधारी ॥
दिश नभ सबभा पूरित नादा। सुनिसुनिकायरकरहिँविषादा ॥
सो देवी निज नखन्ह सुधारी। बहु रिपुकर पदपेट विदारी ॥
महा वैरि अस विदरित नाना। खातफिरत नारसिंहीमाना ॥
बड़ भागी मुनि असुर निकाया। जिनप्रतिलीलाकरअसमाया ॥

॥ हरिगीतिकाछन्द ॥

लीला करत विविधविधि माया असुरसुर पुर पावहीं।

कोऊ विजया शोण पीवहीं कोऊ शवहिं खावहीं ॥
नाचहिं कूदहिं फिरहीं उछलत देवि सब संग्रामहीं ।
शोणित छीट उड़तदेहन्हमहँ अरुणमणि वरजामहीं ॥
दो० श्यामा आयुध विविधिविधि पीवहिं शोणसुखाय ।
मनहु प्रकाशो चर्म्मअरुण आयुध होत मढ़ाय ॥
चाम मढ़ितअस कहुं न कहुं आयुधकछु दरसाहिं ।
मनु फाटत हैं चाम पुनि रगर असुर तनपाहिं ॥

चौपाई ॥

पुनि जानहु देविन्हकर करनी । जसजस रूपा तसतसवरनी॥
जो जस माता तस हथियारा। मारहिं असुरहिं तसआकारा ॥
चक्र शूल आदिक जस धारी । तिनसों तसतसमारहिं मारी॥
सो सब प्रथमहिं विधिवतगाई। ज्ञानी सब समझहिं वसुराई॥
कथा बढ़त बहु करत बखानू । थोरेमहँ जानहीं सयानू ॥
वार वार मैं कहहुं बुझाई। दरशन आदि न रहा लुकाई ॥
कोन भांति संग्राम बखाना। होवहिं मुनि कोऊ नहिं जाना॥
भयो न होवहिं अस संग्रामा । जस जगदम्बा कर रणकामा॥
दो० हरि आदिक जेसनर बहु कीन्हे भांति सुभांति ।
कबहुंन अस अतिघोररण भयोनहोवहिं तात ॥
सो० जब ऐसो महिपाल उपमा लगि कहँ परकथा ।
महा जलधिढिगताल होतप्रलयबड़जबहिं पुनि ॥

चौपाई ॥

शिव दूती महान प्रकाशिका । सुखमा सुन्दरता सुराशिका ॥
करत कटाक्ष हृदय मोहाई । मुर्छा कहँ मनु मुर्छा आई ॥
शिव दूती महान उपहासा ।विहँसिविहँसिकरसोहप्रकाशा॥
लोकि लोकि खल मुर्छा खाहीं । होइ अचेत गिरहिं महिमाहीं॥
तिन कहँ शिव दूती मुखडारी। भक्षत जात रूप कभु भारी ॥
इमि अनेक विधि सहित उपाई। कोपि कोपि सब माय सुहाई॥

बहुरिपुदल कहँ काटहिं पारी। खावहिं लीलहिं मरदहिं मारी॥
यह लीला वर गाय न जावे। यद्यपि शारद नटिहो आवे॥
लवायीछन्द॥
साधन जावे यह लीला वर यदि शारद नटी बने।
जो करनाटक यह लीलाकर वीरता मय रसघने॥
नहिं होवे वरणन यदिमहिपति रसनाबहुतकविकरें।
अनुपम अमित अपार रूपते सबदेवी समर लरें॥
सो० बरस असुर शर घोर मेघ घटा छाये बहुत।
देविन्ह दीपक ओर मनु रिपु वरसा कीटउड़॥
चौपाई॥
पीड़ित रिपुगण होवन लागे। साहस त्यागिजाहिं बहुभागे॥
रक्तवीज बल मय कटकेशा। शुंभ सेन कुल महा दलेशा॥
अजहरि शिवमनमानहिं हारी। जासु त्रास बल भयविस्तारी॥
सो सुररिपुअसनिरखत क्रोधा। रण महँ धावा करत प्रबोधा॥
वसुधव खल अस रूप बनावा। बहुत काल इक बपु दरसावा॥
सब देविन्ह सो जूझन लागा। मूषक मनहु बिलाइन्ह आगा॥
दपटत झपटत उछल घनेरे। उरग समीप गरुड़ बहुतेरे॥
अपर दनुज पुनि मिलहीं आई। अस इक उरगहिं देन सहाई॥
नृप लोकहुकस खलमतिमन्दा॥ सब उरगेशखाहिं सबवृन्दा॥
जब जब जननी मारहिं ताही। अगणित रक्तवीज दरसाहीं॥
नन्दाछन्द॥
रक्तवीज तन शोणित बूंद गिराहिं।
अवनीपरहीं अनेक न परहींआहिं॥
जेति बूंद उतनोही खल दरसाहिं।
रक्तवीज रूप सकल महितेआहिं॥
मुख्य रक्तवीज महा सगदा हाथ।
प्रहारतमारत लड़त ऐन्द्रि साथ॥

ऐन्द्रि ताड़त मारत निज बज्र घोर ।
बड़ खल रक्तबीज कहँ महान जोर ॥
ताड़ित रक्तबीज तन शोण बहाय ।
तस रूपी तस प्रबली योधा आय ॥
तनते जेती बूंदन्ह रक्त गिराहिं ।
वीर बली पराक्रमी नर उपजाहिं ॥
रक्त जनित सकलपुरुष भयप्रद आहिं ।
उग्र शस्त्र ले देवित लड़हिं पराहिं ॥
बज्र लगितखल देह महँ लोहु बहाइ ।
सहसन्ह पुरुष आवहीं करत लड़ाइ ॥

सो० इह कौतुक कस आहि रक्तबीज ते बीजलहु ।
अगणितखलहोजाहि मेधस बोलहु अर्थ कछु ॥

चौपाई ॥

नितनितरीतिजगतचलिआई । शोणित लावतवीर्य्य सदाई ॥
सो बल वीर्य्य भरोसब ठाहीं । जा संयोग बढ़नि जगमाहीं ॥
रक्तबीज अस भा बलवाना । बूंद रक्त बल वीर्य्य समाना ॥
बल नघटेमनुप्रबलीरिपुगणा । दरसहिअगणितखलत्रासनमना॥
ऊपर कथा कही जिमि राई । भाव कबहुं सो अस दर साई ॥
तहं दरसे पुनि अगणितयूथा । रक्त वीज सम सुभट बरूथा ॥
विधिविधिप्रगटहिंअसुरबरूथा । मारन मायामिलि करि यूथा ॥
एक अर्थ अरु आवत आगे । कबहुं सत्य अस संशयत्यागे॥

दो० परहिं बूंद होवहिं बहुत रक्तबीज वसु नाथ ।
व्याप रहे संसार महँ अगणितखलगणसाथ ॥
दौष्ट्य आदिक ताजगत जो छावा विस्तार ।
सो सब माता नाशहीं या महँ कभुअस सार ॥

सो० वीज रुधिर महिमाहिं रक्तबीज दाड़िम भयो ।
अरु अरुउगत जाहि पादप दाड़िम तहां अस ॥

दो० रण महँ देवी वैष्णवी खलहिं चक्र सों मार।
सहस बीज शोणितभये व्यापितनभसन्सार ॥

चौपाई ॥

ऐन्द्री देवी वज्र प्रहारी। वाराही असि बीजहिं मारी ॥
माहेश्वरी छांड़ी शूला। अगणित शोण बीजआकूला ॥
कौमारी तिन खलकहँ मारी। तिमि ब्रह्मानी आदिकसारी ॥
कोपहिं विहँसहिं देवीसारी। नाचहिं महिरण कौतुक भारी ॥
खल पुनि नाचहिंकूदहिं नाना। प्रेत पिशाच भूत अनुमाना ॥
करनि भयंकर सबमहिपाला। बहुगण नाचहिं पुनि बैताला ॥
सगदा शोणित बीज अबूझा। भिन भिन देविन्हसोआजूझा ॥
देविन्ह कर बहु शक्ति तिशूला। शोण बीज कहँ कर आकूला ॥
तिनकर लोहू वसुधा बहहीं। कोटिन कोटिनअसुर दरसहीं ॥
व्याप रहे ते सब संसारा। अगणित अमितअनन्तअपारा॥

लवायीछन्द ॥

अगणित अपारसोहहिं खलतब नभजग महँ छायरहे।
बहु राहु केतु रूप भयंकर सुर नरहिं लीलन चहे॥
सब सुरनर मुनिआकुल होवहि त्रास मनहिं बहु करें।
अज हरि शंकर विस्मित सोचहिं होत कानजानपरे ॥

दो० जब जानी चण्डिका सुर आकुल होवत जाहिं।
शीघ्रसुधासम बचनकह तोषणसब सुरपाहिं ॥

सुर गणसबव्याकुलजनिहोहू। खल सेना महँ मरहीं सोहू ॥
कोउ अमर भल व्याकुलमाना। जाते माता तोषहिं नाना ॥
धन धन देव भले बड़ भागी। अम्बा माया करुणा लागी ॥
बोलहि भाँति भांति मनमाने। सुर भय हरष न जायबखाने ॥
अस सुरकहँ का लाज न आवे। श्रमकर जननी कृपा बतावे ॥
कोमल नाजनि पतरी अंगा। अति सुकुमार नर्म्म तन्वंगा॥
अस मायहिकसश्रममहिपाला। कस अस जाये सुरचण्डाला ॥

कभु कभु शोणित बीज अनूपा। परत अंग श्यामाकर भूपा॥

दो० सो शोभा किमि जाय कहि देवि अंग सुकुमार।
तातें बहुखल प्रगटहीं गिरि सम रूप अपार॥
नीलाम्बर माता वपु आयुध भूषण माहिं।
बहुत बूंद ते लगिरहे बहुत बीज झूमाहिं॥

चौपाई॥

देविन्ह यूथ छपो मनु राई। सब खल महँलखढम्पितछाई॥
वार वार खल निकट छांड़हीं। जबजब गिरहीं जीव पाड़हीं॥
जगदम्बा मुख सब दरसाहीं। लखहीं ढपहीं पुनि बिलगाहीं॥
मनहुगगणमहँनिशिपतियूथा। घेरत छांड़त घटा बरूथा॥
धन पाणि सुर जे ताकाला। निरखे शोभा अवनी पाला॥
सुर मन सूखहि खेत समाना। देवी वचन सुधाजल आना॥
लुवहिं नाज जब सेना कटहीं। ता प्रतिराज पाहिंसुरभटहीं॥
खाहिं अन्न भोगहिं निजराजा। जिनलगिदुर्गाकौतुकसाजा॥
जलमय खेतहिं लूवन लागे। हंसियादिक जयाश अनुरागे॥
अम्बा करि सुरहिं समाधाना। काली तें बोली मन माना॥
चामुण्डे करु मुख विस्तारा। मनु लीले सब नभ सन्सारा॥
शोण बीज सब लीलहु अबहीं। शोणजनितहैं होवहिं जबहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

हैं होहिं शोणित बीज बहुजे शोण बूंदन आवहीं।
ममशस्त्रप्रहारजनितबूंदन धरा गिरन न पावहीं॥
अवनिगिरेयदिभक्षहुतिनकहँ बीजखलसबखावहीं।
विहँसिविहँसितुमभक्षहुखलकहँ अजिरफिरिफिरिधावहीं॥

दो० चामुण्डे अस होहिं खल शोणहीन क्षणमाहिं।
रक्तबीज असमरहिं तव पुनिसुरलोक सिधाहिं॥

चौपाई॥

सुनि चामुण्डा भई अनूपा। महाप्रलय मूला मनु रूपा॥

मनु चाहत भक्षण बहुकाला । असदरसी काली जगपाला ॥
बहुरि चण्डिका बोली ऐसी । वीरनि रूप धरी रण तैसी ॥
काली भक्षहु दैत्य अनेका । जीवहिं नहिं पुनितेकभुएका ॥
नृपयह कछु नहिं महा उपाया । चण्डिकाहिं श्री दुर्गामाया ॥
यदि चाहे तो भृकुटि विलासे । अगणितरुधिरवीजकहँनासे ॥
कौतुकिनी पर कौतुक करहीं । सुरमुनिजनगावहिंभवतरहीं ॥
काली कहँ इहि भाँति बुझाई । छांड़ो निज त्रिशूल श्रीमाई ॥

लवायीछन्द ॥

छांड़ी निजशूल श्री चण्डिका रक्तवीजहिं जा लगे ।
कालिमहा तबशोणितधारा मुखमहानमहँधसगे ॥
मुखडारिधारशोणितबहुतहिं लखकालिकन्दरायदा ।
अगणितसिंहादिकतहँभयंकर जाहिंधसभीतरतदा ॥

सो० कहा भयो अपकाज देवी प्रति भागी असुर ।
महागदा करसाज मारा पर श्री कौतुकिनि ॥

दो० इह लेखक कहँ निगरसिंह विजुलिपरेताऊप ।
जो लिखहीं निजमातुकहँ लेखदोषअस भूप ॥
आत्त गदा श्री मातु लखि भृकुटी नाक सकोर ।
कीन्हि कटाक्ष मनहु डरी मोहे अमर बहोर ॥

सो० देवी कर अति सोहि सुन्दर लघु शशि आनिनी ।
पीरा कछु नहिं होहि करप्रति गदा लगी नहीं ॥

चौपाई ॥

जो भृकुटी ते अगणित काला । रगड़तमारत नितमहिपाला ॥
ताकर कर अस गद कस लागे । समझहिंनहिं इहमूढ़अभागे ॥
हरिअर दूब बज्र कस मारे । जल इकबूंद महानल जारे ॥
सुरसब विहँसहिं सोचहिं भीते । जानहिखलयदिजावहिं जीते ॥
कृपा खानिनी जिन हित हेतू । सहत दुःख नाना रण जेतू ॥
सकल विवुध कस बूड़ न मरहीं । लाजरहितस्वारथरतकरहीं ॥

नृप सुरगण अस लीला करहीं । बालकजननीढिगहँसिडरहीं ॥
कोपी चण्डिका महारानी । हियजानिनी महामद मानी ॥

लवायीछन्द ॥

महामद अति भवानि दुर्ग्गा कोप बड़वानल सरी ।
निज सखा काली अनिल पावत भभूका प्रकाश बरी ॥
चण्डिका मारी शूल हत इक शोण वीज रक्त बहा ।
ताकहँ काली महाकराली आनन निज डारि गहा ॥
सो० भांति भांति स्वरूप सब जगदम्बा देविकर ।
बहु निशिपति अनुरूप दुर्ग्गाराकाशशि महा ॥
दो० काली मुखते चूयेसि शोणित बूंद अनेक ।
तिनते बहुबहु खलमहा उपजे इकते एक ॥

चौपाई ॥

तिन कहँ मुख महँ काली डारी । भक्षहि पीवहि शोणितभारी ॥
काली आनन शोणित धारा । वीजनहीं घन धनुमणिकारा ॥
चामुण्डा अस कौतुक करहीं । बहुभुजंगखगपति मुखपरहीं ॥
माया छांड़ी तबहिं अनेका । शूल वज्र शर इक ते एका ॥
वृष्टि खंग खग असि तलवारा । शस्त्र अस्त्र जे जे विस्तारा ॥
आयुध वर वर बहुत समूहा । चमके आये बहु बहु हूहा ॥
रण रचना कस जाय बखानी । करतसमरजहंसत्यभवानी ॥
लागे शोणित वीजन्ह हींते । काली पीव शोण उप जेते ॥
लागत आयुध यूथ नवीना । रक्तवीज भा रक्त विहीना ॥
अवनि परा तब खल बड़ भागा । विनायासनिजप्राणहिं त्यागा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

प्राणहिं त्यागिमराखलमहिपति गवासुरपुरपातकी ।
सुरसुरतियकरहींअतिहरषितऋतुसुमनबरसातकी ॥
दुर्ग्गा गुण पावन अजादिसुर गाहिं बाज बजावहीं ।
जयतिजयतिजयजननीजयजय नमोनमो सुनावहीं ॥

सो० बोल उठे सबदेव मारी मारी बीज कहँ।
अबनरहा कछुभेव मारीदुर्ग्गा बीजकहँ॥

चौपाई॥

दुर्ग्गा जननी जगदाधारी। रक्तवीज कहँ दुर्ग्गा मारी॥
कटक महा श्री मातु प्रहारी। रक्तवीज कहँ मारी मारी॥
संशय नहिं अब सुनहो भाई। मारहिं तिमि दोऊ रिपुराई॥
वसना भूषण नूतन अनेका। शोभित माता गण इकएका॥
शोणित बूंद परे सब माहीं। मनहुजटितमणिआदिकआहीं॥
तिन महँ नीलाम्बरिनी माया। कंचुकिनी सबरंग लखाया॥
माया सुखमा लखि मन आवे। विधिविमूढ़ रचनानहिंपावे॥
का फल उपजी शारद भूपा। जोनिसकहिंगा असस्वरूपा॥
कविता वादि भई जगमाहीं। जो माता गुण वन्धनगाहीं॥
शेष गणेश भये सब वादू। जो न सकहिंकहमासम्वादू॥
राणादिक उपजे विन हेतू। जेनहिं रचना कर सकजेतू॥
सत्य वनिक वसुधव असआहीं। हीरा स्वामिनि गायनजाहीं॥

दो० वार वार विहँसत वहुत श्री दुर्ग्गा गुण खानि।
अपर मातु सब मोहहीं लोकहु करनि भवानि॥
अजहरिशिव सुरपादिसब हरषहिंअरुअरुराय।
वार वार स्तुति कहहीं मनहिं न प्रेम समाय॥

पंचचामरछन्द॥

नमामि देवि दायहो। नमामि मातु मायहो॥
दुर्ग्गासुचण्डिकामहा। अखण्डिकाकुकालदहा॥
अनादिनीसनातनी। निता सता सुमातनी॥
नआदि वीचिअन्तनी। नतोहि देह हो मणी॥
विधी विष्णुहु शंकरा। ध्यानतो सदा धरा॥
अजा लक्षि उमा सदा। सुसेव तोहि शारदा॥
सुरारि यूथ मारिनी। व्याधि रोग जारिनी॥

भसिंधु नाव पालिनी। कराल काल कालिनी ॥
अनूप रूप सुन्दरी। तिलोक मेरु मन्दरी ॥
नमामिचण्डिजालिका। कुमोह मारघालिका ॥
कुलोभ कोप गारिनी। महा भयादिपारिनी ॥
धर्म्म अहीनि धारिनी। कला सुपूर कारिनी ॥
तिलोकजाल तारिनी। दया मयाहु धारिनी ॥
दुखं हरी सुखं करी। कृपा करी महा वरी ॥
ऋद्धि सिद्धि सुपारनी। विभू अनेककारिनी ॥
अनेक लोक रांचनी। कुसोच शोक मोचनी ॥
प्रदा पुण्य विराशिनी। कुपापराशि नाशिनी ॥
विशाल बाहु वीरनी। संग्राम भूमि धीरनी ॥
दुर्ग्गे नमामि तोसदा। चण्डि नमामि तोअदा ॥
भक्तिमुक्ति प्रदायिनी। अधीन हीर भायिनी ॥

दो० सकल मातुगण नाचहीं सुनि अस्तुति हरषाहिं।
शव शोणित वर पीवहीं भरे न मन न अघाहिँ ॥

चौपाई ॥

जय श्री दुर्ग्गे जय श्री माया। जयति चण्डिके रूपनिकाया ॥
तीनयने जय भुजा अठारा। सिंह वाहनी तेज अपारा ॥
जय ब्रह्मानी वीरनि माई। जय वैष्णवी रूप सुहाई ॥
जयति माहेश्वरी भवानी। जय वाराही नरसिंही रानी ॥
जय एन्द्री कौमारी माता। कात्ययानी सब जगत्राता ॥
जय काली शिव दूती रानी। नमो नमो सबकहँ इहवाणी ॥
जय चामुण्डे काल स्वरूपा। जय श्री दुर्ग्गे माय अनूपा ॥
जयतिजयतिनितनितजयवाणी। नमहिंनमहिंहमसबयुगपाणी ॥
चरणगिरहिं पुनिपुनिहमसारू। नमहिं नमहिं जयवारम्वारू ॥
नमोनमो दुर्ग्गे सुनमामी। सबकहँपुनिपुनि जयतिनमामी ॥

सो० दुर्ग्गे जय जगदम्ब नित नित मांगहिं दीन हम।

अविरल भक्तिसुअम्ब तव पद कमल पराग कर ॥

दो० शव सेना महँ नाचहीं देविन्ह मण्डल जोरि ।
घनमहँ उड़इवदेविसब दुर्ग्गा इन्दुकिशोरि ॥
सुन्दरमणिगण वेषतिय दुर्ग्गाअविक किशोरि ।
पुनि पुनि सोहहिं देविअस नृतरचना वरजोरि ॥

चौपाई ॥

हँसि हँसि जननी गावहिं नाचें । शोणपीय बहु कटाक्ष राचे ॥
लोचन फेरन भृकुटि चघाई । कर अंगुरिन्ह कर भाव बताई ॥
नासिकहियकर नयनन्हहारन । कटिबहुमटकन पद वरडारन ॥
सबकटाक्षकर विधिविधिकारन । सबआयुधविधिविविधिप्रहारन
जो कछु गान भाव चखु माहीं । पुनिकरअंगुरिन्हवपुदरसाहीं ॥
देविन्ह कौतुक वसुप निहारी । मन महँ शास्त्र संगीत हारी ॥
अगणित वाद्य नृत्य नादादी । सुर ग्रामादिक मुर्छा वादी ॥
जिनकहँ जोनित क्षणउपजाई । ताढिग का यह वनिक बड़ाई ॥
सो लीला सब भांति सुहाई । को अस जाते वरणी जाई ॥
बाजहिं भांति भांति वहुबाजा । कोअसजोवरणहिं अससाजा ॥
सुनहीं लोकहिं सुर माहाहीं । ध्यानत्यागि भूलहिं अपनाहीं ॥
चर अरु अचर सकलतहँ पेखें । टकलगाहिं पुनि डारहि देखें ॥

लवायीछन्द ॥

चराचर सुर मुनि नाग किन्नर गन्धर्व आदि जे रहे ।
कोउ न अस जो मुरछित नाहींजे न अबहिं मोह महे ॥
रंभादिक जे अप्सरा आदिक लज्जित मरन मन करें ।
ते कसमर सुधानन्द देखहिं कोटिन लाज जर मरें ॥

दो० शारद सकुचत नभ खड़ी विसुरी बपुरी मान ।
ठुमरि गान किमिकरसके रागषटादिक तान ॥
किमि पासकहीं भेकनी शुठि तोयज वर वास ।
नृपजुगनी कसपहुंचही दिनपति मण्डलपास ॥

सो० सुलभसकल सतसोय सबपहुंचहिं जहँपहुंचनहिं ।
मातु कृपा जब होय सो कि आव सब भागमहँ ॥
गे कोविद कवि हारि शारद शेष गणेश श्रुति ।
अज हरि पुनि कामारि भाषहिं येहैं येहि सम ॥

चौपाई ॥

सब सुर पुनि पुनि बोलहिंऐसे। बालक बहुत मात ढिग जैसे ॥
हे अम्बे श्री दुर्गे रानी । जयतिचण्डिके जय गुणखानी ॥
वेगहु शुंभ निशुंभहि मारो । वेगहिं हम दीनन्ह कहँ तारो ॥
जब यह कथा पूर सुखदाई। मुनि तबकहा सुरथ महिराई ॥
कह समाधि मेधस मुनिराई। शुंभ निशुंभ संग्राम सुहाई ॥
अब सर्बविधिविधि देहु सुनाई। चाहिं सुनन हम कथासुहाई ॥
शोणित बीज वधी श्री माई। जन दुखहारिनि मुक्तिप्रदाई ॥
जपहु मात अस नितनित भाई। सदा कृपा जो ढेरन्ह छाई ॥

लवायीछन्द ॥

छाई ढेरन्ह कृपा सदा जो कारुणिका देवि रमी।
भक्तिमुक्ति नितदान देवहीं लोकतीमहँ असजमी ॥
कोअस भागहीन तीलोकहिं नहिंदेवि असजपकरें।
सुरनरमुनिसबआदिचराचर ध्यानमनजननितधरें ॥
महिषधूम्रचखुचण्डमुण्डखल रक्तवीजहिंक्षणमहीं।
अगणितअमित कटकसहभंजी यशतीपुरछायरहो ॥
कमलापतिकहँसहाय दीन्ही तरमधुकैटभहुगये।
अस श्री स्वामिनि मायाताकर दासहारा पदलये ॥

दो० चण्ड मुण्ड चख धूम्र पुनि रक्तवीज संग्राम ।
सुनहिंगावहीं भक्तजन साधहिंनितसिधिकाम ॥
तिनकरहोवहिं सकलमहँ विजयबड़ाई नाम ।

भक्ति मुक्ति पुनि पावहीं मातु चरण रज ठाम॥
सो० वत्सहि राखत गाय तैसहि राखहु भक्ति ढिग।
हीरालालहिं माय नहिं जानत परचरण तव॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्ग्गायशःपंचमकाण्डःसमाप्तः॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ।

श्रीदुर्गायण ॥

हीरालालकृत ॥

नवखण्ड ॥

षष्ठकाण्ड ॥

सो० श्रीदुर्गा जग माय जावलते अज विष्णु शिव ।
सृज भव लय वरपाय सृजहीं पोषहिं नाशहीं ॥
दुर्गा चण्डी देवि अजनी निधिजा तुहिनजा ।
तन मन वचते सेवि भजहिं सदा श्रीअम्बकहँ ॥

चौपाई ॥

जब इह कथा भई सुखदाई । जैमिनि कहा सुरथ महिराई ॥
धन धन मेधस धन ऋषिराई । मोहि सुधामय कथा पिआई ॥
बोल समाधी धन धन देवा । कथा अनूप खवाये मेवा ॥
देवी चरित महान अपारा । चित्र विचित्र हेतु सन्सारा ॥
पुलके सुरथ बनिक बहुताई । मनु पातकी स्वर्ग मगपाई ॥
प्रेम सहित बोलहिं शुभ वानी । जयति जयति देवी गुणखानी ॥
शोणित वीज मरा बड़ भागे । मेधस ऋषि वर भाषहु आगे ॥
शुंभ निशुंभहु का पुनि कीन्हे । देवीसन कस युध ते लीन्हे ॥
सो सब भांति कहहु मुनिराई । चाहिं सुनन हम कथा सुहाई ॥
बोले मेधस अस मुनि राई । मनहु वाट बैकुण्ठ चलाई ॥

दो० सुरथ समाधी सुनहु सब आगिल कथा प्रचार।
जसभाषित तस कहहुँअब सहित सहित विस्तार॥

चौपाई॥

रक्तबीज जब वधित नृपाला। सेना सहित महत विकाराला॥
सबकर नाश सुनत दनुजेशा। शुंभ निशुंभ कोप बनिकेशा॥
अतुलकोप किमि कहियबखानी। बूझ अनल नहिं डारतपानी॥
सोचहिं प्रबली अति कटकाई। कसक्षणमहँकसगइबिलगाई॥
दनुज नाथ अस भये निराशा। मनु धननाथ अर्ध धन नाशा॥
सोचहिंकोपहिंविधिविधिभांती। महा महा योधा सब जाती॥
कस मारी असतिय सुकुमारी। अचरज आवे बलकर सारी॥
नृप मतिमन्द करहिं ते सोचू। लीलतरविकहँ कस तमपोचू॥

सो० कोयल इव किमि काग भेक कि होवेसिंहनि इव।
मूरख मनहिं न जाग लघुउड़वा किमि इन्दुसम॥

दो० भांति भांति अप तर्कना करहीं बोलत जाहिं।
नृप अस जग महँ कोनहै जलधिबूड़ि पुनि आहिं॥

चौपाई॥

मुनि पुनि बोल उठे वसुराई। शुंभ निशुंभ अर्थ समझाई॥
कहहु नाथ कस तिन कहँमारी। नित्या रानी जगदाधारी॥
नाश हानि आदिक बहु नामा। कष्ट आदि जहँलगिपरिणामा॥
सब कर सार दरस जो आई। सो सब घटहींइन महँराई॥
जानहु शुंभ निशुंभ जु नामा। इन नामो कर येही कामा॥
शुंभ शब्दते वध नशनाई। गावहिं मुनि बहु अर्थ लगाई॥
सोउ निशुंभहिं लागत आई। अस इह कथा रचीं सुन्दराई॥
समझहु जगमहँ आपति नाना। सबकर नाशक शक्ति प्रधाना॥

दो० भांति भांति जेरूप जग हानि आदि निरमाइ।
सोदरसे इन दनुज महँ नाशी तिन कहँ माइ॥
अलंकार अस गावहीं बुध जन कविता माहिं।

भाव अर्थ साक्षात पुनि जो इतिहास बताहिं ॥

चौपाई ॥

शुंभ निशुंभ भये अस निशिचर। नृपयदिआवहिंशतशतहरिहर॥
हारहिं चलहि न एक उपाई। अस वल जल पति दोऊभाई॥
यदि नहिं धारत वपुश्री माई। विदित कथा कस होगतदाई॥
तो अब लगि दोऊ अघकारी। राज करत रहते दुख भारी॥
सो मुनिकबहुंकिहोवन पावे। रक्षा प्रदा श्री नाम कहावे॥
संशयरहितयदपि असआहीं। शत शत अस खलहों जगमाहीं॥
भ्रूविलास तें मातु भवानी। क्षार करे क्षणमहँ गति दानी॥
तदपि भक्तहित देह सुहाई। धरि दरसो श्री अनुपम माई॥
गाय गाय सुरनर मुनि जेते। नित तरि पाहिं परम गति तेते॥
वार वार दिति पति दुइ भूपा। सोच साचरज कर मन ऊपा॥
कोमल कमला सुन्दरि वाला। कस हो योग समर विकराला॥
यदपि सुभट वहुगये विलाई। तदपि राखिहैं वल विपुलाई॥

दो० अस प्रतापी दोउ भले तोहु न बूझहिं गूढ़।
जिमि गूलर कर कीट लघु वहिर न जानहिमूढ़॥

चौपाई ॥

हरे हरे मम पालनि माई। का पिच काटहिं पछिल लगाई॥
अस सुन्दरता काहे धारी। काहे कोमलांगि सुकुमारी॥
जो चाहे सो दीठ लगावे। जस तस जस तस बचनसुनावे॥
काहे अस बलवति वल धारी। सुरहितअविवुधकहँक्षणमारी॥
नहीं नहीं का वादि विलापा। निज इच्छा माता सब दापा॥
जोअसनहिंतर किमिसंसारा। अगणितअतुलितअमितअपारा॥
तोहु नहीं कछु बहुतबड़ाई। आदि शक्ति हीरा गति दाई॥
जयजयजयति देविजयरानी। क्षमहु क्षमादायक वरदानी॥

दो० हिरनकशिपु हिरनाक्षयदि आवहिंशतशतहोय।
तोहु न समता पावहीं शुंभ निशुंभहू सोय॥

ऐसे घोर कठोर नृप काल दोउ अवतार।
तिनकहँ लाघव मारहीं मातु बहुत सुकुमार ॥

चौपाई ॥

सुनहुकथा सुखभवनसुहाती। सोचहिंनिशिचरविधिविधिभांती॥
अति सुकुमारी कोमल अंगा। कोमल तियन्ह लेइ निज संगा॥
अचरजदायक रणकरिशोधा। क्षणमहँ मारी बड़ बड़ योधा॥
सो सबभय गा वश संयोगा। देखहिं अब कस होवे जोगा॥
मनुप दोउ भाषहिं मनमाना। कबहुं कि अंकुश इव गजमाना॥
इक मन आवे देखत रूपा। अस सुन्दरी न दीख अनूपा॥
कारण इहिसनकर हमताता। वादिकरहुं रणनहिं करजाता॥
मोहू कौतुक करिहौं जाई। करिहौं पुनि जस मन महँआई॥

सो० बनिक इनहिं नहिं लाज मानहु कुक्कुर भाव कर।
पर तिनहूते राज दुष्ट दोऊ बीत गये ॥

चौपाई ॥

पुनि निशुंभ बड़ सेन जुराई। महा महा भट आये धाई॥
जुरी अमितबहु अगणित सेना। सुनहिं न भट कछु लेनादेना॥
आवा कटक महाबल धारी। जाहिनिरखि सुरभये दुखारी॥
सोचहिं सब अब का होनारा। देवी महिमा जग विस्तारा॥
कहहिं कोउ कछु संशय नाहीं। हतहिं देविसबकहँ क्षणमाहीं॥
धाव निशुंभ विकटविकराला। रूप साक्षात लीन्हा काला॥
निशुंभ ढिग पुनि पाछू आगू। महा महा बहु दनुज सुभागू॥
धावहिं देवीप्रति कोपित जे। दशनन पीड़ितअधरफुटितते॥

दो० बाज जुझाऊ बाजहीं बाढ़हिं भट मन माहिं।
तेजवीरता युद्धकर समटी सब या ठाहिं॥
अनीक अन्वित शुंभ पुनि महा दनुज बलवान।
देविन्ह सन आ जूझही पामर पोच कुजान॥

चौपाई ॥

कोपि शुंभ बलवत तब आवा । श्री माया कहँ मारन धावा ॥
शुंभ निशुंभ दोउ बलवाना । देवी सन भिरे कृपाना ॥
होत महारण किमि दरसावे । लोकिकाल भय मनमहँ पावे ॥
शर वरषा हो विविध प्रकारा । मेघन्ह उग्र तोय बहु डारा ॥
दोउ दनुज शर बहुत प्रहारे । अम्बा अगणित निज शरमारे ॥
चलहिं देवि शर यूथ बरूथा । बेधहिं खल कहँ यूथहुयूथा ॥
छाड़त शस्त्र राशि श्री माई । दोऊ तन महँ लागहिं जाई ॥
पुनि निशुंभ तीक्ष्ण बहु खंगा । छांड़ा देवी कीन्ही भंगा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

कीन्ह भंग अभंगनी माया निशुंभ खंगडारही ।
लावा दीपक मान ढाल सिर देवि यानहिं मारही ॥
यान तड़ित लोकत श्री जननी वेग निजशर सोरते ।
बेधी निशुंभ खगन्ह अष्ट चन्द्रक चर्म्म जोरते ॥

दो० खंग चर्म्म लखि वेधित सुररिपु शक्तिप्रहार ।
देवी शक्तिहिं चक्रते दुइ खंडित करडार ॥

सो० शुंभराज अठबाह काल सरिस सोदुष्ट खल ।
कलरव करत कराह यदि रण आवादम्भमय ॥

चौपाई ॥

मनहिं निशुंभ कोपअति करई । मनहु काल पावक बहु बरई ॥
तब दानव निज शूल उठावा । देवी ढिग सो आन न पावा ॥
छांड़त देवी मुष्टि प्रहारी । चूरण चूरण सो करडारी ॥
पातरिकोमल अंगुरिन्ह लागा । हरिआदिकहियकसकविभागा ॥
पुनि सी करि सुघराधर फारी । अजादिहियकछुकछुविधडारी ॥
मेरु बलीनि यदपि तनवारी । कोमल तनवीतदपि खलारी ॥
कपोल नासिक भृकुटि चघाई । सहित कटाक्ष सकोरी माई ॥
पाणि पीर ये लक्षण आहीं । सतकछुनहिंजनभावदिखाहीं ॥

दो० पीत विशाल कपाळ पर परी रेख दुइ एक।
मोहे लोकतअमर गण वसु नभ एक अनेक॥

चौपाई॥

सो सब कौतुक सदा सदाई। कौतुकिनी प्रभुनी दरसाई॥
नहिँ तर कबहुँ कि जावशकाला। पीरा हो ताकहँ भूपाला॥
मेरु समान काल बहुतेरे। क्षणहिँविलासे रिसमय हेरे॥
निशुंभ छांड़ा गदा प्रहारी। अम्ब शूलते भिनकर डारी॥
देखहिँ कौतुक नभ सुर सारा। कौतुकिनी माया विस्तारा॥
यदि वपु महा निशुंभ सुरारी। चिउंटा चाह उड़ान पहारी॥
चहत तिमिर वासर पति खाऊं। रूख बबूर कल्प होजाऊं॥
चाहतरज कण अविकन्ह मोला। बेधत बज्रहिं तृणचहुबोला॥

हरिगीतिकाछन्द॥

चहत बेध तृण वज्रहि वसुपति दीप पतंग जारही।
तस निशुंभ यदि वपु महान धृत मनहिंमोदकडारही॥
लोकहिं सुरकरि चितचिन्ताबहु वचन अपन चलावहीं।
लाज वीर्य्य रसमनहिं निरखत माया रण सुहावहीं॥

दो० सुरथविकट अतिकटक सो लड़तएक ते एक।
पुनिनिशुंभ दनुजेश खल उपद्रवकरतअनेक॥

चौपाई॥

दनुजपरशु करगहि तब धावा। सोउनिकट तहँ आननपावा॥
जननी निज शर यूथ प्रहारी। जिनते खलकहँमहिपरपारी॥
गिरा अवनि सो विविध कुनाना। गिरि गणरूपमेघ वरसाना॥
बोझ मरी अति बपुरी धरणी। यद्यपिभारसही सुख करणी॥
दानव गिरत शेष शिर डोला। तरते धमक कमठ मुखखोला॥
परा धरा खल सुध कछु नाहीं। पराक्रमी अति प्रबलो आहीं॥
देखत भ्राता कर अस हाला। कोषशुंभअतिदितिजकराला॥
ताकर मनहिँ शोक बहु आवा। चाहतनिजमणिउरगगभावा॥

लवायीछन्द ॥

चाह गमावन निज मणि पन्नग मुक्ता गजहु गाचहे ।
मृग कस्तूरी धनपति धन कहँ चोर आये तक रहे ॥
सोच शोक अस कोपित खलकरिदेविकहँ मारनधसा ।
आवा मनहुकाल महाप्रलय जगतअतुलित नभ कसा ॥

दो० नभपूरितसोहत दनुज रथ परबहुत प्रकार ।
ऊंच महा आयुध धरे अष्ट भुजा विस्तार ॥

सो वाहन्ह कर तुलना नाहीं । विस्तारा पूरित नभमाहीं ॥
सो देवी कहँ मारन धावा । लोकत जननी शंख बजावा ॥
धनु टंकारी दुस्सह भारी । अगणितदानवदलडर मारी ॥
पुनि प्रबली निज घंट बजाई । महाशब्द पूरितदिशि छाई ॥
श्री वाहन कीन्हा बलनादा । जोमदमत्त गजन्हमदगादा ॥
नभ वसु दिशिचहुं पूरित छाई । सिंहनाद असभा भयदाई ॥
मचो शोर चहुं हाहाकारा । समरधीर वहु रण विस्तारा ॥
लरहिंप्रबलभट पुनिपुनि आई । देविहिंजीतनकरहिं उपाई ॥
सो नृप अस कसहोवन पावे । यदपितिमिरदिनपतिहिंनशावे॥
पावक ते वरु निधि जरजावे । सुररिपु मनकर होवनपावे ॥

लवायीछन्द ॥

होवन पाव सुरारि मन कर कीट खा यदि गज महा ।
खाव खगपतिहिं भुजंग लघुवरु खलमन करहोतकहा ॥
झपटत दपटतउछलत पुछलत भटअगणित सेनमहीं ।
परशुपास शरतोमर ढालन्ह असंख्यआयुध चलसही ॥

दो० होतमहा रण प्रबल भलडर साहसमनमाहिं ।
मोते भलमनपोचता साहस कर चित आहिं ॥

चौपाई ॥

गिरा समर शोभा लखिलाजी । सोचपरत कसकविता साजी ॥
कविजन कहँ कैसे समझाऊं । कौन भांतिरण शोभा गाऊं ॥

ब्रह्मानी आदिक जगमाई। विविधविविधबहुकरहिँलड़ाई॥
तिन महँ दुर्गा बहु चमकाहीं। मनुशशिराका उडगणमाहीं॥
सो जगदम्बा मूला सबकी। हीरा माता पालनि भवकी॥
पीतकंचुकिनि अरुणकंचुकिनि। हरितकंचुकिनिआदिकंचुकिनि॥
रत्नजटित सबअति चमकाहीं। अति शोभित सुन्दरतामाहीं॥
वाहु कंचुकिनिनीलाम्बरिनी। मणिमुकुटिनिखलअरिअरिअरिनी
तीनयना अति भाल विशाला। वाहु अष्ट दश आयुध पाला॥
निरखहिंसुर सहपतिनी तहँवा। मोहहिंकसनहिं माताजहँवा॥

दो० निमिषरहितकरिनयनसबलोकहिंशोभामाय।
चित्रलिखतसबराजहीं हरिआदिक मुनिराय॥

चौपाई॥

अस कौतुक महँ काली भारी। नभ अवनीनिजकरबलमारी॥
कर लागत भा शोर अपारा। उठत शब्दगरजा नभसारा॥
सुनत कांप सुररिपु सब झारी। धकधकाहिंअति अन्तरभारी॥
शिव दूती प्रबली श्रीकाली। महाकाल कर ग्रहनितघाली॥
अशिव अट्टहासा सह हांसी। कोपित खलगणभयेनिराशी॥
कोपित अठ भुज भाभय भीता। सोचत मन कस होवे जीता॥
पुनि पुनि देवी प्रति तुरधावे। दुर दुर बचन सुनाइ सुनावे॥
कोपित अम्बा पुनि मुसुकावे। ओष्ठगठनिलखिरती लजावे॥
हरिगीतिकाछन्द॥
लाजत रति अतिनिरखतमन महँविहंसनी श्री मातकी।
लोकहिं सुरमुनिमुरछहिंखलयदिपातकी नहिंपातकी॥
अगणित रिपु दलथोर देविकछु करहिं महा संग्रामहीं।
गुते समर वसु प्रबलीभट असमन न लहहिंविश्रामहीं॥
सो० रण कौतुक कर पार ठाढ़वीररस सोच मन।
नहिंलोका अस तार कीन्हन कोऊ अस कभू॥

चौपाई॥

वैष्णवी ऐन्द्री ब्रह्मानी। माहेश्वरि कौमारी रानी॥
नारसिंहि देवी वाराहीं। कात्यायानी आदिक आहीं॥
हंसिहंसि क्रीड़ा कोपित करहीं। जिनतेप्रबलसुभट बहुलरहीं॥
मद माते विमूढ़ खल बोलें। मन मोदक कर थैली खोलें॥
भटजनिमारहुअस सुकुमारिन्ह। गोरांगिनिन्हसुन्दरनारिन्ह॥
तिन महँ दुर्ग्गा सोहत कैसी। तारन्ह महं नभगंगा जैसी॥
नख बनिक सोचहु अस बाता। जरहिंपतंग दीप निजगाता॥
दितिसुत अगणित अस्त्रचलावा। सोसब सत्या काटि गिरावा॥

हरिगीतिका छन्द॥

सो श्रीदेवी काटि गिराई शस्त्र शुंभ प्रहारही।
कहत अम्ब मृदुप्रबली वाणी सुख दानिमुख कारही॥
भाष देवि हे दुष्ट दुरात्मन तिष्ठ तिष्ठ सुमान हो।
सुनत लखतबोलहिंनभ सुरसबजय जयश्रीमहानहो॥

सो० दुर्ग्गावचनसुहायजयजयसुर कहि हरषहीं।
निजअरथीगणआयमलहिंसखरसप्रभुपदहीं॥

चौपाई॥

महा मकड़ि इव दुर्ग्गा माई। जालजगतकरिनाशत जाई॥
सो लघु लव लेशांश समाना। विस्तारीकछुकछु रण नाना॥
बुधादि बहु रविमण्डल नाना। तुल जावे वरु एक विधाना॥
इक इक रचना कर श्रीमाई। कौनिहुभांति हिसाब न आई॥
सो कर रचना रण कर राई। सर्व्वबली कहँ कछु न बड़ाई॥
शुंभ दनुज सुर धाम सिधावे। चह चूनी घृत माहिंसनावे॥
अष्ट बाहु मदमय अमरारी। समझावत जननीहिं पुकारी॥
मनहु रूप ले निपट अयाना। कपिल देवकहँ शिक्षा ठाना॥
शत शत प्रभुप्रहलादहु आवें। तौहू कोपन जानन पावें॥
अस कोपित सो दुष्ट कराला। मृद्गंगिनि सन लरत भूआला॥

लवायी छन्द ॥

मृदंगिनि सन लरतमहान खल शुंभ दानव खल भला ।
खल कोपहु ते देवी रिसअति महा अपार लख चला ॥
सोरिसभावडरहिं सुरपतिनी लखहींमुनि प्रलयमहा ।
भेवहिं सुर अरु असुर कापहीं परा रण मह गह गहा ॥
दो० रण अगणितअचलंग भये मानहु झगराआहिं ।
महा अमित अतिघोररण इहजानहु इहठाहिं ॥

चौपाई ॥

अठ भुज शुंभ महा बलवाना । भीषणबहुतहु ज्वाल समाना ॥
प्रबल शक्ति सम्भारि प्रहारा । दुर्गा जननी जगदा धारा ॥
पावक यूथप उल्का रूपा । खंडी खलकर शक्तिहिं भूपा ॥
बीरहु रस पुनि पुनि मनमाहां । सोचतबहु गुण रण दरसाहीं॥
अस करनी हमसक्षरन कीन्ही । जसइहमहिरणआजहि चीन्ही
अखिल विश्वती कालहु माहीं । अस संग्राम भयो कभु नाहीं ॥
नृप यह देविहिं कछु नबड़ाई । अमित वीररस बहु उपजाई ॥
शुंभ सिंह कर नाद करारा । नभ पाताल पूर सन्सारा ॥

लवायी छन्द ॥

नभ पताल जग पूरित घोरहु कारक उत्पात महा ।
भयेवधिर अगणितसुचराचर सोचहिं होवहिकहा ॥
नाददेवि असनाशतलाघव फूंकत फूंक विहंसही ।
पावका रूपअनूप सुन्दरी बल न समीर कछुअही ॥
दो० दैत्यानन शोणित परत निरखत सुर मोहाय ।
कणकमुखासुन्दरतियाअरुणमणिन्हछबिछाय ॥
सो० विधिविधिदल रणमाहिं जहं तहं लड़हीं दनुजबहु ॥
विधि विधि देवी जाहिं मारत सेनासुभट कहँ ॥

चौपाई ॥

पुनि अगणित शर शुंभ चलावे । सोविजया वसु.काटि गिरावे ।

छांड़ी जगहतनी वहु वाणा । रविशशिमण्डलकिरणसमाना॥
शतन्ह सहस्त्रन्ह शर ये आये । दनुज उग्रशर काटि गिराये ॥
सो नृप समरहिं बड़ी बड़ाई । दीन्ही दुर्ग्गा चण्डी माई ॥
नहिं कहं कोअसविधिउपजाई । देवी शर जो वेधे आई ॥
सम दरशिनि कर रीतिसदाई । वैरि मीत सम सम निरखाई ॥
ते पातकी विमूढ़ अभागी । भजहिंपरहिंअसप्रभुनिहिंत्यागी॥
विदिता दुर्ग्गा अति कोपानी । घोर शूल गहि पंकज पानी ॥

लवायीछन्द ॥

पंकज पाणि भवानि शूलगहि मारी शुंभहि प्रबला ।
गिरामुरछितहोयअवनिपर बलहतअतिभा बिकला ॥
वसुधा गिरत शेष शिर डोला कमठ पीठहु दबगई ।
शुंभ निशुंभ मूरछित दोऊ हाहाकार दल भई ॥

दो० देवीगण अतिनाचहीं हंसि हंसिकर मनिराइ ।
मारहिं तोड़हिं भक्षहीं दलभट पुनि पुनि पाइ ॥

चौपाई ॥

असरण शोभा अस को आहीं । गायसके चारहु युग माहीं ॥
रंभादिक जे सुन्दरि नाना । मरहिं लाज बहु बेल समाना ॥
वार वार शारद हिच कावे । मनमह विधिविधितर्कबढ़ावे ॥
दुर्ग्गा नृत्य देख कवि राई । शारद वाजिनि नाचन गाई ॥
सत्य सत्य नहि अत सन्देहू । सत्य देवी सम देवी येहू ॥
सुरतियादि जेरण शोभा कहँ । देखहिं लाजहिंमनहोमनमहँ॥
असुरन्हमन अति निराशआई । अबकस होवे जान न जाई ॥
सुखमाया कह यह न बड़ाई । जाकर काज विपदिसुखलाई॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जाकर काजकाल जितखावन बहुत जगकहं पारही ।
भयो कालेख पारी दोउहिं यदपि मुरछित डारही ॥
नाचहिं गण माता वपुभूषण आदि लटकनि डोलहीं ।

आहीं गड़ही मनु सुरहिय तहं कछुनहिं वाक बोलहां ॥
दो० तीन काल युग चार महं महानन्द कछु जोय।
समटि आय सब दरसहीं नाच धरा रण होय ॥

चौपाई ॥

अत अन्तर निशुंभ अमरारी। मूर्छा तजि जागा बलभारी ॥
कमठ शेष वसु कछु विश्रामा। पाये संभरे शुंभहि थामा ॥
करगहि तरकस बहु धनुवाणा। देवी कालीप्रति प्रति याना ॥
छांड़ा बहुत विशाल कराला। निरखतजिनकेधकपककाला ॥
ते सब काली सिंह सुहाना। काटि निवारेक्षण परिमाणा ॥
पुनि देवी प्रति आयुध डारे। आवत अम्बा अवनी पारे ॥
कभु कभुनृपसमझहु मनमाहीं। खलगणप्रेरित आयुध आहीं ॥
आवत अन्तर अम्ब गिराहीं। एकहु देवी ढिग नहिं आहीं ॥
यदि आए कहु तो कछु नाहीं। राका शशिप्रतिकारजजाहीं ॥
अस भाषत यदि पातक आवे। तो हू रणकर वरण न भावे ॥

तोमरछन्द ॥

देवी देवि रण सोह। खल दल यूथ बहु मोह ॥
अगणित आयुध प्रहार। एकहिं एक बहुमार ॥
जूझहिं भांति भल भांति। जान नहिं पर दिन राति ॥
लखि अमर रण विस्तार। डरहिं हंसहि बहु विचार ॥
सुरारि यूथ स्वरूप। कराल कुकाल कुरूप ॥
कूदहिं फांदहिं धाइ। उछलहिं पुछलहिं आइ ॥
सुन्दर श्री गण जोय। नाचहिं बिहंसिरण सोय ॥
कौतुक माया विसोह। निरखत मोहहि मोह ॥
नृप कविन्हकर बलथोर। सत्या सत्य बहु जोर ॥
सो सब शारद भरोस। कविता करहिं मय दोष ॥
ते इह रण कस बखान। यदि सयान पर अयान ॥
पुनि शारदा निज जात। कहन सकरण विख्यात ॥

भाषहीं तव मनहार । या समया रण अपार ॥
लड़हिं भिड़हिं भटसंग्राम । मुण्ड रुण्ड दाह वाम ॥
कर पद हिय सबनिकाय । भूमि परहिं आय आय ॥
मेघसम असुर निकाय । सरित सम शोण बहाय ॥
कर्णादि झरना बहाहिं । शस्त्र दामिनि चमकाहिं ॥
बड़ बड़ असुर गण देह । शोणित धार धनु येह ॥
गजादिक अति दरडाहिं । घटा गर्ज्जना जनाहिं ॥
रण शोभा मुनि अपार । गायन जाय जस तार ॥

दो० दससहस्त्रदल दनुजपतिसोहनिशुम्भकुराज ।
भयं प्रदरूप अनूपअतिसाजे साज कुसाज ॥
सो० अविकादिक दरसाहिं भूषणभालविशाल सब ।
मातु भाल चमकाहिंइनरतनन्हतेअधिक बर ॥

चौपाई ॥

अम्ब चण्डिका बेर भाषिनी । श्रीदुर्ग्गा दुर्ग्गार्त्ति नाशिनी ॥
अगम्या दुहुते जानी जावे । संकट महँ सब बिघ्न नशावे ॥
हीरा माता अस प्रति राई । चक्रायुध ले निशुम्भ धाई ॥
कोपवती भगवती सुमाया । छांड़ी निजशर भयप्रदभाया ॥
छेदी रिपु शरचक्र जुमारे । खण्ड खण्ड महि परगे सारे ॥
कौतुकिनी कसकौतुक कीन्ही । खेत कृषानि जुआरी लीन्ही ॥
क्षणमहँ बहुत खेतसो काटे । अस रचना राची भवदाटे ॥
दितिजनिशुम्भ अनीकघिराई । भेष भयंकर देखन जाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

देखन जाय इह वेष भयंकर शर बहुत बरसावहीं ।
लीन्होंनिशुम्भप्रबल गदातुरचण्डिकाप्रतिधावहीं ॥
आवत देखि गदा अति देवीं खंग तीक्ष्ण धारतें ।
मायातुर रिपुगदहिं बेधी छत्रहिं अविक डारजे ॥
सो० नृपइह कछु बड़बात सहत दुःखदेवी बहुत ॥

काहनकरसो घात सब करभृकुटि बिलासते ॥

चौपाई ॥

नहिँपरमोक्ष अमरजनलागी । गाय गायगुण तरहिं सुभागी ॥
करतगदा खल लीन तिशूला । चला मातुढिग मन बहु फूला ॥
मानहु आवे काल कराला । कालनिकट निजअवनीपाला ॥
सुरगण पीड़क त्रिशूलधारी । आवत देखी तन सुकुमारी ॥
वेग धावता छांड़ी शूला । रिपुहियबेधी सुख दुखमूला ॥
लगत शूलतव कटक मझारी । हियते प्रगटा पर अमरारी ॥
तस प्रबली रिपु तस बलवाना । तिष्ठ कहत सोऊ दरसाना ॥
कीन्ही भगवती अट्टहासा । शब्दघोरबहु दशन बिलासा ॥

लवायीछन्द ॥

किचकिच दशननिरखही श्रीकरअमरसुरतियनभमहीं ।
आश निशुम्भ मरनकर दरसत बहुतपुष्प झरेतहीं ॥
साट्टहास श्रीदुर्गा माया कालदायक खंगहीं ।
छांड़िमारी हिय जनित रिपु कहं पारी भंग अंगहीं ॥

दो० लगत खंगशिर रिपुगिरा धरणी तलहहराय ।
भागीजीव निशुम्भकर पहुंचा सुरपुर जाय ॥

सो० नृपजानहुइह ठाहिंहृदयजनितजो दनुजखल ।
सोअसनिशुंभआहिं मनहुप्राण बलरूपदरस ॥

चौपाई ॥

मरतनि शुंभ गगण सुर हरषे । रंग बरंग सुमन बहु बरषे ॥
जयतिजयतिकहिगाहिं बजाहीं । स्वारथ लगिअससेवजनाहीं ॥
देवियान मृगपति विकरारा । बहुरिपु ग्रीवदशन मलडारा ॥
पुनि लीला रणशव गणनाना । नाचनृत्यका गण मनमाना ॥
बहु रिपु कहँ चामुण्डा खाई । लीली शिवदूती बहु राई ॥
मृगस्वामी शिवदूतो काली । अगणितशवगण उदरहिंडाली ॥
जियतअसुर कहँ भक्षतजाहीं । रहे सहे जे महिरण माहीं ॥

शेष दनुज कौमारी मारी। विविधहुविविध प्रहारिविदारी॥

लवायीछन्द॥

प्रहारि विदारि शक्ति कौमारी बहु दुष्टहि नष्टकरी।
ब्रह्मानि मंत्रमंत्रित जलते दितिज कितेक महिधरी॥
माहेश्वरी त्रीशूलते निज अपर दनुजहिं हत करी।
वाराही स्वानन घातते खल खंडित धराधरी॥
दो० वैष्णवी निज चक्रते खण्डी दनुज अनेक।
नारिसिंहि पुनि खायऊ रण अवनी इकएक॥

चौपाई॥

ऐन्द्री माय अंगुरी प्रहारी। फेंकी बज्रहिं घातक भारी॥
खण्डखण्ड बहुदैत्यहिं कीन्ही। भागी खलसब सुरपुरलीन्हीं॥
अगणितदितिजगिरेमहिमाहीं। नष्टभ्रष्ट हत बधित सुहाहीं॥
कछु सांसहिं कछु चेतनहारे। कटक धरासब अगणितसारे॥
महादेवि चामुण्डा काली। भक्षतकछुनिज उदरहिं घाली॥
अपरन्ह बहु शिव दूती खाई। बहुतहिं खावा श्री मृगराई॥
सुरहरषे मनमहँ यह आने। मृत निशुंभ शत वेणु समाने॥
कमठ शेष तबकछुहु विश्रामा। पाये शुम्भसेन महि थामा॥
क्षणमहँ सेनगई बिलगाई। करहीं सुरमुनि जय जयमाई॥
जय दुर्गे जगदम्ब भवानी। नमो नमो अम्बा महरानी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

नमन जयतिश्रीदुर्गाश्रीकहँ गगन अमर सुनावहीं।
यद्यपि शुंभडर रहा अबलों माल पुष्प बरसावहीं॥
जयति जयतिजय मायादेवी निशुम्भहि मारीसही।
रूप अनूप सुन्दरी स्वरूप रूप गुण धारी अही॥
सो० जय जगदम्बा माय रूप अनूप विशालअति।
श्रीदुर्गा सुखदाय हीरा कर वरदायिनी॥

पंचचामरछन्द॥

भवानि मातु तो मनो। अनूप रूप तो नमो॥
अठार वाहु शोभदा। तिलोचनी सुक्षोमदा॥
चन्द्रमुखी मुखी महा। अपार नेति तो कहा॥
नमामि मायदा यदा। कृपाकरा सुखा दिदा॥
सुखण्डिका सुसो हनी। रती सुरूप मोहनी॥
निशुंभही भलीकरी। मारीस लाघवा भरी॥
दुर्ग्गदुर्ग्गीति नाशनी। बिशाल भा प्रकाशनी॥
गणेश शेष शारदा। सुगावहीं श्रुतीसदा॥
अपार मूर्ति कारनी। अपार देह धारनी॥
सुदेव जी अकाश मों। रमीइन्दु प्रकाशसो॥
तिलोक नायनी भली। अहार काल जो चली॥
महाम्बुनाथ लाइके। नशाहुं लोक पाइके॥
जगाम्बुनाथ तारनी। कराल काल जारनी॥
अन्धकु ज्ञान हारनी। सुज्ञान दान कारनी॥
चिदाम्बु ईश मन्दरी। कमा अनूप सुन्दरी॥
अजादि देवि सेविता। अजादि रानि प्रेरिता॥
हरे हरेसु श्री महां। सुकाजया परो इहां॥
महा शुभं करालहीं। पठाहु वेग कालहीं॥
अजान जानहीं नहीं। हमादि देव दीनही॥
सदा सुपालनी सदा। प्रसीद होन मो अदा॥

दो० हरषितसुरगण गगण महँ वध निशुम्भकरदेख।
सबके मन चिन्ता रही रहा शुंभ इक शेष॥

सो० सुर निज हित भूपाल कीन्हीं स्तुति बिगारकरि।
सो व्याकुल ताकाल शुंभ वधन अब लगि रहा॥

दो० मृगेशहिं यक जानिकर कंठ केश निजपाणि।
पांच सात भुजलाइ करि झारत तबहिं भवानि॥

ताहिकाल नख जोति सब ताराइव चमकाहिं।
मनहु कृष्णानभमहंदिखे निरखतसब मोहाहिं॥
पुनिअंगुरिन्हमुंदरिन्हसकलअविकजटितचमकाहिं।
सत्यफीकलगि सोहहींअंगुरिन्ह नखअधिकाहिं॥
महिमा बहुतहु यह नहीं दुर्ग्गा देवि भवानि।
जो तनधारि प्रकाशमय नित प्रकाशकर खानि॥

॥ चौपाई॥

खलकहं वधि ठाढ़ी दातारा। मनु अजाननी भोरी भारी॥
कोटि कोटि बीरन्ह करकाजा। कीन्ही तबहून मनकछु राजा॥
नहिंतरशतशतअजादिआवहिं। तौहुनिशुंभहिवधनहिं पावहिं॥
सो मारी इकली क्षण काला। शुंभ बचो अब बहु बलवाला॥
शतशत निशुंभ यदि आजाहीं। तौहु शुंभकर बलनहिंपाहीं॥
शारद ज्ञान बढ़ाई देखी। बहुत तर्क करि मनमहंलेखी॥
यदिकोटिन्हहरिशिवनिजजाती। रणमहंआवहिंभांतिसुभांती॥
तौहुशुम्भ कहं सपनहु माहीं। सकहिंमारि नहिं संशयनाहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

संशय नाहीं कोटिन्ह हरिशिव सकन सपने मारहीं।
सोलाघव अतिमाया दुर्ग्गा क्षणहिंखल कहं पारहीं॥
तौहु तो कहत पुकारि हीरा कछु न बड़ाई या महीं।
है मम देवि महा अमिता अति अतुलिताप्रबलासही॥

दो० आदि अन्तनहिंधारनी श्रीदुर्ग्गा जगदम्ब।
सत्यसिंधु असदेवि कहं सेवियमनअवलम्ब॥

सो० सुरथ कौतुकिनिदेवि क्रीड़ाकर मन मोहनी।
विधि आदिकसुरभेविभजहीं मायाअम्ब कहं॥

चौपाई॥

भाषहिंसुरगणविधिविधिजाती। होव शुंभकर क्षण महं घाती॥
नृप निशुंभ जब त्यागा प्राणा। विधिहरिशिवसुरपतिसुरनाना॥

रवि शशि पावक धनपति देवा । जलधि पवन आदिक जेभेवा ॥
कछु बहु हरषे निज मनमाहीं । भा भरोस सुखतुर हमपाहीं ॥
दुर्गा मारहिं शुंभहि बेगी । जाते हम हांवहिं सुखनेगी ॥
इन अमरन्ह करअस गतिराई । मरत सुधा कोऊ ढिगलाई ॥
लावनहारी सो श्रीमाता । रूप अनूप सदा विख्याता ॥
अस को दूसर जो लेआई । आपदिकालहिं होय सहाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

होय सहाय अस काल विपदी जहं मरत आकालहू ।
श्रीदुर्गा तजि कौन आनन सहाय हो सुभालहू ॥
श्रीचण्डिका अम्बा अम्बिका नित्य एक अरूपिनी ।
भजियेछाड़िछल नित तनमन ते विराट वपु अनूपिनी ॥

सो० अगणितकालनचायजग सृजपोष संहारनी ।
श्रीअम्बा श्रीमाय तनमनधन जिहिवारिये ॥

दो० वधननिशुंभ विचित्र इहजे सुनही मनलाय ।
समरजीत पावहिं सदा काजसिद्ध होजाय ॥

चौपाई ॥

जबहिं निशुंभ मरा महिराई । विस्मित सुरगणअतिहरषाई ॥
शुंभ दनुज मन अति पछतावा । पश्चात्ताप रूप मनुआवा ॥
अहा अहा मम प्राण समाना । भ्रात निशुंभ वधित भानाना ॥
हाय हाय मम सेना भारी । महामहा भट सुभट सुरारी ॥
सब कहंवधीतियन्हसुकुमारी । कोमलतनवी सब वरनारी ॥
तिनमहँ अदिष्ट कोमलवामा । गौरांगिनी दुर्गा नामा ॥
सो अस लड़ी धरा रण माहीं । समझतअचरजअतिशयआहीं ॥
चिन्ता नहिं देखहुं बलजाई । अब हो ताकर कौन सहाई ॥

दो० कोपित कांप बरतजरत करतशुंभ वकवाद ।
रोगी जिमि सनपातवशकरत धूम दुरवाद ॥

चौपाई ॥

कोऊ कोऊ असुर जुज्ञानी । शुंभहि बोले सत्य सुबानी ॥
नाथ आज सोचहु मनमाहीं । सुनहीं दुर्ग्गा प्रबली आहीं ॥
अगणित अगजग जेजे अहहीं । काऊदुर्ग्गहिंजीत न सकहीं॥
कहंलगि कहिहौं ताकि बड़ाई । मन मानी जो काल नचाई ॥
तुम्हरे देखत अबहीं ऐसो । महा महा भट रह जे जैसो ॥
विनायास सबकहँ जिनमारी । पुनिनिशुंभभ्रातहिंवधडारी ॥
चण्ड मुण्ड बीज धूम्र जेते । सबहिंनिपाती क्षणमहँतेते ॥
हमरे जोन सौंपि सुरराजू । प्रभु निष्कंटक होवहु आजू ॥
मांगि क्षमा देवी सन नाथा । जहँ कहहीं तहँ रहुभटसाथा ॥
रिपुता कीन्हे कभु न भलाई । यदपिपरम गति माया दाई ॥

दो० सुनत वयनकोपादनुज लीन्हातिन कर प्राण ।
डारिलवण मनु जरित महँ ते कीन्हेजी हान ॥

चौपाई ॥

खल इतनो परनहिंकछु लाई । मीच मोर अबढिग चलिआई ॥
बकतझकत करपदबहुपटकत । कूदतफांदतउछलतपुछलत ॥
निकरि कटत ते वचन सुनावे । मनहुं काल ढिगरोगी आवे ॥
दुष्टे दुर्ग्गे बल गर्व्वानिनी । करहुगर्व्वजनिबहुतमानिनी ॥
होरि जरो अस लेखन मोरा । जो मम रचना करत कुहोरा ॥
खल हीरा कहँ नाह रखावे । निजप्रभुनिहिदुरवचलिखिजावे॥
अहिनि डसे लेखक करमाहीं । जो अपलेखन लेखत जाहीं ॥
भार परोमम बुद्धि कुनीती । जो लावत अस लेखन रीती ॥
नहिं परलोगू कृपाकारिनी । दुर्ग्गा माया जगततारिनी ॥
करहिँ क्षमा सबममअपराधा । यदपिअटकनहिंकवितासाधा ॥

दो० जगतारिनिममतातहैं यदिमैं हौं जगमाहिं ।
तो मोहू कहंतारहीं या महंसंशय नाहिं ॥

चौपाई ॥

वृह्मवाल आदिक जी घाता । विकटविकटआदिकविख्याता॥
सब अघवरु मो कहँ लगजावे । तैसहिं विधिवतताड़न आवे ॥
दुष्ट लिखत जोहो अपराधा । सोनहिंसहसकअमित अगाधा॥
पर विनती मोरी इह माता । जनहियजानहु जग विख्याता ॥
हठ वश करहु एक चतुराई । मानहु सीदहु स्वामिनि माई ॥
दुष्ट शब्द ते जे अर्थाई । सोइह ठाम न लामे जाई ॥
दुष्ट शब्द ते अर्थ अनेका । हानि जनक आवतहैं एका ॥
सो लागे इह ठाम मझारी । काहे श्रीं जननी जगधारी ॥
असुर हतन सोहानि कहावा । सुरहित सोई लाभ उठावा ॥
जगतविदित दुखबहुतकहावें । सबनाशहु सो हानि ननावें ॥

दो० नृप पातक बहु चयतहैं सुनि निन्दा प्रभु केर ।
यदपिसमय अस आवहीं तदपि रीतिजगमेर ॥

चौपाई ॥

शुंभ वयन सुनिमूंदहिं काना । सुरगणतर्क करहिंमननाना ॥
अहा अहा खल बोलत कैसे । सुधा रसहिं विषछीटन जैसे ॥
नृपसो रस कर होवहिंकाहां । विषहुसुधाकसहो नहिं जाहीं ॥
दनुजप शुंभमरहिं रणमाहीं । पुनि हमार पुराजय सिधाहीं ॥
अस श्रीदुर्ग्गा जगत धारिनी । क्षमा दायनी जगत कारिनी ॥
क्षमहों देवी हमकहँ योगू । कछु नहिं बनत परे संयोगू ॥
यद्यपि खल दुरवचन सुनावे । अपनमीच कहँ निकटबुलावे ॥
तदपि क्षमा वश मोक्षहु पावे । मरतकाल दुर्ग्गा कहजावे ॥

दो० देवीप्रतिदुर्बचनसुनी होत महा बहु पाप ।
नाहें कासोंकछुबन परे भावीरचना आप ॥

सो० जगदुखनाना जाति देवि दुष्ट परभागहां ।
विनअन्तरभलभांति जिमिजावेतमरविलखत ॥
देवि वाहु उपयोग सोइ दृष्टिपर शुंभहित ।

काहेमोक्षनजोग वधितहोहिं खलक्षणहिं जब ॥

चौपाई ॥

लोकहु नृप अमरन्ह चतुराई । यद्यपि सत्य करहिं समुझाई ॥
सोसब स्वारथनिज निजलागी । देवी दाया सुर बड़भागी ॥
शुंभ दनुज बोला पुनि बानी । हेदुर्ग्गे तुम नहिं बल आनी ॥
येदेवी जे एती वामा । इनकर बल करहो संग्रामा ॥
माटीघट मुख टकनी तोपे । नृप नर मुख मूंदहु का ओपे ॥
दुर्ग्गाशब्द कहत खल ओऊ । मुनि निष्फल किमिहोवेसोऊ ॥
दुर्ग्गानाम दुर्ग्ग दुख नाना । नाशत क्षण यदि मेरु समाना ॥
ऐसहिं काल नहीं विधि वामा । पावहिं शुंभ अमर वर धामा ॥
खलवचसुनि दुर्ग्गा मुसकाई । चहत कली दाड़िमविकसाई ॥
भाषी सुन्दर वचन सुहाई । सुधा सुमन कलिन्ह झरआई ॥
दुष्टशुंभका यह अपवादा । करहु वृथा मति मंद कुवादा ॥
अहम् एकअतुलित गतिमाहीं । मोबिन सबमहँ परकाआहीं ॥

दो० सत्य सत्य सुर यूथ सब बोले सांची बात ।
तिनयनी भुजअठारनी नीलाम्बरि सुहात ॥
मथनजलधि वपुमोहनी हरिकरउ पवनमाहिं ।
मोहित जाते शिव भये नीछावर इहि ठाहिं ॥

चौपाई ॥

सिंह पाननी शोभा सागर । निरखत मोहहिं महाननागर ॥
अतुलित जग सुन्दता धारी । निशिपतिवदनाअतिसुकुमारी ॥
नीलाम्बर नवयदिमणिजटिता । असुरशोण मुक्तारुण टकिता ॥
भूषण रत्न जड़े विधिभांती । शोणितबूंदलगी मणिपांती ॥
रक्तबूंद कर आयुध भीगे । सबचमकहिं मणिलालनथीगे ॥
सो माता बोलत खल पाहीं । खल सम भागी इहको आहीं ॥
पर भल होवतयदि क्षणकाला । शुंभहि मारत मातु नृपाला ॥
सुनी कुवद परतिहि न दुराई । वृथा माय मुखस्वान लगाई ॥

सो नृप सबसुरमुनिजनलागी । कौतुक करत तरहिं जैभागी ॥
अस श्री दया रूप जग माता । बोलत रिपुसन वरगति दाता ॥
दुष्ट सुनहु ये देवी आहीं । मोते सब ये उत्पति पाहीं ॥
खल मम इच्छा असपुनिआहीं । देखहु सब मोमहँ असजाहीं ॥

सो० मुख निकरत नहिं बेर ब्रह्मानी सब आदिजे ।
देवी ढेरहुढेर दुर्ग्गा तन मुख चलधरी ॥

दो० मुनिसब देवीध्यानगत पुनिदल अन्तरध्यान ।
दुर्ग्गा मुख लखि असभई शुंभादिक नहिं जान ॥
अमर यूथ पुनि गगण महँ कछुनहिं जानेकाहि ।
शक्ति दुर्ग्गा लोपकरी सब शक्तिन्ह निज ठाहिं ॥

चौपाई ॥

तब रह एक अम्बिका माता । श्री दुर्ग्गा चण्डिका सुत्राता ॥
सब देवी तन दुर्ग्ग समावें । जिमिबहुसरिताजलधिहिं जावें ॥
वसुधव उपमा पुनि असआवे । महाप्रलय बहुजलधि समावें ॥
तब नहिं कछुएक प्रलयकारा । नृपअस दुर्ग्गा जगदाधारा ॥
पुनि सोहतमनु लघुलघुतारा । सत सरित नभजाहिं अपारा ॥
सत सरित पुनिबहु समटाहीं । लघुलघुरूप जाहिं शशि माहीं ॥
पुनिबुध आदिक गृहगणआवें । सबमिलि वासरपतिमहँजावें ॥
श्रीदुर्ग्गा सोहहीं प्रकाशू । कहिय थोर लगउपमाजासू ॥
बहुत भानु बड़रवि महँ जावें । अससब देवी दुर्ग्गहिं गावें ॥
अवधराप बहुखल दलमाहीं । दुर्ग्गा केवल एक सुहाहीं ॥
सोरह नित नित केवल एका । नाश हीन वपु हीन अनेका ॥
आदि शक्ति श्रीदुर्ग्गा माया । जामहँ झूमहिं ब्रह्मनिकाया ॥

दो० बहुत जोतिइव देवि सबमुख्यज्योति श्रीमाय ।
तामहँ सबमिश्रित भई अबइक जोति सुहाय ॥
सोहत दुर्ग्गा सुन्दरी सुररिपु कटक अशेष ।
मानहु कृष्णसघन गगण बाल दिनपतिय भेष ॥

सो० विश्वमोहनी रूप जाते नारद विकल भय ।
यदिमायांश सुरूप सुता शीलनिधि होगई ॥
सो शत शत स्वरूप या सुन्दरि पर वारिये ।
तौहुन हो अनुरूप अस श्रीदुर्ग्गा मद्भुता ॥

चौपाई ॥

जानहु नृपअस देवि व्यापता । शक्तिरूप बपु रहित आपता ॥
सकलजगतमहँ रम प्रख्याता । शक्तिरहितनहिं कछु नितताता॥
तामहँ भांति भांति व्यवहारा । सृजभवलय आदिक आकारा ॥
सो सो सब ब्रह्मानी आदी । भांति भांति सब अंकितवादी ॥
योग वियोग वशित संसारा । सुधरतबिगरतविविधिप्रकारा ॥
सब महँ एक व्यापता माता । हीरा प्रभुनी दुर्ग्गा ख्याता ॥
जाबल बोलहिं ब्रह्म अपारा । नाम ईश्वर सब सन्सारा ॥
नित नित भेदभलो मुनिगाहीं । शक्तिबिना नहिं कछुसबठाहीं ॥
कविजन मुनिजन आदिकनाना । शोभा लेले करहिं बखाना ॥
सो सब सार वेदश्रुति गावें । ज्ञानी जनबहुविधि सम झावें ॥

दो० नहीं ईश्वर शक्तिबिन समझहु हिय धरिध्यान ।
प्रगटत मायाशक्ति जग पुनि ईशहिं सब जान ॥
माया बिन सन्सार पुनि ईशन जानो जाय ।
यदि व्यापित सो शक्ति ईश गुप्त वश माय ॥

सो० नृप अभरन्ह नहिंलाज जे वश कीन्हे मातुअस ।
कारुणिका नितसाज दया मया रक्षादि कर ॥

चौपाई ॥

पुनि बोलीं जगदम्बा माई । मृदुमंजुल माधुरी धिराई ॥
दुष्ट शुंभ सुन हो अस भावी । मम बलांश बहुस्थिति आवी ॥
अगणितरुवरूप विदितकहाहीं । देवां आदिक नाम सुहाहीं ॥
जाहु करत तिनकर संहारा । भवलय मयकरनी सन्सारा ॥
होहिं नष्ट सब एक अनेका । रहहु अन्त में केवल एका ॥

अस मैं इह संग्रामहि आई। इहरण महँ आवहु खलराई॥
नृप अस भाषी जबहिं भवानी। दनुजनाथ रण जूझन ठानी॥
खल दल लागे बाजन बाजा। भटआदिक सँभरे निजसाजा॥

हरिगीतिकाछन्द॥

साजे साजसुभटनिज सब दल व्यंगभाष सुनावहीं।
चाहहिंमानहु कालहिं लीलन होवसोकिमिपावहीं॥
कौतुकलीलालखिखलगणकरकौतुकिनिमुसकावहीं।
मनुअलिदल समूहमहँ बिकसतकंजकलीपुष्पावहीं॥

दो० हांहू करि टूटे असुर होन लगो रण घोर।
महि पति अस को साहसी जो आवे या ठौर॥

चौपाई॥

शुंभ दैत्य बहु कटक समेता। लड़हि देविसन सुरपुर हेता॥
देवि शुंभ बिच होत लराई। देखहिं सुरगण जयतिसुनाई॥
डरहिंअसुर यदिलरहीं तहँवां। दुग्गी दारुण प्रबला जहँवां॥
सब कहँ भयदायक संग्रामा। पावे मीच काल सुनि नामा॥
दोऊ बीच बरस अगणित शर। तीक्षण शस्त्र अस्त्र भयंकर॥
फेंकत देवी दिव्य भवानी। दिव्यअस्त्र नित नूतनआनी॥
अस अस्त्रन्ह यदि घातहु कारी। शुंभखलप निजअस्त्र प्रहारी॥
देवि अस्त्र तब गये बिधाई। कौतुकिनी रणदेत बड़ाई॥

लवायीछन्द॥

रणहिं बड़ाई देवहि जननी जाते अस्त्रबिध गये।
नहिं असको जो तीनलोकमहँ देविअस्त्र वेधदये॥
पुनिन्तप छांड़ शुंभ निजदिव्यन्ह अस्त्रसुदेवीप्रती।
अनायास श्रीउग्र हुंकारत अस्त्रकहँ वेधी अती॥

दो० व्याकुल दितिसुत मनहिंमन सोचत बारम्बार।
जानहु नहिंयह नारिहै कालकि मम खिलवार॥

चौपाई ॥

चिन्तानहिं यदिहोवत बतिया । रांध क्षीरकिमि होवे दलिया ॥
ओस चाट भल तृषा बुझाई । लरहु तोहु साहस बल जाई ॥
छांड़ा खल शत शर बसुराई । अतिशय कोपी माया माई ॥
छेदी धनु बाणन्ह रण धीरी । शुंभभीत मनु फोरा पीरा ॥
छिन्न धनुष देखत खल ईशा । शक्ति प्रहारा दशनन्ह खीशा ॥
रहत शक्ति ताकर कर माहीं । देवी चक्र ते बेधी नाहीं ॥
तीन लोक चारहु युगमाहीं । आशहीन इह रण दरसाहीं ॥
दनुजप निजकर खंगउठावा । मनहु भानुकर किरणसमावा ॥
शत शशिसम लगजाकर ढाला । धावा माया प्रति बसुपाला ॥
तब कोपित श्री अम्बामाया । बेधत जो बहुकाल निकाया ॥

लवायीछन्द ॥

जो दुर्ग्गाबेधतबहुकालहिं कोपीअतिसमरमहीं ।
लीन्ही धनुशरनूतन तीक्षण मारीखल शुंभकहीं ॥
बेधीरिपुकरकरखंगचर्म्महिं अरुबाजिहिंमारदई ।
हतीसारथिहिंजगतजननीपुनिशोभितलखितभई ॥

दो० अश्व धनुष सारथीबिन पछतावत रिपु राज ।
मनहुं जुआरी खेलमहँ हारन चह कस काज ॥

चौपाई ॥

कोपत पुनिपुनि सुर आराती । सोच जुआरी मारहुं हाती ॥
कर धरि मद्गर घोर कराला । अंबहि मारन सँभर भुआला ॥
कृपा कारिनी छांड़ी बाणा । तीक्षणजलितललितबिधिनाना ॥
बेधी तब मुद्गरहिं गिराई । परा बज्र मनु नभते आई ॥
बेगवान सो दनुज बिशाला । मुष्टिकरन उद्यत नर पाला ॥
बांधि मुष्टि इक उठा करारा । देवी कोमल हृदयहिं मारा ॥
हा हा प्रलय महानहिं आवे । हीराते मारा लिखवावे ॥
तासम पातकि को है लोगू । जो जगमातहिं लेख कुयोगू ॥

लवायीछन्द ॥

जोनिजप्रभुनिहिं लेखकुयोगू असतमय भाषणकरी ।
सुपावन चरितभवानि पावन पावनता जहांभरी ॥
भरोसहीराकहँपर बड़रह निजप्रभुनिकरनितइहां ।
क्षमा दायनी क्षमाकरहिंभल बनेअस अवसरजहां ॥
दो० सांचहु असमन आवही होत क्षोभ बिकराल ।
अस गावन ते भलेहैं हीरा कहँ तुरकाल ॥

चौपाई ॥

ताकहँ कस खा काल करारा । जाकर रक्षणि जगदाधारा ॥
कोमल हिय देवी बपु धारी । खावबस्तुहिय दरसउतारी ॥
पर ताकर बल समता नाहीं ।अगणितजगकरसकसपनाहीं॥
लखिकह बलकर सुरनभकांपे । तूल बज्र कहँ कैसे चांपे ॥
कमलकली किमि कीरनिलागे । छत्रकदांड़ी किमि अविकागे ॥
रजकि मले किमि मेरु उड़ाई । मसकफूंकिकिमिउल्कबुझाई ॥
सुरतिय हिय अति कांपनलागे । हाहाकार करहिं मन जागे ॥
निजनिजमहँपुनिपुनिसमझाहीं । यद्यपिकोमल हियघबराहीं ॥
मुनि सुर सुरनी लाज सजाये । ते कस मरहीं नित बैराये ॥
चाहहिंनित निज हितमनमाहीं । होवे काहू चिन्ता नाहीं ॥
देख न जाय दशा रणमोपे । ममस्वामिनिकहँअसश्रमजोपे ॥
युद्धहोत अस भयद भुआला । कहांरहा बल काल कराला ॥

लवायीछन्द ॥

कहांरहा बल काल करालहु जो शुंभ अबनहिंमरे ।
सदानाथिनो हीरा श्रमकर देह कोमल अतिधरे ॥
अठभुज खल अठ दश भुजदेवीयुद्ध तहँ विधिविधिकरे ।
अगणित अतुलित कटकअसुरसब देखहींचकितनलरे ॥
दो० हरिअर पीअर अरुणभल आदिकरंग सुहाय ॥
इन सबकेरी कंचुकी अर्धभुजन पिअराय ॥

कार कार भुजशुंभकर यदिभूषण मय छाय।
कर लगि मिलिभल सोहहीं उपमा कही न जाय॥

चौपाई॥

सोह समर कस बानिजपाला। भानु घटा लरहीं ता काला॥
भानु चमकहीं जगदाधारा। मनहु मेघ खल रूपाकारा॥
वेदन्ह मुनिकभु ऐसहिं गावें। समरसुरासुर सार जतावें॥
बिधिवत सत्यजानहीं सोई। जिनपर मातु कृपावर होई॥
पुनिपुनि अमर भीतमन माहीं। दुष्ट शुंभ किमि मारा जाहीं॥
कबहुंतिनहिंहरिशिवसमुझाहीं। क्षणकमरहिं खलडरहोनाहीं॥
शुंभदनुज अस अगणित आवें। केवल दुर्ग्गा ते मरि जावें॥
महा अमित बल दुर्ग्गाराखे। पाररहित जिहि वेदहु भाषे॥

लवायीछन्द॥

पार रहित जिहि वेद भाषहीं अमित बलमय वपुधरी।
एकशुंभ का कोटिन्हअसआवें विनसहीं सबक्षणधरी॥
पर सुर कौतुक मायाधारी सुर मुनि जो गाय करी।
सिन्धुअपार तरहिं विन श्रमहीं देहि श्री विजयाधरी॥

दो॰ हीरा मन अस जमतहै काहे स्वामिनि मोर।
शुंभदेह न जन्म करी दीन्ही पर अति घोर॥

चौपाई॥

अहा अहा कस इह अज्ञानू। रजकिहोय कभुअविक समानू॥
जातन कहँ अज हरि हर देवा। नहिंपावहिं याचहिं करिसेवा॥
घूक परी मोते अति भारू। क्षमहिं देविअज आदिक सारू॥
करिये काह मोह बश माहीं। ऐसो मन चंचल होजाहीं॥
यदपि असम्भव बात चलाऊं। जानहुं देवि क्षमा वर पाऊं॥
भक्तिसने सुर बोलहिं तबहीं। परश समर देखहिं तेजबहीं॥
हे विधिहमकहँ सुरकसकीन्हा। शुंभयोनि तनहमहिंन दीन्हा॥
सुरतियतिहिविधिकरहिंविचारा। तरसहिंचापनमा पद भारा॥

करत परश तन सो पद वाली । दुष्ट शुंभते जो भव माली ॥
अँगुरिन्ह थापरते जय कारी । सुर रिपु कर छातीमहँमारी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

मारति छातिहिं गिरादनुजमहि उठा सहसा ठाढ़ही ।
कार भयंकर रूप बनावा डरत डर मन काढ़ही ॥
दैत्य राज पुनि उठाइ देविहिं कोमलांगि सुकुमारहीं ।
उड़ा गगण महँ तिलोक भागी राहु मनु निशिकारहीं ॥
हाहा कार होवहीं पुनि पुनि अमर सब घबरागये ।
हरि आदिक कमलादिक मनमहँ चेतन अकबका भये ॥
अहा लोग अबरहा न कछुआव हीरहु मृतु न आवही ।
क्षमारूप श्री स्वामिनि दासहिं क्षमा मीचन लावहीं ॥

सो० कौतुकिनी कसदेवि अगणित जग जो भारधर ।
जाकहँ कालहु भेव ताहि उठावा गगण खल ॥
जानहु सत भूपाल अनहोनी कबहुंन भई ।
भई भईइहकाल सो इच्छाजगमातु कर ॥

चौपाई ॥

लोक चार दश पुनि युग चारू । तीन काल गणनाहु अपारू ॥
अस अनहोनी मुनि कभु नाहीं । भईआज असजसदरसाहीं ॥
सो श्री दुर्गा इच्छारूपा । नहिं कबहुं कि असहोवेभूपा ॥
अघ शव रूप हरिहु हो जावे । सपनेअस कभुहोन न पावे ॥
मनें धावनता गति कस राई । दौरत जावे जहँ लगि जाई ॥
परइह होनी ऐसी आही । धावनता सक जावे नाहीं ॥
नृप नभ लीला देवी केरी । विदितविकटअतिकठिनघनेरी ॥
अगणित दिनपति मणडलनाना । सहितधरावुध आदिकजाना ॥
असअगणित ब्रह्माणड निकाया । भार धरी श्री दुर्गा माया ॥
सो देवी कहँ दैत्य उठावा । सुनिलखिमनबड़अचरजआवा ॥
जानहिं जापर देवी दाया । मोहनि मूरति अम्बा माया ॥

जैमिनि कहिये नभकर कैसी। लरहीं तहँ श्री देवी ऐसी॥
चमकत तहां प्रकाश राशिनी। बहुरविशशिदामिनिविकाशिनी॥
मनु सबरे इक नारिस्वरूपा। सार सार ले ऊगा भूपा॥
जगदाधारा सुनिराधारा। करतयुद्ध तहँ विविधप्रकारा॥
अगणितलोकन्हयुगयुगकाला। प्रथमभयेउ अस समरनृपाला॥

लवायीछन्द॥

भयेउ प्रथम अस युद्ध भूपति करहिं अचरज सुर मुनी।
लड़तलड़त श्रीचण्डिकाश्यामा बाहुयुद्ध कररण भणी॥
संग्राम मनोहर होत अतिही राहु निशिप खेल करें।
उठाय खलहिं कन्दुक इवमालिनि मनुभ्रमात गेंद धरें॥
सोच शारदा संग्राम भल यह देहुमति कवि जन कही।
दोष लाग परयाते अबनहिं लिखवावहुं तिनहिं यही॥
अस नहिं नृप पर गिराचतुरता बात बनाव बड़बड़ी।
नतु कहा रही बुद्धिहु ताकी सकहि बखान यदि अड़ी॥
दो० शारद शेष गणेश मन कहहिं बुद्धि हत भाग।
कवितादिक अनुवादगुण अबते देवहिं त्याग॥
मातु फिराई विविध विधि महि पटकी दनुजाहिं।
गिरत परत सँभरा पुनि कांपी वसुता ठाहिं॥

चौपाई॥

एकभाव इह ठाम मझारी। आहियजबखलमुष्टिप्रहारी॥
तबहरि हियलग अतिशयजाना। यद्यपिभृगुपदनहिंमनआना॥
तबते अब लगिधरकत हियरा। रहा विष्णुकरजानतजियरा॥
पुनि देविहिं जब खलनभलाई। हरि हियपीरबढ़ी अकुलाई॥
मन महँ सोचहिं अपनउपाई। यदपि एकहु न चली उपाई॥
मुनिवर यहसब असवसअहहीं। परबलवतिश्रीदेवी सुहहीं॥
अस मायाते मरहिं भुआला। निश्चितशुंभबिकटविकराला॥
कितइकहरि यदिइहं चलिआवें। शुंभ लेशनहिं नाशन पावें॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

शुंभ रोम नहिं तोड़न पावें हरिहु अगणित आवहीं।
कोटिन्ह अस शुंभहि श्रीदुर्ग्गा वधहींक्षण सुभावहीं ॥
सो श्री दुर्ग्गा कार्य्य कारण हीरा प्रभुनि जानहो।
हरिआदिकमहँ शक्तिरमीइक व्यापिनिसर्व्व मानहो ॥

दो० देवी पटकी खलहिं जब हरि आदिक दुख भूप।
घटित कछुकलगि जानहीं मरहिं शुंभ अब ऊप ॥

चौपाई ॥

नभते शुंभ गिरा महिराई। भई बहुत मनु भू कम्पाई ॥
पीठ कमठ पुनि शिर अहिराजू। डोले विकल भये तन साजू ॥
सँभर शुंभ नभ श्री ढिग आवा। बेग बेग कर मुष्टि उठावा ॥
तब कोपी श्री दुर्ग्गा माई। कोप मूल अब बेष बनाई ॥
लखहु कोप सो कैसो अहहीं। जातेअगणित कालविनसहीं ॥
जगमणिलीन्ही पाणि त्रिशूला। आवत खल हिय बेधी मूला ॥
गिरा अवनि नर सुरारि नाथा। मानहु काल करालकुपाथा ॥
नोक त्रिशूल लगी हिय माहीं। देवी छांड़ी जो खल पाहीं ॥
गिरिनदिजलधिद्वीपविधिनाना। भरितधरापरसकलविधाना ॥
असवसुमति वहुविधिउठिकांपी। गिरा शुंभ तब ताकहँ चांपी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

गिरा दनुजपति चांपत महिकहँ खल त्यागे प्राणहीं।
विशाल तनु मनु सुमेरु पक्षी गिरछत्र बनेउ तानहीं ॥
अगणित जीव चराचर महिपति मरे नहिं देवीदया।
जो कर तोयकणअतुल महिधर सुमेरुकणतोय मया ॥

दो० मरत शुंभ सुर यूथ सब गरज उठे गुहराइ।
मनहुजगत नभ मेघसब आहटकर समटाइ ॥

चौपाई ॥

वधी मातु शुंभहि बड़ भागी। मराशुंभ भल प्राणहिं त्यागी ॥

मारी शुंभहि हरष निकाया। शुंभहि मारी दुर्ग्गा माया॥
खल कहँ मारी जगदाधारा। मरा दुष्ट कछु लाग न वारा॥
असुर नाथ कहँ मारी माता। मारीअधर्महि जग सुखदाता॥
अम्बा माया अम्बिक माई। मारी दुर्ग्गा मुक्ति सुदाई॥
माता चण्डिक दुष्टहिं मारी। मारी नीचहिं अमित सुखारी॥
शुंभ धरा धव सत्या मारी। नित्या परमा दुष्टहिं तारी॥
हतीजननिअसुरप विन यासा। खलपालहिं मारी सुखआसा॥
मारी जननी जगती माता। खलवसुधव कहँ मारीदाता।
वधीखलपकहँ ती जगखानी। दुर्ग्गा माया श्यामा रानी॥
श्री मालिनि सच्चिदानन्दनी। मारी शुंभहि दुख निकन्दनी॥
पारी शुंभहि एक निकाया। हीरास्वामिनि पालिनि माया॥

लवार्याछन्द॥

हीरा पालिनि स्वामिनि मालिनि दुर्ग्गा रूप वपुलई।
अगणितकाल कालकर कालहिं क्षणलाघव मारदई॥
जयतिजयतिजयजय जग जननी जय जय श्रीमायबरी।
पाहिपाहि जगपाहि चारदश जयतिजयजयदुखहरी॥

दो० खलहिँ मारि श्री देवि वर नभते उतरी आय।
मनुदामिनि वहुलोककी सुन्दरि बेष वनाय॥
वाहन पर आसीन हो शोभी कोपहिँ धार।
शतशतपति प्रहलादकर कोपित नहि असतार॥

सो० जन्म रहित श्री आदि धारी वपु अनुपम अमित।
बरनहिं नित बेदादि जानहिं जन जे भक्त वर॥

दो० मरत शुंभ आनन्द नृप सुर नर मुनि सबकाहु।
कभुनहि वर्णन होवहीं यदि शारद शत लाहु॥

चौपाई॥

सो निश्चितानन्द महिपाला। भयेउअगणित जगतविशाला॥
अखिलजगतसुरनरमुनिआदी। जीव चराचर निजतिज वादी॥

मगना नन्दित अकथ बखाना। परम अमित छावा सुख नाना॥
सब सुख डूबे कहि नहिं जाई। हिचकत शारद मति सकुचाई॥
ऐसो सुख न लहा प्रहलादू। खंभ दरस नरसिंह सुबादू॥
अस सुख कमलानाथ न पाई। लक्षि निकारी जलधि मथाई॥
शिव न लहे सुख बानि जराई। दक्षसुता गिरि तनया पाई॥
विधि नहिँ पाये सुखताकाला। मधुकटभ जब बधित कराला॥
सुर नहिं पाये अमृत पाना। जस सुखसार आज दरसाना॥
एक एक सुखमहँ अस पागे। हरिगृहअधीहिं भलनहिंलागे॥
सतनहिंपावहिं कृतयुगआवे। पापराशि यदि कलिहु नशावे॥
कहँलगिगावहुं सोसुख भूपा। सुखहु न अससुख लहा अनूपा॥

लवायछिन्द॥

सुखहु न लह अस सुख धरणीधव जससुख मित आजभवा।
जाय न वर्णन समझहु सो मन जहँ लगि बुद्धि बल गवा॥
सो नहिं कछुक बड़ाई मातहिं यदि अस सुखहिं लाधरी।
अमित अपार अथाह सिन्धु महँ का शंख दुकाल परी॥

दो० अज हरि शिव आदिक सबै अमितपरम सुख छाय।
हरषि हरषि गावनलगे निज स्वामिनिहिं सुनाय॥
जय जय जय श्री मातु जय जयति जयति जगदम्ब।
श्री दुर्गे श्री चण्डिके जयति अम्बके अम्ब॥

तोटकछन्द॥

जय मातु नमामि नमामिसदा जगकारनतारन रूपअदा।
दुर्गेदहनी दुसहा दुखकी सुखमासुमना सृजनी सुखकी॥
सुकुमार कमा मृदुरूपधरी क्षणमाहिं सुरारि संहारकरी।
दश चारहु नोक महा तरनी तरनी सुरराशिकजंभरनी॥
मधुकैटभ शोणित बीजमहा खल शुंभ निशुंभ महा दलहा।
क्षणहीं सबहीं बिलगाय दई कज कोमल रूप अनूपलई॥
नहिंआदिनहीं अवसान नहीं प्रभुनी तव बेप सदा जुअही।

जनहेतु करी करनी विपुला नहिं जान परे तवदेहकला ॥
जयआदिनिजोति रमीसबमों जयव्यापरही चरमां चरमों।
जलमें थलमें नभमें सबमें दश चारहु लोक रमी जगमें ॥
अज कीहरिकीशिवकी प्रभुनी अजनी हरिनी शिवनीजननी।
तव मातु भरोस रहे असही दुग्गें दुग्गें तजहो रिसहीं ॥
जगपाहि नमामि प्रसीदहुतो नहिंको अस देवरहे ढिगजो।
परदृष्टिकृपा परहीं जबहीं सुखहोवहिं मातुइहां सबहीं ॥
जगरोग कुरोगहिं संजिवनी अपराधक्षमा वपुनीअवनी।
जगरोम हिरो भरमें बहुते अस रूप विराट धरी इहते ॥
जयदेविकरी बड़काजभली खल शुंभ बधी पुनि सेनदली।
नहिं सोबड़काज कहावत सो बहुकाल कराल नचावत जो ॥
जयरंक निवाजिनि नेतिभली रिसआननहो कजकेरकली।
अबखोलहु सीदहुहो जननी हियहीरनिवास करीसुमनी ॥

लवायांछन्द ॥

हिय हीरा वास करो जननी यदि अघी भवनिधि तरे।
जगजाल निकन्दिनि निदानन्दनी कृपा करुणा नित भरे ॥
करहुदया कट जाय विपदि सब विपदि रहे न जगमणी।
मरा शुंभ क्षण शुभगति पावा गवा सुर पुर धन धनी ॥
जयति जयति श्री दुग्गी देवी कीन्ही कृपा बहुकरी।
हम सुर सबरे शरणहिं ठाढ़े शरण देवहु वपुधरी ॥
जय नन्दनी मुकुन्दनि माया चिदा नन्दिनी चण्डिके।
निराकारनी भक्त देहनी अवि नाशिनि अखण्डिके ॥

दो० अखण्डिके चण्डिके श्री दुर्ग्गे रूप अनूप।
शुंभबधी अब भल भयो करहु कृपा जगरूप ॥
तजहुकोप हमदीनढिग महिमा करनि अपार।
नहिं जानहिं हमदाससब नमोनमो जगधार ॥

चौपाई ॥

जयतिजयति दुर्ग्गेअधिरानी। शोभा रूप राशि गुणखानी ॥
सतजनकज मुखलघुरविवामा।सततियकजनीमुखशशिश्यामा॥
अहंकार मद आदिक उरगे। प्रियानाथ खग तिनकहँ दुर्ग्गे॥
दया मया करुणादि अनाजा। वसुधा रूप बनी नवसाजा ॥
धर्म्मधुरीन धरी धर्म धरनी। धरणी पूर मुक्ति नित तरनी॥
सागरिनागरि श्यामा सत्या। ईशा देवी केवल नित्या ॥
एक आदिनी रूप निकाया। संशय रहित जान को जाया॥
रिस तजिदेहु दया मदवारी। सकलभांति जननी जगधारी॥

दो० वयनसुनत जननीमहा ईषत् कछु मुसकाय।
सुर सन्मुख घटिका सुधा बूंद परी मुख आय॥
सुर लेखे बड़ काज भा मरा शुंभ खल राज।
यदि जानहिं माया निकटकछुहु न इहबड़ काज॥

सो० लोकहु भूप कुनीति नयन दरस जो साचहै।
तीनकालजगरीतिनिकरदिनपदिननिशिप निशि॥
तैसहिंवानि करायअमित अपार अगाध गुण।
भरी जगत करमाय अगणित काजहिं शुंभवध॥

चौपाई ॥

महिप मरत खल भट बहुतेरे। रहे सहे लघु दनुज घनेरे॥
सबकहँ अम्बाक्षण महँ नाशी। देव्यायुध जे रहे पियासी॥
रहा न कोउ अमितदलमाहीं। जाकर प्राण देह महँ आहीं॥
सबके सब गमने सुर धामा। कृपा इच्छ पा दुर्ग्गा श्यामा॥
अगणितशव गणराशि सुहाई। शोभाविधि विधिगायनजाई॥
अगणित करपद शीश घनेरे। कटे परे जहँ तहँ बहुतेरे॥
शोण शोणबहु लखिये तहँवा। अगणितआयुधपरतहँजहँवा॥
वसुधारण कस परत लखाई। बहुतयुगन्हलगि भई लड़ाई॥
ज्ञान जान बीतो क्षण एका। यदि लीला भइ एक अनेका॥

सकल रीति दुर्ग्गाजगव्यापी। जो कछुकरहिं थोरसबआपी॥
दो० कर इतनो सोहत तहां बाहु अष्ट दशमाय।
मनु श्रमकछु कीन्हींनहीं तीनयना सुखदाय॥
यानहु सोहत ताहिविधि जापरसोह भवानि।
अगणितगुणकरखानिनी जो न जानसोजान॥

चौपाई॥

कृपा दृष्टि करि अम्बा माया। सैनकीन्ह सबतत्व निकाया॥
अनलअनिलबनलकुटन्हआदी। शवदलगणलगितत्वसुबादी॥
जरा कटकखलक्षण महँ भूपा। तत्व मिले सब निजतिजरूपा॥
क्षण महँखलसमूह बिलगावा। कोऊ न जाना इह सब भावा॥
निर्म्मलनिर्म्मलजगनभठाहीं। अम्बा सुरादि दरशित आहीं॥
विमलानन्दलखा जग माहीं। नभ चहुं ओर दरस सबठाहीं॥
जब श्री मातु शुंभकहँ मारी। लह सुख जीव चराचर झारी॥
नृत्य गान शुभ बाहन बाजा। शारद शेष गणाधिप साजा॥
महिष धूम शोणित बीजादी। शुंभनिशुंभ आदिखल बादी॥
इन कर वधनमातुकर करनी। गावहिं हरषिहरषिबहुबरनी॥

लवायी छन्द॥

गावहिंहरषिहरषिसबसुखमहँ जगमाता करनि करी।
मारी महा महाचर रजनी जिन डरे शिव अज हरी॥
निराकारिनी पुनि बहुवपुनी भक्त जनहिय सुख करी।
वाटत दान मुक्ति को नित नित कान लेवहु मनधरी॥
तन मन हित चित ध्यानलगाई गाहु लीला रण करी।
तरहुसिन्धु भव अपार तुरतहिं पाहुगे गति अघ हरी॥
गावहिं जे जन लीला रण कर कीन्हविजया वपु धरी।
रणादिदुख महँ जय नितपावहिं हीरा प्रभुनिभक्तिवरी॥
दो० पावहिंभक्तिदेवीकर मुक्तिमिलहिं यदिचाहिं।
भक्तज जानहींमुक्ति तेभक्ति वरी नितआहिं॥

गावहु ध्यावहु मातु कहँ श्रीमाया सब ठाहिं।
हीन शक्तिकछुरहनहीं शक्ति व्याप सबमाहिं॥
सो० जय जय रानि भवानि श्रीदुर्गा दुखदाहनी।
कीरतियशतवमानि अग जगमहँनितरम रहे॥
लोक तीन तीकाल चारहु युग मांगहु रहे।
सेवक हीरालाल स्वामिनि दुर्गा मातु श्री॥

॥ इतिश्री हीरालालकृतश्रीदुर्गायशःषष्ठकाण्डःसमाप्तः॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायण ॥

हीरालालकृत ॥

नवकाण्ड ॥

सप्तमकाण्ड ॥

दो० मातु दया रवि किरणते मन तम तुरत नशाय ।
गावहुं यश श्री देवि कर दुर्ग्गा दाहनि माय ॥
सो० शुंभदनुज विकराल अज हरि शिव कहँ भय भयो ।
डरत जाहि नित काल ता कहँ श्री माया हती ॥
अस श्यामा श्री माय चण्डिका अम्बिका जगत ।
प्राण निकर बरु जाय कंज चरण नहिं छांड़िये ॥

चौपाई ॥

नृप जब देवी शुंभहिं मारी । सुख लह जीव चराचर झारी ॥
सुरनर मुनिआदिकजियधारी । हरपमगनअतिशयअति भारी ॥
विकसित नभ निर्मलदिननाहू । सन्त हृदय जिमि भक्ति प्रबाहू ॥
षोड़स कला निकरनिशिराऊ । अबुध निशा हिय ज्ञानप्रभाऊ ॥
बुध आदिक ऊगे उड़ यूथा । सज्जन हिय आ सुकृतबरूथा ॥
पुष्प समेत फले तरु नाना । योगिन्हफलमनुप्रगटदिखाना ॥
वसुधा पाकी ऋतुहु न जाना । पा तपसी फल तप नियराना ॥
बहहीं सरिता सुख रव होवे । भक्ति उमंग चढ़ी जन जोवे ॥
बीव समेत भरित वसुपूरा । नाथहिं निज जाने जन तूरा ॥

भरित लखियसबताल तलाई । गुण विद्या मनु जहँ तहँ छाई ॥
दो० शीतल मन्द सुगन्धनी चलहिं पवन मन आश ।
मनु तापती प्रकार कर संजीवनि दुख नाश ॥
चौपाई ॥
उपवन आदिक शोभा छावा । गेह गृहस्थिन्ह अन धन आवा ॥
रोग राइ आदिक जे नामा । औषधि मिलन भई सुख कामा ॥
वेद पुरान दरस शुभ आये । मूरखता जन कीन्ह नशाये ॥
जप तप भजन भाव सबछाये । लघुलघु उड़गण नभमहँआये ॥
नवधा भक्ति आय दरसाई । अठउड़ बुधादि रवि समटाई ॥
जहँ जहँ मन्दिर सत जन देखे । कामीजन नारिन्ह जिमि पेखे ॥
जहँ तहँ भूप नीति रजधानी । मनहु दशापतिव्रत हितजानी ॥
पाप आदि कर खोजहु नाहीं । मनु वसुगई रसातल माहीं ॥
दो० कामादिक षट बैरि तब छल बल कपट विकार ।
कतहुं न पावहिं ठाम लव कामी जन जिमि नारि ॥
चौपाई ॥
ऐसहिं भूप पक्षि सुख बोलहिं । पढ़हिं वेद वटु खोले खोलहिं ॥
नाचहिं मोरादिक चहुं ओरा । मनुजनतिय हरषहिं सबठोरा ॥
चरहीं मृगादि पशु विधि नाना । हरष तपसि योगी रत ठाना ॥
सिंहादिक पशु सुख वहुतेरे । अवसर पाये बीर घनेरे ॥
सुर नर मुनि आदिकजे आहीं । सब सुख भूले अपान नाहीं ॥
विविध सुकृत करहीं मन माने । जे जे रीति वेद श्रुति जाने ॥
सुख आनन्द बढ़ो सब आई । चखुरसनायदि कहनसिराई ॥
आदि पूरिता सुख मय रूपा । रूप विराट भयो मनु भूपा ॥
अगणित जग सुखभा असजेता । कोटिनमुख कहिजाय न तेता ॥
अमित भयो सुखमितइहकाला । गिरा न लायक वरणनहाला ॥
हरिगीतिका छन्द ॥
गिरा न लायक वर्णन लीला सकल जो सुख पावहीं ।

बनी भीलनी औचक चितवत शुठि नगर महँ आवहीं ॥
सो वसुधा पति बड़ाइ नाहीं श्री अम्बिका नामहीं ।
नामहु लेत अमित सुख आवत कस न दृष्टिहु ठामहीं ॥
दो० ऊपर उपमा गाय करि सुख जस भयो बखान ।
उपमा कर सामग्रि जो सत सुख सोउ दिखान ॥
सो० इतनोकछुनहिंताहि असमुख अतुलितजाहिढिग ।
क्षणक्षण सेवहिं जाहि सोइ सेविता मातु मम ॥
दो० असमुखक्षणउपजाय करि सोहत श्रीजगमाय ।
अजाननीनहिं जानहीं मनहु कछुक नहिलाय ॥

चौपाई ॥

अजहरिशिवआदिकसुरसर्व्वा । सहित तियन किन्नरगन्धर्वा ॥
रंभादिक सुर सुन्दरि नाना । बाज गान करि नाचहिं ताना ॥
रागनि रागहु षट षट तीशा ।नृत्य भावजसकथितमहीशा ॥
अद्भुत अनुपम एक अनेका । सर्व्वानन्द दरस इकएका ॥
शुंभ वधन सुरमनकर बाता । सो सब देवी कीन्ही ताता ॥
जाते तेज अमर मुख छावा । राहु इन्दु रवि चक्र छुड़ावा ॥
ऋधि सिधि नवनिधि आदिककेरा । पूजसामग्री रत बहुतेरा ॥
पावक सन्मुखकरिसब देवा । अज आदिक आये सह सेवा ॥
दो० अजआदिकनिजतियन्हसहसोहेसुरसमुदाय ।
दीन अधीन कुटुम्ब बहु निजमाताढिगआय ॥
श्री दुर्गा श्री सुन्दरी सोही सहज सुभाय ।
तिय होय यदि अनूपता तौहुन उपमा पाय ॥

चौपाई ॥

नीलाम्बरिनि कमा मथिनाई । कमल कल्प लघु रूपसुहाई ॥
रतन जटित भूषण मय बाहू । अठदश सो शाखा बलताहू ॥
सर्व्व रंग कंचुकि शुठिधारी । नव रंगी शाखा दोतारी ॥
तिन महँ सुन्दर आयुधनाना । पत्र नवीन चमक दरसाना ॥

सोह यान सुरपतिकर धरणी । देव कल्प राजीं भवतरनी ॥
सुन्दर पद कटि ते जड़ रूपा । सोहत कोमल तनवि अनूपा ॥
पद नख मूल मनहुजड़ मूला । भक्ति वारिनित पावत फूला ॥
करपदअंगुरिन्हभूषणरतनन्ह । पुष्पकलीदरसीमिलिगणगण॥
लघु लघु भूषण रतन सुहाये । मनहु पुष्प सुन्दर दरसाये ॥
हाटक भूषण कोऊ कोऊ । काच पाक फल लागे सोऊ ॥
नीलाम्बर सोहत तन माहीं । तरुवरछाल लखिय बहुठाहीं ॥
भक्त्यानन्द भरो रस कैसा । चाहहिं मुक्तिसुधा नहिं जैसा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

चाहहिंजैसो मुक्ति सुधानहिं सोहहीं वपु माननी ।
मुकुटितशिरमुखअनुपमदुतिधर अचरजकसतवीननी ॥
रतन जटित भूषण कपाल महँ कर्ण ग्रीवहिं सोहहीं ।
चोटी तरु महँ पुष्प महाशुच रूप कली विमोहहीं ॥

दो॰ विपदि निवारण दहनदुख सुख उपजन जयजीत ।
हरष मान आनन्द सब भली रीति शुभ नीति ॥
नेम विचार विवेक शुभ सत्य शील वर ज्ञान ।
हर्ष चाव मुक्त्यादि सब देवहिं अस तरु दान ॥

सो॰ हरे हरे जग मात श्रीकहँ कीन्हा कल्पतरु ।
दोष महा लग जात गणना रूख न भल कही ॥
नहिं जननी असनाहिं तुमदायिनि शुभ कल्पइव ।
समता सोहु न पाहिं कोटिन कल्पहु दान तव ॥

चौपाई ॥

सिंह वाहनी भईं विराजी । अमित अपार कमा वपुसाजी ॥
सुर स्वारथी साज सजाये । जननी ढिग वत्सल समआये॥
महिषमरनपरजिमि सम्बारी । ताते अधिक शोभ युतकारी ॥
साजन आदि कीन्हसुर सारे । शोभित सत्याशशि इवतारे ॥
आसन अम्बरकंचुकि आदी । रतन जटित भूषण जे बादी ॥

जिन महँ बनवटलख चतुराई। विविध विविधविधिकरबनवाई॥
सब राखे आगे जग देवी। अजा आदि ठाढ़ीं सबसेवी॥
पुष्प पात पय पान पुनीता। अक्षत गन्ध आदि शुभ रीता॥
धूप दीप नैवेद्य घनेरे। सुन्दरजिनिस कथित बहुतेरे॥
श्यामा सन्मुख सजित सँवारे। निरखत मातु जाहिं दुखसारे॥

दो० वेद कथित रत भावते पूजे ती जग रानि।
रिसतजि विहँसी कछुकतब श्रीजगदम्ब भवानि॥
चघनी गठनि कपोलकर ओष्ठ ऊप लखि देव।
विधि आदिकसब विबुधगण हरषेअति सहसेव॥

चौपाई॥

पूजितसोह कि जाय बखानी। शेष गणेश गिरा हिचकानी॥
रंग कंचुकिनि नीलाम्बरिनी। मणिमुकुटिनिबहुआयुधधरनी॥
रत्न जटित भूषणहु घनेरे। सुन्दर सुमन माल बहुतेरे॥
जाहिं परत शोभाअति आवे। लखि शोभा शोभालजजावे॥
पूजाकरि सुर तियसह सबरे। हरषिमगनअतिशयतहँसगरे॥
चाप चरण विबुध तियमाना। राकाशशि उड़गण दरसाना॥
लोकहु महि धवकस ये देवा। काज निकारि करें तब सेवा॥
सत्यकहहिंबुध स्वारथकाला। परम्परा ते चलत नृपाला॥

दो० लोकचार दश चार युग काल तीन विख्यात।
नहिं असमोही मातुसम जसदेवि साक्षात॥
यदिमन धावनलाय करि सोचहु बल बुधि लाय।
कछुक नहीं इतनो भयो विन्दु अगाध कराय॥

चौपाई॥

वानिक राय पूजि बहु भांती। सुरसुरतियआदिकसबजाती॥
श्री शशि राका घेरे कैसे। नभ बहु सरित ओर चहुंजैसे॥
पाणि जोरि गर फेंटा डारे। तियन सहितसुरनवनसँवारे॥
ओंठहित्तृणधरि भाषण लागे। सुधावयन श्री गुण रसपागे॥

ताहिकाल बाजहिं विधिबाजा। गावहिं नाचहिंतियगणसाजा॥
शेष शारदा वेद गणेशा। रागादिक मय गाहिं नरेशा॥
सुन्दर स्तुति सुन्दरी केरी। चारहु फलप्रद कह मन हेरी॥
कहिय कहा तहँ हरषअपारा। जननी अपन भाव विस्तारा॥

लवायीछन्द॥

विस्तार जननी भावआपन कहिय कहँ लगि कसलगे।
सुधा सरिता आनन्द केरी बाढ़हीं शव उठ जगे॥
खानि बहुत आनन्द ब्रह्मकर तो मातु इहँ का करी।
कहहु महान अगणित बिपिनमहँदुकालकिलकुटीपरी॥

दो० बिश्व मोहनी मोहनी रती शारदा भूप।
लक्षि आदिशतशत सबे वारियदुर्ग्गाऊप॥

चौपाई॥

माता सन्मुख पावक रूपा। तापाछे सब विवुध अनूपा॥
चरणनिकटसुरतियसबसोहें। शोभा देखि मोह मन मोहे॥
पुनिपुनिगिरिगिरिचरणसुहाई। रखहिं शीश पुनि लेहिं उठाई॥
पुनिपुनि पदरजचुटकिनमाहीं। निज निजशीशसुग्रीवलगाहीं॥
स्तुति बोलहिं हरषि सुनाई। जयति जयति श्री दुर्ग्गे माई॥
अम्बे जयति अम्बिके माई। जयति चण्डिके जयसुखदाई॥
ईशा श्यामा कामा रानी। जयतिजयतिजय शिवाभवानी॥
चिदानन्दनी नितानन्दनी। रूपानन्दनि सदानन्दनी॥
सुरूपा रूप तुरीय एका। केवल सव व्यापिनी अनेका॥
नित निरविकारअविनाशनी। अगणित सुब्रह्माण्ड राशनी॥

दो० भवलय कौतुकक्षणहि क्षण करणी विदिततुम्हार।
अतुलित अगणितअमित सत अनुपमअकथअपार॥
स्वामिनि पालनि पोषनी प्रभुनी अखिले देवि।
जयति जयति जय नमहिं हम साधीनता सभेव॥

तोटकछन्द ॥

जयमातुसदा नमहीं हमहीं। करहोसुकृपा जननीतुमहीं ॥
अगमा निगमा तववेष अही। जयरूप अनूप सुरूप कही॥
दुखनाशनि दायनितोषसदा। सुखकारनितारनि मुक्तिप्रदा॥
कुविकार सुकार मयीविपुनी। जयदेवि नमामिसुरूपकनी॥
भवभूति संहारकरीक्षणहीं। दुतिधारनिसीदहु याजनहीं॥
तवनामकहा तव रूपकहां। रखहो नितएक अनेक जहां॥
अघनाशनिकाजकरीजननी। बड़कालहु कालनि होसुमनी॥
अज आदिकदेवहुसेवहिंतो। विधिवामहु आदिकसेवनिसो॥
अतुले अगणे अमितेअकले। अकथे अलिखे अचरे अचले॥
अतिकोमलअंगिनिरूपधरी। सुकुमारि कमासुखमाहिंकरी॥
तव आनन सोहतमोहतहैं। असरूप अपार विजोहतहैं॥
प्रभुनीजयहोजयजीतसदा। नमहीं नमहीं हम मातुअदा॥

दो० जय दुर्ग्गे दुखदाहनी दलनी दारुण दम्भ।
सत्य शीलता मूलनी सत्य धर्म्म श्रीखम्भ॥
सर्व्वव्यापिनीसर्व्वबली समदरशिनिसतसार।
सर्व्व शक्तिनी श्यामली शाकंभरि सुकुमार॥

चौपाई ॥

महिष मर्दनी सेना सहिता। रविशशिउड़करप्रकाशदहिता॥
सहित धूम चखमुण्डहु चण्डा। रक्त वीज सुग्रीव जो वण्डा॥
यानन्ह सह निशुंभसह भाई। क्षणमहँ हती आदिक सभाई॥
जस बुधादि अठउड़ सह भानू। लघुलघु लोकहिं प्रलयसमानू॥
नहिं उपमेय इहां यदि आई। सब कहँ क्षण महँ भंगीमाई॥
हमरो दुख हरलीन्ही माया। असको प्रबली कर असदाया॥
अजआदिकरुख ताकहिं माता। विधितियादिसेवहिं मनराता॥
प्रसन्न वदना सीदहु एहा। नमो नमो अति शय तनु देहा॥

दो० श्री ब्रह्मानी वैष्णवी माहेश्वरि कौमारि।
वाराही नारायणी नारसिंहि जग धारि॥
श्री ऐन्द्री अरु चण्डिका चामुण्डा श्री कालि।
शिवा उमा श्री लक्ष्मीअपराजिता सुमालि॥
सो० जय श्यामा श्री रूप अन्नपूर्णा मालिनी।
ऋद्धि सिद्धि स्वरूप पूर्वापूर्णा अनन्तनी॥
लोक प्रथम सुरतीय दुर्गे सबते वन्दिता।
परमेश्वरि कमनीय नमोनमो मातेश्वरी॥

त्रिभंगीछन्द॥

शुभजन गणपीरा हरतकुभीरा दायनधीरा प्रसीद हो।
अगणित जगमातासुरमुनित्राताग़ुणविख्याता प्रसीदहो॥
महाविश्वेश्वरि जयपरमेश्वरि महानईश्वरिप्रसीदहो।
बहुजग उपजाई पोषण दाई सँहार लाई प्रसीद हो॥
चराचर कारका दुःखहारका कालजारका प्रसीद हो।
श्री दुर्गाएका रूपअनेका रक्षाटेका प्रसीद हो।
श्री स्थैत्यरूपा रूपअनूपा सबगुण रूपा प्रसीद हो॥
श्री जगदाधारा अलंघ्यपारा सबबलकारा प्रसीद हो॥
दो० घट घट अन्तर जामिनी सर्व व्यापिनी रूप।
सो सोही बपु सुन्दरी सुखम। कमा अनूप॥
कोमल हरिचखु वासिनी कोमलअतिसुकुमार।
मृदु वपुनी कज देहनी सही महादुख भार॥

पद्मावतिछन्द॥

वारी स्वरूपा जगत अनूपा तुमते सब व्यापित आहीं।
अनन्त बलधारा बहु गुणकारा वैष्णवी शक्ति सुहाहीं॥
सन्सार कारका रोग हारका जय जय उत्कृष्टा माया।
तुमते जे मरहीं तिनयाजगहीं होइप्रसन्न मुक्ति दाया॥
दो० जयदुर्गे जगमोहनी सोहनि गुण मय वेष।

महिमाअतिशयअमितहै गानसकहिं शतशेष ॥

चौपाई ॥

अंग वेद मीमान्सा चारा। धर्म्म पुराण न्याय बिस्तारा ॥
आयुस धन गानधर्व्व नाना। विद्यादिक वरसकल जहाना ॥
देवी भेद सकल तव आहीं। अमितअपार विदितजगमाहीं ॥
जे पतिव्रत सौन्दर्य्य सुरूपा। सुरश्रेष्ठतिय जगत अनूपा ॥
सबहिं तुम्हार अंश वर आहीं। भिन्न भिन्न विख्यात कहाहीं ॥
मातु एक तव रूप अनेका। पूरित जगइह अम्बा एका ॥
शुभगस्तुति तवकरनहुलागी। है को ती जग महान भागी ॥
विश्वात्मिके द्योतन शीले। स्वर्गमुक्तिदायनी सुशीले ॥
तुम्हरी स्तुति यदि गाजाहीं। अधिका उक्ताको अस आहीं ॥
अस शक्तिनि आदिनि इहरूपा। हमरे सन्मुख राज अनूपा ॥

दो० नमो नमो सिंहवाहनी लोचनि तीन अनूप।
दशाष्टवाहु विशालनी वरमुकुटिनि वररूप ॥

चतुष्पदाछन्द ॥

सबजन हियमाहीं वुधरूपाहीं स्वर्ग मुक्ति दातारा।
द्युति शीले माता अग जगत्राता नारायणिनमस्कारा ॥
सबप्राणिन्हमाहीं निवास आहीं जयपरिणाम सुकारा।
कला काष्ठादी रूपावादी नारायणि नमस्कारा ॥
विश्वम्भरि माता संकट त्राता दुर्ग्गे जगदाधारा।
श्री चण्डिक रानी सबगुणखानी नारायणिनमस्कारा ॥
भक्तजनन्ह सारा मंगल कारा शिवे मुक्ति दातारा।
ननसब अभिप्राया साधनदाया नारायणिनमस्कारा ॥
शरणागत धारी हमसुरवारी तीलोचनि सुखकारा।
श्रीगौर स्वरूपा देविअनूपा नारायणि नमस्कारा ॥
श्री आदिनि माया आदिनि आया मधअवसान नधारा।
भक्तिमुक्ति दायनि ब्रह्मपरायनि नारायणिनमस्कारा ॥

दो० गौरांगिनि कंजांगिनि तन्वंगिनि जय मात ।
नीलाम्बरिनी भूषणी कंचुकिनी सोहात ॥

चौपाई ॥

सुनत वयनविहँसत जगरानी । कामकमलकलिविकसनमानी॥
ओठ कटाक्ष भई सुखदाई । सकुचनविकसनफकड़िसुहाई ॥
दाढ़ कपोल कटाक्ष सुहाई । विकसन चाह पुष्प समटाई ॥
भृकुटि नयन नासिका चघाई । रतीसार कछु सार जनाई ॥
तोषित सुरइह लखि अनुरूपा । सूख खेत लगिघट घिरभूपा ॥
हँसही देवी जब मुनिराया । परहीं पानी बहु फल दाया ॥
सोमनु कृपा देहिं जग माता । भक्ति मुक्ति दायक विख्याता ॥
पावहिंफलतव अमर निकाया । पुनिपालहिंअगणितजगमाया ॥

दो० जयतिजयति जगदम्बजय जयतिजयतिजगरानि ।
नमोनमो श्रीचर्च्चिका जयति नमामि भवानि ॥

तोटकछन्द ॥

सृजपोष संहार सदाहु करी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
नितयेति गुणाश्रम भूतकरी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
अगुणादिभये वरतेज धरी । नम नारअयीणि सुदवि वरी ॥
दुखमें शरणागत राखहु हो । नम नारअयीणि सुमातहुहो ॥
जन पीर हरी दुतिशीलवरी । नम नारअयीणि सुमातवरी ॥
दुर्गे जगमाय महा सुंदरी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
सत धामिनि भूकर भार हरी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
सुकृपा करुणा सुक्षमा सुघरी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
तव रूपअनूप महा सुघरी ।नम नारअयीणि सुमातवरी ॥
दुर्गे जग रानि भवानि वरी । नम नारअयीणि सुमायवरी ॥
जय स्वामिनि देविहमार करी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
प्रभुनी जगनी सुमनी सुघरी । नम नारअयीणि सुमायवरी ॥
जय मालिनि पूरण अन्नधरी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥

जगमातु नमामि नमामि घरी । नम नारअयीणि सुदेविवरी ॥
सो० नारायणी नमामि जय जगदम्बासब बली ।
नितनित अन्तरजामि माय भवानी रक्ष सदा ॥
अगणित कजजग भानु वालप्रिया आनन धरी ।
जगत कुमुदनी भानु राकाशशि शुभप्रिया इव ॥
चौपाई ॥
हंसमयी सुविमान विराजी । तोय कमण्डल सीचनसाजी ॥
हे ब्रह्मानी देवि दायनी । नमो नमो नमो नारायणी ॥
माहेश्वरी रूप अपारा । शूल इन्दु भूषण अहिधारा ॥
वृषभ वाहनी अन्तरयामी । नारायणी नमामि नमामी ॥
मयूर वाहनि कुक्कुट सहिते । महाशक्तिधर हे अघरहिते ॥
हे कौमारी रूप अनूपा । नमामि नारायणी सुरूपा ॥
शंख चक्र गदा पद्म धारी । महा शस्त्र सब धारणकारी ॥
नारायणी विष्णु स्वरूपा । नमामि नारायणी अनूपा ॥
भयप्रद महा चक्रवर धारी । रविदशनपर अवनिनिकारी ॥
हेवाराही भय मय रूपा । नमामि नारायणी सुरूपा ॥
नारसिंहि भयानक रूपा । अगणित दानव हती अनूपा ॥
लोक तीनकर रक्षा दायनी । नमो नमो नमो नारायणी ॥
सीदहु द्रवहो पिघलहु रानी । श्रीश्री दुर्ग्गेसदा भवानी ॥
दुखदाहनि सुखअमितदायिनी । नमो नमामि जयनारायणी ॥
दो० मुकुटितधारिणि वज्रमहा दिव्यसहस शुभनैन ।
प्राण घातनी वृत्रखल नमो ऐन्द्रि मृदु वैन ॥
शिव दूती भलरूपले हती महासुर वैरि ।
भयद रूपनिनाद महा नम नारायणि टेरि ॥
सो० दशन भयद अतिरूप मुण्ड माल भूषितमहा ।
चामुण्डे सुअनूप चण्ड मुण्ड कहँ वधकरी ॥
महा कालि विकराल महा भयंकर देहधर ।

आनन महा विशाल नारायणी नमो नमो ॥

चौपाई ॥

भृधव स्वारथ सुर चतुराई। नमो नमोजय कहन सिराई ॥
ईषत ईषत विहँसत माई। सुमन कली मुक्तावलिभाई ॥
दशन निकर सोहहिं मुनिराई। रतीसार दाड़िम फटनाई ॥
मिस्सीमय पानन अरुणाई। चाहत दाड़िम फल पकनाई ॥
सन्मुख दोउदशन दरसाई। अविक जटित हाटकमयराई ॥
दशनप्रकाश अविकअतिसोहे। दोनिशिनाथ बीचि सुर मोहे ॥
उपमा बहुरि दशन करपांती। दशनतीश दोउड़गण भांती ॥
तिनमहँ सुन्दर सन्मुख दोऊ। दुइशशि अविक कलंकहुसोऊ ॥

दो० माहिगये शोभा लखत सुर सुरनी गणभूप।
हीरा स्वामिनि धन्यहो काहेनहिं अस रूप ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

कमला लज्जा महाविद्या श्रद्धा श्रीसुपावनी।
श्रीपुष्टिस्वधे स्वधे उपचय ध्रुवे स्थिरभावनी ॥
महारात्रि प्रलय स्वरूपबड़ सामर्थे बलदायनी।
महाविद्ये श्रीदुर्ग्गा माता नितनमो नारायणी ॥
जयमेधे धारणावतिबुद्धिहु वाकसरस्वतिसोहनी।
श्रेष्ठे भूति सत्वरज तमगुण प्रधाने श्रीमोहनी ॥
नियम स्वरूपे हे सामर्थे सीदहु दया दायनी।
जय श्रीदुर्ग्गे अम्बेमाते नमो नित नारायणी ॥

दो० तीगुण तत्वअनेक सब प्रकृति महा स्वभाव।
आदि आदिकर मूलनी शक्तिनि महानभाव ॥
विधिहरि शंकर आदिकर शक्तिनि महा सहाय।
जाबल सृजभव लयसदा होतजगत श्रीमाय ॥

लवाणीछन्द ॥

विश्वस्वरूपे सर्व्वव्यापनी सकलशक्तिधृतमाता।

द्योतनशीले दुर्ग्गे अगम्ये संकट विघ्नन त्राता॥
दुःख नाशनी विपदिकाटनी सीदहु अन्तरजामी।
त्राहि भयते पाहि श्री दुर्ग्गे नारायणी नमामी॥
चण्डिका श्रीकात्ययानी तीलोचन मुखमोहे।
वचावलोचन सोहम सबहीं अविकारा तेसोहे॥
सिंह वाहनी बाहुअठारनी नीलाम्बरी जामी।
जय श्री दुर्गे नमो चण्डिके नारायणी नमामी॥
दो० जगदम्बा श्रीमातुकर विश्वंभरी स्वरूप।
जगात्मे परमात्मे सोहत रूप अनूप॥

त्रिभंगीछन्द॥

जगजलधि सुन्दरी अचलमन्दरी कालकन्दरी जगमाता।
अगणितभवतरणीसुखसुखकरणीदुखदुखहननीफलदाता॥
भक्ति मुक्तिदाई जन मनभाई प्रभुनीमाई अनूपनी।
सबगुणआगरि सबगुणनागरि जगजगजागरि सुरूपनी॥
सत्यासंकलनी विषयविकलनी अघनअकलनी जगधरनी।
नितधर्म्मरोचनी पापमोचनी अन्तलोचनी सुखकरनी॥
वरगौर अंगिनी सर्व्वरंगनी सौम्यअंगिनी वपुधारी।
सुन्दर सुकुमारा कोमलसारा देहप्रसारा शुभकारी॥
दो० दुर्ग्गा दुर्ग्गे दुर्ग्गा श्री दुर्ग्गे दुर्ग्गा महान।
रसना रटदिन यामिनी दुर्ग्गे इह वरदान॥

चतुष्पदाछन्द॥

श्री कालीरूपा भद्र अनूपा कृष्णा वपुवलधारी।
कल्याण कारिनी शूलधारिनी शूलउग्र भयकारी॥
जोदनुज वरूथा नाशायूथा भयतेहमहिं बचावे।
असदुर्ग्गारानी सोगुणखानी नमननमन नितपावे॥
निजघंट शब्दते सकल जगतमें आपूर्णकर तेजा।
जो नाशनकारी जगदाधारी तव घंटावर भेजा॥

अघघनतेमाई हमहिंबचाई जननीहम सुतनाना।
श्रीमहानमाया करहोदाया तुमहिंनमन हमआना॥
चण्डिकाभवानीसुखमाखानी दनुजरुधिरजोमंजिता।
बहुकीचमिश्रितावरप्रकाशितासुन्दरकिरनज्वलिता॥
असखंगविराजे शोभासाजे शुभकारक सो होई।
हमसुरगणमाता रंगसुहाता नमो नमो अब सोई॥
तुष्टास्वरूपा प्रसन्नरूपा रोग नष्ट नितकारी।
रुष्टास्वरूपा कुपितारूपा प्रियबांछा लयकारी॥
तवआश्रयहिरहोआपतिनहिंसोभोगहिं सपनमझारा।
हेसबजनमाई आश्रयदाई नमोनमो नमस्कारा॥

दो० तव महिमानहिं सकहिंगा विधिहरिहर श्रुतिशेष।
कविकोविद बुध विबुधगण शारदवेद गणेश॥
तव प्रताप महिमा अमित अतुलित अकथ अपार।
अगम महाअति गोचनहिं सकल सारता सार॥

चौपाई॥

वानिकराज मिले भल अमरे। परे मातुकर वर वशितगरे॥
रोइरिझाइ सहज पिघलाई। लाये मातुहिं निज अरथाई॥
श्रम करिपारी निशिचर यूथा। एक एक मनु काल वरूथा॥
अबगावहिं सबनिज हितलागी। जयजय नमनम पाछीआगी॥
सुर स्वारथिन यही स्वभाई। रोवहिं गावहिं बालक नाई॥
कोमल पतंरीअति सुकुमारी। हीरास्वामिनि कस श्रमभारी॥
क्षणमहँ कीन्ही नहिंकछुजानी। हरे हरे मम मातु भवानी॥
भागहीन नहिंजप अस माता। लाहुअमरगणअतिविख्याता॥

दो० अतिसुन्दर कहँभूपभल दीठन कहुंलग जाइ।
सुर सुरनीगण मोहहीं जो जग एक कहाइ॥
यदिअसतोजगस्वामिनी तुरहो अन्तरध्यान।
निज अरथी सुर यूथहैं साधहिं काजअपान॥

सो० नमो नमो जग रूप जगम्भरी जग पूर्णा।
पालिनि विश्वा नूप दुर्ग्गे दलनी दुसहदुख॥

तोटकछन्द॥

जगखानिभवानि जुकीजयहो। दुर्ग्गेदहनी दुखकीजयहो॥
बहुदेवि मणीमुखनीजयहो। सृजनीकरनी हननी जयहो॥
अजनीहरिनी शिवनीजयहो। जननीसुमनी बलनीजयहो॥
सतशीलनि धीरनिकीजयहो। सुमहारण वीरनिकीजयहो॥
सुखसागरि नागरिकीजयहो। गुणधारिनिआगरिकीजयहो॥
तनते मनते धनते जयहो। हिततेचिततेक्रमते जयहो॥
तियलोचनिआयतकी जयहो। भुजआठ दशायतकीजयहो॥
वसनी रतनी सधृता जयहो। वरकंचुकिनी विजिताजयहो॥

दो० नमोनमोपरमात्मिनी नमोआत्मिनिरूप।
एकानेका केवला अमिता वेष अनूप॥

चौपाई॥

श्रीचण्डिके स्वात्म मूर्त्तिनी। श्रीदुर्ग्गे अनेक पूर्त्तिनी॥
ब्रह्माणी सब देहन आदी। विदितालक्षण आदिअनादी॥
महा दनुज बहु धर्म्म नशाहीं। तिनकर नाशकरन कोआहीं॥
नहिं काऊ श्री तुमहिं विहाई। नमो नमो श्री विजया माई॥
विद्या आदिक ज्ञानन्ह माहीं। मानव शास्त्रादि जे आहीं॥
दीप विवेक उप निषद आहीं। कर्म्म काण्ड वेदादिक ठाहीं॥
अमित महान्धकार संसारा। सब भ्रमहीं तव शक्तिअपारा॥
तुमहिंविना असको विख्याता। तुम कहँ जानहिं जेजग माता॥
तमजानहु निज आपन लीला। सत्य सार स्वाभावा शीला॥
सीदहु कमला कृष्णा श्यामा। रूपराशि गुणखानि ललामा॥

दो० क्षमाक्रांति सुज्योत्स्ना दयाकीर्तिमतिसत्य।
सन्ध्या रात्री सन्तती श्री ह्री निद्रा धृत्य॥
कृष्णा पिंगलाशक्तिनी कपिलाकालिकरालि।

यतवेदा श्री दीप्ति महा मायामोहनि शालि ॥
तुष्टा पुष्टा श्री जया विजया मह महिषारि।
कला कश्या सरस्वती सावित्री सौंदारि ॥
कुमरी कन्या रूपिनी ब्रह्म चारिनी माय।
जंभनि प्रिय संग्राम कर गायत्री श्री दाय ॥

चौपाई ॥

जयमहिषारिनिजयनिशुंभारिनि।जयनिशुंभारिनिजयबीजारिनि॥
जय जय मंगल दायिनि दाई। मंगल रूपिनि महान माई ॥
करहु रक्ष हम रहहीं जहँवा। सदा रक्षहो तुम रह तहँवा॥
जहां जहां तस्कर गण वासा। तहँतुम रक्षहु शोभ निवासा॥
उग्र भरित विष पन्नग ठांवा। वाच जगत तव रक्षा पावा॥
वन पावक बड़वानल जहँवा। सकलजगततवशरणहिंतहँवा॥
सरसरिता पुनिजलधिअगाहू। नौकादिक हित रक्षा लाहू॥
सदासकल सन्सार स्वामिनी। जगदाधारा जगत जामिनी॥
विश्वात्मिका तुमहिं नितगावा। धृतअगणितजगबहुतबनावा॥
अवनिप आज्ञा आवहिं आदी। शासनविपदि आदि सम्बादी॥
एक अनेक आदि दुख जेते। रक्षा करहु सकल मातेते॥
जयति जयति जयदुर्गे माता। नमो नमो अगजगविख्याता॥

दो० सिंहवाहनी देविनृप सुनिसुनि मन मुसकाय॥
तोष खानिनि मनहु महा सोही रूप बनाय॥
नमोनमो नित नेति श्री नमो नमो जगदम्ब॥
नमोनमो श्री आदिनी नमो नमो नित अम्ब॥

पंचचामरछन्द ॥

अजादि देव सेवजो। नमामि मा नमामिसो।
अजादि देवि ध्यानजो। नमामि हो नमामि सो॥
कृपा प्रदा क्षमा धरी। नमामि मा नमो हरी।
तिकाल कालनी सदा। नमो नमो नमो अदा॥

भक्ति मुक्ति प्रदा सदा । नमामि मा नमोऽदा ।
दशाठबाहु लम्बनी । नमो नमो नमो भखी ॥
तिनैन आयती महा । नमो नमो नमो इहां ।
विभूषनी सु सुन्दरी । नमामि लोक मन्दरी ॥
कपालकी विशालनी । नमामि काल कालनी ।
अपार रूप रूपनी । नमामि मा अनूपनी ॥
कटाक्षमां सदा भरी । नमो नमो नमोवरी ।
सुखी सदा दुखी नहीं । नमो नमो नमो अही ॥
सुदानदा दया करी । नमो नमो नमो हरी ॥
महा मया विमोहनी । नमामि मातु सोहनी ॥
सुकाल काल पालनी । नमो नमो सुवालनी ॥
किशोर वाम वेपनी । नमामि तीय भेपनी ॥
विसुन्दरी महा बनी । नमामि देवि सोमनी ॥
हरेहरे सुरूपिनी । नमो नमो अनूपनी ॥
प्रसीद सीद होभला । नमामि मा घनी कला ॥
द्रवो प्रसीद हो जहां । नमो नमो नमो तहां ॥
नमो प्रसीद सीदहो । नमो नमामि सीदहो ॥
नमो प्रसीद सीदहो । प्रसीद सीद सीदहो ॥

दो० सीदहु सीदहु मातु अब सीदहु अब श्री माय ॥
सीदहु सीदहु स्वामिनी सीदहु अब वरदाय ॥
पिघलहुसीदहुद्रवहुअब पिघलहु श्री श्रीअम्ब ॥
प्रसीदहो श्री देवि श्री सीदहु वर अवलम्ब ॥

चौपाई ॥

सीदहु दुर्गे सीदहु माता । सीदहु सीदहु अगजगत्राता ॥
प्रसन्न वदना सीदहु अम्बा । पिघलहु द्रवहु श्रीजगदम्बा ॥
सीदहु वरदायिनी भवानी । सीदहु सीदहु दुर्गे रानी ॥
वरदायक फलदायक जननी । करहु कृपासीदहुजगसुमनी ॥

कृपादृष्टि करहो श्री माया। सीदहु माता तोषनिकाया॥
होहु प्रसन्न प्रसन्ना रूपा। तापखानि तुष्टा स्वरूपा॥
सीदहु पियलहु द्रवहु भवानी। सीदहु सीदहु महानरानी॥
सीदहु सीदहु सीदहुत्राता। सीदहु सीदहु सीदहु माता॥
दो० पाहि पाहि श्री मातु श्री सीदहु वर फल दाय।
सीदहु हीरा स्वामिनी सीदहु हीरा माय॥

चौपाई॥

बनिक वसुपसुनि सुनिवरवानी। सारति नेह दीन रत सानी॥
होइ प्रसन्न देवि अति भारी। विहँसीअतिशयरहियनिहारी॥
विकसन आनन दशन सुहाई। अरुण पीत शशिराकानाई॥
चालन रसना अग्र विमोही। कृष्ण कलंक रेखसितसोही॥
फूल नासिका रन्ध्र सुहाये। मेघ टूक मनु शशि पहँ आये॥
मनमोहनि नथलटकनिचालन। पवनलगततिनकरघटटालन॥
चघि उतरन भ्रूराहु सुरूपा। चाहिंग्रसननिशिपाल अनूपा॥
अरुण डोर मदनैन घुमाई। मनहु सुदर्शन चक्र चलाई॥
अस निशिपति ते सुरसुरनारी। पाहिंसुधा इव फलवरभारी॥
गोरानन विहँसत सुंदराई। छाइ अति शय कमलललाई॥
बेंदी सुन्दर रेख कपाला। मनहु गगण गंगा भूपाला॥
उदय अस्त गिरिकर्ण कुण्डला। एकनहिं एक दिनपमण्डला॥
सो० अतिशय सीदी माय सिंह वाहनी देवि श्री।
शोभित देहबनाय तोषखानि कर वपुमहा॥
दो० दोइक बाहु उठाय कर वारिज सुन्दरराम।
सोसाक्षात अशीशदे शाखाकल्प झुकाय॥
नीतिविनीतसुनीतिमय कमलकलीझरलाय।
भाषी अम्बा देविवर सुधावरष वरदाय॥

चौपाई॥

सुनहु अनरगण हेसुरनारी। अहम्तुष्टअतिशयअतिभारी॥

अगणित अतुलितवरफलसबरे। मन बांछित जोयाचहु सगरे॥
वरदायकमैंदेवहु सुरगण। अगणितअतुलितअमितजगतजन॥
तिनकर हितफल फलकर राशू। सब देवहुं जो मांगहु आशू॥
पुनि शत शत फल चार सुहाये। भक्ति मुक्तिनितसबमनभाये॥
याचहु मांगहु जो मन आवे। देवहुं देवहुं मम मनभावे॥
धन्य धन्य नृप सुर बड़ भागी। असश्रमलेइ लेहिंफलमांगी॥
प्रसन्न वदना सोहत कैसे। दीपक गणमहँ उलकाजैसे॥
वारम्वार प्रकाश सुहाहीं। दामिनिदमकेउड़गणमाहीं॥
रूप राशि वपु रूप बनाई। सुन्दरतालखिजाहिलजाई॥

हरिगीतिकाछन्द॥

जाहि निरखि लाजत सुन्दरता मोह रूप विमोहही।
रूपराशिअतिशयमितछबिमित सुखमा अमितसोहही॥
सुनत मृदुल मधुरी श्री वाणी जय जयअमर बोलहीं।
सूखत खेत ढेरलगि कृषिगण चहिंजलघनजुखोलहीं॥
सो० इह महँ कछु न बड़ाइ चार पदारथ कोपनी।
सबकछुमिलतहि जाइ धनपतिअतुलितजहांरह॥

चौपाई॥

आनन खोलत दशन निहारी। मोहे सुरगण अपनबिसारी॥
देखत रचना चलनि मुड़ाई। अमरमोहकछुकहिनसिराई॥
अधरनयन अरु भृकुटीबिशाला। सबकटाक्ष मोहे महिपाला॥
सुनि देवी कर वानि अनूपा। सुरतिय सहहरषे सबभूपा॥
बोले कंज चरण शिरनाई। जयति जयति श्रीदुर्गें माई॥
जयति जयतिजयमातु भवानी। काहे सत्य न होवे वानी॥
हम सब सवकश्रीश्रीस्वामिनि। नातो नितइहअन्तरयामिनि॥
होवे देवहु भक्ति सुहानी। अविरल नवनव होयभवानी॥
जलज चरण तव प्रीति सुहाई। कबहुंन मिटवरुप्रलय महाई॥
पुनि सब विधिवरफलदातारी। याचहिं हम देवहु जगधारी॥

दो० वयस किशोरिइह मूरतिवसे हृदयनितअम्ब।
कमल चरणरज भक्तितवदेहु दयाजगदम्ब॥

चौपाई॥

एवमस्तु बोलीं श्री माई। राज तीन जगमनु सुर पाई॥
बोल विबुध गण पुनि वसुराई। अरु इह इह वर देवहु माई॥
अज हरि शिवआदिकसबदेवा।जपहिंतुमहिंनितकरिकरिसेवा॥
ते तव भक्ति नम्र हो जाहीं। पुनिते जगआश्रितहो आहीं॥
इन्ह ते होहु प्रसन्न भवानी। जगदीश्वरिअखिलेश्वरिरानी॥
शुंभादिक खल गणते जैसी। पोषी हमकहँ अम्बा कैसी॥
ऐसहिं क्षण क्षण रिपुते औरा। रक्षहु मातु सदा सब ठौरा॥
पुनि पुनि जबजबहो दुखभारा। पालहु पोषहु विश्वाधारा॥

दो० तीन लोकअघआदिकहँ काटहुविन श्रम वेग।
इह पलटकृतशुभसदा नितनिततुम्हरोनेग॥

चौपाई॥

उपद्रव आदि जनित अघपापा। हरहो मातु सदा विख्याता॥
जगदुख हरहो वन्दित माया। प्रणत लोकती करहोदाया॥
वर दायक होवहु वर दानी। सदा दाहनी रहहु भवानी॥
हे अखिलेश्वरि हा यह साधा। शान्ति होहिं तुमते बड़वाधा॥
शुंभदनुजइवनितनित बहुखल। नाशहु विनायासतुम जगबल॥
मित्र वियोग दरिद्रता भारी। चोर राज आदिक भयकारी॥
पावक पवन तोय भय आदी। महामारिपुनि आदि विवादी॥
तीन ताप बहु विपदि कहाई। मेटहु नित रक्षहो श्री माई॥

दो० अतिशय वयस किशोरनी कन्याकुंआरि सुवेष।
सुनत वयन लोकेश्वरी जाहि न जानत शेष॥

चौपाई॥

महाराजाधिराजनि रानी। महाराजनी सुखमा खानी॥
सरकारनि सब सुफलकाजनी। कहहुफलितगरीबनिवाजनी॥

जलथल नभ आदिकदुख जेते। आपदि विपदि अनेकन्हतेते॥
तवयश गावत नाशहिं माई। देहु दया करि अजादिदाई॥
कलियुगअघअगणितलघुराशी। तुम्हरो सुयश जानहोनाशी॥
सुत उत्सव विवाह व्यवहारा। एकअनेक सुफल जगकारा॥
सदा सर्वत्र नाम तव गावें। सब होफलितबहुत फललावें॥
लघुते विपुल काज हो जे ते। कीरति तव कर फल मयतेते॥

सो० पाथिपुराणकहाहिं धर्म्मआदिमतकाज जिमि।
जनगावतफलजाहिं जहँतहँतवशुभनामयश॥

दो० अन जन धन तनपुष्टता रुष्ट ताप शुभकाम।
ऋधिसिधिवैभवआदिसबपावहिंकहितवनाम॥
भक्तिमुक्तिपुनिचारशुभ पावहिंफलजगलोग।
जब जपहीं तवनामयश जसजसपर संयोग॥

चौपाई॥

पुनिहरिचखुनितवासिनिमाता। शिवहियवासिनिसुरविख्याता॥
जे वरहमनहिं जानहिं कमला। देहुदयाकरिसबनितविमला॥
चपल लोचनी ओंठ चलानी। नासिकसुरकनिगालफुलानी॥
भृकुटि चघानी रसना चलना। भाषणमृदुनी वाहु विचलना॥
कटाक्ष मोहनि कह जगमाई। गलि खेत चह ककुजलल्लाई॥
कह कह कटाक्ष वरद रसाई। लखिलखिमोहहिंसुरसमुदाई॥
जयति जयति सुकुमारराजनी। भक्त रूप गोदास निवाजनी॥
जेनजपहिं असश्यामामालिनि। लोलचारदशकरनितपालिनि॥
विनकारण उपकारिनि नित्या। कारुणिकाअखिला वरसत्या॥
होरास्वामिनि प्रभुनी माता। ते करहीं अघ इहां न बाता॥

दो० श्री दुर्गा अति सोदिता भाषत चंचल नैन।
सुन्दर मृदु मंजुल बहुत बहुत मनोहर बैन॥
भाषणजगत निवासिनीझरत सुधा सतफूल।
कर कटाक्ष समुझाइ करि देवी हो अनुकूल॥

सो॰ पियहिंसुधामनमाहिं सुरसुरतियसुनिदेविवच।
वाणी संशयनाहिं सत्य सत्यजसहोव नित॥

चौपाई॥

श्री दुर्गा चण्डिका भवानी। कह सुरगण सुनहो ममवानी॥
तथा अस्तु तुम चाहहु जेते। निस्संदेह होहिं नित तेते॥
जबहिं चार युग बीतत जाहीं। रचना रची भांति इह आहीं॥
तब तब शुंभ निशुंभ सुरारी। उपजहिं मारहुंतिनहिं खलारी॥
वैवस्वत अट्ठाइस वारा। मनु होवहिं रचना सन्सारा॥
प्रथम भांति चारहु युग माहीं। उपजहिं दानव एक इकाहीं॥
तस तस तिनकहँ हनिहों आई। कभु ममशक्ति सहित हरिपाई॥
इतमहँ तहँमुनि सुरथ नृपाला। बोल उठ मुंनि सन ताकाला॥

दो॰ मेधस मुनि वर कहहु भल कस युग कस अवतार।
कस दानव कस वधितभय शक्ति विविध सुप्रकार॥

चौपाई॥

भूप समाधि कथा बहुतेरी। कल्प कल्प रचना वरहेरी॥
जस संयोग बने ताकाला। यद्यपि सार अर्थइक हाला॥
कल्प एक श्री शक्ति विचारा। श्रीहरि भुजमहँ बल विस्तारा॥
जीतन शक्तिहिं नाम धराई। जयअरुविजय जुजगतकहाई॥
दोउ नाम वैकुंठ मझारी। द्वारपाल तन पाये भारी॥
निदरत सनकआदि मुनिराई। दानव तन पाये ते आई॥
कनकनयनअरुहिरनकशिपुपुनि। वाराहीं नारसिंही शक्तितिन॥
आदिशक्ति सोबल मयश्रीहरि। मारीतिनकहँअतुलितबलभरि॥

दो॰ ऐसहिं विधि विधि भेदते उपजहिं एक अनेक।
शक्ति कहिय वा बल कहहु भाल परहिं सो एक॥
सोई शक्ति श्री मातु है सोइ विष्णु बल नाम।
सत महँ कारण शक्ति रह वेद भाष अंस काम॥

चौपाई॥

वयस किशोरनि शक्तिभवानी। बोलत जाहिं नीति मृदुवानी॥
इकइक शब्द निकर अनमोले। मुक्तावलि शुभ सुन्दर बोले॥
उच्चारण अक्षर इक एका। अविक कनी माला बहुतेका॥
बोलत बोलत जीभ चलावे। ओंठ कपोल माहिं दरसावे॥
तनकर चालन फूलन भूपा। लागत सुन्दर बहुत अनूपा॥
नाक कान मुक्तामय भूषण। डोलत जाहिं मारमद दूषण॥
लचकत कटि फूलहियकन्धा। निरखत सुरहियहोवहिं अन्धा॥
चापहिं चरण कमल सुरनारी। मानहिं भाग महा निज सारी॥

दो० हेवर सुरगण अमरतिय सुनहु सदा असतार।
कल्प कल्प पुनि युगहिं युग होवे शक्ति विस्तार॥

चौपाई॥

येदो दैत्य होहिं इककाला। रावण कुंभकरण विकराला॥
हरिबल दरस राम अवतारा। सोबलसोय शक्ति ममधारा॥
शक्तिप्रभाव मरहिं खल दोऊ। असहरिबल तहँ दरसहिं सोऊ॥
कंसपाल शिशु पुनि इकवारा। होवहिं ते दो दनुज करारा॥
नंद गोप यशुमति ताबारा। होवहुं तिन तनया बल धारा॥
वसुदेव देवकी हरि पाहीं। तिनकर सुतहिशक्तिममआहीं॥
मारहिंखलकहँ विदितप्रभावा। विविधविविधविधिवेदन्हगावा॥
यशुमति गर्भ लेहुं अवतारा। विंध्यवासिनी नाम पसारा॥
उग्र भयंकर कुलते दोऊ। उपजहिं बहुत दनुजपुनिसोऊ॥
भक्षहुं तिनकहँ मारहुं तिनहीं। सुरपुर पठवहु दे गति पुनिहीं॥

दो० पुनि मारहुं तिन दनुज कहँ जब जब अवसर आव।
अमर असुर रिपु विविधसुर सुनहु सुनहु बलभाव॥

सो० अस दनुजन्ह ते भूप कोटि कोटि गुण उपजहीं।
शुंभ निशुंभ कुरूप कोटि कोटि गुण बल सहित॥
सो कौतुक लगि आइ ठानत समर स्वरूपधरि।

आदि शक्ति श्री माइ सर्व्व व्यापनी शक्ति मय॥

चौपाई॥

विप्र चित्तिकुल दानव उपजहीं। बहुत भयंकर वपु धरि तबहीं॥
धरणी तल लेवहुं अवतारा। बधित करहुंतिन असुरकरारा॥
भक्षण दाड़िम सुमन समाना। लोहितवरण दशन मम जाना॥
तब सुर पुर महँ तुम सुर नाना। मृत्युलोक महँ मनुज जहाना॥
रक्त दन्तिका शुभ मम नामा। धरहिं करहीं स्तुति परिणामा॥
अमर वरषशतलगि परिणामा। महि नहिं होवेंजल वरसाना॥
सुरमुनिकरहिं स्तुतितबतबहीं। स्वयम् रूप अंशहिं जबजबहीं॥
करिहौं वरषा वसुधा माहीं। अत्यानन्द सकल जन पाहीं॥

दो० मेघ रूप मम अंश है शक्ति ऐन्द्रिय सोइ।
मम दरशन शत नयन इव नाम शताक्षिनि होइ॥
मेघ रूप मम शक्ति भर जो वरसत जगपाल।
सुखद फलद सब भांति ते इहहो नित नित काल॥

चौपाई॥

पुनि होवहिं फल फूल घनेरे। उपजहिं अन्नादिक बहुतेरे॥
शाकनादि ते पोषहुं प्राणी। नाम शाकंभरी वरदानी॥
एक कल्प अति काल कराला। दुर्ग दनुजहोविकट विशाला॥
विधि आदिक धक धकही जाते। अमित अपार होय दुख ताते॥
अहम् आदि श्री शक्ति भवानी। वयसकिशोरनि तियवपुरानी॥
वधित करहुं ताकहँ ताठामा। ममहो दुर्गा देवी नामा॥
सो नाम काल ती युग चारी। लोक चार दश विदित प्रसारी॥
सोइ शक्ति प्रसिद्ध विख्याता। दुःख हरन मंगल नित दाता॥
जपहिंजाहिअजहरि शिवदेवा। शारद शेष गणेश ससेवा॥
अगणित जीव चराचर माहीं। रमरह भजहिं सोइ मनमाहीं॥
जावल हरि श्री ब्रह्म कहावें। हीरास्वामिनि सो नित भावे॥
नृपबोले सुर तियसह तबहीं। जयजय सत्य सत्य श्री अबहीं॥

सो० हीरा स्वामिनि नाम हीरा कहत पुकारि के।
भक्ति मुक्ति वर धाम सो श्री दुर्ग्गा होय संत॥
दो० जैमिनि सोई शक्तिइह रमी विष्णुता माहिं।
जाबलविष्णु सकलबली कारण काज कहाहिं॥
नृप यदि दुर्ग्गा नामअस आवाती जग माहिं।
तदपिनामइहनितहिंनित आदिशक्तिकरआहि॥
सो नहिं आवत गममहीं दुर्ग्गदुःख जो नाश।
बहुतहु अर्थ जतावहीं जस जस काज प्रकाश॥

चौपाई॥

एकवार पुनि गणहिं अनेका। दनुज सतावहिं इकते एका॥
हिमगिरि भीम रूपतन धारी। भक्षहुं रक्षहुं मुनि अमरारी॥
नम्री भूत तब सुर मुनि होवें। स्तुति बहुतकरि मो कहँजोवें॥
भीमा देवी तबहिंकहाऊं। विदित नाम बहुप्रभाप्रभाऊ॥
दुष्ट दुरात्मन् दानव अरुणा। उपजहिं जाते विपदिअवरणा॥
जाकर वाध लोक तिहु माहीं। एकहु ठौर राख जोनाहीं॥
हों धरि हैं तब अगणअनूपा। षष्टपदी भ्रामर तन रूपा॥
महादनुज कहँपुनितबवधिहैं। सब लोकन्हकर रक्षासधिहैं॥
तब सुर नरमुनिनितसबठौरा। धरहिं नाम भ्रामरिता औरा॥
ऐसहिं सुरगण ममरुवभावा। रक्षा महँ दरसहिं नित आवा॥

दो० पुनितुम जानहु अमरगण हरिकर शुभअवतार।
बीस चार जे विदित सब पुनि अगणित बहुवार॥
सब मम शक्ति सुअंशहैं शक्तिमयी अवतार।
शक्ति सहित पुनि रूप हैं नित मम असविस्तार॥

चौपाई॥

सुरथवनिकसोचहु भल भांती। शक्तिरहितनहिंकछु मनआती॥
चरअरु अचर सकलवलमाहीं। बलबिन कतहुं लेश लवनाहीं॥
असबल होवत हरि पहँलाई। समझहु सो बलमय बलमाई॥

पुनि बोली श्रीकरुणा धामा। जिनकर रक्षण निजसबकामा॥
जबजबअगणितलोकन्हमाहीं। दुष्ट दनुज बहु होवत जाहीं॥
तबतब धरिधरि बहु अवतारा। अंश पूर जसहो विस्तारा॥
तिनकहँ वधिसबरक्षाकरिहौं। रिपुगणनाशिविपदिनितहरिहौं॥
अमित अपार महासुख लाऊं। योग परे कालहु दरसाऊं॥
सुर गण तुमन भेवमन माहीं। बल विख्यात शक्तिनितआहीं॥
इह महँ संशयनहिं कछुमाहीं। सुरक्षा मम स्वभाव कहाहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

स्वभाव मम सुर क्षण कहावहिं श्री दुर्गा कहावहूं।
आदि अनादिनी शक्ति मूला ज्योति महँ दरसावहूं॥
दुर्गा कहत दहत दारुणदुख जातकट भव जालहूं।
भक्ति मुक्तिगति परमदायका दास हीरा पालहूं॥

सो० नहिं बड़ा तव नाम हे देवी इह सत्यहो।
सत्यकि मिथ्या जाम संशयनहिंअससत्यहैं॥

दो० पुनिसुनहोममअमरगण तियसहपावहुसत्य।
भक्तिचरणरजमुक्ति प्रदा अबिरलशुभनितनित्य॥

चौपाई॥

जयतिजयतिसुरकहहिंबहोरी। सत्य सत्यकरिप्रीतिनथोरी॥
सुने सुधा शुभ वच परिनामा। फोकट महँनहिं कौड़ीदामा॥
सो नर कसहो दूसरि बाता। मातुस्वभाव सदा विख्याता॥
विनि हित उपकारिनी भवानी। रविढिगकहुकसतमननशानी॥
पुनि पाये पद भक्ति बहोरी। जाकर बहुजग भूखन थोरी॥
अहो भाग्य सुरसह तियकैसे। पाये दीन कल्प तरु जैसे॥
भगवति शोभा सुन्दरताई। छबि आभा सुखमा अनुपाई॥
लोकहिं पीवहिं विबुध वरूथा। अमित प्रतापप्रदा फल यूथा॥

दो० भगवति जगवति पूज्यवति माननीय महरानि।
विश्व रूपनी आदिनी श्री अम्बिका भवानि॥

चौपाई ॥

सोहत दुर्ग्गा सिंह वाहनी । ती अक्षी शुभ वाहु अठारनी ॥
वसन दिव्य नीलाम्बर धारी । वहु आभूषण युत सम्बारी ॥
सुन्दर आयुध सब कर सोहैं । देखत सुरमुनि मनअति मोहैं ॥
शशिवदना किमिजाय बखानी । रूप शील सुन्दरी भवानी ॥
विधिविधिशुभकटाक्षकरसाजी । धारी सुरगण हृदय विराजी ॥
सो न बड़ाई वानिकराई । दुर्ग्गा विदित प्रताप सुभाई ॥
जो सुन्दरता नित मन मानी । उपजावतिजस जो जियठानी ॥
अस माया कहँ भजहु नृपाला । रूप राशि भव मूल विशाला ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

रूप राशि अति विदित विशाला जपिय नित मनभावनी ।
अम्बिका चण्डिका श्री दुर्ग्गा अगणित जगत पावनी ॥
भजहु स्वामिनिहिं तीलोक कर संशय अतन आनहू ।
सोच विचार मन लोक देखो शक्ति रहित न जानहू ॥

दो० दुःखहरन अवतार सुनि मिलित शक्ति अवलम्ब ।
बोले सुरगण जोरिकर जयति जयतिजय अम्ब ॥
तव पद राकावालशशि नभसरि मनु रज राज ।
देवहु सोरज दिवस निशि हमरे मस्तक साज ॥

चौपाई ॥

पद रज दरसत रसना फोरा । रगड़हु हमरे मस्तक ठौरा ॥
जाते जिह्वा भल होजावे । चरणहिँ दुःख कछुहोवनपावे ॥
नहिँ तर पोछन देहु भवानी । पदरजसबरो पोछनि आनी ॥
सो पोछनि हीरा कर भाला । जाते बपुरा तर तुर काला ॥
नहिं तर चाटहिँ सबहिँ भवानी । घुटकहिं अमृत शाकर जानी ॥
यदि पद होवे जूठो माया । धावहिं पद रत जलवरदाया ॥
नहिं तर धोवन देवहु अम्बा । सोसोपीवहिं हियअवलम्बा ॥
कस होवे नहिं अस मुनि राई । हीरास्वामिनि तिहिइह दाई ॥

दो० जो कछु मांगिय थोर सब श्री दुर्ग्गे जगदम्ब।
भक्तिचरण रज तव सदा सबविधिसीमा अम्ब॥

चौपाई॥

जयति जयति जयमहाराजनी। दास सुखद गरीबनिवाजनी॥
भाव प्रताप महा भव भारी। जयतिमहात्म्य मंगल कारी॥
अज आदिक श्री शक्ति अपारा। सहायका जय जगदाधारा॥
हरि चखु औषधि रूप बनाई। शिवमन बसी सदा सुखदाई॥
चोदहु लोक लीक तव जागे। विनायास पद रज अनुरागे॥
पावहिं तुमहिं न वार लगाई। जयति जयति जय दुर्ग्गमाई॥
सो जननी वपु दया सुहाई। दोन्हीभक्ति हमहिं अतिभाई॥
हमरो नेम सदा जय बानी। यद्यपि विजया देह भवानी॥

लवायीछन्द॥

देह भवानी यद्यपि विजया जय मय सदा वपु धरी।
तनमन हितचित क्रमवचतेहम नमहिंनमहींसुखकरी॥
जय मुकुन्दनी नन्दनी सदा कन्दनी सुख चन्दनी।
निकन्दनी दुख बिपदि जगतकर तारनी जगफन्दनी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

जयजयहरिचखु शिवहिय वासनिआदिनिजोतिभावनी।
कमला गिरिजामानस हंसिनीशशि चकोर सुरावनी॥
जयति मालिनी प्रलय घालिनी कालमहान कालनी।
सत्यधर्म्म पुण्यादिक सुकृतन्ह सहजसत्यापालनी॥
अपार भार जग धार धारिनि दुष्टखलादि पारनी।
शुभ शुभ आयुध सहित हतहु तिन सुरपुर देइ तारनी॥
जयति जयति श्यामा सरकारा धरावापुशुभकामिनी।
सदादाहनी जय श्रीदुर्ग्गे इह गायक स्वामिनी॥

दो० जयति जयति जग रूपिनी अनूपिनी भवभेष।
तियसह हम साधीनता नमहीं सदा अशेष॥
दया सहित लेवहु विनय रखहु कृपा नितरानि।
रतहमार तवचरण रज तजेन कबहुं भवानि॥

चौपाई॥

भूपअघाये सुर गण कैसे। जन्म तृषितअमृत पी जैसे॥
पीये गरलगि सुधा हु सोऊ। इन कर भाग कहेहैं कोऊ॥
इतनो भये महिप सुनहो अब। महा समर पूरणभाजबतब॥
दुई चार रजनीचर जे जे। कटक न आये रहे सहे ते॥
इच्छा मातु रसातल माहीं। गमनेजाते खल पुनि आहीं॥
होवत स्तुति जानिमनमाहीं। मन जगमाता अन्तर जाहीं॥
बोले कपटी सुर गण नाना। देवी महात्म्य सुनहीं काना॥
धन्यबनिकअमरन्हनहिं लाजा।जयजयकरिसाधहिंनिजकाजा॥

लवायीछन्द॥

जयजय करि निजकाज साधहीं पावहिं भक्ति श्रीकरी।
कोअस भाग राखती पुर महँ जस ये भूप इह धरी॥
कारुणिका श्री कृपा कारिनी देखहिं वहु मन भरी।
दीन्हे श्रम मातुहिं नहिं थोरा तौहु खट खट है परी॥
सो अस माय भजहिं नहिं जेनर कुलइष्ट देवी करी।
तिनसमान नर अभागि नाहीं भक्ति मुक्ति माय भरी॥
वासर यामिनि साँसहिं हीरा दुर्ग्गहिं रटियरतभरी।
असन होय कहुं श्वासह जावे न जाने कौने घरी॥

दो० दुर्ग्गे दुर्ग्गे दुर्ग्ग महा दुर्ग्गे दुर्ग्गभवानि।
जीभखियावे नाहिं बदमनसनदुर्ग्गा रानि॥
दुर्ग्गादुर्ग्गार्तिनाशनी देवहिं करफलचार।
इह महँसंशयकबहुं नहिं देवीभावअपार॥

सो० दुर्ग्गे सदा सदाहिं बसे शारदा देहु बर।
हीरा रसना माहिं दुर्ग्गा दुर्ग्गे जो रटे॥
यहहोवे असमाय तन मन आवे बलहु तव।
भक्तिचरणरज पाय हीरालाल दास सदा॥

इतिहीरालालकृत श्री दुर्ग्गायणःसप्तमकाण्डःसमाप्तः॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायश ॥

हीरालालकृत ॥

नवखण्ड ॥

अष्टमकाण्ड ॥

दो० मातु कृपा पुनि वाहु बल मातु महातम भाव ।
वरनहुंकछुविधिभक्तहित यदिनिजजातिनआव ॥
मातुमहात्म्य सकलविधि नितफल चारहु देत ।
जन्म जन्म देवी कृपा सुख सुरक्ष जन हेत ॥

चौपाई ॥

स्तुति पूरतहिं ला मन माहीं । गतअन्तर जननी नहिंजाहीं ॥
कहन लगे सुरगणपुनि भूपा । देवि महात्म्य सुनहिं अनूपा ॥
को अस भाग बली नृप राखे । जिनसन्मुख निजजननिभाषे ॥
वार वार पूजा मख आदी । सुर करहीं भाषहिं नितवादी ॥
अधिकानन्द बढ़ाइ न थोरी । बोलहिं फलप्रद स्तुतिबहोरी ॥
जय जय देवी सत्य सिन्धुनी । जयतिजयति जयदीनबन्धुनी ॥
महारानि गुणखानि भवानी । सदा एकरस अगम अवानी ॥
आदिज्योतिनितसत्यधामिनी । रूप कमा शुभ वेष कामिनी ॥

दो० रोम रोम अगणित जगत वपु विराटतवआहिं ।
अखण्डिका परिमाणनहिं पुनि अस रूपकहाहिं ॥

सो० भोरा भारीमाय आवत सुरगण बात महँ ।

यद्यपि नानतजाय तदपिभली निजभक्तवश ॥

चौपाई ॥

स्वारथ रत सुरगण चण्डाला । कंठ परे फोकट कत काला ॥
हरे हरे श्रम कीन्ह कि थोरा । महा महा रजनीचर घोरा ॥
क्षण महँ मारी विजया रानी । परो महाश्रम यदपि नजानी ॥
तौहू महँ पिचकाट बहोरी । लगावहीं सुर यूथन थोरी ॥
श्रम मय सोहरूप जग नटनीं । सुन्दर भेष मार मद कटनी ॥
बोलत बोलत सोह भवानी । पीतानन कछु अरुण लखानी ॥
कन कन सोहत स्वेद सुहाये । वालिराक पति उड़न्ह जड़ाये ॥
मनहु शुक्र शुभ टीककपाला । सोहत जड़ा इन्दु अस भाला ॥
पुनिअसशशि कस उपमाभारी । नभ गंगा दो बेंदि किनारी ॥
डोलहिं कुण्डल दो ध्रुव माना । बहुत प्रकाश भरे अस ठाना ॥
मुकुट शिखासब आदि सुहाये । केतुचार दुइ शशि लपटाये ॥
यदि इह उपमाअशिवलिखावे । किन्तु मातु वपु शिवदकहावे ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

किन्तु देवि वपु शिव फलदायकअमित विपदि निवारनी ।
मानत ध्यावत सुमिरत दरशत चार फल दे तारनी ॥
हरि हर आदिक जो फल देवहिं तप आदिक करावहीं ।
सो फल क्षणहिं देत श्री जननी सुमिरतहिं फल लावहीं ॥
सो० दानी महा भवानि दान करत फल चार नित ।
महारानि अधिरानि दास निवाजिनि पालनी ॥

चौपाई ॥

मृद्वंगी तन्वंगी माई । पातर कोमल देह बनाई ॥
अति अनूप सुकुमार सुहाई । कटाक्ष मय प्रति अंग भराई ॥
भूषण बहुत सुदेह सजाई । यदपि भार पद माहुर पाई ॥
रगड़ देह नीलाम्बर पाई । लगतपवन यदि तनगड़जाई ॥
माहुर निन्दक पद तरु वाई । उठत फफोला पवन लगाई ॥

शीतलमन्द पवन चल नाई। कोमल अंगहु कांपत जाई॥
इन्दु जोति कर लाग कड़ाई। मनु पिघलतघृत दिनपघमाई॥
अस जननीकिथोरश्रमकीन्ही। मारीअगणितदलगति दीन्ही॥
जे भट लरहिं कालसननिडरे। जिनहिं डरहिं हरिहरअसबपुरे॥
सो माकर बिन श्रम सुरसारा। बिना काम पुनि भय गरहारा॥

दो० ग्रीवा भूषण गस रहे मुक्ता जटित बनाय।
सुन्दर आसन सोहसो मुख राकेश बिठाय॥
भूषण ऊपर कण्ठ महँ पान पीक दरशाय।
अस कोमलता दरसहींमनहुलालमणि भाय॥
नाक लागत सोमणिते तुर सुगन्ध बहु आय।
लायचिलवांगआदिकरअस कोमल श्रीमाय॥

चौपाई॥

अस सुकुमारी कोमल नाजनि। वज्रसमान कोमलतालाजनि॥
जयजयकरि सुरगण असहाला। तजहिं न संग देवि जंजाला॥
सो सुकुमारि कि देवि भवानी। अगणितलोक धरीकणजानी॥
जो ईषत निज भृकुटि भंवाई। नाशत अगणित कालनवाई॥
सो का कोमल आदिनि माया। परनहिं सोहत असतनराया॥
जयजयनमनमतजहिंनसुरगण। सुनहिंमहात्म्यश्रीमुखनिजमन
पूरि स्तुति बोले सब देवा। मातु न जानहिं हमतव सेवा॥
चाहिं सुनन श्री मुख फलदाई। देवि महात्म्य प्रगट सदाई॥

दो० यद्यपि जानहिं मातुसब प्रगट महात्म्य आहिं।
तदपिमहामाया कछुक सुनन प्रभुनि मुखचाहिं॥
सो० सत्य धामिनी मान सत्या नित्या देविवर।
दुःखनाशनी जान श्रीश्री दुर्ग्गहिं भजहुनित॥

चौपाई॥

वसुप वनिक कह मावलि माई। मंजुल वानी विमल सुहाई॥
जा कछु कहहु देव गण नाना। संशय रहित सुरेख पषाना॥

जानहु मानहु महातमाई। फलद चार नित लेवहु आई॥
विनु कारण उपकार पराई। करिहौं मानहु महातमाई॥
धन्य धन्य जननी अस कोहै। सत्य सत्य बोले सुर सोहै॥
मधुकैटभ महिषादिक वीरा। शुंभनिशुंभ आदि बल धीरा॥
कटक सहित जस तिनमें मारी। कौतुक समर एक इककारी॥
स्तुतिविविधिविधितुमसबकीन्हीसतममगुणशुभदरसतचीन्ही॥
दो० इहसब चरित सनेह रत जे नर करि चित एक।
या विधि गावहिं सुनहिं कह सेवा लाइ अनेक॥
तिनकर बाधा विपदि दुख टारहु संशय नाहिं।
तिनढिग आवहिं नितहिंनित सुखसम्पदा सराहिं॥
चौपाई॥
जगदश चार मास प्रतिसर्व्वा। अष्टमिनवमि चतुर्दशि पर्व्वा॥
जे जन स्थिर चित्त करि देवा। समरचरित गावहिंकरिसेवा॥
स्तुवहिं ताविधि पूजहिं मोही। मन वांछितफल पावहिंसोही॥
जेजन ममहात्म्य विधिनाना। पढ़हीं सुनहीं सहित समाना॥
तिनकहँ किंचित पाप न आहीं। खगपतिजानि भुजंग पराहीं॥
दरिद्रता पुनि क्षणमहँ जाहीं। लखतभानुजिमितिमिरनशाहीं॥
पापज आपति बेग नशाहीं। ग्रीषम काल तोय सरनाहीं॥
मित्र वियोग जाय क्षणमाहीं। जिमि पापी न भक्ति लपटाहीं॥
दो० जा गृह देश वस्वादिसुर होत महातम मान।
पुनि ममपूजा पाठ शुभ जहां तहां मम थान॥
सो० धन्यधन्य नरपाल बांझ न पर नहिं दामलग।
विनायास कटजाल होवहिं देवी स्वामिनी॥
चौपाई॥
बलि आदिक पूजादिक जेते। देवि देवता मख सब तेते॥
पुत्र जन्म विवाह जग माहीं। महा महा उत्सव जे आहीं॥
सकल ठाम मम चरित पुनीता। सुनहीं पढ़हीं सुजन विनीता॥

उचितबहुतविधि सुरइहकाजा। तीनलोक युगचार विराजा॥
याते विघ्न अनेक पराहीं। सिंह जानि पशु मनुज डराहीं॥
बलि पूजा मख आदिक नाना। ज्ञानी जन होय यदि अज्ञाना॥
जस जस कररत नीतिप्रकारा। करिहौं करिहौं अंगीकारा॥
फल प्रद भाष भाष जगमाई। वसुधव विविधि सुनहिं हरषाई॥

॥ दो० सत्य भूप पुनि सत्य अति सुनहु गुप्त शुभ बात।
तीन लोक युग चार नित दुर्ग्गोत्सव नवरात॥
विदित फलद शुभचार कर पुनि दुख एका एक।
नाशक दायक क्षणहिं क्षण सुख सम्पदा अनेक॥

चौपाई॥

देवी उत्सव बहुत बखाना। फल दायक तरुवर इवनाना॥
तिन महँ दुर्ग्गा उत्सव भूपा। कल्पवृक्ष इव फलद अनूपा॥
सो उत्सव कस जाय बखानी। सुरमुनि याचहिंकरहिं समानी॥
अमित अपार अतुल दुखनाशे। अमित अपार अतुलसुख जासे॥
अगणित कष्टविघ्न विधि जेते। क्षणहिं विनशहीं अनिष्ट तेते॥
इह उत्सव शुभ वेदन्ह गाई। विदित लोक तीकाल सदाई॥
उत्सव प्रीतिसहित यदिराजा। तासम हरष न एकहु काजा॥
महिमा उत्सव सकहिंन गाई। विधिहरिहरअहिपतिगणराई॥
पुनि शारद नहिं सकहीं गाई। सो कस होवहिं मोसन भाई॥
मृदु वयनी बोली सुर यूथा। सुनहु करहु प्रचार वरूथा॥

दो० भुवन चार दशचार युग तीनकाल जे कार।
नितनितहोवे चरितइह प्रतिवरसहिंदुइबार॥
चैत्र आश्विन शुक्लपख प्रथमा ते नवरात।
याहूमहँपुनिअतिविदित सुखप्रदपरपखजात॥

चौपाई॥

बोल उठे पुनि वनिक नरेशा। मेधस मुनिवर का उपदेशा॥
आश्विनि चैतहिं का कससाला। जिनकहँसुखदेउत्सवकाला॥

सुनहु सुरथ इहमहँ अस आहीं। लखहुविचार ज्ञानचखुमाहीं॥
एक एक ऋतु जग निरमाई। मासदोउतिन माहिं सुहाई॥
शीत नघाम न बहु इह काला। सदासुखद बहु वसुधापाला॥
नवनव अन्न धरणि महँ आहीं। नवनवपुष्प फलन्हदरसाहीं॥
सब प्रकार बह सदा समीरा। ग्रीषमनहिंनहिं जाड़ अधीरा॥
मन आनन्द रहत नित लोगा। सबविधिनवतापरतसँयोगा॥

दो॰ अमित सुखद सोकालहै सबविधि वनिकन्तपाल।
प्रेमानन्द न जाय कहि जो उपजत ता काल॥
पुनि दोऊ महँ बहु सुखद आश्विन पख नवरात।
रवि आदिक सब लोक जग होत महानँद बात॥

चौपाई॥

सुनहु यूथ सुर मासन्ह माहीं। मम उत्सव होवे जन पाहीं॥
सुन्दर मम थापना बनावे। मम पूजा बहु भांति सजावे॥
नाना मंगल उत्सव नाना। वलिमखआदिसाजसुखठाना॥
मम महात्म्य पठ पाठ करावे। तनमन हितचितसुने सुनावे॥
नितनित नेम करे अस प्राणी। ताकर वश मैं तुष्ठा जानी॥
मम रक्षण कर ताकर वासा। नितहो ममता हृदयनिवासा॥
देवहुं ताकहँ शुभ फल चारा। देवहुं गतिप्रद भक्तिहुधारा॥
भवनिधितरि यदि मुक्तिहुपाहीं। सोप्राणी मम धाम सिधाहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

धाम सिधाहीं सो शुभप्राणी भक्ति मुक्तिहु पावहीं।
सुरनर मुनिसब जालगि नितनितद्वार याचतआवहीं॥
मानहु विबुध सो सत्य यहीहै भक्ति रति मैं देखिहैं।
सो ममदास ताकि मैं स्वामिनि दास हीरा लेखिहैं॥

सो॰ दुर्गे हो इह सत्य यदि मम अघतन योगनहिं।
चाहुं शरण तव नित्य सो त्यागि मैं जाहुं कहां॥

दो॰ दुर्गा उत्सव विदित जग तीनकाल नितहोय।

॥ हरिहर पदवी तुच्छकरि करहु मोद मनसोय ॥

॥ चौपाई ॥

असप्राणीकहँ सुरसुरतियगण । राखहुंशरणसदाढिगनिजमन॥
बाधा छूटि पाव धन धाना । पावे सुत आदिक सुखनाना ॥
झूमहिं सबसुख ताकर गेहा । रोगरहित सबनिर्म्मल देहा ॥
जेनर मम कौतुक पढ़ि सुनहीं । शुभकारकउत्पतिलहतिनहीं ॥
महा पराक्रम सो बल पावे । रणमहँ निर्भय जीत कमावे ॥
रिपुनाश कल्याण उपजाई । पुनिहोय कुलकुटुम्ब बढ़ाई ॥
यद्यपि काज शान्त नहिं आई । दुष्ट कुसपन होय दरसाई ॥
दारुण उग्र ग्रहन्ह करपीरा । सब माहात्म्य हरे अधीरा ॥
मोम रजनिचर प्रेत पिशाचा । अग्नि महातम पावहिं आचा ॥
तीन ताप तम रोग कुनाना । जावहिं भानु महातम जाना ॥
सुनिये पढ़िये अस दुख माहीं । संकटसब क्षणमाहिं नशाहीं ॥
सुर मुनि सुनहु महातम धारू । करहुस्नान जगतनिधितारू ॥

॥ हरिगीतिकाछन्द ॥

॥ करहु स्नान जगत निधि तारे सुख बहुत उपजावही ।
॥ पूतनादि पीड़ित गृह बालन्ह करत शान्तिहि लावही ॥
॥ व्याघ्र शूक्र आदिक बल सबहीं दुष्ट कुबलहिं नाशहीं ।
॥ संघात भेदहि मैत्री कारक मम महात्म विनाशहीं ॥
सो० देवी हो अनुकूल भाषहिं पावन चरित निज ।
॥ सुरगण बरसहिंफूल अतुलित ब्रह्मानन्दमय ॥

॥ चौपाई ॥

श्रवण पठन पाठनहु सुहाई । करिये सुरनर मुनि समुदाई ॥
नरप दया धारिनि जगमाया । भजिये लहिये दान सुदाया ॥
मूढ़ बिमूढ़ कुंनर जगमाहीं । सेवहिंनहिंअस स्वामिनिपाहीं॥
जाकर फलद महातम भूपा । कामधेनु मनु कथित अनूपा ॥
भाषहिं दुर्ग्गा जननि भवानी । अमरसुनहु पुनिपुनिममबानी॥

युग युग साल साल बहुतेरे। जग उत्सव शुभएक घनेरे॥
सब चरित्र मम सन्निधि आहीं। सर्व्व लोक गाय भजे जाहीं॥
मान नीय नृप लोकन्ह माहीं। वेदबिदित शारद नितगाहीं॥
लवायीछन्द॥
गाहिं गिरा सहसानन गणपति प्रीतिमय जापहुकरें।
गिराजनक जलनिधि जामातर हिमजामातृ हियधरें॥
बिधिवामा सरिता पतितनया गिरिप तनया हरषहीं।
वरष दुवार आश्विन चैत्रहिं फलद उत्सव जगमहीं॥
सो० वानिक बसुधाराय सोच लोकहो वानिइह।
देवि महातम दाय हरिपद यहि चह पातकी॥
दो० वदत वसुप जननीमहा नहिं को भाषण हार।
यदिहोवे नहिंहोत अब फलद भाष सन्सार॥
चौपाई॥
प्रीति जोइ कोटिन्ह मखदाना। पुष्प पातपूजन विधिनाना॥
धूप दीप सुगन्ध अरघाई। प्रीति यहांयदि अतुलितछाई॥
बिप्र भोज जो प्रीति समावे। बहुबिधि मखपूजा जो आवे॥
वेदविदित गो आदिक दाना। जोइ प्रीति इनमहँ दरसाना॥
असअसआदिक अतुलितनाना। दिनरजनी बहुसाल सलाना॥
ये सब प्रीतिमिलि इक आई। तौहुन पावे मम निकटाई॥
जो कछु फल इनमाहिं समाने। कोटिककोटिक गुण लपटाने॥
ऐसहि प्रीति भक्त दरसावे। मम महात्म पूजा मखलावे॥
बलिआदिक बिधिप्रीति दिखावे। अगणित गुणमय फलसोपावे॥
इनमहँ जोरत पुनि दरसावे। ममसुचरित पठपाठ सुनावे॥
एक बार सब प्रीति अनेका। आवेसुर गणमम महँ एका॥
अघनाशक विधि विधिफल दाई। ममचरित्र शुभविंदितकहाई॥
लवायीछन्द॥
मम कथित चरित नाशत अघगण पुण्य बहुतहि लावही।

अगणित मखपूजा सब विधि विधि जो प्रीति दरसावही॥
सो मम लीला पठन वार इक पुनि सुनतही आवही।
अगणित अतुलित फलन्ह सिद्धिजन प्रीतिममयदिपावही॥
दो० महिप बनिक काकरिये पूजा मख बहुदान।
तीनयना लीला कथा सुनिये प्रीति सध्यान॥
द्वापर त्रेता सत्ययुग कथा होत रहसत्य।
कलिहितभवतरणीभली अगणितदुखकटसत्य॥
चौपाई॥
तीनयना दशअठ भुजरानी। सिंह बाहनी अम्ब भवानी॥
श्री दुर्ग्गा चण्डिका मालिनी। सोहत बोलत जगत पालिनी॥
ममयश नाशत भूत कुपीरा। ज्ञानमान बहुलाइ सुधीरा॥
रणमहँ दुष्टदनुज बहुत्रासन। नाशत बन्हितूल मनुफासन॥
महिष शुंभवध चरित सुहाई। रिपुकृतभयदुखतिमिरनशाई॥
जो स्तुतितुम अमरमुनिकरहीं। सामन्य सोसब बिधिधरहीं॥
बिपूलोक पुनि स्तुतिहिं गावैं। शुभग मुक्तिदायक फलआवैं॥
फल अकथित मम लीला दाई। सुनिये सुरगण तनमन लाई॥
हरिगीतिकाछन्द॥
सुनहु बिबुधगण तनमन हितचित संशय भलहु त्यागके।
अज आदिकसब याचहिं नितनित करिजप तपहु जागके॥
सो याचत तुमजानहु सहजहु जगत मनुजहु पावहीं।
केवल एक प्रीतिरस जानी शुभ धाममम जावहीं॥
सो० शोभित सुखमाढेर सोहत माया देविवर।
भाषण मधुरीटेर हीरा स्वामिनि जननि वर॥
दो० दयानिधिनि श्रीमूलजग करत दया विनदाम।
सहज स्वभावी भावते देत चार फल काम॥
चौपाई॥
जोनर कहँ दावानल घेरे। बाट मिलहिं खलचोर घनेरे॥

बिपिन सिंह ब्याघ्र घिर आवें। निरजन थलमहँ वैरिसतावें॥
जोजन कहँबन गजपरि वारें। विधिविधि पीराबन पशुपारें॥
सब नाशहिं मम पाठ सुहाई। पुनिफलप्रदफलजनकसुहाई॥
रिसमय वध नृप आज्ञा आवे। जोनर बाधहिं आप्तजनावे॥
सब मेटत मम चरित बखाना। संशय नाहिंविदितजगनाना॥
महा जलधि नौका कहुं जाई। यद्यपि डूबन कहँसो पाई॥
वतास व्याकुल यदिनर होई। रणमहँहारत यदिनृपकोई॥
अस्त्र शस्त्र यदि लागित कोऊ। दुखपीरा बहुको नर होऊ॥
अपर कथित दुख संकट नाना। जावहिं कटि मम लीलागाना॥

लवायीछन्द॥

जाहिं कटि मम लीला गावत दुख कष्ट जे जग भरे।
पाठन गावन श्रवणसुध्यावन जिहिंभांति जोजब करे॥
पुनि होवत शुभ भक्तिमुक्तिभल मम लीनता करसही॥
संक्षिप्त रीतिममभाष सुरगण बहुत जानहु मन महीं॥

दो॰ सत्यसत्य सुरबदउठे जयतिजयतिजगरानि।
श्री दुर्गे श्री चण्डिके हीरा प्रभुनि भवानि॥
ऐसहिं ऐसहिं मातुहैं नहिं संशय इहमाहिं।
नमोनमो श्रीदेविभव विदित महातम आहिं॥

चौपाई॥

मणि मुकुटिनिराकामुख वारी। भूषित अठदश भुजाप्रसारी॥
नीलाम्बरिनि कंचुकि अरुणा। अस्त्र शस्त्र बहुशोभितधरणा॥
कोमल बपुनि पातरि अंगनी। महा नाजनी नाजुक रंगनी॥
बोलत बालत कथा सुहाई। दरसी थकित हाहा राई॥
सुन्दर मुख आभा दरसाई। लाल भभूका मुख अरुणाई॥
चूवत शाण वदन दरसावे। टपकन चहत बुन्द भभरावे॥
सांस भरतकभुसकनहिं बोले। हाय हाय बाई मुख खोले॥
गर भर आवा बहुत खराई। हृदया धरकत सांस न आई॥

काहे भूप मरे नहिं देवा। कीन्हमातुजिनलगिश्रमकेवा॥
नहिं नहिंअसकसकबहुंकिहोई। परभक्तन्हहित वपुअस सोई॥
लवायीछन्द॥
पर भक्तन्ह हित वपु असधारी सुन्दरी श्री भल बनी।
मार अपार मान मद मोचन मुखवारी गौर मणी॥
अगणितविधिहरिहरआदिकसबउपजावती क्षणमहीं।
सोमममाता स्वामिनिश्यामा मनेहु सोही कछु नहीं॥
दो० नवलकिशोरनि कामिनी सुन्दरता कर खानि।
महाराजनी मालिनी श्री चण्डिका भवानि॥
मृदु सुखारी मृदुसुरी भाषत सुरहिं सुनाय।
कोअस वरदायिनि कृपा विनहित देह बनाय॥
चौपाई॥
पुष्पासन महँ पुष्प घनेरे। जहँ तहँ सोह एक बहुतेरे॥
कभु कभु माया चरण सुहाई। करत मोड़ पुनि राखउठाई॥
बगरहिं परहिं पुष्प कछुतहँवां। चहहिंअमरतनपुष्पहुजहँवां॥
धन धन पुष्प भये बड़ भागे। निजतनपदरज फोकटपागे॥
कभु कभु अस्त्र शस्त्र दुइ एका। धरत उठात करन्ह ते टेका॥
कभुकभु करते कभुकभु जिनते। भाष महातम आश्रय तिनते॥
मुख भाषण बतास लगि जावे। करआयुध जिहिभांति डुलावे॥
मनहुं शाषतरु कल्प डुलाऊ। इहिविधिकविसबलेखहिंभाऊ॥
दो० वामकपोल अरुण मुख वाम कंध कर लाय।
मनहुक्षितिज ढिगआवही उदयवालदिनराय॥
नथलटकनि झूमककरण परतपाणि दुइओर।
मुखउठात मनु बोलहींतव वपु तजिकहँ ठौर॥
तामहँअँगुरी चारमिल जोड़न्ह महँदरसाहिं।
छवि कपालतिंनमहँ अरुणरेखप्रातघन आहिं॥
जमुहाई रसना दशन कलक फलपूद जोय।

ओष्ठ पान मिस्सी मयी अष्टमि शशि दोसोय॥

सो० भाषतसुरहिंसुनाय श्रीकथितांविदिताजगत॥
प्राण निकरयदिजाय पदरजलोकहिंजाहिंते॥

चौपाई॥

हेगण सुनहु कथा ममदाई। अगणितअतुलितफलन्हनिकाई॥
जहँलगि दुखविधिसंकटनाना। नरकआदिजेविधिनिरमाना॥
नहिं आये जेजे दुख यूथा। अल्प अल्प लव यूथ बरूथा॥
सबहिं नाश मम कथा सुहाई। अनायासविन श्रमसहजाई॥
जहँलगि सुखब्रह्माण्डन्हछावा। जान अजान जोजोनिरमावा॥
अल्प महा जेजे सब गाहीं। ममबाहात्म्यसबदायकआहीं॥
सत्य भाष इह महातमाई। बहु जानहु सब सुरसमुदाई॥
कहँलगिगावहुं अमितप्रसारा। मम चरित्र जब हो विस्तारा॥

हरिगीतिकाछन्द॥

विस्तार होवे यदि मम चरितहु को अस सक जु गावहीं।
सब सुख दायक सब दुख नाशक नर मुक्ति पुनि पावहीं॥
वेद विदित भल विवुध लोक महँ भव सहज तरजावहीं।
जब नर चाहें भक्ति पावहीं सुख ब्रह्माण्ड पावहीं॥

दो० भली भांति भल जानहो समझहु सोच विचार।
लीला मम मोसन कथित सहित रहित विस्तार॥
सुरगण इतनो भयो अब मैं तुष्टा भल भाव।
इच्छा मम अन्तर गमन समय भयो अब आव॥

चौपाई॥

नृप सुर हरषे सुनत सुबानी। देविमहातम सबफल खानी॥
सुरानन्द कछु कहि नहिं जाई। तृषित कंठलगि सुधापिआई॥
रंक कल्पतरु भेंटा आई। दारिद्रता धनंद बल पाई॥
अतुलित फल तप योगी पाये। निरवंशी गृह कुलबहु छाये॥
लोचन हीन नयन मय दरसे। पाये चरण पंगु बल भरसे॥

गुंग यूथ रसना बहु पाये। तिमिसुरगण बहुआनँद छाये॥
अहिपति विधिजा आदिकभूपा। कहिनसकहिं आनन्द अनूपा॥
हेमहिपति हे वनिक कुमारा। सुनेचरित सुख जनकअपारा॥
पुलकित वदन प्रीति मनछाई। सब थोरो मुनि जो कहिजाई॥
जयतिजयति सबसुरउठिबोले। जय श्रीदुर्ग्गे जय गुण मूले॥

हरिगीतिकाछन्द॥

जयति जयति जयदुर्ग्गे दारुण दुख कण्टकहु जारनी।
अम्बिका चण्डिका श्री अम्बा नित सन्सार तारनी॥
अमित अपार पालनी हीरा नेति नादि सुगावहीं।
सहज पावनी जगत पूरणा सर्व्व व्यापिहिं धावहीं॥

दो० नमो नमो माया महा दुर्ग्गे जगदा धार।
जन्मजन्म तवभक्तिरत याचहिं सुरनिशिवार॥

सो० जय जगदम्ब अनूप जयति जयति जय देविवर।
श्री दुर्ग्गे जग रूप नमो नमो श्री मालिनी॥

चौपाई॥

पूजहिं मातुहिं बिविध प्रकारे। तन मन बचसमेतसुर सारे॥
धूपदीप बहु सुमन चघाई। अगणित पुष्प माल बरसाई॥
गावहिं नाचहिं सुर गन्धर्ब्बा। रंभादिक अप्सरा सर्ब्बा॥
बर्णहिदुर्ग्गा गुण अतिपावन। सकलसिद्धिप्रदमनबहुभावन॥
भाषहिं तिय सहसुर करजोरे। गौढ़िक अगणितबस्सनथोरे॥
सो श्री जननी कथा सुनाई। हरषे सुर सव वसुधा राई॥
ठानी स्तुति ध्यान लगाई। देविचरण तिय चापहि जाई॥
जयजय सबतहंकरहिपुकारा। गद गद वयनगुहार अपारा॥

दो० जयतिजयति जयदेविजय जयतिजयतिजयमाय।
नमों नमो श्री अम्बिके नमो नमो वर दाय॥

तोटकछन्द॥

जयमालिनि पालनि देवन की। जयदायनिभायिनिसेवनकी॥

भव सिन्धु अपार महातरणी। जगकींकरणी धरणी हरणी॥
सब रोगन्ह औषधि मूलरही। सुर रूख महा सुरधेनुसही॥
सृज हेतु अजा रखनीकमला। भवहेतु शिवा महती बिमला॥
कबि आदिकशारद सोहबनी। वूह्माण्ड प्रिया बर शेष मणी॥
जगबांछित भावहिकामप्रिया। वरषा सुख हेतु शची रमिया॥
वूह्माण्ड बचाव वराह बरी। बच राखन तोषनसिंहनरी॥
जग पोषन राखन भानु प्रिया। तमरातमहानिशि नाथहिया॥
जल पावक वायु महा वपुनी। तिहिभांतिबियोगमहारिपुनी॥
महिषादिक वैरनि कामिनि हे। अजआदिकसेवन्हस्वामिनिहे॥
जय देवि नमो जयदेवि नमो। जय मातुनमो जयमातु नमो॥
जयहीरककीनितस्वामिनिमा। जयहीर महावर सालिनिमा॥

दो० सिंह वाहनी जयति जय भुजा अष्ट दश माय।
तीचखुनी जय देवि जय सदा दाहनी दाय॥
जयति जटित नीलाम्वरी सुन्दरि रूपबिशाल।
बिधुवदनामणिमुकुटिनी अगणितअगजगपाल॥

त्रिभंगीछन्द॥

जय दुर्गे माया प्रद सुख दाया जनमन भाया जगरानी।
भक्ति मुक्ति दाई सदा सदाई अग जग माई गति दानी॥
जयसिंह बाहनी सदादाहनी लम्बबाहुनी जयमाता।
जयजयति कृपालिनिदीनदयालिनिसुभक्तपालिनिजयदाता॥
सो० जय दाता सुख दान जय हरता दुख आदिकी।
नमो नमामि महान नमो नमो जय जयति जय॥

चतुष्पदाछन्द॥

जय श्री हरिमायाशिवहियभाया शुम्भा सुर कहँपारी।
ऋषि सिद्धि कारनी सिन्धु तारनी सुन्दरता बलवारी॥
राजाधि राजनी महाराजनी गरीब निवाजिनी माई।
नृप जीति रूपिनी सुख अनूपनी प्रजा हेतु मन भाई॥

जगजगसब व्यापिनिती जगआपिनि महामायश्रीमाता।
युगयुग विख्याता तिकाल ज्ञाता अनजन धनबहुदाता ॥
श्री महाधिरानी सब सुख खानी नमोनमो सुकुमारा ।
जयजगत स्वामिनी रूपकामिनी जयतिजयतिनवतारा॥
दो० आदि अनादिनि शक्तिश्री अनन्ता अनता माय ।
जग भूषणि नभ भूषणी अनरभूषणी भाय ॥
अज भूषणि हरिभूषणी शम्भु भूषणी भाय ।
रवि भूषणि शशि भूषणीपावक भूषणिमाय ॥

चौपाई ॥

जयतिजयतिजयनिराकारिनी।समदरशिनिनितनिरविकारिनी॥
अकला नीहा नवयनि माई । अगमा द्वितिया अपरा भाई ॥
एका केवल महान माया । प्रकृति महा गुण तीन निकाया॥
सकलभांति नितभवलयकारी । नमो नमो दुर्ग्गे निरधारी ॥
अगणितविधिहरिशिवसमुदाई । उपजावति नाशति क्षणमाई ॥
लीला अद्भुत करणि अपारा । जयतिजयति जय जगदाधारा॥
भक्ति मुक्ति नित देहु श्यामा । रक्षा दान करहु गति धामा ॥
जयतिजयतिजय महाअमरनी । हीरा सेवकता स्वी करनी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

हे सेवकता दासत्व हीरा सदा अंगी कारनी ।
तारहुअगजग नभआदिक कहँ सदासदा सबतारनी॥
महिष खल मरदनि शुंभशमनी रक्तु बीजादि मारनी ।
विधिआदिक सबसुरवरयूथहिं अनित सुखकरकारनी ॥
दो० हे दुर्ग्गे चण्डिके श्री महा कालिका रानि ।
सकल ब्रह्माण्ड स्वामिनी जय जय महा भवानि ॥
मारी महा देवी श्री श्री परमेश्वरि माय ।
जयति जयति जगदीश्वरी परमा देवी दाय ॥

चौपाई ॥

नमो नमो श्री अम्बा माता। युगयुगनितनितयशविख्याता ॥
हरिनयनायनिशिवहिय वासा। सर्ब्बव्यापिनी सकलनिवासा ॥
जग वन्दित हरि तववशमाई। तवबल पूजित सकल सदाई ॥
सो दुर्ग्गे जगदम्ब भवानी। कीन्हि कृपा हमपर जनजानी ॥
क्षण महँ टारी दुःख अपारा। दीन्ही सुखानन्द भवतारा ॥
जब जब कष्ट परे अस आई। टारहु अम्बा सुमिरत माई ॥
जयतिजयति जयदेवि महाना। परमा माया प्रदगति दाना ॥
मांगहिंवर अति दीन सुभाई। पदरज भक्ति देहु नितमाई ॥

लवाणीछन्द ॥

पदरज भक्ति देहु नित माया नितनित मांगहिं हमसबे।
देहु परम सुख काटि महा दुख स्मरण करहिं हमजबे ॥
करुणा सागरि सब गुण नागरि जागरिता जगतमही।
अजादि स्वामिनि पालनि माता पदरजरत देहुसही ॥

दो० भाषत अस वरषा भई सुमन सुमन कर माल।
आस पास जग दम्ब करपरहीं छोट विशाल ॥
करिहिं आरतीविविधिविधि तियसहसुरवरयूथ।
वार वार करि बेर बहु परमानन्द अनूप ॥

चौपाई ॥

भूप विसर्ज्जन आवा काला। का कहिये सुर सुर तियहाला ॥
सबकर अश्रु चले चखुमाहीं। रोंके सबरे शकुन जनाहीं ॥
अज आदिकनिजनिजशिरयूथा। पद परमहि परडारि बरूथा ॥
परशन चांपन अजादि नारी। आनहिं तनमन सेवा धारी ॥
पदरज रति जब पूर सुबानी। एव मस्तु तब भाष भवानी ॥
तथास्तु भाषी पुनि श्री माया। अन्तरध्यान भई करि दाया ॥
इह शोभा कस जाय बखानी। मनुदामिनि नभ माहिंसमानी ॥
सपनानन्द जाय जग जाई। सब आनन्दन उपमा पाई ॥

लवायीछन्द ॥

असबहुसुख नहिं उपमा पावे पुनिदुख दशाहो रही।
अस श्रीदुर्ग्गा जननी कीन्ही भई अन्तर गतसही ॥
इहिकर पृथम आशीसदेई ठाढ़सुर मनु तरगये।
मनबहु हरषे गतिते बिलखे दशा दोऊ असलये ॥

दो० एवमस्तु पुनि अस्तुतथा अस्तुतथा कहिमात।
अन्तरगत गमनत भई काकहँयही सुहात ॥

सो० सुरसह तियहिय राख यदिगमनी असमालिनी।
जिमि सोही पुनिभाष सबबिधि शोभित वेषकहँ ॥

चौपाई ॥

हीरा स्वामिनि अन्तरध्याना। होतसमय काकरिय बखाना ॥
गाई काम सुता सुत नाना। त्यागि परावे दुख दरसाना॥
कल्पवृक्ष मनु किंकर यूथा। लोप भयो सुखदेइ बरूथा ॥
दिनपोपासक गणढिग जैसे। निविड़ गगण महँजार विवैसे॥
राकाशशि षोड़श कल माहीं। अकस्मात मनुघनहिं समाहीं॥
उल्का यूथ एक वपु जैसे। पृबल पवन लगिबूझत वैसे ॥
दीपक राग रूप दरसावा। ताकर सुर सबअन्तहिं आवा॥
हीरक मणिगण पृकाश माही। ढम्पित तुरतभयो क्षणनाहीं॥
कमल कली सुन्दरि तनपाई। आपहिं आपसरहिं विलगाई ॥
मोह दायका कटाक्ष भारी। भइ माया अन्तर गति धारी ॥

दो० अन्तर ध्यान भईभई सर्व्व व्यापिनी माय।
वसुपबिबुधसबतियन्ह सहपुनिआकुल हरषाय ॥
महानन्द आनन्द अमित अगणित जनसपनाय।
शब्द महामनुतिहिसमय सबकहँदीन्हजगाय ॥
यह सपनो समभयो नहिं महा महा खलयूथ।
मारी जननी पुनिकथा पठसुख स्तुति बरूथ ॥

सो० जाकरशुभपदधूर तियन्ह सहित बिधिआदिसब।

राखहिं सिरपर तूरहीरा प्रभुनी सोइहै॥

दो० जब लगिभानु प्रकाश तीनलोक तीकाल पुनि।
दुर्ग्गा हीरा स्वामिनी हीरा दुर्ग्गा दास॥

चौपाई॥

यदपि दासकर मांगहुं माता। देहु दयाकरि बहुत न बाता॥
अर्थ दासकर जगअस आवे। अत्रसि मजूरी भलविधिपावे॥
याते पदरति भक्ति सबूरी। मांगहुं नितनित मोर मजूरी॥
करहु माय असदाया जबहीं। अगणितअमितपापनशतबहीं॥
महानन्द तव पावहुं माया। पुनितव पदरति देहुसदाया॥
औरहु देवि देहु पद आना। सेवा शुभतव सेवक जाना॥
सेवक चाह न कछुक मजूरी। नहिंअधिकार कछुहु इहिपूरी॥
पद रज रति सो सेवा पाऊं। ताते सेवक भलहु कहाऊं॥
दान प्रदाफल सेवा केरा। सेवकता फल मांगहु हेरा॥
नितनित लीकरहे इह धीरा। स्वामिनि दुर्ग्गा सेवक हीरा॥

हरिगीतिकाछन्द॥

सेवक हीरा स्वामिनि दुर्ग्गा दासहोहुं तुम्हारहू।
पदरजरति नितपावे हीरा यदि अधि अनधि कारहू॥
जब तव दास लही मैं पदवी रहेउ कहा पापहू।
पद प्रभु तुममम कालमरन लगि पापनाशहु आपहू॥

दो० जन्ममरन तेरहितकरि मुक्तिदेहु यदिमाय।
तौहू मानिज चरणतर होवहु गुप्त सुभाय॥
यांदनहिं तरहे मातु नित होइ इष्ट कुल देव।
पुनि परमेश्वरि ममसदा देवहु फलतव सेव॥

चौपाई॥

तपोपास तव सुमिरन ध्याना। तबहिं परायण भक्ति सुदाना॥
तुमहिं तुमहिं नितहोवहु माई। मोर मरण जीवन नहकाई॥
अन्तरगत जब भूपभवानी। सुरगणतियसहअतिबिलखानी॥

उष्ट झूठ भोजन सुमनादी। सादर लेवहि तियसुर आदी॥
आसन ठांवन्ह कररज सबरे। निजनिजशीशधरहितहँसगरे॥
माथ नाइ जय जयति सुनाई। लौटेसब तव बानिकराई॥
मातुहिं हियरखि कथा सुहाई। बरनहिं पन्थ सरति हरषाई॥
पुनिकोउ बोल भक्तिवश आई। होय कोउतुर निशिचर राई॥
सोहमते नहिं जीता जावे। मुनिदुख वदजननी दरसावे॥
निज अरथी नहिं बोलहिंऐसे। राज भोग चाहहिं जे जैसे॥

सो० सत्यकहहिंमुनि रीति होवत इच्छाभावि जस।
सदा वेद शुभ नीति मांगहु देवी भक्ति नित॥
जो पाये हरि आदि लक्षि आदि जहँ रम रही।
दुर्ग्गा आदि अदादि ऐसीमहिमा भक्ति कर॥

चौपाई॥

शुंभादिक निशिचर जबराई। वधित कीन्हि श्री दुग्गा माई॥
इक दू दनुज रहे जे तहँवां। लोक पताल गये तुर जहँवां॥
अन्तर गत होवत श्री माता। भक्ति पाइ सुर लौटे ताता॥
अजहरिशंकरसुरपतिआदी। रविशशिधनपतिविधिविधिबादी॥
तियन्ह सहित लौटे महिराई। जाकर जाकहँ ठौर सुहाई॥
निजनिजलोकहिं जायविराजे। प्रथम प्रकार राज तिनसाजे॥
निरभय मन करि शुभरजभागे। वसुप विवुध गण भोगनलागे॥
यज्ञ भाग लेवहिं विधिभाती। सुखहु भोग आवा निजजाती॥

दो० सो सब श्री देवी कृपा सहजहु आवत छाइ।
असमुख अगणित अमित सो पारहीन दरसाइ॥
अगणित महि जो रूपहै सुन्दरि मातु दयाल।
किमि होवे रजकर तहां कबहु कि भुप दुकाल॥

चौपाई॥

सुरलोकन्ह सुखराज विछावा। वसुप वनिक मैं प्रथमहिंगावा॥
सा प्रभाव श्री देवी केरा। लघु महान लघुमहान फेरा॥

रजकर अगणित मेरुबनावे । अगणित मेरुरजहिं करलावे ॥
अघी नरहिं हरि पदवी देवे । हरिहिं हीनबल बल लेलेवे ॥
अगणितअजहरिशिवसुरआदी । भूलहिं माया वश असनादी ॥
उपदेशहिं नित मुनिवर लोगा । जपेदेवि विननहिं कछुयोगा ॥
उपजावहिंविधिजाबलभवगण । जाबलपालहिंहरिसबजगतन॥
शंकर जाबल करहिं संहारा । जबलअहिपति रखमहिभारा ॥
जाबल रविशशिकरहिंप्रकाशा । जाबल मेघन्हवरष विकाशा ॥
जाबल वसुमति फलत अपारा । जाबलते लघु महा प्रसारा ॥
जाबल विनकछु कतहुं न भूपा । ऐसी दुर्ग्गा मातु अनूपा ॥
सो स्वामिनि नित लेखककेरी । जाकरदास हीर बर पेरी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जाकर दास बर बशित हीरा कृपा श्री कर पाय के ।
जाकर रूखताकहिंहरिआदिकनितहिंनितमन लायके ॥
जासु प्रकाश रमोनित युगयुग सबलोकदिनयामिनी ।
सो सत होवे संशय जाई नित नित मोर स्वामिनी ॥

सो० यदि मैं सदा अयोग सदा नरक कर कोट मैं ।
मातु क्षमा सब जोग नेक दृष्टि यदि कृपा कर ॥

दो० जगरमनी जग व्यापिनी हरिलोचन पुनिबाश ।
शंकर हिय नित गेहनी अमरन्ह जीव निवास ॥
जीवनि जीकी सर्बहिकीप्राणसबन्ह कर प्राण ।
जापर भल दायिनि मिली चार पदारथ दान ॥

चौपाई ॥

नृप पण युग युग वारम्बारा । नित्या दुर्ग्गा कर अवतारा ॥
वधि रिपु गण राखत सन्सारा । काटत कण्टक बिघ्नअपारा ॥
अबिनाशनिवहु दुखबिनाशिनी । नित्या सत्या कष्ट नाशिनी ॥
जाकहँ मोह सदा सन्सारा । जो उपजावतिबिविधप्रकारा ॥
प्राथिता जब जननी जोई । आत्मजज्ञान काचहूवै सोई ॥

रूप प्रसन्ना होवैं जब हीं । ऐश्वर्या सो होवैं तबहीं ॥
अज आदिक जेजे अधिकारा । सबमहँ अंशप्रकाश प्रसारा ॥
महान कालिका प्रलय कारी । पुनि सोइ भांति महानमारी ॥
पुनि जाते ब्रह्माण्ड निकाया । पूरित व्यापित सदासमाया ॥
जन्मरहित श्रीजोति आदिनी । आदि अनन्ता जोति नादिनी ॥

सो० भांति भांति बहुरूप यदपि एक श्री रूपिनी ।
करनी शुभग अनूप जाहि न जानहि वेदश्रुति ॥
शारद शेष गणेश हरि आदिक कमलादि सह ।
गाय न सकहिं नरेश देवि भवानी भगवती ॥

चौपाई ॥

सृजन काल उत्पादक माई । जन्मरहित यदि सो सुखदाई ॥
स्थिति समयमहँ स्थितामाई । सनातनी नित्या जनभाई ॥
नाश काल सो नाशन करई । नाशहीन यदि रूपहिं धरई ॥
सम्पति समय आव जबभूपा । जनगृह बढ़ती लहत स्वरूपा ॥
लक्ष्मि सुन्दर भाव बनाई । सुख सम्पति देवहिं सुखदाई ॥
विपदि कालमहँअलक्षिरूपा । दारिद्र दारुण वेष सुरूपा ॥
नाशन ताकर रूप बनावे । अस दुख कहँ पुनि नाशपठावे ॥
सुत धनिधर्म्म कार शुभकारा । ज्ञान बुद्धि प्रद जग परिवारा ॥

दो० जेजन सुमिरहिं पूजहीं पुष्प धूप गन्धादि ।
विविध पूज बलि साधहीं पाहिं दया सुख आदि ॥

चौपाई ॥

सम्पति श्रुति पुराण वेदादी । युग युग मायालीक सुवादी ॥
ऋद्धि सिद्धि आदिक सुख जेते । रोग विपदि आदिक दुखतेते ॥
महाकाल जाकर वश माहीं । शक्ति छाड़ि कतहूं कछु नाहीं ॥
सोइ शक्ति श्री दुर्गा माया । जगत वन्दिता भवलयदाया ॥
सुमिरहु भूप वनिक सो माता । चारहु युग नित जो विख्याता ॥
जन्म रहित श्री अम्बा माई । पर अवतार वेद मनि गाई ॥

सो लव सुक्ष्म कछुक मैं गावा। सुरथ समाधी तुमहिं सुनावा॥
सार कथा जो जगत प्रसारी। कछुतुम सुनीविविध हितकारी॥
॥दो० सोमहिमा श्री देविकर भाव प्रताप प्रभाव।
दरसहिं गुप्त प्रत्यक्षही भागी जन सो पाव॥
आदि अन्त जाकर नहीं वेद न पावहिं पार।
सोइ शक्ति परमेश्वरी युगयुग यश विस्तार॥

चौपाई॥

देह रहित श्री शक्ति भवानी। अवतरहीं अस वेद वखानी॥
जबजबविधिविधिमधुकैटभखल। महिषदनुजसबपावहिंबहुबल॥
जब जब चण्डमुण्ड खलआदी। शोणवीज आदिक दरसाहीं॥
शुंभ निशुंभ महा रजनीचर। जबजबविबुधहिंत्रासहिंबहुतर॥
तब तब कृपा खानि श्रीमाया। नाशहिं खलगणजगहितदाया॥
देहिं अमित सुख सुरकहँ भूपा। कथासार सो भई अनूपा॥
सो श्री दुर्गा मोहनि रूपा। मोहत अग जग भांति अनूपा॥
अनादि मोहहिं जाकर पाले। छोट बड़े सब मातु हवाले॥

लवायीछन्द॥

छोट बड़े सब जननी वश महँ सब चराचर जग महीं।
अजते पिपीलिका लगि सबहीं अगणित लोक जे सही॥
महाब्रह्म जे वेदन्ह गाये सोहु मोहहिं रम रहे।
सुर नर मुनि आदिक जे अहहीं सब कहँ मोह नितगहे॥
दो० प्राण रहित जीवनसहित सुरथ समाधो सत्य।
अस नहिं कोऊ रहितहै जाकहँ मोह न नित्य॥

चौपाई॥

सोइ शक्ति माया वश ताता। तुमहु दोउ आये भल बाता॥
सुनतसुनतकाकहिये मुनिवर। वसुपवनिकजिमिहरषेमनभर॥
इन कर हरषवखान न जाई। कठिन मिलन को पाये भाई॥
मुनिजेभिनिजवखलगणरधिता। पाये सुर आनन्दहु कथिता॥

भूपवनिक पुनि ताते बढ़तर। पाये सुनतहि देवि कथावर॥
देवी दरशन यदि सुर पाये। जिनहित चरितभयो भवभाये॥
तदपि लिखा कत इनके भाला। देखि कृपा हो दरशन काला॥
सुरथ समाधि सहज हरषाये। कहे वचन सानन्द सुहाये॥
जयतिजयति श्री दुर्ग्गा माया। जय जय अम्बा कृपा निकाया॥
जयति चण्डिके देवि भवानी। जय जय महाधिकारिनिरानी॥
॥ हरिगीतिकाछन्द॥
॥ जय श्रीमहाधिकारनिविजया जयति जय सुरभावनी।
तीनयना भुज अठार लम्बनि सिंह बाहनी पावनी॥
अजादिवन्दित अजादि सेवित शुम्भ खलादिगंजनी।
पुनितिहिभांतिअमरनरमुनिकर हियशुभअमितरंजनी।
॥ सो॰ जयजय जयति भवानि परमेश्वरि देवी श्री।
॥ जयतिजगतश्रीरानि आदि अनादिनिशक्तिश्री॥
॥ चौपाई॥
जयहरि चखु वासा जय माता। कामवैरि हिय वास सुहाता॥
जगव्यापिनि जगवासनिमाया। हमदीनन्ह परकभु होदाया॥
होवहिं हम कभु भागी ऐसे। जाते श्री दरशन होवैसे॥
जय जगमाता दीनानाथनि। जयतिजयतिजयतीजगनाथनि॥
देहुदया करि पदरज पावन। जाते होवे मोह नशावन॥
धनधन मेधस कथा सुनाई। युग युग जो विख्यातसदाई॥
सुरनर मुनि जाकहँ नितचाहीं। सोतुम कहीदीन हम पाहीं॥
का उपदेश देहु मुनि राई। जाते दरशन आवे माई॥
दो॰ सत्य कथा श्रीदेविकर धनमेधस हितकारि।
॥ कीन्ह दया भाषी भली जोदायक फलचारि॥
चौपाई॥
बोले मुनिवर सुरथ समाधू। बड़ भागी तुम दोऊ साधू॥
जो चरित्र सुरनर मुनि सबरे। सुनहिंपढ़हिंगावहिंनितसगरे॥

सोइ कथामृत तुम भल पीये। विनायास पुलकित रतहीये॥
ध्यावहु भजहू देविकहँ दोऊ। माता शरण जाहु तुम सोऊ॥
जबहिं अराधित होवहिं माता। हरहिं मोह तुम्हरो क्षणताता॥
करहिं दया सो दयासिंधुनी। दुर्ग्गा जननी दीन बंधुनी॥
जैमिनि असतहँ होवत बाता। सुरथवनिक बहुविधिमनराता॥
पुष्प गन्ध धूपादिक लेई। मेधस मुनिकर पूजा सेई॥
बहुविधि पूजि अशीशहिं पाई। बार बार मुनि चरण चपाई॥
पदरज शिर धरि दोउपधारे। हिय धरिमातुभक्ति शिरभारे॥

दो० जैमिनिऋषि श्रीमातुवश अगणित जगकरराज।
अगणित जगकर स्वामिनी एकअखण्डनिसाज॥

चौपाई॥

मुनिनृप वनिक कथा मैं गाई। कथा देविकर फलद सुहाई॥
जसजस कही भई मैंगाई। वेदआदि महँ जस निरमाई॥
मातु महातम फलद सुहाई। जो माया निज मुखशुभगाई॥
सो कछु भाषी मैं मुनिराई। जाकहँ हरिहु चाहिं चितलाई॥
सोमहात्मकर अमित प्रभावा। किहिहु भांतिमैं सूक्षम गावा॥
देवि कथा यश. महातमाई। सो सबधरि हियवानिकराई॥
जपत जननि कहँ दोउसिधारे। तपहिं चलेते सरितकिनारे॥
जैमिनि अस श्री दुर्ग्गा माया। रूपरहित पुनिरूपनिकाया॥

हरिगीतिकाछन्द॥

एकरूपिनी रूपअनेका दुर्ग्गा माय मालिनी।
जीवचराचरकारिनिनाशिनिविविधभांतिसुपालिनी॥
करनि अपारकथा अपारनित मनमान फलदायिनी।
जड़चेतन सबमहँ नितव्यापी दासजन मनभायिनी॥
अजादिक वन्दिता श्रीमाया कोअभागिन ध्यावहीं।
जाकहँमाने हरि यदि स्वामी तीलोकनित पावहीं॥
जाकर बलते विष्णुईश्वर परमेश्वर जामिनी।

सो श्रीदुर्ग्गा भवानि देवी हीराकेर स्वामिनी ॥

सों० जेसुनहीं सतभाव देविमहातम फलद वर ।
पाहिं भक्ति सप्रभाव श्रीपुर सुख विन मांगिके ॥
करतलहो फलचार मान महातम देविकर ।
नहिं संशय लवकार जामिन हीरा देवि बल ॥

दो० नितनित मांगत मातयह दया दृष्टि मय माय ।
सारी अचरा कोणतब रहैमाथ पर छाय ॥
यदि नहिं अधिकाररहै अघगृह रहनित काल ।
चाहत तदपि मातुशरण निजहित हीरालाल ॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्ग्गायणः अष्टमकाण्डःसमाप्तः ॥

श्रीश्रीदुर्गायैनमः ॥

श्रीदुर्गायण ॥

हीरालालकृत ॥

नवकाण्ड ॥

नवमकाण्ड ॥

दो० ज्ञान दान देवी कृपा पावहुं पाणि पसारि ।
गावहुं श्रीयश मुक्तिप्रद दीपदया हिय बारि ॥
शरणलेहुं इहरीतिते पदरज तरुवा नीच ।
ममशिर परभल राखहौं लेवहु पदजनि खीच ॥

सो० तीन लोकको आहिं युगयुग छायी ख्यातिबहु ।
देवहिं सदा सदाहिं भक्ति मुक्तिकर दान बहु ॥
भजहु सदाअस अम्ब जारुखताकहिं अजादिक ।
अस दुर्गा जगदम्ब अघ समूह भव तारणी ॥

चौपाई ॥

मातु महातम कथा सुनाई । सुनिसमाधि वसुधवमुनिराई ॥
जननी कहँ हियदेइ निवासू । सरिता तट गमने तपआसू ॥
करिअनुमति दोऊ मन आई । कहहिं परस्पर कथा सुहाई ॥
कहिपुनि दोऊभल यह जाना । करियेतप श्री जननी ध्याना ॥
अखण्डिका चण्डिका भवानी । श्रीमाया जननी पद दानी ॥
दोउ वन्दना कीन्ह सुहाये । सरिततीर मन ध्यानलगाये ॥
हियमहँ बहुविधि भक्ति दृढ़ाई । वेदविदितजिमिमुनिनिरमाई ॥

अचल अटल तप घोर अपारा। लगेकरन शुभविविधप्रकारा॥
निराहार पवनहु कर त्यागा। श्री देवी पद रज मन लागा॥
निर्गुण रूप मातु कर मानी। बहुत काललगि दोऊ ध्यानी॥

दो० बहुत वरषअस ध्यानरत तपसी तनतिन केर।
तप मूरति दोदेह तप मननहिं थोरहु फेर॥

॥ चौपाई ॥

पुनि श्रीमाता मूरति सुन्दर। विधिवत दोऊ कीन्हीशुभवर॥
सुन्दर मूरति दोउ सुहाई। दोऊ तपसी तहां बनाई॥
अक्षत गन्धादिक बहु भांती। सुमन माल बहुपुष्प संघाती॥
धूप दीप नैवेद सुहाये। विविध भांति पूजानिरमाये॥
पूर्व्व कथित विधिपाठ सुहावा। जिमिमखमुनिमेंप्रथमहिं गावा॥
सुरथ समाधि सकल तहँकीन्हे। सकलभांत देविहिंमनदीन्हे॥
करत करत कहँलगि मैंगाऊं। अजआदिककर नहिंतहँठाऊं॥
महा महा तपसी मुनि आदी। कोऊ नहिंअस भयकभु बादी॥

दो० भक्ति ज्ञानादिक स्वामिनी देवी मूरति सोउ।
भक्ति ज्ञान दो देहकर सोहहिं तपसी दोउ॥
मुनितपविष्णु आदिककर कीन्ह ध्रुवादिकनाहिं।
जिमि इन तपसी दोउकर तपमहान दरसाहिं॥

॥ चौपाई ॥

देवी ध्यान सूक्त बलि आदी। जे जे वेद पाठमहँ बादी॥
जपहीं करहीं दोऊ वरजन। अकथअपारअमितअतुलागण॥
इहि विधि करतबीतबहु काला। अस्थिमात्र तन तिनकेहाला॥
बार बार मुनि मनमहँ लाहीं। द्रवहीं देवी कब दरसाहीं॥
यद्यपि ईषत काल अराधे। पिघलहिंमाया बिनकछु बाधे॥
तद्यपि निरखत भक्त सुभावा। कस करहींकस होत सुहावा॥
सब करि हारे ते मन माहीं। स्तुति ठानी यदि पिघलाहीं॥
जयति जयति जयदुर्ग्गे माया। नमो नमो श्रीएक निकाया॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जय श्री दुर्ग्गे अघ निकन्दनी मुकुन्दनि श्री मालिनी।
जय चण्डी अखण्डिके माया तीलोक नित पालिनी ॥
अम्बे अम्बिके जननी आदि जोति अनादिनी।
श्यामा कामा जयति ललामा नेति अनन्ता नादिनी ॥
जय शशिभाला जय तीनयना दशअठ भुजविशालिनी ॥
सिंह वाहनी दुःख दाहनी दुर्ग्गे काल कालनी ॥
अशरण शरण धरण ऋधि सिधि जयति दीनानाथनी।
दासस्वामिनी अजादि प्रभुनी जयतिजनगणसाथनी ॥

दो० जय जय दीन दयालिनी दयासिंधुनी खानि।
जय नागरि सागरि कृपा करुणखानि प्रदानि ॥
नमो नमो श्री चण्डिका दुर्ग्गे जयति भवानि।
माया हरि चखु गेहनी शिवहिय वासा रानि ॥

चौपाई ॥

तत्व गुणादिक मूला खानी। पुरुषप्रकृतिआदि कनितसानी ॥
सर्व्व व्यापिनिव्यापिनिमानी। सम दरशिनि चौदह भवरानी॥
अजनि रूप सृज काज भवानी। वैष्णवी वपु पोषण दानी ॥
शिवा वेष सब कर संहारा। अस अस चषहु वेष अपारा ॥
एका केवल नाम अनेका। जसजसकरनी तसतसएका ॥
अद्विता खण्डिका जय अगुणा। दासभक्तलगि वपुवरसगुणा ॥
शारद शेष गणेश महेशा। ध्यावहिं नितितुमकहँ बहुवेशा॥
जय जय तुम्हहिं रूपसब माया। सबविधि अराधितशिवदाया ॥

लवायीछन्द ॥

विविध वन्दिता जय श्री माया सुर अनरत्नी गण मणी।
नमो नमो जय अन्न पूरणा शक्ति आदिनि वेद भणी ॥
तुम्हहिं अज अजनो हरि लक्ष्मी तुम्हहिं शंकर शिवप्रिया।
तुमहिं शेष किम्वा ताशक्तिहु तुम्हहिं रविशशि सहतिया ॥

तुमहिं सुरपति तुमहि शची शुभ पावक पवन जलअहो ।
सुरनर मुनि आदिक सब तुमहींसचराचर जगतुमहो ॥
थलचर जलचर नभचर जगचर सबचर तुम्हरिशक्तिहैं ।
असअसअगणितसबब्रह्माण्डहिव्यापिनितुम्हरोवक्तिहैं॥
सो० जय केदारा माय अग जग पालनि तारनी ।
भक्ति मुक्ति नित दाय कारुणि का स्वभावनी ॥
ती कालज्ञ भवानि घट घट अन्तरयामिनी ।
माय विज्ञाना रानि सर्व्व शक्तिनी देविवर ॥

चौपाई ॥

जय जय राजनि महाधिरानी । नमो नमो श्री देवि भवानी ॥
दीना नाथनि सुन्दर देहा । गुण सत आदिक सुखादिगेहा ॥
सिंधु अपार जगत वर नावा । नादि नेति नित वेदन्ह गावा ॥
वृह्म अपार भरोस तुम्हारा । जिह कह परमेश्वर सन्सारा ॥
कहा रही तव शक्ति भवानी । जाकर पार पाव को प्राणी ॥
सुरहिय पंकज रवि तियरूपा । सुरनि कमोदनि शशिनि अनूपा ॥
थाह सिन्धु हित मन्दर देहा । नित प्रहलाद नाथ इव नेहा ॥
कोप कालइव तुम्हरो कामा । क्षमा रूप वसुधा इव जामा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

क्षमा वेष धरनी सम देवी शक्र सुख बरसावनी ।
नव ग्रह इव माया दुख दायक शारद ज्ञान लावनी ॥
रवि प्रकाश कर तम रजनी भल सुन्दरता खाननी ।
हितकारी माता गौरूपा घृत इव दया माननी ॥
अमिता अतुला अगणा पारा अकथा देवि दाहनी ।
एका केवला नित अजन्मा वपु अनेका नाहनी ॥
होहु प्रसन्ना प्रसन्न वदना करि दया हम दीनहीं ।
सब तुम जानहु स्वामिनि जननी तोय बिन हम मीनहीं ॥
दो० पिघलहु द्रववहु माय अब हम जानहिं कछुनाहिं ।

प्रगटीसुर गण लागि जिमि तिमि माता याठाहिं॥
अजादि शारदआदि सब सुरनर मुनि सब मात।
स्तुति ते नहीं जानहीं हमते किमि कहि जात॥

चौपाई॥

जयति जयतिजय दुर्गे माया। द्रवहु द्रवहु दुर्गे सुख दाया॥
पिघलहु पिघलहु मातु भवानी। करहु दया अम्बा जगरानी॥
दरशहु मातु दया करि देवी। द्रवहु मातु अबनित हम सेवी॥
का गावहिं हम दरसहु माता। पिघलहु दरशनतबविख्याता॥
जैमिनिकहँलगिकरहु बखाना। स्तुतिकरहिंतपसीविधिनाना॥
घोर अपार कीन्हि वहुभांती। दरस नहीं देवी जन त्राती॥
बार बार हारहिं मन माहीं। पुनिपुनि स्तुति करतहिंजाहीं॥
दरसहु कहहीं बारम्बारा। पुनिपुनि मानहिं मनमहँहारा॥

दो० करनलगे पुनिदान बलि भाषित पशुगण लाइ।
बहु प्रकार अस पूजहीं बहुतहिं स्तुति सुनाइ॥

चौपाई॥

जैमिनि पाइ पशुन्ह बलिदाना। तुष्टा नहिं अम्बा जग ज्ञाना॥
तब तनते निज तपसी दोऊ। लगे निकारन शोणित सोऊ॥
लगेदेन बलि सो शुभ ज्ञाना। विधि विधि अंगदेह निरमाना॥
पुनि पुनि स्तुतिहु भाषतजाहीं। जाते वेग मातु दरसाहीं॥
असहु करत श्रमभयउ अपारा। कसनहिं द्रवहीं जगदाधारा॥
थोरे महँ पिघलहिं मनिमाता। कौतुकिनी ती जगबिख्याता॥
जनन्ह परीक्षा कभु कभु लेवे। कौतुककरि यदिसुख गतिदेवे॥
दयावती अस स्वामिनि माया। बिनु कारण उपकारनि दाया॥

लवायीछन्द॥

कारण बिन उपकारनि माया दयावती दया करी।
नीच ऊंच नहिं देखत अम्बा भक्ति भावहिंमन धरी॥
अधम विमूढ़ अभागी प्राणी नहिं मानहिं अस जननी।

॥ अजादि सुरजाकर पदरजकर भक्तियाचहिं करिधनी॥

दो० अस जननी भवस्वामिनी हीरास्वामिनि नित्य ।
॥ लोकचार दश स्वामिनी सकल स्वामिनीसत्य ॥

चौपाई ॥

जयजय पिघलहु द्रवहु भवानी । बार बार अस भाषण ठानी ॥
तपसी तन शोणित बलिनाना । कीन्ह भांतिबल जीवनजाना ॥
दयावती यदि नहिं श्री माया । कारुणिकायदिनहिंसुखदाया॥
दीनानाथनि यदि नहिं देवी । मानहुनहिं यदितनकहुसेवी ॥
तो नहिं प्रगटहु अम्बा श्यामा । नहिंतर दायाकरहु सुखधामा॥
करत करतश्रम तिनकरप्राणा । कछुक कालमहँ करहिंपयाना ॥
दयावती श्री दुर्ग्गा माया । चण्डिका अम्बिका जगदाया ॥
हो सन्तुष्टा ध्यानहिं आई । प्रगटी करि प्रकाश बगराई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

प्रगटीकरि प्रकाश बिधिभांती दयावति श्रीस्वामिनी ।
बिधुवदना सुन्दरता खानी वपुधरी मनु कामिनी ॥
तीनयना दश आठ बाहुनी सिंह बाहनि राजही ।
भूषण युतशुभ अम्बर नीली अमित शोभा साजही ॥

दो० नटवरनी भल भेषनी चंचल नयना माय ।
॥ अंगअंग बहुकटाक्षनी मोह दायका दाय ॥

चौपाई ॥

शोणित बलिकर भूख न लावे । भाव भक्ति ते प्रगटत आवे ॥
आरत वचन सुनी जगदम्बा । अगजग प्राणन्हकरअवलम्बा॥
दीन गिरा सुनि दरसी रानी । कल्प पादपा सौख्य भवानी ॥
कामधेनु वर मौक्ति गुणानी । दीन दयालनि भगवतिमानी॥
ब्रह्मचारिणी बर वपु वाली । नव युवती सोही जनपाली ॥
मुनि शोभाकस जाय बखानी । सुन्दरता मूलागृह खानी ॥
ज्ञान भक्ति दो तपसी रूपा । तिनकरस्वामिनिप्रगटअनूपा ॥

निरखत रूप गये ते मोही। मनु दोबालक जननी सोही ॥

दो० दोऊ तपसी पुलक अति सुन्दर भयगे देह।
हृष्ट पुष्ट अति पृथम ते अस नहिं निकसे गेह ॥

चौपाई ॥

शोभा मातुकि जाय बखानी। शारद अपन हार मन मानी ॥
शेष गणेश वेद सब जेते। गाय न सक सुन्दरता तेते ॥
सुखमा अमित भरी या देहा। मोहत मोहहु निरखत एहा ॥
कामिकोटिशतरतिसहमुनिबर। बार बार निज रूप निछावर ॥
नव यौवन रति रूप बनाई। काकर ज्ञान कहे सो भाई ॥
जन्म जन्म विद्या बनवाई। अगणितविधियदिसीखहिं आई॥
लेशहु नहिं अस रचना सपने। बिगरतहु नहीं कर सक अपने ॥
कोमल पतरी अति सुकुमारा। सोह अपार रती मद मारा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

सोह अपार रती मद मोचनि बलवती श्री जागती।
कमलकली मुख शोभा बिकसनि ग्रीवा नालहिं लागती ॥
करपद अंग सहित सब भूषण सरित सुन्दर सोहही।
सिंह बंधो सोपान सरित्त कर पार पद नख मोहही ॥

सो० अस जननी ताठौर अस प्रगटीतपस्वीन्हि हित।
अहम् भाषि शुभ ओर सोही अम्बा अम्बिके ॥

दो० लखि सुनि सुरथ समाधि मुनि हृष्ट पुष्ट भयगात।
पुलकित फूले बहुत ते मुख नहिं आवे बात ॥

चौपाई ॥

तपसी मुनि ऋषि भये अनेका। अस दरशन काहुहिं नहिंएका ॥
निज जन कहँ अज दीन्हेनाहीं। हरि नहिं आये अस दरसाहीं ॥
शिव नहिं दीन्हे दरशन ऐसे। शेष भानु आदिक सुर तैसे ॥
युग युग विष्णु न प्रगटे ऐसे। श्री दुर्गा प्रगटी मुनि जैसे ॥
कर जोरे दोऊ जन ठाढ़े। मन प्रसन्न हिय सुख बहुबाढ़े ॥

दामिनि इव शोभिता भवानी । विहंसि मुखासोहत मदसानी ॥
निरखत जाके संकट जाहीं । तृण गण मार समीरउड़ाहीं ॥
सुरथ समाधिहिंबचन न आवा । जन्म दीन वर पारस पावा ॥

॥ लवाणीछन्द ॥

॥ जन्म दीन मनु पारस पाये कल्प बीज सजरलहे ।
नाहिं अघाहिं लकुट इवपरहीं अम्ब अम्बुज पदगहे ॥
बार बार पदरज शीशहिं निज राखि मन लगाइधरे ।
निरखिनिरखिसराहिंसुरगण नभकल्पपुष्पबरषाकरें ॥
दो० बारबार शिर चरणरखि पावन तपसी दोउ ।
॥ पाठ विदित मनवच क्रम लागे पूजन सोउ ॥

चौपाई ॥

पुष्पपान गन्धादिक लाई । धूप दीप नैंवेद्य सुहाई ॥
पूजहिं देविहिं पुनिपुनि धाई । जयतिजयति जयवचनसुनाई ॥
करहिं आरती बारम्बारा । नहिं अघाहिं मनहरषअपारा ॥
कभुपद परहीं शिररजधरहीं । कभु शिरनाइपरिक्रमाकरहीं ॥
करहीं वायु मुदित मन माहीं । चामरकरहिं न उरहिंअघाहीं ॥
महान परमश्वरि विख्याता । जगतजननिबिधिहरिहरत्राता ॥
आदि देविअस नट बपु आगू । निरखिगणहिंतेनिजबड़भागू ॥
जोरि पाणि तिन स्तुति ठानी । जयतिजयतिअम्बिकाभवानी ॥
दो० गर कुठार तृण अधर धरि दोऊलकुटिसमान ।
मातु पदुम पद लपटगे बिसरे निपट अपान ॥
नयननीर धोये चरण करहिं नमन बहुबार ।
बार बार आरति करी जय जय वयन प्रहार ॥

चौपाई ॥

जयजयदुर्ग्गे जयति चण्डिका । अविनाशिनीजयतिअखंडिका ॥
जयदुर्ग्गे दुर्ग्गति नाशिनी । हिंगुला पिंगुला प्रभाकाशिनी ॥
जयतिविष्णु माया सिंह यानी । जय ओंकारा जय कात्यानी ॥

नमामि भगवति जयतिनमामी । माहेश्वरि ईश्वरि वपुकामी ॥
श्यामा कामा कृष्णा पीता । नीरा धौरा रक्ता सीता ॥
शक्ति चक्र आदिक युत पाणी । शूल धरा वसुधा शुभ वाणी ॥
विजया शाकम् भरी भवानी । सत्या नित्या वरदा रानी ॥
महिष मरदनी शुम्भ दाहनी । वसुधेश्वरी वनप्रति वाहनी ॥

॥ लवायीछन्द ॥

वसुपालिनी वनपति वाहनी श्रीदुर्ग्गा नमो नमो ।
दयावती भगवती दयाला हिय हमार रमो रमो ॥
विमूढ़ मूरख हम तव सेवक ज्ञानहु न गा सकहीं ।
जयजयजयतिनमामिनमामी औरनकछुहमकहहीं ॥

दो० भ्रम नाशिनी देवि महा जय जय नमो नमामि ।
जय अम्बालिका अम्बा जय अम्बिका सुकामि ॥

॥ तोटकछन्द ॥

जयदेवि नमामि महा जगकी । शुभगा शुभभेष महा अगकी॥
सकला गिरिजा करुणा करणी । दुर्ग्गे जय दाहनि देवि मणी॥
महिषासुरको वधनी हतनी । कुनिशुम्भकुशुम्भ हतीजननी॥
दल वैरि हती जगदम्ब यदा । जयदेवि नमामि नमामि सदा ॥
अघ नाशिनि मातु महा सृजनी । सत दायिनि पोषनिमाहतनी॥
वदना विधुको सुखमा धरनी । नयना बर तीन दया करनी ॥
दश आठ भुजा शुभ सोह रहे । बहु भूषणआयुध पाणि गहे ॥
वसना वर वीर बनाय गढ़ी । मणिहीरकमोतिन आदिजड़ी॥
जयखंगिनि चापिनि शूलगही । वसुधे विजये परमेअजही ॥
पतिव्रत्त यौवन रूप धरी । जयब्रह्म चारिणि वेषकरी ॥
नवबालकनी तरुणी वृधनी । गतिरूपतु रीयगती सधनी ॥
रविइन्दु प्रकाश शताजननी । सतआदिगुणी भवनीहतनी ॥

दो० गरीबनिवाजनिदेविश्री श्रीप्रभुनी सुखखानि ।
भक्तिदयाकरिचरणकर देवहु सदा भवानि ॥

कलंक रहिता देविश्री काल वर्त्तिनी काल।
नववल्लभ ग्रहवर्जिता भाविनिती जगपाल॥
श्री कराला विकराला महा कालिका कालि।
रौद्रा चण्डी चण्डिका अन्नपूरणा पालि॥

चौपाई॥

परमा विद्या परमा माया। धर्म्मा ज्ञाना शक्ति सुदाया॥
जयति जीरणा नूतन रानी। कालमहाजय जयति भवानी॥
विश्वा लक्ष्मि महान माया। अगुणा सगुणा वपुवर दाया॥
खंग धारिनी शंख पाणिनी। परशु पाश आदिक गाहनी॥
शूल तिशूल गदा वर धारा। महान धर्म्मा धन्या पारा॥
वैष्णवा नन्दा अणि मादा। तन्द्रा निन्द्रा पुष्टा वादा॥
नमो नमो जय शैल वासिनी।जयतिनमामिविन्ध्यनिवाशिनी॥
मृत्युविनाशिनिजयति भवानी। अम्बा अम्बालिका जगरानी॥

सां० डाकिनिशाकिनिमायहाकिनिजागिनिज्योतिजग।
ज्वाला ज्वालिनि दाय रक्षा शिक्षा दिक्ष जय॥
पुष्टा तुष्टा मांत गीता गाना गोचरा।
लज्जा वज्रा घात स्वयम्रूप श्री आदिनी॥

चतुष्पदाछन्द।

जयदुर्ग्गेरानी मातु भवानी नमो नमो जग माया।
अजहरिशंकर अगणितसुरवर भजहिं तुमहिंवरदाया॥
ब्रह्माणी कमला गिरिजा विमला शची शारदा शेषा।
चतुवेदादिकवर जपनिशिवासरमुनिकविआदिगणेशा॥
महिषखलमर्दिनी शुंभादिवधनी निशिचरमहानयूथा।
क्षणमहँश्रीमाता सबहिं निपाता करुणा कृपावरूथा॥
सीदहु श्री माया शुभगति दाया दीन महा हमआहीं।
जयति नमहिंहम सीदहु अबतुम दानप्रदा हमपाहीं॥
जयकेवल एका माय अनेका कारण भव संहारा।

कौमारी कमला माय परकला कान्ता आभाकरा ॥
धर्म्मसुपरायणी जय नरायणी मोक्षाशक्ति अनादी।
शीतला भवानी परमा रानी फल दायक कामादी ॥
नमो नमामि प्रज्ञा जयजय विज्ञा नवयौवना कुमारी।
चित्रिणिचित्रमायाजयविचिभायाजयजलथलनभकारी ॥
जयजागृतिरूपिनिकार्य्यअनूपिनिजयतिजयतिजयमाया।
जयहीरास्वामिनि कोमलदामिनि नमोनमोफलदाया ॥

दो० स्वप्ना वस्था मातु श्री आशा पूरा माय।
मदिरा मोदक मोदिनी अरुण लोचनाभाय ॥
योगवल्लभा जयतिश्री अहमकृत्य अहंकार।
अहम् ममादिक तुमसदा जोवदहीं सन्सार ॥

चौपाई ॥

नमो नमो जय श्री जगदम्बा। प्रसन्न वदना जयजय अम्बा ॥
होहु प्रसन्न देहु बरदाना। तवमुख भाषन भक्तिप्रदाना ॥
करहु दया अब तुष्टा होई। सेवा चाहिं चरण रत सोई ॥
द्रवहु मातुहमनहिं कछु जाना। पिघलहु अम्बा इहपरमाना ॥
होहु प्रसन्न प्रसन्न भवानी। द्रवहु द्रवहु अम्बा जगरानी।
जानहिं नहिं तवगुण हममूढ़ा। मूरख जन जिमि वेदन्ह गूढ़ा ॥
पदरज भक्ति एक नित जाना। दया मयी सो देहु निदाना ॥
जयतिजयतिजयफलवरदाया। नमो नमो अम्बा श्री माया ॥

दो० होसन्तुष्ठा जननितब प्रसन्न अतिशय होइ।
कटाक्ष मय भाषीतहां भागी तपसी दोइ ॥

चौपाई ॥

सुरथ समाधि अहम् सन्तुष्टा। अहम् तोषिता अहमद तुष्टा ॥
श्रवण भई शुभ आरत वाणी। प्राथिता तुम कीन्ही जानी ॥
करुणामय सब दीनी बानी। श्रवण करा गमनीतुम जानी ॥
सकलवचनशुभकरुणतुम्हारा। मन भावने अंगीकारा ॥

स्वीकार जोइ अस्तुति कीन्ही । अचल भक्तदोऊ कहँ चीन्ही ॥
जोतुम याचहु पावहु सोई । चाहहु जो जो देहहुं जोई ॥
याचहु याचहु जोई जोई । पावहु पावहु सोई सोई ॥
मम समीप कछु नहीं विगोई । हो सन्तुष्टा देवहुं सोई ॥
सुनि सुनि मधुरी देवी वाणी । वसुपत्रनिक हरषे मुनिज्ञानी ॥
चरण गिरे बोले करजोरे । मातु निकट वरदान किथोरे ॥

दो० कात्र्यसजो सो निकटनहिं तुम्हरेमातामाय ।
अतुलित अगणितसौख्यगतिमुक्तिआदिसवदाय ॥

सो० निरखत नाहिंअघाहिं दोऊ तपसी प्रेमवश ।
भागहीन तेआहिं जे नभजहिं असदेविकहँ ॥

चौपाई ॥

जैंमिनि पुनि बोले वसुराई । प्रथम भक्ति वरदेहु सुहाई ॥
इहजन्महिं बलअमित अपारा । नाशहुं जाते रिपु दल सारा ॥
पुनि निज कार्यराज मम होवे । कबहुंकमोहहु पुनिनहिं जोवे ॥
जन्म जन्म युग युगअस होवे । चिरकाली शुभराज जुगोवे ॥
मनहु अजाननि अम्बा माता । एव मस्तु भाषीं जगत्राता ॥
सुनतवचन बसुधव अतिहरषे । द्वेवी चरण नयन जल बरषे ॥
नभनिरखहिंसबबिबुधसिहाहीं। धन्य सुरथ बहु भागीआहीं ॥
जयजय बोलहिंसकलसुबानी । श्री श्री दुर्गे जयतिभवानी ॥

दो० नभसुर पूजहिं मनहिंमन देवीदर्शितजान ।
धनमानहिं निजभाग सबबरसहिंसुमनसुमान ।

चौपाई ॥

बोला बनिक बहुत बुधिमाना । मनबिरक्त हो तत्व सुज्ञाना ॥
सबबिधि मोहन माकहँहोवे । मतिभ्रमआदिकदुखनहिंजोवे ॥
अहमरुममकभुनहिं हो पावे । बन्धन मे अरु मोर नशावे ॥
याचहुं पुनि तव भक्तिसुहाई । एवमस्तु भाषीं जग माई ॥
हरषि समाधि गिरा श्रीचरणा । सुख महानंनहिं जावे वरणा ॥

गणविवुध अतिताहि सिहाहीं। इह सम भागमान को आहीं॥
जय जय माते फलदा रानी। काहे नहिं अस होव भवानी॥
सुरथबनिक कर करुणा वानी। सुनि पुनि बोलीं अम्बारानी॥
दो० यदि हरि आदिक जैमिना कोटिकल्पतरु रूप।
वरदानी अस सक नहीं देन प्रसाद अनूप॥
चौपाई॥
अवनिपते परिमित परिमाना। दिवसरहे तव राज चिराना॥
वधि रिपुगण तव राज दृढ़ाई। मम अशीश इह सदा सदाई॥
पुनि जन्महु रविसुत अवतारा। शुभगनाम मनु होव तुम्हारा॥
सावर्णिक मनु नाम सुहाई। पावहु युग युग वसुधा राई॥
सुनि मुनिमहिप हरषिसुखपाये। देवीपद निज शिरहिं नवाये॥
पुलकित देह भये ताकाला। मुनि किमिभाषहुं ताकरहाला॥
जयतिजयतिजयदायिनिजननी। जयजयमातु महाफल सननी॥
गणहिंतुच्छ सुरगण निजभागा। धन्यसुरथ भल भागहुजागा॥
दो० मुनि शतकोटिहु ध्रु वनरप नहिं पायेवरदान।
असपावा जस सुरथ नृप देवि दयायुत वान॥
चौपाई॥
पुनि बनिकहिं अम्बिका भवानी। भाषी सुखद ज्ञानमय वानी॥
श्रेष्ठ समाधी गति पद ज्ञाना। भक्तिमुक्ति मिश्रित वरदाना॥
तुम याचे भल देवहुं सोई। ज्ञानी मन विरक्त तब होई॥
पाहुभक्ति पुनि मुक्ति सुहाई। सदा सदा तव मन महभाई॥
सुनतवनिक हरषा अतिभारी। मातुचरण शिरसह चखवारी॥
पुनि जननी निजभक्ति सुहाई। मुक्ति ज्ञान मय दीन्ह दृढ़ाई॥
पुनि पुनि दोउ शीश हरषाई। परशहिं मातुचरण फलदाई॥
कोमलकरदुइ चार भवानी। तिनकर शीश उठावहिंरानी॥
श्रीपदरज हिय शीशन्हमाहीं। लगा वहीं तपसी हरषाहीं॥
लखि लखिमुखसुन्दरताभारी। पीवहिंकरिचखमुखहियधारी॥

दो० पाणि परस कोमल शुभग निरखनिरखनभमाहिं ।
जरहिं अमर गण नारिसह धनधन तपसीआहिं ॥
हरषहिं दरशित जानिते वरषहिं सुमन सुमाल ।
जय श्रीदुर्ग्गे चण्डिके धन दो तपसि विशाल ॥

चौपाई ॥

निरखिदेविरुचिअन्तरगतिकर । जयजय बोलेतपसीमुनिवर ॥
जय मालिनिपालिनिजगतीना । सृजभवनाशसहितपुनिहीना ॥
जयदुर्ग्गा अम्बिका भवानी । दास निवाजिनि महानरानी ॥
जयति निराश्रया निराधारा । सिद्धिदा वृद्धिदा नहिं पारा ॥
अमर वन्दिता फल वर दानी । रूपअनूप रती मद सानी ॥
कुलविद्या कुल पूजित माता । जयजययुगयुगयशविख्याता॥
अविकारा परकारज करनी । जन्महीन पुनि जगअवतरनी ॥
नमो नमो जगदम्ब भवानी । श्री श्रीदुर्ग्गे जय अधिरानी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

श्री श्री दुर्ग्गे महाधिरानी जयति जय वपु भामिनी ।
श्रेष्ठा जेष्ठा जय जय निष्ठा अजादिअमरस्वामिनी ॥
मीन कमठ पुनिवराह मूरति जय ब्रह्मानि कामिनी ।
वैष्णवी श्री महान देवी प्रहलाद भक्त स्वामिनी ॥
निधि सिधि रूपा अणिमादेवी हृदय अन्तरयामिनी ।
जल थलनभ चराचर जगत करनितनितमातुजामिनी ॥
मोक्ष दायिनी महान काली अग जग वेष कामिनी ।
दीन अधीन शरणागत सेवक दास हीरा स्वामिनी ॥

सो० अगणित जग की सार श्री दुर्गा जग दम्बिका ।
विष्णुहु ब्रह्म अपार सोहु न पावें पार तव ॥
आदिशक्तिबलसार भगवत बल श्रीभगवती ।
परमेश्वर कर आर माहेश्वरि परमेश्वरी ॥

दो० अजहरि शिवदीन्हेनहीं कबहुंक असबरदान ।

जसदीन्हे श्री चण्डिका अटल राज मनुमान ॥
भजहु नित नित मूढ़ मते श्री दुर्गा सुभवानि ।
तीन लोक नित पालनी प्रभुनी महाधिरानि ॥
बरमूला राकेश मुख तीनयना अति सोह ।
अठदश बाहुनि सुन्दरी दोऊ तपसी मोह ॥
तपसी योगी सुर गगण सबहु सराहत जाहिं ।
पुणय पुंज प्रगटे दोऊदरश हमहिं असनाहिं ॥

पंचचामर छन्द ॥

नमामि देवि दाहनी सुवाहु सिंह वाहनी ।
तिलोचनी अठारनी भुजा लम्ब पूसारनी ॥
विभूषिणी कंचुकिनी सुनीर सारिअंकिनी ।
भक्त सुकाम धेनवी कल्पवृक्ष सुबेनवी ॥
महान मातु श्री वरी महान देवि श्री धरी ।
अजालक्षि शिवा सबे तवांश ते भई अबे ॥
अजादि देव मानहीं प्रताप भाव जानहीं ।
स्वभाव भाव पावते सुकार पाल हारते ॥
सुरेशनी जगेशनी महा चरा चरे शनी ।
जले शनी थले शनी नभेशनी सबे शनी ॥
दुर्गदुर्गार्ति नाशिनी स्वयम् रूपप्रकाशनी ।
अनादिनी अनन्तनी सनातनी विसन्तनी ॥
अनादि जोति आदिनी मध्य हीन वादिनी ।
चिदा नन्द निरूपिनी जगे सुती अनूपिनी ॥
सुलोक भार मन्दरी कमासु शोभ सुन्दरी ।
अजा महान मातुश्री अनेक देह देवि श्री ॥
भक्तिभाव लोभनी कुकाल भीति क्षोभनी ।
अपार मार मोचनी तिलोक लीक रोचनी ॥
कहूं नहीं समानतो फलादि दायका नमो ।

नमामि लोक जामिनी नमामि हीरस्वामिनी ॥

दो० जयति जयति मातामहा दुर्गे अम्बे देवि।
भक्ति प्रेम याचहिं सदा देहु लेइ कछु सेव ॥
मीन हृदय हमरो बसो तायरूप श्रीमाय।
चातककहँजिमिस्वातिहैतिमितवपदरजदाय ॥

चौपाई ॥

बार बार अस्तुति तिनकीन्ही। यद्यपि बर जगदम्बा दीन्ही ॥
जय जय करिते नाहिं अघाहीं। दरशन भूखरहत पुनिजाहीं ॥
सुमन माल बर लेइ अनन्दे। धूप दीप नैवेद सनन्दे ॥
पुनि पुनि पूजहिं तपसी दोऊ। श्रीवरमालिनिपालिनिसोऊ ॥
पुनि पुनि आरतिकरहिं भंवाई। जाते बेग न अन्तर जाई ॥
अन्तर गत अब होवहुं दासा। तोषितपुनितुम्हारहियवासा ॥
चरण गिरे दोऊ कर जोरे। ध्यान रखे शुचिमननहिंथोरे ॥
अस कहि गमनी अन्तरध्याना। जयतिजयतिवदतपसीजाना॥
गमनी जननी तपसी दोऊ। बड़ी बार हिय राखे सोऊ ॥
नयन मूंद तिन ध्यान लगाये। बहुत काल उघरे नहिंभाये ॥

लवायीछन्द ॥

ध्यान रमाये श्री जननी कहँ तपसि दोउ भाग भले।
अन्तरगत गमनी श्रीदुर्ग्गा दोउ हिय तब तलमले ॥
तदपि जाने अनूप भाग निजपदवी अमर तुच्छ गने।
जय जय पालिनि तारनि हीरा भूरि भागी इन बने ॥

दो० मुनि तपसी दोऊ गये निज निज जैसोठौर।
जपत रहेनित मातुकहँ श्रीजननीनहिं और ॥
पाय समयसोसुरथनृप सावर्णिक मनुनाम।
पावा तन रविवंशमहँ कथा विदित तांधाम ॥

चौपाई ॥

हरे हरे अन्तरगत माया। हिय हीरा कहँ शोकआमाया ॥

अबलौं कथा रही सब ऐसी । दरशितदेवि कथा गुणवैसी ॥
दरशित रूप कथा मैं गाई । अब न रहा सोअवसरभाई ॥
याते लेखन महँ कछु नाहीं । असरसजसरसदरशितमाहीं ॥
तद्यपि जानि भले मन माहीं । नित्या माता दरशित आहीं ॥
हिय हीरा किमि अन्तरध्याना । होवे माता नित परिमाना ॥
मातु कृपा वर पाय सदाई । गावत जावहुं कथा सुहाई ॥
जैमिनि भानुज मनुसावरणी । होवहिंसमयपाय असकरणी ॥

दो० भुवन विदित इह कथा सब मैं गाई संक्षेप ।
श्री दुर्ग्गा असकौतुकिनि करहांकौतुक तेप ॥

चौपाई ॥

पुनि पुनि लेखक हियमहँ आवे । छूटत लेखनि अन्तहु जावे ॥
अब न रहा अस अवसर भाई । जाते लेखन महँ असआई ॥
जाते अस रचना मैं पाऊं । देवी दरशित रूपहु गाऊं ॥
तदपि हरषहिय महँ यहलाऊं । पठन श्रवण पाठहिंकरपाऊं ॥
नाते दरशन वारम्वारा । आवहिं बिनश्रमगुणविस्तारा ॥
सदा दान वर अस बरदाया । हियहीरा नितवासिनिमाया ॥
असहियते अस अन्तरध्याना । कबहुं न होवे मातु प्रधाना ॥
सो मम लेखे नित दर साई । पाउं मृत्यु वरु जन्म जन्माई ॥

दो० लोक चौदह स्वामिनी श्री श्री माया अम्ब ।
सदा सदावर दासकर होहुप्राण अवलम्ब ॥

चौपाई ॥

जिमि जैमिनी सुरथ महिराई । हारि रिपुनते मोह सनाई ॥
सोच करत मेधस ढिग आवा । वनिक समाधी पुनिमुनिपावा ॥
पुनि मुनि मेधस कथाअरंभा । धर्म्म धुरी धर सतकर खंभा ॥
आदि शक्ति वर महा प्रभावा । दुर्ग्गा शक्ति महान सुभावा ॥
अजउत्पतिमधुकैटभ निशिचर । शक्ति प्रभावहरिमारे तिनिधर ॥
महिष दनुजपुनिसुरसबजीते । सुर सुरपति सबसम्पतिरीते ॥

अमर स्तुति माताकरकीन्ही। आदिजोति जिमिदरशनदीन्ही॥
महिषकटकश्रीसमरबखानी। महिष हतन पुनिकीन्ह भवानी॥
दो० अन्तरगत श्री मालिनी पाये सुर गण राज।
मेधस कृत वर्णनविविध गावा मैं हितकाज॥
चौपाई॥
कालपाय पुनि अतिविकराला। शुंभ निशुंभभये मनुकाला॥
अमर यूथ गमने हिम ठौरा। दरशित पारबती तिहि ओरा॥
शिवा देवि अवतार अनूपा। भयेउ स्वयम् देवी स्वरूपा॥
कालि कालिका महान काली। विधिवरणनजोखलगृहघाली॥
निशिचर दूत देवि सम्बादा। महा महा निशिचर वधबादा॥
देवी दितिसुत दल सुलड़ाई। सुन्दर भांति कही मुनिराई॥
अजा आदि सब देवि भवानी। सुन्दरसाज सकलगुणखानी॥
प्रगटी सब तहँ सोहहिं देवी। रूप अपार जिनहिं रतिभेवी॥
दो० चण्ड मुण्ड पुनि बधन जिमि रक्तवीज वधनादि।
घोर कठिन विकराल पुनि शुंभनिशुंभ वधादि॥
चौपाई॥
गगण समर बहुभांति वखानी। वनिक वसुपसन मेधसज्ञानी॥
निशिचरगतिजिमि महानपाये। सुर स्तुति पुनिकीन्ह सुहाये॥
पाये राज अपन मन भाई। देवि महातम सब फल दाई॥
चार पदारथ सहजहिं आई। सो सब वरणन भये सुहाई॥
कृपादृष्टि करि हो वरदाई। अन्तर गमनी माया माई॥
सुरथसमाधितपस्या पुनिमुनि। वर्णनकीन्हभईजसजिमिपुनि॥
दर्शन देवि कथा स्वरूपा। सकलकहोमुनि विधिअनुरूपा॥
अन्तरध्यान देवि करतहवां। तपसी गमन तरनतहँजहवां॥
मुक्ति दायिनी कथा सुहाई। सो संक्षेप मुनी मैं गाई॥
समय पाय नृप मनु होगये। यही कथा पर तव प्रश्नभये॥
दो० सो मैंतुम सन जैमिनी कथा कही समझाय।

चार पदारथ दायिनी भक्ति प्रदा वर दाय ॥
याते मुनि नित ध्यावहो श्री दुर्गा जग माय।
आदि शक्ति श्री जोति वर श्री माया बल दाय ॥

चौपाई ॥

मुनि वर हरि माया बलदाया। आदि शक्ति श्रीदुर्गा माया ॥
अनुभव करि देखहु मनमाहीं। शक्तिविहीन कहाकोआही ॥
जीव चराचर सब जग माहीं। जलथलनभ जेअमित कहाहीं ॥
सकल ठाम सदा प्रति माहीं। शक्ति विहीन लखा कछुनाहीं ॥
सोइ शक्तिबल विष्णु कहावे। जाहिंईश्वर नित जग गावे ॥
यदि माया नहिं जानी जावे। तबहिं ईश्वर किमिकहि आवे ॥
अस माया भरोस असईश्वर। जगवन्दितनितनित जगदीश्वर॥
सोइ सुभाव शक्ति नितआपी। जाते विष्णु सदा सब व्यापी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जाते होत सदा सब व्यापी विष्णु ईश्वर भाषहीं।
सो श्रीदुर्गा आदि शक्तिहै ईश माया राखहीं ॥
प्रकृति महासो जाकहँ गावें महा कारण जानहो।
स्वभाव महा सो शक्तिहु आवे कार्य्य ईश्वर मानहो ॥

दो० सो माया बश हरि रहत आदि शक्तिअसदेवि।
काहे न भजहु मात अस जाकहँ भव लयभेवि ॥
सोइशक्ति सब स्वामिनी हीरा स्वामिनि माय।
हीरा पालनि तारनी श्री दुर्गा गति दाय ॥

चौपाई ॥

मातुकथा मुनिवर मैं वरणी। सततसुखकरणीकलिमलहरणी॥
विधिहरिहरसुरमुनिसबजाहीं। चाहहिं तन मन तनमनगाहीं ॥
बेद पुराण निगम सदग्रन्था। एक अनेक कथा विधि पन्था ॥
सब कर सार सत्य इहमाहीं। गूढ़ कथा युग लोकन्ह ठाहीं ॥
शारद नारद शेष गणेशा। अजानाथ मा नाथ महेशा ॥

सकहिं चलानहिं निजनिजगोचर। समझनपाठन देवि पाठवर॥
पुनिसबमानहिं जपहींनितनित । एकअनादिनिआदिंनिस्वसत॥
जपहिं देविकहँ नित ते गाहीं । देविकथा सुन्दर मनलाहीं॥
अगणित चौदहभुवन मझारी । एक मालकिनि सब आधारी॥
सो श्री दुर्ग्गा देवि भवानी । हीरा स्वामिनि चण्डी रानी॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

स्वामिनि हीरा काटनि पीरा अखण्डिका सुमालिनी ।
ब्रह्माण्डअगणित सृजपोषहत करिबहुभांति जालिनी ॥
भजहु देविकहँ जैमिनि मुनिवर जोअसलोक नामिनी ।
तनमन धनहित चितसनेह सौं लेभक्तिमन कामिनी ॥
जाकर चरित्र अनूप पावन नशावनि सुर शोककी ।
भवनिधितरणी कलिमलहरणी सोपान सुरलोककी ॥
भव वारिधि सेतुनी पावनी देवीकथा नामहै ।
जपहु निरन्तर नित नितगावहु जोचार फल धामहै ॥

दो० व्यासशिष्य जैमिनिमुनि धनधनतुम्हरोभाग ।
सुनेकथा श्री देविकर जो गावहिं सुरजाग ॥
अन्तभई अबशुभ कथा जो मानहु कछु आन ।
पुनिपुनिआनहुदेविकहँसहितकथानिजध्यान ॥

चौपाई ॥

अससुनिजैमिनिमुनिवरजबहीं । जय जय देवी भाषा तबहीं॥
जयति देवि श्री मातु भवानी । अम्बा अम्बिका जग रानी॥
जय श्री दुर्ग्गा आदिनि माई । महान माया सब सुखदाई॥
पुलकितहियहियकीन्हाध्याना। हियमहँ नमनकीन्ह विज्ञाना॥
पुनि मारकण्डेय पद माहीं । शीश नवाय कहत मुनिपाहीं॥
धनधनमुनिवरबहुहितकीन्हा। देविकथा श्रोता जो चीन्हा॥
कोटि कोटि मुखइह उपकारा। वरणिनजाय मुनीशतुम्हारा॥
सुनेउँ चरित देवीकर पावन। कलिकलंक अघराशिनशावन॥

भयेउँकृत्यभलिभांति मुनीशा। धनधनधनमुनि धन्यऋषीशा॥
दोउ परस्पर सहित सप्रीती।मिलहिं करहिंबहुविनयविनीती॥
निजनिज आश्रमध्यानलगाई। लगे जपन श्री देवी माई॥
जयतिजयति जयमातुभवानी। भक्ति मुक्ति दायक सबदानी॥

दो० अतिपावनयहकथावर वसुप वनिक वरदान।
मातु भक्तिकर मूलवर पाहु भक्ति करिध्यान॥
श्री दुर्ग्गायश अन्तअब सुनिये ती जगवाग।
जन पावहिं देवीकृपा जिनकर महानभाग॥

चौपाई॥

मन करि श्रोता वक्ता होई। जपहु देविकहँ स्वामिनिजोई॥
गाहुं कथा विदिता सुखदाई। माता मूरति इह विधि लाई॥
ममकलिमल मधुकैटभ जानी। कामादिक षटरिपु मनमानी॥
महिषासुर खल चण्ड मुण्डजे। रक्तबीज शुंभ निशुंभ हुते॥
असमलदोअस षटखललागी। देवी दरशित ममहित भागी॥
असमानी मनहित कछुगाऊं। देवि कृपा दरशन सो पाऊं॥
कृपासहित मारमहु ध्यानमहँ। असअवतारी आजदिवसइहँ॥
सुनमनतनमनहितचितध्याना। जपहु निरन्तर देवि प्रधाना॥

लवायीछन्द॥

जपहु निरन्तर देवि प्रधानहिं श्री दुर्ग्गा मातु कहीं।
दशचारजग प्रख्यात मातुहिं आदिशक्ति जगतमहीं॥
विधिहरिहरजननी सबजननी वपुरहित वपु नामिनी।
जपहुभजहु नितध्यावहु दुर्ग्गहिं दासहीरास्वामिनी॥

दो० श्री श्री दुर्ग्गादेविजय जयजयमाय भवानि।
करहु कृपानिज भक्तिवर देवहुदासहिं जानि॥

सो० युगयुग नाहिंअधार हीराहित विनशक्तिकर।
पुनिसबहीं कर भार मायाधरी महान वर॥

चौपाई॥

मनविचारि लोकहु भवरचना। सबविधिअमित नजावेवदना॥
अमितअतुल ब्रह्माण्ड निकाया। चारहुयुगमहँविदित कहाया॥
आठ वीस कइ बार बिताई। उपजहिंविनसहिंआवहिंजाई॥
प्रलय महान प्रलय सब केरो। होत सकल कर एरन फेरो॥
अन्तहु कैसहु रहत एक नित। आदिशक्ति असशक्ति महासत॥
पुनि इह बल सब होवतजावे। नाशहु महँ इक शक्ति कहावे॥
सोश्रीदुर्ग्गा नित विख्याता। आदिअनादिनि देवि प्रदाता॥
ताकर नाश कबहुं नहिं होवे। जगे महान प्रलय पर जोवे॥
याते ध्यावहु देवि भवानी। आदि शक्ति श्रीमहान रानी॥
अगजगस्वामिनि एक रूपिनी। ब्रह्माण्डराशि एक अनूपिनी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

ब्रह्माण्ड अनेकन्ह अतुल अमित अगणितबहु बखानहीं।
इनमहँ एक शक्ति श्री मायहिं हरि हरादिक मानहीं॥
भजहु जपहु ध्यावहु निरन्तर श्री दुर्ग्गाजु नामिनी।
आदिअनादिनि शक्ति भवानी देविहीरा स्वामिनी॥

दो० मातु जननि माया जगत महान माया माय।
आदि भवानी मालिनी चार पदारथ दाय॥
अखण्डिका श्रीचण्डिकाविधि हरिहरमयशक्ति।
पुनि सबकर नितआदिनी देहु दया करिभक्ति॥

चौपाई॥

समझहु मन सविवेकसज्ञाना। लाख चौरासी योनी नाना॥
कीट पतंग पक्षि पशु योगा। पुनि मनुतनहोकठिनसंयोगा॥
अमरन्ह कहँ दुर्लभ इह देहा। याचहिं सदा न पावहिं एहा॥
सकलसुलभजग इहतनपाये। पावहिं भक्ति मुक्ति मनभाये॥
युग युग गयेकरत तपआदी। योग याग जाप संयमादी॥
केवल प्रेम करत हरि माहीं। गावत गुण आदिक सबपाहीं॥

अनजनतनधनफलहिंसुखादी । पावहिंजन विनयास फलादी ॥
परमेश्वर हरि अग जगनाथा । जगत नाम जोनाथ अनाथा ॥
दो० सोहरिकरसतस्वामिनी आदिशक्ति विनदेह ।
जानहुमानहु ताहिकहँ सहितसप्रीतिसनेह ॥
चौपाई ॥
पावत मनुतन जानहु ऐसे । ज्ञानादिक आवसहीं कैसे ॥
बुधिबल ज्ञानसहित पुनितैसे । करहुविचारविविधविधिजैसे ॥
बीत बालपन खेलन खेला । पठन लिखन आदिक ताबेला ॥
मद उमँगत यौवन पुनिआवे । कामादिक वश कर्म्म करावे ॥
लोभमोहआदिक मिलितबहीं । पोषण उदरचलावहिंसबहीं ॥
बहु विधि बीत वृद्धपन आवे । जहां राखि पछतान समावे ॥
चिन्तानहिं यदिअसजगमाहीं । इहमहँ सुलभ एकपथ आहीं ॥
भजनभाव सबविधि बनआवे । भक्ति मुक्तिनर सहजहिं पावे ॥
सो० चमत्कार बड़ आव श्री माया जो आदिकर ।
जगमहँ राखबनाव सबहिं भुलाइउबारपुनि ॥
आदिशक्ति श्री जोइ अगजगकहँभुलायरही ।
आदिदेवि श्री सोइ करिकृपालव उबारहीं ॥
चौपाई ॥
सो देवी तव सत्य स्वामिनी । महानदुर्गा शुभग नामिनी ॥
जाकर शक्ति लेश आधारा । लोकहुकरतब विविधप्रकारा ॥
यदिनहिं एतहु बहुत बड़ाई । परम सर्व्वोत्कृष्टा माई ॥
भृकुटिफेर कस रचना करहीं । पुनिअसइकइकरोमहिंधरहीं ॥
तव जग सहितबहुतजगआहीं । सन्मुख रवि चहुंओरभ्रमाहीं ॥
असअसअगणितअमितअपारा । रविमण्डल रचना विस्तारा ॥
सोपुनिराखहिंअगणितदिनकर । इकते इकमहान बहु बढ़कर ॥
पुनिसब राखहिंबहुअसरचना । बहु ब्रह्माण्ड नजाय कल्पना ॥
असपुनिअगणितअमितअपारा । जगब्रह्माण्ड रचन विस्तारा ॥

विविध भांति सुन्दर बनवाई । रचना अकथ बखान न जाई ॥

दो० अमित अतुलित अपारपुनि अगमअगोचर जोइ ।
विराटता मय देह धृत नाम शक्तिहैं सोइ ॥
देहरहित यदि शक्ति हैं मनगति हित के लेख ।
जानहु समझहु देह अस अलख ज्ञान ते देख ॥

चौपाई ॥

अस वपुकर रोमहिं इक एका । उक्तलिखित बूह्मागड अनेका ॥
रोमहिं रोम बंधे बहु भारी । सबविधिअगम रचनविस्तारी॥
पुनि इनकर सृजलय कसगावे। गोचर ज्ञान काम नहिंआवे ॥
सत आदिक सुन्दर युगचारा । जाहिकाल बिभुदशअवतारा ॥
अस चौकड़ि अट्ठाविस वारा । यदिपुनिकहहिंगणितकरद्वारा॥
अस चौकड़िअगणितकइवारा । होवत जावे अगम अपारा ॥
सृजशक्ति बूह्मा अस नामा । जाकर नित उपजावनकामा ॥
ऊप लिखित बूह्माण्ड अनेका । उपजावत नित इकते एका ॥
पूतिदिननितउपजावतसोअज । दिनभररहहिंजगबहुअससज॥
इहिविधिविष्णुशक्तिरहदिनभर। अजकरसायंकाल आवफिर ॥
रुद्रशक्ति बिनसहिं संसारा । एक दिवस अजअसविस्तारा ॥
पुनि सत यामिनिअजले सोवे । शत शत कोटिवयसअसजोवे॥

दो० अन्तकाल अस अजहुकर जब पूरण होजाय ।
ले गणना इहते अधिक विष्णु वयस पुनिपाय ॥
सोइ विष्णु पुनिरचतहैं अग जग जसमुनिगाहिं ॥
पुनि शिवरचना करतहैं रचना विधि अधिकाहिं ॥

चौपाई ॥

आदिशक्ति पुनि इच्छा पाई । तत्व गुणादिक नाशहिंभाई ॥
पूलय महा होवत क्षणमाहीं । जल जल होवे पुनिकछुनाहीं॥
जलते पावक हो विस्तारा । होतअनल ते अनिल पूसारा ॥
होय पवनते पुनि आकाशा । ताहुते अहंकार पूकाशा ॥

सोइ अहंकार मिलि जावे। आदि शक्ति महँ इच्छा पावे॥
सोइ शक्तिश्री दुर्गाआहीं। लोकहुकस रचना श्रुति गाहीं॥
पुनि इच्छा शक्तिसु प्रगटावे। अहंकार प्रगटत पुनि आवे॥
पुनि आकाश पवन पुनि आये। ताते पावक पुनि जल जाये॥
जलते इच्छा शक्ति चलावे। महातत्व गुण आदिक आवे॥
इनकरसमरनलखजलमाहीं। शक्ति इच्छ मनु रूप लखाहीं॥

दो० सोवपु मनुमुनि गावहीं आदि पुरुष रवि नाम।
शेषसहित लक्षीसहित क्षीर पयोधि सुठाम॥
पुनि अज आदिक आवहीं पुनिलखिये ब्रह्माण्ड।
युग युग होवहिंरचन अस जगगावहुं इह काण्ड॥

चौपाई॥

लोकहु मन कसचमत्कृतआहीं। महिमा आदिशक्तिबलमाहीं॥
वेद गिरा सब विधिगम नाहीं। अगणितमनकछुजाननपाहीं॥
अगणितविधिहरिशिवसबआदी। सकहिं जाननहिं कासम्बादी॥
क्षण क्षण अस ब्रह्माण्डअनेका। हो अज शक्ति प्रगटइकएका॥
विष्णु शक्तिपुनि रह बहुबारा। भूतनाथ पुनिकर संहारा॥
सोइ शक्ति श्री दुर्गा माया। हीरास्वामिनिसबविधिभाया॥
अगणितविधिहरिआदिकमाहीं। शक्तिप्रकाशकरत नितआहीं॥
सर्व व्यापता जाकहँ कहहीं। सो सब भांति वेदमहँअहहीं॥
पुनिसब मिलहिं शक्तिमहँजाई। पुनिहु आदि बल ईशकहाई॥
जिमिभूषण बहु हाटक केरा। होत गलावत एकहि ढेरा॥

दो० बहु भाजनजलप्रकाशजिमि दिनपतिकरलखजाय।
फूटत वासन कछुहु नाहिं दिनप एक दरसाय॥
इहिविधि अगणित लोकसब ब्रह्माण्डहु इक एक।
क्षीर पुरुष महँजाहिंमिल विधिविधि एकअनेक॥

चौपाई॥

पुनि सोइ क्षीर पुरुष गतजावे। आदिशक्ति करइच्छहिंआवे॥

आदि शक्ति दुर्ग्गा जु प्रकाशा । ताकहँसुमरहुजबलगिश्वासा॥
इच्छा जनित पुरुष परमेश्वर । जानहु मानहु मनमनलाकर ॥
नहिं भरोस जीवनकरकरहो । अगम विचार चेतभलभरहो ॥
छलकरिवपुकहँ तजहींप्राणा । जाय न जान काह परिमाणा ॥
बीतहिं राति दिवसइहिभांती । जाननजायवयस किमिजाती ॥
कामादिक षट वैरि निरन्तर ।रखहिंमगननिततुमकहँवशतर ॥
कठिन करालजगतपनचाला । इनते उबरब कठिन कराला ॥
याते भजहु आदिबल जोई । आदि शक्ति सो महान सोई ॥
जाते तर भवनिधि सहजाई । याचहिंअमर कठिन मगपाई ॥

दो० जन्मत बालक जानहीं माता पुनि पितु जान ।
तिहिविधि प्राणीमानही आदिपुरुष कहँ मान ॥
परमेश्वरसो आदिमनु जपहिंजगत सबजाहि ।
परसो इच्छा रूपमय आदि शक्तिकर आहि ॥

चौपाई ॥

सोइ शक्ति श्री आदिनि माई । आदि पुरुष जाकर स्वभाई ॥
जपहु जाहि जो आदिनिमाया । आदि शक्ति श्रीएक निकाया ॥
मन विचारि देखहु मन माहीं । यदि ब्रह्माण्ड अनेकन्हआहीं ॥
तिनमहँ इह जग लवांशमानी । अगम दशानहिंजायबखानी ॥
नहिं भरोस तन क्षणहुइकाई । बाल युवा वृध जाहिंनशाई ॥
सब कहँ भक्षत काल कराला । बिनाबेर पावत निजकाला ॥
सोइकाल कर कालिनि माया । महान कालिनिमृदुउपजाया ॥
आदि मालिनी सब गुणखानी । भगवति दुर्ग्गा महाभवानी ॥
दो० मातुपिता भगिनी सुता सुत भ्रातादिक नारि ।
मीतआदि सबविविधविधि भांतिसुभांति अपारि ॥
भूतिराज वैभव सकल सुख सामग्रि अनेक ।
मरन काल नहिं आवहीं हित काजहु तब एक ॥

चौपाई॥

पाप पुगयकरणी तिहिकाला। जाहि संग बिन संशय हाला॥
जगतसपनइव जगसुखसपना। समझहुकोउ न होवतअपना॥
जिमिसपनहिंभोगहिंतियसंगा। सबविधि होवत कर्म्मप्रसंगा॥
मृषा करनि सो सपन मझारी। वीर्य्यपरनसतहो निरधारी॥
इहिविधिजगमहँभलअनभलकर। फलपावहिंजबहोवमरनवर॥
सपनहिं निद्रा जागत आवे। सबविधिकर्म्म सुफलदरसावे॥
इहिविधि मरन कालके पाछे। भोगहिंनरफलसबविधिकाछे॥
याते जनि भूलहु जग माहीं। मृषाअसत हैं सत सतआहीं॥

दो॰ इहियुगयुग महँ प्रबल अति रजतम इकते एक।
रिपुमहँ कामादिक बली जो पे रह निज टेक॥
कामलोभ पुनि इनहिंमहँ नारि वित्तलगिआहिं।
इनते उबरहु मन सदा युक्ति भजन बिननाहिं॥

चौपाई॥

मनश्रुति वेद पुराण अनेका। मुनिकृत ग्रन्थ एकते एका॥
तप जपादिवर साधन नाना। लघुबड़विविधभांतिनिरमाना॥
सबकर फलअस निश्चितआये। सत्य मृषानहिंदुरहिं दुराये॥
पुगय सत्य अघमृषा समाना। युगयुगलोकप्रसिद्ध प्रमाणा॥
इनकर करणी श्रुति बदऐसे। मनकरिये तनमन चितकैसे॥
माया लोभे माय भुलावे। माय मोहिं माया उबरावे॥
इह अचरज सब कहहीं गाई। सुनहुकरहुमनविधिसमझाई॥
समझहु तो सब कछु होजाई। मनसाधितकृत हो न मृषाई॥

दो॰ भांति भांति तनपावहीं विविध जीव जगमाहिं।
सबमहँ उत्तम मनुज तन द्वारमुक्ति कर आहिं॥
याते इहतन पायकर जो न भजे श्री माय।
पुनिसो इच्छज ईशकहँ सो नरमूढ़ कुभाय॥

चौपाई॥

आदिशक्ति इच्छा बल पाई। कृपासहित बलशक्ति प्रभाई॥
पुरुष योषिता हो संयोगा। होवत दोव वीर्य्य कर योगा॥
सोइ बीरसो दिन बहुभांती। जलइवखौलपांच दिन राती॥
दसहिं दिवसबंधगांठप्रमाणा। सोउपजत इक बेर समाना॥
दिवस पांच दश होवे मांसा। कछुक लांब होवे तहँ बासा॥
मास दिवसमहँ चारहुं ओरा। फूटहिं करपदसिर करपोरा॥
दूसर मासहिं फूटहिं अंगुरी। चर्म्मअस्थितीसरमहँ बगरी॥
रोमनाक चखु इन्द्रियाकारा। आदिक होवें मासहिं चारा॥

दो० पांच मास महँ मयकृपा होवत आत्म प्रकाश।
जाकहँ जीव बखानहिं ताकरसृजनहिं नाश॥
क्षुधा तृषातवव्यापहीं कछुनहिं मिल ताठाम।
मनहु नरकमहँ परेउसो महानदुख करधाम॥

चौपाई॥

षट मासहिं गति हो दुखदाई। पद ऊपर शिर तर होजाई॥
सातआठ मासहिं घबरावे। तहँ नरविविधभांतिदुख पावे॥
तहां विविधपछितान लखाई। सोअविकलकछुकहिनहिं जाई॥
अमित अपार दुखदगतिआई। सर्व्वभांति तहँ विपदिलखाई॥
नरककुण्ड सब विधि दरसाई। जोकछु कहिय थोरसब भाई॥
पूरत नव दश मांस कुभांती। पवन प्रसूत कुबल संघाती॥
तिहिं पावत सोनर बहिरावे। बहिरत अमित दुःख सोपावे॥
गर्भवाम ते कन्या आवे। दाहिन ते नरदेह जनावे॥
उदरहुमहँ पुनि उपद्रवनाना। बाल मरतपुनि वीचहिं ठाना॥
जननी जीव कबहुं लेलेई। नरक कथित अस बहुदुखदेई॥

दो० जन्मकाल जिमिदुखदहैं तिहिविधि मरनहुकाल।
जेजानहिं ते जानहीं भोगन कवन हवाल॥
उपजत कछुहु न मन रहे बिसरजात सबहाल।

क्षुधा तृषा हित रोवही सूझ न कछुसो काल ॥

चौपाई ॥

बालक युवा जरठपन सबरे। जगतजालकृत दुखहोंसगरे ॥
खेल कूद विद्या पठनाई। बिवाहादि सब कर्म्म लगाई ॥
सुत परिवार आदि सुखयूथा। कर्म्म धर्म्म व्यवहार वरूथा ॥
बयसबीत इहिविधिजगमाहीं। रोगमिलतक्षयाक्षयादरसाहीं ॥
वात पित्त कफ मिलहीं आई। मरनकाल जब कछुन उपाई ॥
ताहि काल कर दुःखअपारा। अमितअतुलसबविधिनिरधारा ॥
याते जानहु भजहु स्वामिनी। पुनिपुनिनिजस्वामीदोउनामिनी॥
पुनिश्रुतिबदमनतनजगमाहीं। याचहिं देवहु संशय नाहीं ॥

दो० यदिसत पूछहुमनमही तोसतइहसब भांति।
नरतनइवर्नहिं आनतन होवांछितफलजाति ॥
जगकृतसुख सबभोगके भक्तिमुक्तिनर पाहिं।
सहजद्वार इहजगतमहँ समुझदेखमनमाहिं ॥

चौपाई ॥

जग महँ तीन महा महिपाला। सतरजतमविकरालविशाला ॥
इन महँ रज तम दोऊ ऐसे। जीतहिं अगणित जीवहिंकैसे ॥
पशुपक्षी नर करि वश अपने। दुखमय सुख देवहिंजगसपने ॥
चाहहु मन यदिअपन भलाई। जोरहु सत नृपकर कटकाई ॥
पुनिहु साचरजरजतमकरभल। सुखहिं भोगपुनिजीतहुकरछल॥
काहेते सोचहु जग माहीं। रजतमवसुपतिकसजगआहीं ॥
काम कोह मद मत्सर माना। लोभ वैरि षट मंत्रि समाना ॥
इन्द्रियसुखकर रसविधिनाना। सुन्दर आहिं वशीठ समाना ॥
जगवित रूपा जगकर नारी। अधर्म्मा सत्यापकर्म्माभारी ॥
अविद्या ज्ञानादि सब रानी। देहिं भुलावा करहिं मुहानी ॥
स्वारथ निजहित आदिकनाना। सुतआदिक परिवार समाना ॥
इनमहँरति गतिविविधप्रकारा। नामो आदि होहिं महि भारा ॥

दो॰ अघअसत्यपुनि प्रबलअति सेनापतिविकराल।
चतुराईनिजबलसहित साजहिंकटकविशाल॥
पुनि असत्यसबभांतिहैं सकल पापकरराशि।
निज विचित्रदल लेइकर शुभजाकहँदे नाशि॥

चौपाई॥

चतुरंगिनी कटक विकराला। याते उबर कठिन इहकाला॥
अभल अहित अन्याय अपारा। कुरीतिकुनीतिकुगतिकुकारा॥
आनहानि अतोष अधमादी। पदचरसुभटविकटसम्बादी॥
कपट कुभाव घात विश्वासा। बहु पाखण्डी भाव कुआशा॥
संयम नियम हीनता आदी। बाजि बिकटबहुविविधविवादी॥
अलज अप्रतिष्ठ अरु अपमाना। असोचा दाया करुण नाना॥
नहिंउपकार आदिविधिनाना। गणिये इन कहँ रथ बहुनाना॥
स्वारथ रत परमारथ नाहीं। पर धन दारादिक रतआहीं॥
मैंअरुमोर सकलविधि करनी। विमूढ़तादि हस्ति दल बरणी॥
कटकभांति अस चार प्रकारा। बहुविधिशोभितमनमहिभारा॥

दो॰ अस पुनि तस्करतादिहैं हिंसादिक अप कर्म्म।
येसब आयुध आहिं वर काटहिं जीतहिं धर्म्म॥
दल वस्तुन्ह पर होवहीं प्रीति मगनताआदि।
बहु विधि बोलब जल्पना बाज जुझाऊ वादि॥

चौपाई॥

अस दल साजहिं दोऊ राजा। जगमहँरजतमविदितविभ्राजा॥
राज वितादिक बहु परिवारा। भोगहिं सुखको वरने पारा॥
लहिंकुसंगतिविधिविधिभाती। बहुविधिअघमलउपजकुजाती॥
होवतरण निशिवासर जगहीं। नगरविपिनगृहबाहरमगहीं॥
जगतनिबल इन कर वशमाहीं। हार खाइसत महँ दुखपाहीं॥
कछुन चले इनकर इक ठांवा। चक्रवर्त्ती नृप सत जब आवा॥
यदपि कुयोग सुयोग प्रभावा। प्रगटहिंतीगुणविविधसुभावा॥

यदपि निपट जब एक महाना। सतगुणअधिकहोयबलवाना॥
आदि कृपा यदि लेशहु आवे। रज तम कबहुं न जीतन पावे॥
पाव विजय सत संशय नाहीं। लोक विचार मनस मनमाहीं॥
दो० चक्रवर्त्ती सो वसुपहैं सतगुण बहु बल भूर।
जब आवे निज कटक ले भागहिं रज तम दूर॥
विद्या ज्ञाना सत्यादिक पटमहिषी सत केर।
परमारथ परहितादिक वर सुत आहिं सुढेर॥
चौपाई॥
इन महँ प्रीति रहत बहुतेरी। नाती दुहिता आहिं घनेरी॥
सुमतिसुज्ञानशुभगअनुमतिवर। वर वर मंत्रीहोवहिंहितकर॥
पुण्य सुकृत भाषणसत आहीं। कटकस्वामि ये विदितकहाहीं॥
सरल सुभाव आदि बल संगी। जोरहिंचमु बलवान बिरंगी॥
पुनिइन महँ सत शीलसुभावा। पुण्य पुंजकर मूल कहावा॥
चतुरंगिनी सेन इन केरी। सबविधिसुन्दर शुभगघनेरी॥
भलपन हितपन न्याय घनाई। सुनीति सुरीति सुगतिसुभाई॥
पर उपकार तोष शुभकाजा। पदचर भटइव रहहिंविराजा॥
विमल सुभाव धीर विश्वासा। शुभ चतुराई भाव सुआशा॥
संयम नेम सुव्रत वहुआदी। वादिविविधविधिबनहिंसुवादी॥
दो० भाव प्रतिष्ठा प्रीति नहिं लाज दया सुप्रकार।
करुणा आदिक होवहीं रथ वर इव निरधार॥
स्वारथ निरत परमारथ परधनादि नहिं प्रीति।
अहम् ममादिक हीनता गजदल सजासुरीति॥
चौपाई॥
इहिविधिसजाकटकअतिभारी। रंगचारविधि सब अधिकारी॥
सत्य भाव कृत कारज नाना। मनदृढ़तादिकमन चितवाना॥
हिंसादिक अघ ओघ न प्रीती। अस्त्र शस्त्र बह सजेसुरीती॥
आदि प्रीति मगनादि सुहाई। बाज जुझाऊ बाज बजाई॥

इहिविध सत नृप ले कटकाई। रजतम दोउहु चाह दबाई॥
आदि भक्ति रति प्रीति सुहाई। मनहिं हर्षतादिक बहु भाई॥
सोच हीनता हर्ष सुभाई। भोगतसुख बहुविधि मनलाई॥
इहसब आदि कृपा बिननाहीं। रविशशि होवत मावसआहीं॥
इहिविधियद्यपिसतगुणरहहीं। बाढ़हिं रजतम निजसुखलहहीं॥
आदि कृपा याचहु मन याते। विनसहिं रजतम मारगजाते॥

दो० लिखतकटकबलसत्य महँ निरमलसतगुणनाहिं।
रजतमदोऊ कछुबहुत मिलितजगत महँ आहिं॥
जगत मोहवश आहिं जे तिनकरहित असआहिं।
जातेसुखदुख भोगकरि भवनिधिपररहिं जाहिं॥

चौपाई॥

नहिंतरनिरमलसतगुणलक्षण। सकलभांतिजगहोयविलक्षण॥
वुधजन मुनिसुरसाधहिंजाही। आदि कृपा वरपावहिं ताही॥
सोचरहित सुख करिजगमाहीं। निर्गुण रतितनमनहितमाहीं॥
सोचहु मनपुनिहियनिजमाहीं। सुर नरमुनिआदिकजे आहीं॥
पुनिविधि हरिहरआदिकहाहीं। इनसव केर मूलकहँ आहीं॥
छोट बड़े अगणित अतुलादी। अगणितसुरनरमुनिसबआदी॥
अगणितअजहरिहरअसआदी। अगणित अमित ब्रह्माण्डादी॥
इन सब केर मूल वर आहीं। आदिशक्ति बल आदिकहाहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

आदिशक्ति श्रीवर श्रीदेवी आदि बलहु कहावहीं।
भजहुजपहु सुमिरहुनिशिवासर भक्ति मुक्तिहु आवहीं॥
हरिहर आदिक जासु भरोसहिं लखिरुखदयायाचहीं।
सोश्री दुर्ग्गा आदि भवानी हीरा प्रभुनि साचहीं॥

दो० निज इच्छा उपजावहीं आदिपुरुष कहँ जोय।
आदिईश परमेश्वर विदित कहावहिं सोय॥

सो० सेवत तरु कर मूल पुष्प फलादिक शाखसब।

फूलहिंफलहींफूल हरिअरहोवहिं क्षणहिंसब॥
इहिविधि पूजतदेवि होवहिं तोषित देविसब।
जाकहँ सबकरि सेव मूलसत्य निजजानहीं॥

चौपाई॥

देवि चरित सुन्दर सबगावे। वेद शास्त्र सतसार सुहावे॥
सोयचरित शुभ कछु लवलेशा। दुर्गायण नामांक विशेषा॥
युग युग लोकलोक विख्याता। गावहिं सुरमुनिसबफलदाता॥
जगतसिन्धुहितबहुविधितरणी। स्वर्गलोगलगिरविमगवरणी॥
कलिमल हेतु बनो जनु गंगा। खलतानाशक मनु सतसंगा॥
कलिअघहितजगभवगिरिमन्दर। मदपाखण्डग्रन्थगिरिकन्दर॥
सद्य फलद मानहु तीवेनी। सुकृतफलद वैकुण्ठ निशेनी॥
सुरतरु इव वांछित फलदाई। सबविधि कामधेनु मनभाई॥
भवभव सेतु बनो अतिसुन्दर। अघनाशकफलदाय निरन्तर॥
लघुदीरघ अगणित दुखनाना। सकल विनाशकओषधिमाना॥
भक्ति निमित जीवन दिनभूरी। राखन महँ संजीवनि मूरी॥
अगणितसुखहितसबजगमाहीं। शरद एकपति सुधा जनाहीं॥
अमित प्रभाव कथाकर आही। वेद पुराण आदि सबगाहीं॥
देवि चरित महिमा युगमाहीं। सबविधि प्रगटगुप्तकभुआहीं॥

हरिगीतिकाछन्द॥

सब विधिविदितगुप्त कछुपुनिहीं अजादिहु नितगावहीं।
देवि कृपा रुख पाय निरन्तर सृजादि कर्म्म लावहीं॥
अन्तहिं पावहिं भक्तिमुक्तिवर शक्ति महँ मिलि जावहीं।
सो श्री दुर्गा शक्ति आदिनी भजहु हीरा भावहीं॥

सो० दुर्गानाम प्रभाव महिमा आदि फलादि पुनि।
कहिनसकहिंकोगाव अज हरिहरगिरादि सकल॥
जो अगणित ब्रह्माण्ड व्यापरही सब शक्ति बल।
पूर पूर पुनि काण्ड लेश लेश महँ नितहिं नित॥

दो० विपत्यारति दुखनाशनी दायनि सुखादि भोग ।
सबकहँसबविधिनितहिं नित काटनिरोगकुरोग॥
शत्रु व्याधिपीरादिसब नाशनि सब गुणखानि ।
चारपदारथ दायिनी महान देविभवानि ॥

चौपाई ॥

दुर्ग्गा अर्थ दूर दुख जावे । लखतभानुमनु तिमिरपरावे ॥
दुर्ग्ग घाट घट औघट नाना । लांघहिं नर लाघवपरिमाना ॥
दुर्ग्ग विपति आरति जगजेती । नाशहिं शशि ढिगतमइवतेती॥
दुर्ग्ग काज दुरगम कारज जे । होहिं सहज सबकाल आज ते ॥
दुसह काज होवन नहिंआशा । पावहिं सिधिवरषाकृषपासा ॥
दूरजाहिं अघ औघहु नाना । खगपतिनिकट भुजंगसमाना ॥
मन इच्छा लघु मध्य महाना । सिद्धहोहिंनिरखतविधिनाना ॥
कष्ट निवारन मारग माहीं । वालक काज मातु पितु पाहीं ॥
सबविधि दुखदाहन सुखलाहू । नयन हीन पापथ सब काहू ॥
नाम प्रभाव विदित सबठाईं । विधिहरि हरहुन सकहींगाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

विधि हरिहरहु नहिंगाय सकहीं दुर्ग्गानाम प्रभावहो ।
सो मनमैं किमि भाषण करिहौं विराट कीट आवहों ॥
विनायास नाशत आरति अघ चतुपदारथ दायका ।
भजहु जपहु मनसो श्रीमायहिं सदाकर मन भायका ॥

दो० आदीश्वर आदीश्वरी देवेश्वर श्री माय ।
आदि वृह्म देवीश्वरी जगेश्वर जग दाय ॥
भजहु जपहु ध्यावहु सदा इष्ट देव कुलदोउ ।
अखिलेश्वर भुवनेश्वरी भक्ति चरण रजहोउ ॥
देवि कृपा सों होतमन सहज नाहिं सबभाग ।
यदिनर क्रिकरिमरहिंभल कोटियज्ञ जपजाग ॥
पुनितव्र भजहो देविश्री त्यागिनिपट जगजाल ।

पाहु भक्ति इह लोकमहँ मुक्ति मरनकरकाल॥

सो० कोटि यज्ञ जपभूर एक एक जे वेद वद।
भक्ति प्रीति विन धूर लघुते लेइ महान लगि॥
सो संगति सुप्रभाव बनत बिगरपा भल अभल।
सो मन लोकहु आव भाषहुं आगिल कछुकमँ॥

चौपाई॥

जगनिवास नर विविध घनेरे। प्रकृतिभाव गुणमय बहुतेरे॥
सबमहँ प्रबल सुभाव सदाहीं।सबविधिनितलखियेजगमाहीं॥
सो सुभाव कर दोय प्रकारा।जासु वशितनर सबजगकारा॥
वेद पुराण नीति यह जानी। दो प्रकारकर गण बिलगानी॥
साधुअसाधुपुनिसज्जनदुरजन।सन्तअसंतपुनिसुजनकुजनगण॥
विधिविधिनामसुजातिकुजाती। इहिविधिजगनरभवदोभांती॥
सो सुभाव कृत गुण तिनऐसे।सुरनर मुनि सब लखहींतैसे॥
साधु आदिनर भलजगमाहीं। असन्तादि नर दुष्ट कहाहीं॥

दो० प्रथम प्रकारी मनुजभल जागहिं ते जगमाहिं।
आन प्रकारी अधमनर सोवहिं जागहिं नाहिं॥

चौपाई॥

सन्त सुभाव सदा सुखदाई। असनर अछत लाभ जगपाई॥
सदय सकरुणाहिय तिनकेरे। घृतमाखन इव पिघलन बेरे॥
स्वारथ हीन सदा उपकारी।मनहु भानु पावस हितकारी॥
बोलहिं नित मृदु माधुरिवानी। अनिलसुगन्धसुधाजनुसानी॥
अनहितकहहुं प्रीति फलनाना। मानहु ईख रसाल समाना॥
सहिहिय कुवचन नेकन लाहीं। महिइव राखभार जगमाहीं॥
करहिं क्षमा अपराधहु कीन्हे। मनहुअवनिइवदुखभलचीन्हे॥
सत्य परायण सत्य सुवानी। मानहु पुण्य प्रभाव जनानी॥

दो० परधन तृणमाटी सरिस पर तिय माता जान।
लखिपर सुख राकापती होवहिं वीचिसमान॥

चौपाई ॥

भूलि कुसंगति परहिंन गूंगे । मनुशुक सारी मल नहिं सूंगे ॥
दया मया मय प्रीति जनाहीं । रवि प्रकाशतरुछांव गनाहीं ॥
मनक्रम वचन सदा हितकारी । मनहु अन्न जल पोषणकारी ॥
हित चित तनधन केरहिताई । मनु वसुधा सबफलद सुहाई ॥
ज्ञानसुरीति सुनीति सिखाहीं । जनुरवि दीपप्रकाश लखाहीं ॥
शुभशुभ मारग सदा चलाहीं । जहां विमल मगपूछनचाहीं ॥
कामक्रोह मद आदिकनाना । तजहिंवमनपुनिकुपथसमाना ॥
पावहिं विद्या भूति बड़ाई । नमहिंकल्पइवपुनि फलदाई ॥

दो० आरतिनारतिएककरि मानहिं समझहिंनित्य ।
कृष्णशुक्ल मनुपक्षहैं घाम छांव पुनि सत्य ॥

चौपाई ॥

हिंसा जीव करहिं कभु नाहीं । अपन जीव समलेख जनाहीं ॥
निजजीवनहिं गणहिंनितछूछे । जल बबूल इव काको पूछे ॥
परहितलगित्यागहिंनिजप्राणा । मोदक लगिते ऊष समाना ॥
करहिंकहहिं सो वचननटरहीं । मातु पिता इव रक्षणकरहीं ॥
लोभमोह आनहिं नहिं पासा । मृगगणभीतव्याधकरफांसा ॥
मिथ्या ढिग कभु देहिंनपावा । जानहिं मानहिं मलतिनखावा ॥
परदुख विपति देखहीं कैसे । मानहु विधिभा दोपित ऐसे ॥
कहहिं कबहुं नहिंखेदद वानी । जानअनलनिजतनहिंसमानी ॥

दो० प्रेम प्रीति डूबहिं सदा कारण बिनते आहिं ।
पुनिपुनिराखहिंसबहिंसन कारणएकहुनाहिं ॥

चौपाई ॥

कबहूं नाहिं मनहिं अहंकारा । शुभग्रहइवपरहिततन हारा ॥
जबकभु पाहिंकोउअधिकारा । सेवक सरिसकाजकर सारा ॥
रखहिं सदा मनभक्ति सुहाई । आदिशक्ति बलनाहिं पराई ॥
सोबल ईश शक्तिं पुनि आहीं । निज स्वामीस्वामिनिते गाहीं ॥

परहिं न अघकभुजानतअपने । गणहिं कालपावक तनसपने ॥
ममता मार मोह मद माना । गिरहिं नगहिं कूपसमजाना ॥
सहज सदासत कटक बटोरी । जीतहिं वहुविधिरजतमजोरी॥
मातु पिता भगिनी सुत नारी । अहिहरिइवयदिपोषणकारी ॥
सो० गृहविताादिजगजाल भोगहिंपरनहिंप्रीतितहँ ।
जानिनिकट निजकाल मनहुंवातवशरैनिदिन ॥
चौपाई ॥
सरलचित्त नित दम्भ विहीना । मानहु धेनु वत्स छल हीना ॥
सदादीन हिय सब हितकारी । मनुग्रीषम जल वरष वयारी ॥
पर सुख सुखी होहिं ते कैसे । दीपक दरशक दरशित जैसे ॥
तजहिं कपट छलहियचतुराई । वीच रहित मनु बट जलराई ॥
पिघलहिं तुर अपराधहु नाना । गौहिं वत्सयदिकरअपमाना ॥
कहँ लगिगणियसाधुगुणनाना । जोकछु कहिय थोरसवजाना ॥
कहतहिं शारद मति सकुचावे । सोमन कासन कसकहिआवे ॥
याते समझहु साधु सुभावा । करहुगहहु यदिविघनहुआवा ॥
दो० सूक्षम महँ मैं गायउँ जानहु भल मनमाहिं ।
देवि कृपाते नर सदा गुणसुभाव असपाहिं ॥
सो० खल जनकेर स्वभाव गावहुं अबकछु थोरमन ।
ताछांवहिं नहिं आवभूलिहुसपनेहुविघ्न यदि ॥
चौपाई ॥
दुष्ट स्वभाव सदा दुख दाई । असनर अवनिभार कतपाई ॥
दया करुणा तिनके हिय नाहीं । पाथर लोहु करालहु आहीं ॥
निज हितरत नहिं परउपकारा । होवहिंअलिगणपुहुपहिं भारा॥
बोलहिं खेद वचन विधिनाना । दुरगन्धी अति पवनसमाना ॥
हितकारीहु प्रीति फल नाहीं । जिमि कंटक तरु बबूर आहीं॥
हितकेवचन सुनहिं नहिं काना । मानहु परत वज्र हिय ताना॥
क्षमा दया कँभु मानहिं नाहीं । पिपीलिका नहिं मेरुउड़ाहीं ॥

मृषापरायण मृषा कुबानी। मानहु पाप बड़ाई मानी॥

दो॰ ताकहिं परधन दार पर परसुख पर बहु भाग।
व्याल व्याघ्रहरिआदिक विधिविधिघातहिंजाग॥

चौपाई॥

तजहिं सुसंगति करहिं कुसंगा। काकमधुर तजिमलहियरंगा॥
दयामया नहिं कबहुं न प्रीती। तमपुनिशाखरहिततरुरीती॥
मनक्रम वच नित अकाजकारी। मनहुगरलविषअहिगणधारी॥
हित चित मन धन कबहुंनदेवें। मनऊसर महि कोउन सेवें॥
सिखवहिं कुनीति कुरीतिनाना। तमनप्रकाश तिमिरपरजाना॥
सबहिं कुबाटहिं सदा चलाहीं। मनुकुघाट नरचलन जनाहीं॥
काम क्रोध मद मत्सर नाना। गहहिं सुधा संजीवन जाना॥
लेश भूति वृधि यदि तिनपाई। क्षुद्र नदी इव बाढ़हिं आई॥

दो॰ आरतिमहँ होदुखित अति सुखीविभवयदि पाहिं।
मानहु कारागारमहँ बन्धु अगण सो जाहिं॥

चौपाई॥

करहिं युक्ति घातहु परप्राणा। विषनयमोदक दुखप्रद नाना॥
निजजीवनप्रिय जानहिंअमरे। सनहुअमिय तिन पीयेसगरे॥
विनहित लगिकर हिंसानाना। मरत कीट दीपकहु बुझाना॥
लोभ मोह मद मत्सर चेरे। मृगगणचरहिं व्याघ्रयदिघेरे॥
सत्यनिकटकभु जाहिं नभूली। मनहुं गरलभयचयहिनशूली॥
पर आरत लखि हरष घनेरे। मनहु तीन जगसुखबहुतेरे॥
मधुरवयन बोलहिं कभु नाहीं। मानहुं शीतविषमजरखाहीं॥
परुष वानि नित वदसुखमानी। मनहु शूरता जग प्रगटानी॥

दो॰ बिनुकारण रिपुता बहुत करहिं सबहिं सनधाइ।
लाभहानिनहिं आवहीं हानि करहिं पुनिआइ॥

चौपाई॥

अहंकार मद तन तिन आवा। मनहु परगृह सकल कुढावा॥

कभुलघु पाहिं कोउअधिकारा। मानहु शत भूपति करकारा॥
भक्तिआदि कछु मानहिं नाहीं। मानहुनितकभु कहुंकछुनाहीं॥
करहिं पाप अघविपुलप्रकारा। ईश भीतमन महँ न प्रचारा॥
ममता मार मोह मद नाना। डूबहिं नीरहिं मीनसमाना॥
सदा कटक रजतम करजोरी। चाहहिं जीतनसत्यहिं बोरी॥
विविधप्रकारकरहिं तिनचोरी। काक मूष आदिकमनु जोरी॥
तजहिं नकपट छलादिकनाना। गुणी शृगालसियारसमाना॥

सो॰ जगनाना ब्यवहार लेन देन सब मृषा महँ।
नित नित तिनकर कार लोकलोकपर भय नहीं॥

चौपाई॥

हृदय कठोर सदा मद धारी। मूषक मार्जार भय भारी॥
परसुख दुखी जरहिं ते कैसे। मानहु महिपर दामिनि जैसे॥
सदा कपट छलमाहिं सनाये। हानिद वीचि नदी बगराये॥
विन अपराध वरतहीं कैसे। गौ अपमान वत्स कर जैसे॥
कहँ लगिकहियदुष्टगुणनाना। ठांव नहीं नरकहुं नहिँजाना॥
यदिविधि होवेकबहुं सहाई। बने तौहु नहि बने बनाई॥
याते कबहुं कुसंग न जावे। सपने यदपि विघ्न कभुआवे॥
मनसमझहुमनमहँभलिभांती। लाभ अलाभ सुजाति कुजाती॥

दो॰ थोरेमहँ भाषण भयो दुष्टमनुज स्वभाव।
देवि कृपाते नाशहीं निकट एकनहिं आव॥

सो॰ सतसंगति सतलेहु करनी धरनी सतहि सत।
तनमन हित चित देहु सदा सदा मम जगतमहँ॥

चौपाई॥

आगे मन समझहु सुविधाना। देवि कृपावर मुख्य न आना॥
लोकहु शक्ति रमीसबमाहीं। भलअतभलसबविधिविधिमाहीं॥
शक्ति प्रबलसब प्रेरणमाहीं। जासु बिना कतहूं कछुनाहीं॥
सोइ कृपा मूला श्री रानी। श्रीदुर्ग्गा श्री आदि भवानी॥

सो मन पावहु कृपा सोहाई। सो वर मिले सदा सहजाई॥
लहहु भक्तिवरपदरज केरी। सबवरमहँ अस उत्तम हेरी॥
इष्टदेवि कुलदेवि मनाई। पूजहुबन्दहु नित नित ध्याई॥
हेमन जिहि तन तोर निवासा। अर पहु सो तन तवसहवासा॥

दो० विधिविधि अंगजो तनरह विधिविधिकारजएह।
इष्टकुली सुर देवि श्री ध्यावहु तन मन नेह॥

चौपाई॥

तव कपालतिन पदहिं धराई। मूंदि नयनवरध्यान लगाई॥
गर कुठार तृण दशन धराई। नासिकमहिवर सन्मुखधाई॥
पूजहु करते पुनि युग पानी। सबविधि प्रीतिनेहमयसानी॥
दुर्गायण पुनि पाठ सुहाई। गावहुध्यावहु तनमन लाई॥
अंगसहितसब लकुट समाना। परहु अवनिपरविनयविधाना॥
यज्ञबली आदिकविधि नाना। करहुप्रीतिमयलिखितप्रमाणा॥
करहु आरती शुभग सुहाई। पाहिपाहि मुख धारहु धाई॥
चरणभक्तिमांगहुवरनितनित। कृपाशुभगपावहु मनसतसत॥

दो० अशन बसन निद्राशयन बैठब उठब अनेक।
चलनफिरनसाधनसकलजगमहँरहइकएक॥
अस असआदिजीवनमहँ जन्मपाछलगजोइ।
कथितविनयमनपावहो जन्मजन्मनिजसोइ॥

चौपाई॥

असवर पाइ सुनहु उपदेशा। नितनित असअस साधनवेषा॥
तनमन हित चित प्रीतिलगाई। करहु ध्याननित मरनहुपाई॥
तजहु न ध्यान विघ्नयदिआवे। जन्म रहे वरु मरनहिं पावे॥
दुर्गायण पूरित अब होवे। शक्ति प्रभाव विदित सब जोवे॥
आरंभहिं जे वन्दित देवा। जे मम देह वसे नहिं भेवा॥
गमनहुसबअबनिजनिजधामा। भयो यथोचित पूरण कामा॥
हरे हरे चूकहुं इह ठाहीं। सकलअमर बहुरहिंतनआहीं॥

इष्ट कुली सुर देविसुहाई। इनहिं त्यागि सब गमनहिं भाई॥

दो॰ इननिवास ममहृदयमन रहे प्रथम जिहिभांति।
जन्म जन्म मम ते रहें पुनिहु मरन पश्चात॥

चौपाई॥

जब जब गावहुं ममदुर्ग्गायश। करहिंकृपा तबतबसबसुरगण॥
आवहिं जावहिं कथित सुरीती। करहिंक्षमासब भांतिसुनीती॥
कुळी इष्ट सुर देवि भवानी। नितममनहिय वाससुहानी॥
तेनतजहिं कभु निजनिजवासा। मांगहु भिक्षा इह सह आशा॥
करहिंवास निशिदिनसदासदा। जीवहुं मरहुंपुनिहुं यदातदा॥
याते निरभय भय नहिं मोरे। कैसहु आपति बहुतहु थोरे॥
लिखित भांति वन्दहं मनदेही। अन्त भयो दुर्ग्गायश एही॥
जयति देव जयदेवि भवानी। श्री श्रीदुर्ग्गेसब गुणखानी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

श्री श्री देव देविश्री दुर्ग्गे इष्ट सुर कुल मानिहौं।
जयतिजयतिजयजयतिजयतिजय तनमनसहितजानिहौं॥
दुर्ग्गापाठ विदित चारहुयुग तीन विश्व सब गावहीं।
विधिहरि हरनित शारदादिनित भक्ति आदिकपावहीं॥
सो सब मंत्र चार फल दायक वेद आदि न जानहीं।
यदि अपराध बिगर जब जावे देवि सदया मानहीं॥
देवि भरोस कहहुं हठ बानी तन मन ध्यान लाइकै।
पावहिं नर गावहिं दुर्ग्गायश मुक्ति सुभक्ति पाइकै॥
हठ वश श्री दुर्ग्गायश रचना दोष जो कछु आवहीं।
करहिं क्षमा श्रीदेवि कृपाकरि पर फलप्रद बनावहीं॥
वीण उतारहु आरति लेवहु गाहु सुन्दर आरती।
जयतिजयति श्री श्री दुर्ग्गायश फलदेइ दुखटारती॥
जय जय आदि देव जय देवी इष्टसुर कुल ध्यावहू।
वार वार सुमिरहु नित वन्दहुंशरण फलप्रद आवहू॥

आश रहे अपराध क्षमहु सब दासहीरा जानहो।
जन्म जन्म पदरज शुभ प्रीती देहु भक्ति वरदानहो॥
सो० अन्त भयो फल दाइ श्री श्री दुर्ग्गायण शुभग।
गावहु सदा सुहाइ भक्त मनुज सज्जन महा॥
देवि आश मन माहिं गावहिं तन मन जो सदा।
चार पदारथ पाहिं देवि कृपा यदि सहजमहँ॥
दो० जय जय देवि देवी श्री इष्ट कुली नित दोउ।
पावहुं पदरज भक्ति नित यद्यपि जो कछु होउ॥
वारवारविनती करहुं करुणा करि सुन लेहु।
दास हीरालालहिं नित याचित वर शुभ देहु॥

इतिहीरालालकृतश्रीदुर्ग्गायणःनवमकाण्डःसमाप्तः

दो० सम्वत सबगृह भूमि मय नभ कोशलपतिवाल।
मास महीपर नभ धरो पक्ष कृष्णा मा काल॥

श्रीदुर्ग्गायणकीआरती

अस्थायी

आरति श्रीदुर्ग्गायण केरी। सब विधि सुन्दर फलद घनेरी॥

अन्तरा

शेष गणेश बृह्म हरि शंकर शारद वेद पुराण निरन्तर॥
गावहिं नितनित चरित देविकर सारशक्ति जहँरमी निबेरी॥१॥
वेद पुराण आदि सबसुन्दर सबकर सार सत्य जहँ फलवर॥
शक्ति भरोसहु सकल निरन्तर चार पदारथ खरबहुतेरी॥२॥
दुर्ग्गायण नव खण्ड सुहाई नवधा भक्ति रमी जहँआई॥
नव रस रतन धरे वरदायी सुनि प्रभाव अघ ओघ हंटेरी॥३॥

मधुकैटभ वध महिषासुर वध धूम्राक्ष वध चण्डमुण्ड वध॥
रक्तवीजवध शुंभ निशुंभवध तपसीवर माहात्म्यभरेरी॥ ४॥
देवि स्तुति सुन्दर विधि धारी जे जे सुरगण कीन्हफलारी॥
सदा चार फल तुर दातारी ऐसी कथा धरी शुभ हेरी ॥ ५ ॥
गाये मारकण्डेय मुनीशा कीन्ह श्रवण जैमिनी ऋषीशा॥
नृपति वनिक हित मेधसईशा अतिशय पावन कथाबड़ेरी ॥ ६॥
तीनलोक सुर आदि निरन्तर चैत आश्विन रजनीनववर॥
करहींउत्सव तनमन हितकर सोदुर्ग्गायश चरितभरेरी ॥७॥
पानसुधा असन संजीवनी विविध सुफल जगप्रीति पीवनी॥
भक्ति मुक्ति वरदान सींवनी तीन लोक प्रख्यात जगेरी ॥८ ॥
जयति जयति दुर्ग्गायश ऐसीं माननीय अतिशय शुभजैसी॥
दायक अगणित फलवर वैसी देवि भक्त याचहुं शुभ हेरी ॥९॥
दुर्ग्गा चरित शुभग वर धारी चारहु युग प्रसिद्ध सुखारी॥
श्री दुर्ग्गा स्वामीनी भारी स्वामिनिहीरालालहु केरी॥ १०॥

श्रीदुर्गायनमः ॥

नवकाण्डोंके शब्दोंका कोष ॥

(अ)

अकथ, अकथित, जो कहा न आवे, जिसका वर्णन न होसके
अकमा, सुन्दरता रहित, प्रकाशरहित
अकल, अकलनी, अकला, कलारहित
अकाज, हानि, नुकसान, बिगाड़
अक्षत, चांवल
अक्षरा, सदारहनेवाली
अक्षि, अक्षी, आंख, नेत्र
अखण्डनी, अखण्डिका, जिसका खंडन वा नाश न होवे
अखिल, कुल, सब
अग, कुल, सब, जो चल न सके, पर्वत, वृक्ष
अगण, अगणित, जिसकी गिनती न होसके बहुत
अगम, अगम्या, जो समझमें न आवे
अगाध, बहुतगहिरा
अगी, प्रथम, मुख्य, मुखिया
अगुणा, गुणरहित
अगोचर, जो समझमें न आवे
अघ, पाप, दुष्टकाम
अघकारी, अघी, पापी, दुष्ट, अधम
अंगीकार, स्वीकार, कबूलकरना
अचर, अचल, जो चलेनहीं पर्वत, वृक्ष, आदि
अचेत, जिसको चेतनहीं
अक्षत, जीतेजी, जीतेभर
अज, जो किसीसे उत्पन्ननहीं ब्रह्मा, बिधि
अजनी, ब्रह्माकी स्त्री, ब्रह्मानी
अजन्मा, जिसका जन्म नहीं
अजा, उत्पत्तिरहित, ब्रह्मा की स्त्री
अजाग, जो जागेनही, प्रकाशरहित
अजाननी, नहींजाननेवाली
अजानाथ, ब्रह्मा
अजिर, आंगन, छाया, पृथ्वी
अटल, जो टले नहीं
अणिमा, सिद्धि आदि

अतन, जिसको देहनहीं
अति, अतिशय } बहुत,अत्यन्त
अतुल, अतुलित } जिसकी तुलना नहीं
अतोष, संतोषरहित
अत्र, यहां
अथाह, थाहरहित,गहिरा
अदर्श, जो दर्शनमेंनहीं,जो देखा न जावे
अद्वितीया, जिसके सन्मुख दूसरानहीं
अदेव, राक्षस,निशिचर
अदेहनी, देहरहित
अधर, ओष्ठ,बिनाआसरा
अनन्त, जिसका अंत नहीं
अनल, अग्नि,आग
अनादि, अनादिनी } आदिरहित, जिसका प्रारंभ नहीं
अनान, दूसरा नहीं
अनायास, सहज,बिना परिश्रम
अनिच्छित, इच्छारहित
अनिल, पवन,वायु
अनीक, सेना,फौज
अनीकपति, अनीकराजा } सेनापति
अनीहा, इच्छारहित,जगरहित
अनुकूल, दया,कृपा,प्रसन्न
अनुच्चरिता, जो उच्चरित न होसके

अनुभव, समझ,अभ्यास,तजुर्बा
अनुरागी, मनलगानेवाला, प्रीतिकरनेवाला
अनुरूप, अनुसार,समान
अनूप, उपमारहित, जिसकेसमानदूसरा नहीं
अनेक, बहुत
अन्तर्लोचनी, हृदयकी देखनेवाली
अन्नपूर्णा, महादेवी,भवानी
अन्वय, मिलान,भाग
अन्वित, मिलाहुआ,मिश्रित
अपकर्म्म, दुष्टकाम
अपर, दूसरानहीं,एक,दूसरा
अपरतंत्र, स्वतंत्र,परतंत्र
अपान, निजपन,अपनापन
अपार, अपारा } जिसका पारनहीं
अपि, भी
अप्सरा, स्वर्गमेंनाचनेवाली
अबूझा, जिसकी समझनहीं
अबैन, जो कहा न जावे
अभंग, अभंगनी } जिसका भंग वा नाशनहीं
अमध, जिसका मध्य नहीं
अमर, देव,देवता
अमरज, देवतासे उत्पन्न ॥
अमरनी, देवी,देवताकी स्त्री ॥

अमरप } इन्द्र
अमरपति }
अमररिपु, निशिचर, राक्षस
अमरा, देवी, भवानी
अमरारि, दानव, राक्षस
अमल, स्वच्छ, साफ, नशा
अमली, अमल वा नशाकरनेवाला
अमित } जो नापानजावे, मापरहित
अमिता }
अम्बा } माता देवी भवानी महान देवी
अम्बालिका }
अम्बिका }
अम्बु, पानी, जल
अम्बुज, कमलपुष्प
अम्बुईश } सागर, समुद्र
अम्बुनाथ }
अम्बुपति }
अयन, घर, गेह
अयान, मूर्ख, अज्ञान
अरुण, लाल, रक्त
अरुणशिखा, कुक्कुट, मुर्गा
अलसी } जो देखी न जावे
अलख }
अलंघ्य, जोलांघानजासके, जिसको लांघनेवाला नहीं, जिसके परे दूसरा नहीं
अलंकार, भूषण, शोभा

अलज, लाजरहित
अलिखे, जो लिखी न जासके
अलि } भंवरा, भ्रमर
अली }
अलौकिक, लोककेबाहर, अद्भुत
अल्प, छोटा, थोड़ा
अवनि } पृथ्वी, धरती
अवनी }
अवनिप, राजा
अवनीकुमार, मंगल
अवनीनाथ } राजा, नृपति, भूपति
अवनीपति }
अवनीपाल }
अवनीराय } राजा
अवनीश }
अवलम्बा, आश्रय, आसरा, सहाय
अवरण, जिसका वर्णन न होसके
अवसि, अवश्यकरके
अवसान, अन्त, निदान
अवानी, जो कहा न जासके
अविक, हीरा, रत्न
अविनाशिनी, जिसका नाशनहीं सदारहनेवाली
अविबुध, दानव, राक्षस
अविरल, एक, नाशरहित
अशक्त, बलहीन, अचेत

अशिव } अमंगल, अच्छा नहीं
अशुभ }
अशेष, कुल, सब, अनन्त
अश्व, घोड़ा, बाजी
अशन, भोजन, खाना
असह्य, कठिन जो सहा न जावे
असाधारण, साधारण नहीं अद्भुत
असी, तलवार, हथियार
असुरप } राक्षसों का राजा दानवराज, दैत्यराज
असुरपति }
असुरारि, देव, देवता, सुर
असुरेश, दैत्यराज, राक्षसोंका राजा
अस्त्र, हथियार
अस्थि, हाड़, हड्डी
अहम्, मैं, निजरूप
अहि, नाग, सांप
अहिनाथ, शेष, बासुकी
अहिनी, सर्पिनी, नागन
अहिप }
अहिपति } शेषबासुकी
अहीश }

(आ)

आकार, रूप, स्वरूप, आकृति
आकारा } रूपवाली
आकृतिनी }
आगाणित्य, गिनतीरहितभाव
आगिल, आगे
आज्ञामानी, आज्ञा मानने वाले नौकर आदि
आड़ीबाड़ी, गड़बड़, इधरउधरसे जैसावैसा
आदि, आरंभ, वगैरह, आदिसेस्थित
आदिक, वगैरह
आदिनी, प्रारंभसे रहनेवाली, आदिसे रहनेवाली
आदीश्वर, परमेश्वर, आदिदेव
आदीश्वरी, परमेश्वरी, आदिदेवी
आन, दूसरा, लाना
आनन, मुख दूसरा नहीं
आप्त, प्राप्त, पाया, व्यापी
आभा, सुन्दरता, छबि, प्रकाश, छटा
आमित्य, मापरहितभाव
आयत, बड़ा, दीर्घ, पत्ता
आयसु, आज्ञा
आयुध, अस्त्र, शस्त्र, हथियार
आयुस, उमर
आर, परदा, आड़, आश्रय
आरंभ, प्रारंभ, आदि
आरत, पीड़ित
आरति, दुःख, पीरा
अराति, शत्रु, रिपु
आशा, आश, आशदायका
आसन, बैठक, बैठनेका स्थान, बाहन
आसीन, बैठाहुआ

आहट, शब्द, आवाज

(इ)

इकत्र, इकट्ठाकियाहुआ
इच्छज, इच्छासेउत्पन्न
इन्द्राणी, लक्ष्मी, श्री, शची
इन्दु, चन्द्र, चन्द्रमा
इष्ट, मनमें साधित, इच्छासे माननीय

(ई)

ईश, महादेव, ईश्वर, स्वामी
ईशा, महानदेवी, भवानी, स्वामिनी
ईष, सांटा, गन्ना
ईषत्, थोड़ाथोड़ा, धीरेधीरे

(उ)

उक्त, कथित, कहाहुआ
उग्रा, कठोर, क्रोधी
उड़, तारा, नक्षत्र
उड़वा, छोटा तारा
उत्कृष्टा, श्रेष्ठ, महा, सर्वोपरि
उत्पात, उपद्रव, धूम, हानि
उत्पादक, पैदाकरनेवाला
उत्सव, यज्ञआदि, पर्व्व, आनन्द
उदधि, समुद्र, सागर
उदयाचल, उदयपहाड़
उदर, पेट
उद्यत, उपस्थित
उन्मता, माती, नशेमेंहोना
उपचय, बढ़ती, वृद्धि
उपवन, बाग, फुलवारी
उपहास, ठट्ठा, हंसी, शब्द
उमा, पारवती, देवी
उमानाथ, महादेव, हर, शिव
उर, हृदय, मन, छाती
उरग, सांप, नाग
उरगारी, गरुड़ पक्षी
उलूक, उल्लू पक्षी
उल्का, लूक मशाल
उष्ट्र, ऊंट
उष्ट्रासीन, ऊंटकी बैठक

(ए)

एवमस्तु, तथास्तु, ऐसाहोवे

(ऐ)

ऐक्य, एकपन, मेल
ऐन्द्री, इन्द्रकी शक्ति

(ओ)

ओंकारा, महादेवी, ब्रह्माविष्णु, और महेशरूपिनी
ओघ, समूह, ढेर

(औ)

औघट, दुर्गम, अड़बड़

(क)

कच, बाल, केश
कज, कमल
कज्जल, काला
कंचुकी, चोली, अंगिया

कंज, कमल
कंज, विष्णु, हरि, ईश्वर
कटक, सेना, फौज
कटकपति } सेनापति, सरदार
कटकेश }
कटाक्ष, मोड़तोड़, नखरा
कटि, कमर
कटु, कड़ू, कड़ुआ
कंटक, कांटा
कंठ, गला, गर
कत, कहां
कथित, कहाहुआ, कहाजावे
कदली, केला
कनक, सोना, सुवर्ण
कनककशिपु, हिरणकश्यपदैत्य
कनकनयन, हिरणाक्षदैत्य
कन्ता, पति, स्वामी, नाथ
कन्द } मूल, जड़
कन्दनी }
कन्दुक, कदटू गेंद
कपाल, माथा, मस्तक
कपिला, पीलीगाय,
कपोतनी, कबूतर मादापक्षी
कपोल, गाल,
कमनीया, सुन्दरी, स्त्रीवेषी, सुन्दर कमानेवाली
कमला, लक्ष्मी

कमलानाथ } विष्णु, हरि, ईश्वर
कमलापति }
कर, करना, हाथ, का, के, की, किरण
कराल, कठिन, भारी
कराह, सिसकी, कांखना
करि, हाथी, करके
करनी, हथिनी
करुणा, तर्स, दया
कर्ण, कान
कलंक, दोष, पाप
कलेश, क्लेश, दुख
कल्याणका, कल्याणकी करनेवाली
कवच, वर्म्म, संग्राम रक्षक लोहेका वस्त्र विशेष
काक, काग, कौवा
काग, कौवा
काजर, काजल, काला
कानन, बन, जंगल, अरण्य
काम, इच्छा, कामदेव
कामबैरि, } महादेव, शिव, हर
कामरिपु, }
कामा, इच्छा, स्त्री, रती
कामारी, महादेव, शिव, हर
कामिनी, सुन्दरस्त्री, रती
काया, तन, देह
कारुणिका, करुणा करनेवाली
कारा, कारे, काला, काजल

काल, मृत्यु, देवीका आसन
कालद, } काल का देनेवाला
कालप्रद, } मारडालने वाला
कालानन्दनी, पारबती, देवी
कालयामिनी, कालरात्रि
काष्ठ, काठ इत्यादि
किंकर, गरीब, दास
किंचित, थोड़ा, कुछ
किंजल्क, कमलविशेष
किमि, कैसा, किसप्रकार
किशोरनी, बाल्यश्रोर तरुणअवस्था कीमध्यवाली
कीट, कीड़ा
कीरनी, सूआ मादापची
कुक्कुट, मुर्गा
कुक्कुर, कुत्ता, श्वान
कुठाव, अशुभस्थान
कुठार, कुल्हाड़ी
कुपथ, मल, खराबमार्ग
कुल, सब, कुटुम्ब, पीढ़ी
कुसुम, पुष्प, फूल
कुसुमनि, फूलकी कली
कुपात, क्रोधमें आकर
कूप, कूवा, कूंआ
कृत, कियाहुआ, कार्य्य
कृति, काम, कार्य्य
कृत्य, काम, कार्य्य, प्रसन्न

कृषानी, किसानकी स्त्री
कृषिक, किसान
कृषी, खेती, खेत
कृष्णा, श्यामा, देवी
केतु, ग्रह, पताका
केदारा, महादेवी
केवा, परिश्रम
केश, बाल, कच
केसरी } सिंह
केहरि }
कैलाशपति, महादेव, हर
कैवल्य, केवलता, केवलपन
कोटि, करोड़
कोण, कोना
कोप, क्रोध, गुस्सा
कोमल, नरम
कोमलचित्ता, कोमलचितवाली
कोरी, खाली
कोविद, पण्डित, कवि
कोष, भण्डार, खज़ाना
कोह, क्रोध, कोप
कोहित } क्रोधित, क्रोधी
कोही }
कौतुक, खेल, तमाशा, लीला
कौतुकिनि, तमाशेवाली, लीलाकरनेवाली
कौमल्य, कोमलता

(क्ष)

क्षमाज, क्षमासे उत्पन्न
क्षान्ति, क्षमारूप
क्षितिज, पृथ्वीसे उत्पन्न
क्षीर, दूध, दुग्ध, पय
क्षुद्र, छोटा, छोटी
क्षुधा, भूख
क्षुधित, भूखा
क्षेत्र, खेत
क्षोभदा, क्षोभदेनेवाली

(ख)

खग, पक्षी
खगपति, गरुड़
खंजनी, पक्षीविशेष
खद्योत, जुगनी कीड़ा
खर, गधा, सच
खल, दुष्ट, राक्षस
खलप, खलपाल, खलवसुधव — दुष्टोंकाराजा, राक्षसों काराजा
खानि, खदान
खेदद, खेददायक, पीराजनक शोकदायक
ख्याति, यश, कीर्त्ति, नाम

(ग)

गगण, आकाश, नभ
गज, हाथी
गजनी, हथिनी
गजानन, गणेश, गणपति
गण, झुण्ड, सुर, देवता
गणप, गणराइ, गणाधिनाथ, गणाधिप, गणाधिपति, गणाधीश — गणेश, गणपति
गणना, गिनती
गति, दशा, चलन
गतिदा, गतिदेनेवाली
गतिधामा, गतिकाघर
गम, समझ, चलना
गर, गला, कंठ
गरल, विष, ज़हर
गर्व्वाननी, गर्व्विनी — घमण्डवालीस्त्री
गहिर, गहिरा, गंभीर
गाढ़ा, साननाा, साना, रँगड़ा, ढाबा
गाना, गीता, गाईजावे
गायत्री, ब्रह्माणी, ब्रह्माकीस्त्री
गार, ओला, करा, पत्थर
गिरा, बानी, शारदा
गिराजनक, ब्रह्मा
गिरि, पर्व्वत, पहाड़

गिरिजा, गिरितनया } पारबती, देवी वा भवानी

गिरिप, गिरिपति } हिमालयपहाड़

गिरिपतनया, गिरिपतिचन्दनी } पार्बती, देवी महादेवी

गीता, गाईजानेवाली

गुणानी, गुणमय

गुते, मग्न, लगाहुआ

गुप्त, छिपाहुआ

गुरु, वृहस्पति, देवताओंके गुरु

गुहार, पुकार, चिल्लाहट

गूढ़, कठिन, समझमें न आवे

गेह, घर, गृह

गोचर, समझमेंआवे, प्यारे
गोचरा, समझकेबाहर

ग्रन्थ, पोथी, पुस्तक

ग्रसित, पकड़ाहुआ

ग्रीव, गला, कंठ

(घ)

घट, हृदय, घड़ा

घन, मेघ, बादल

घनी, बहुत, मेघमय

घनेर, घनेरा } बहुत, घना, अत्यन्त

घालिका, घाली } घालनेवाली, फोड़नेवाली, हानिदायका

घृत, घी, घीव

घोर, बहुत, भारी, कठिन

(च)

चकित, आश्चर्य्यमय

चक्रवर्त्ती, राजाओं का राजा

चखु, आंख, नेत्र

चतुरानन, ब्रह्मा

चतुराननि, ब्रह्मानी

चपल, चपला, } जिसका स्वभाव चंचल होवे

चमत्कृत, आश्चर्य्यमय, अद्भुत विचित्र

चमू, सेना, फौज, दल

चर, चलनेवाला

चरण, पैर, पद

चराचर, चर और अचर

चराचरेशनी, चर और अचर की स्वामिनी, सर्वस्वामिनी

चरित, चरित्र } गुण, लीला, यश, कार्य्य

चर्च्चिका, अर्चन किईहुई, लेपिता

चर्म्म, चाम, चमड़ा

चाप, धनुष, धनु

चाम, चमड़ा

चामर, चमर, चंवर

चार, ४, अच्छा, शुभ, सुन्दर

चारचरण, पशु, चौपाया

चारु, गुरु, बृहस्पति
चिदानन्दनी, जिसकेचित्तमें आनन्दहै
चिदाम्बुईश, चित्तरूपीसमुद्र समुद्ररूपीचित्त
चिरकाली, दीर्घजीवी, बहुतकालतक रहनेवाला
चिराना, पुराना, फटना
चिरोरी, विनती
चूड़मणि, सिरकाभूषण
चूरण, चूर्ण, टूक
चेरा, चेला, शिष्य

(छ)

छटा, प्रकाश, छवि, कांति
छत्रक, बरसातका छाता वृक्ष
छार, नाश, हानि
छूछा, खाली

(ज)

जग, संसार, ब्रह्मांड
जगजाल, संसारिक जंजाल
जगतनिधि, समुद्र, सागर
जगदम्बा, संसारकीमाता, महादेवी
जगदाधारा, संसारकोआश्रयदेनेवाली देवी, शक्ति
जगम्भरी, सन्सारकीपोषण करनेवाली देवी
जगाम्बुनाथ, भवसमुद्र, भवसागर
जगेशनी, जगकीस्वामिनी, देवी

जगेश्वर, संसारकानाथ, ईश्वर
जगेश्वरी, संसारकी ईश्वरी, भवानी
जटिल, जटावाला, महादेव, शिव, हर
जन, मनुष्य, नर, भक्तजन
जनक, बाप, पिता
जननी, माता, देवी, भगवती ॥
जनप, राजा, भूपति, भूप
जनपति, जनपाल, जनपाली, जनराई — भूपाल
जनित, उत्पन्नहुआ, उत्पन्नकियागया
जरठपन, बुढ़ापा, वृद्धावस्था
जल, पानी, नीर
जलज, कमल
जलजजनित, कमलसे उत्पन्न, ब्रह्मा
जलजाक्षा, कमलसमानआंखवाली
जलजांगी, कमलके समान कोमल अंगवाली
जलजापति, लक्ष्मीनाथ, विष्णु, ईश्वर,
जामातर, विष्णु, हरि,
जलधि, जलनिधि, जलपति, जलपाल, जलेश — समुद्र, सागर
जलेशनी, जलकीस्वामिनी, सागररूपा

जागिनी, ज्योति, प्रकाशका
जाप, जपना, जप, विशेष
जामी, जमीहुई, जाननेवाली
जाल, फन्दा, दुख, पंचाल
जिमि, जैसा, जिसप्रकार
जीरण, वृद्धा, पुरानी
जोय } देखना, जानना, ज्ञात
जोव } करना, निहारना
ज्येष्ठा, श्रेष्ठा, उत्तमा, वृद्धा, मुख्य
ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, प्रकाशवाली
ज्वाल, आग, भभूका, प्रकाश

(ज्ञ)

ज्ञात, जानना, मालूम
ज्ञाता, जाननेवाला, बुद्धिमान
ज्ञानद, ज्ञानदायक
ज्ञानी, बुद्धिमान

(झ)

झारी, गडुवा विशेष

(ट)

टकोर } , आहट, झनकार
टंकार }
टिट्टिभ, पक्षी विशेष

(ठ)

ठाना }
ठाम }
ठांव } स्थान, जगह
ठौर }

(ड)

डगर, रास्ता, मार्ग
डरकर }
डरद } भयदायक, भयंकर, डरावना
डरप्रद }
डाकिनी, भक्षणकरनेवाली, देवी
डार, डगाल, शाखा, दांड़, दगडी

(ढ)

ढिग, पास, निकट

(त)

तट, तीर, किनारा
तथास्तु, ऐसाहो, एवमस्तु
तन, देह, अंग
तनुजा, कन्या, सुता
तन्द्रा, शान्तिरूपा, उंघासरूपा
नशामय, निद्राशक्ति
तन्वंगा } कोमल, कोमअंगवाली
तन्वी }
तम, अंधेरा, कालापन
तरनी, तारनेवाली, सूर्य्य, नौका
तरु, वृक्ष, झाड़
तरुवा तलवा
तर्कस, बाण रखने का भाथा
तवानना, वृक्षमुखा, वृक्षरूपा
तस्कर, चोर, ठग, राक्षस, खल
तस्करता, चोरी विशेष
तिकालज्ञा, तीनोंकालकी जाननेवाली

तिमि, तसा, वेसा
तिमिर, अंधेरा, कालापन
तिमिरारि, सूर्य्य, सूरज
तिय, स्त्री, नारी, पत्नी
तियवपुनी, स्त्रीवेषा, स्त्रीरूपा
तीअक्षी
तीचखुनी
तीनयनी } महादेवी, भगवती, भवानी
तीनेत्रा
तीलोचनी
तीर, तट, किनारा
तुच्छ, अपमान, अपमानी
तुण्ड, मुख, नाक दांत इत्यादि
तुर, त्वर, शीघ्र, जल्द
तुरती, शीघ्रीय, जल्ददेनेवाला
तुरीयगति, चतुर्थ गति, वृद्धावस्था के परे की गति
तुल्य, समान, अनुसार
तुपता, सन्तोष
तुहिन, बर्फ, हिमालय पर्वत
तुहिनजा, पारबती, देवी
तुहिनधाम
तुहिननाथ } हिमालयपहाड़
तुहिनपति
तूरा, शीघ्र, जल्द, तुर, त्वर
तूल, कपास, रुई
तृण, घास, तिनका

तृप्ता, संतोषिता, तुष्टा
तृषा, प्यास, इच्छा
तेप, प्रकाश, प्रकाशवाली
तोय, पानी, जल, नीर
तोयज, कमल
तोयनिधि
तोयपति } समुद्र, सागर जलधि
तोयाधिप
तोमर, बरछी, हथियार विशेष
त्राता
त्राती } रक्षा करनेवाली

(थ)

थिति
थिरता } स्थिति, स्थिरता, ठहराव
थींगे, थींगरालगाहुआ, पेवनलगाहुआ

(द)

दक्षसुता, सती, देवी
दक्षा, विज्ञा, बुद्धिमान
दनुज, राक्षस, खल, दैत्य
दनुजनाथ
दनुजप
दनुजपति } राक्षसों का राजा, दानवों का भूपति, दैत्यराज
दनुजराज
दनुजेश
दर्शक, सन्मुख, मान्सिक शास्त्रविशेष
दल, फौज, सेना, नाश
दलनी, नाशकरनेंवाली, जलानेवाली

दलपति, दलेश } सेनापति

दशन, दांत, दन्त

दशनानन, दांत और मुख

दा, देना, देनेवाली

दाटा, कड़क्रिया, दबाया

दाड़िम, अनार, दर्मी

दाता, दतारी } देनेवाली, दायका

दानव, राक्षस, दैत्य, खल

दानवनाथ, दानवप, दानवपति } दैत्योंकाभूपति, राक्षसों का राजा

दापा, दबाया इत्यादि

दामिनी, बिजली

दायदा, दयालु, बपौती

दारा, स्त्री, पत्नी, नारी

दावानल, दावाग्नि

दाहनी, सीधी, रक्षादायका, जलानेवाली नाश करनेवाली

दिगम्बर, नग्न, महादेव

दितिज, दितिपूत, दितिसुत } राक्षस, दनुज, दैत्य निशाचर,

दिननाह, दिनप, दिनपति } सूर्य्य, सूरज

दिनपोपासक, सूर्य्य का भक्त, सूर्य्य पूजक

दिनराय, सूर्य्य, सूरज

दिवस, दिन, वारि

दिवसेश, सूर्य्य, सूरज

दीठ, दृष्टि, नज़र

दीपक, दिया, चिराग़

दीर्घ, बड़ा, भारी, बहुत

दुकारा, दुष्ट, दुष्टकाम

दुखद, दुखारी } दुखजनक, दुखदायक

दुति, तेज, छवि, प्रकाश

दुरात्मन्, दुष्ट, अधम

दुर्गम, समुझमें न आवे

दुर्ग्गति, अत्यन्तदुख, बहुतदुख

दुर्ग्गायश, श्रीदुर्गाजीकीकथा वा चरित्र

दुर्व्वाद, दुष्टबातें

दुलारी, कन्या, सुता, लड़की

दुष्ट, अधम, नीच, दुर्जन

दुहिता, कन्या, नतिनी

देवेश्वर, परमेश्वर, आदिदेव

देवेश्वरी, परमेश्वरी, आदिशक्ति

दैत्य, राक्षस, खल, निशाचर

दैत्यराज, राक्षसोंका राजा

द्योतनशीले, तेजमयी, प्रकाशवाली
द्वार, दरवाज़ा, रास्ता
द्रवना, पिघलना, प्रसन्नहोना

(ध)

धनद, दाता, कुबेर
धननाथ, धनपति } कुबेरदेवता
धरणीधव, राजा
धरा, पृथ्वी, धरती
धराधव, धरानाथ, धराप, धरापति } राजा, भूपाल
धाम, घर, गृह, गेह
धारू, धारणा, प्रवाहविशेष, लकीर, अंत आदि
धावत, दौड़तेहुये
धावन, दौड़नेवाले, चाकरलोग
धुनधृति, लगातारपरिश्रम
धूम्र, धूंआं, धूम्रलोचन राक्षस
धूम्रचखु, धूम्रनयन } धूम्रलोचन राक्षस
धूम्रा, धूंआरूपी, सर्व्वव्यापी
धूम्राक्ष, धूम्र लोचन राक्षस
धृत, धारणकिया गया वा हुआ
धोवन, धोयाहुआ पानी
धौरा, श्वेत, स्वच्छ, निर्म्मल, देवा
ध्रुवा, सत्य, नाशहीन, सदारहने वाली
अविनाशिनी, देवी, भगवती

(न)

नखत, तारा, नक्षत्र
नटनी, नटकीस्त्री, नटी, तमाशेवाली सुंदरस्त्री, सुन्दरी
नटी, नटकीस्त्री, नाटक करनेवाली
नन्दनी, आनन्द देनेवाली इत्यादि
नभ, आकाश
नभेशनी, आकाशकी स्वामिनी, सर्व्व स्वामिनी
नयन, आंख, लोचन, नेत्र
नर, मनुष्य, मनुज
नरनाह, नरप, नरपति, नरराई, नरेश } राजा, भूप, भूपति
नव, नया, नवीन
नवका, जहाज, डोंगी, नाव
नवता, नयापन, नवीनपन
नवतारा, नयातारा विशेष
नवल, सुन्दर, सुन्दरी
नवीन, नया, नव
नागरी, चतुर, बुद्धिवाली
नाजनी, कोमला, नम्र

नाद, आहट, शब्द, आवाज़
नादि } आदि रहित, आदि नहीं
नादिनी }
नाभि, तोंदी, नाभ
नामांक } नामवाली, प्रसिद्ध विदित
नामनी }
नायक, स्वामी, मुखिया, मुख्य
नारअयीणि, नारायणी, लक्ष्मी, देवी भवानी, भगवती
नारति, दुखनहीं, सुख
नारि, स्त्री
नाल, कमलकी दंडी
नाह, राजा, स्वामी
नाहनी, रानी, स्वामिनी
नाहर, सिंह, मृगपति, बाघ, व्याघ्र
निकट, पास, समीप
निकटाई, पासआई, समीपता
निकर, समूह, ढेर
निकाई, अच्छापन, स्वच्छपन, हित भलाई
निज, अपना, आप
निजअर्थी, स्वार्थी, अपना मतलबकरने वाला
निजकार, अपनाकाम, स्वार्थ
निजकीय, स्वकीय, अपनेवश
निजतिज, जैसावैसा, सबप्रकार
निजाधीन, अपने वशमें

निडर, डररहित, निशंक
नित, सदा, हमेशह
नितानन्दनी, नित्यानन्दनी, सदा आनन्दमेंरहनेवाली वा देनेवाली
निद्रा, नींद सपनस्वरूपा, नीन्दशक्ति
निधि, समुद्र, सागर, वैभवआदि
निधिज, कमल, सागरसे उत्पन्न, अमृत
निन्दक, निन्दाकरनेवाला
निपट, अत्यन्त, बिलकुल, पूराहोना
निपात, गिराना, मारडालना
निबेरी, निबेरकरके, छांटकरके, देखकरके प्रसिद्ध
निमित, वास्ते, हेतु, अर्थ
निम्न, नीचता
निरंकारिनी, केवल, आकार रहित, आदिज्योति
निरन्तरा, नाशहीन, सदारहने वाली
निराकार } आकार रहित
निराकारिनी }
निराहार, आहाररहित, उपवास
निर्गुण, गुणरहित, आकारादि रहित
निर्जन, मनुष्यरहित, उजाड़
निवाजिनी, दयाकरनेवाली, पालनकरने वाली
निशा, रात, रैन
निशाचर, राक्षस, चोर, दुष्ट

निशि, रात, रजनी
निशिकार, चंद्रमा, चंद्र
निशिचर, राक्षस, चोर, खल
निशिनाथ
निशिनाहा
निशिप
निशिपति
निशेश } चन्द्र, चंद्रमा
निषंग, बाणरखनेका भाथा
नीर, पानी, जल, नीला
नीरज, कमल
नीरपति, सागर, समुद्र
नीलाम्बर, नीलारेशम आदि बस्त्र
नीलाम्बरिनी, नीलांबर धारण किई हुई, देवी
नूत, नतन, नव, नया
नृत्य, नाच, नाचन
नृत्यक
नृत्यका } नाचनेवालेअप्सराइत्यादि
नृप
नृपति
नृपाल } राजा, भूपति
नेक, घोड़ा, कटाक्ष
नेगी, नेगवाली, लेनेवाली, गाहक
नेति, इतिनहीं, अंतनहीं

(प)

पग, पद, पैर, डग
पंकज, कमल
पंगु, पदहीन, लंगड़ा
पछिल, पीछे, पश्चात
पंचानन, महादेव, शिव, सिंह
पंचाननि, महादेवी शिवशक्ति, सिंहनी
पठपठन, पाठ पढ़ना
पठये, भेजे
पण, प्रण, प्रतिज्ञा, नेम
पतंग, कीड़ा, मच्छड़, सूर्य्य, विलक्षबस्तु
पतन, गिरना, पड़ना
पताका, ध्वजा, झंडी
पति, स्वामी, राजा
पतित, पापी, दुष्ट, गिराहुआ
पतिनी, पत्नीमिनी, रानी
पथ, रास्ता, मार्ग
पथिक, रास्ताचलनेवाला, मुसाफिर
पद, पैर, पांव, पदवी
पदचर, पांवचलनेवालीसेना
पदुम
पद्म } कमल
पन्नग, सांप, उरग
पय, दुध, दुग्ध,
पयोनिधि
पयोधि } समुद्र, क्षीरसागर
परम
परमा } महान, भारी, अत्यन्त, उत्कृष्ट,
परशु, फरसा बिशेष

परसन, स्पर्श, छूना
परस्पर, आपसमें
पराग, कमलकारज बिशेष
पराधीन, दूसरेकेबशमें
परार्थ, दूसरेकाउपकार, स्वार्थ रहित
परिक्रमा, आसपासफिरना
परिघा, परिघहथियाररखनेवाली वारहा करनेवाली
परिवार, कुटुम्ब, घेरना
पर्य्यन्त, तक, ले
पर्शुका, पशुली
पवन, वायु, हवा
पसाउ, प्रसाद, दया
पहार, पर्ब्बत, पहाड़
पहारी, पहाड़
पहँ, पास, समीप
पाठ, पढ़ना
पाठक, पढ़नेवाला, पण्डित
पाठन, पढ़ना, पाठकरना
पाणि, हाथ, कर
पात, गिरना, पत्ता
पातक, पाप, दुष्टकाम
पातकी, पापी, दुष्ट
पाथ, रास्ता, मार्ग, पथ
पाद, पद, पांव, पैर
पादप, वृक्ष, झाड़
पादपा, वृक्षरूपा

पान, पीना, पीने की बस्तु, मदिरा आदि
पापज, पापसे उत्पन्न
पामर, नीच, अधम
पारिजात }
पारिजातक } कल्प, कल्पवृक्ष
पारना, गिराना, मारना
पारस, पारसपत्थर
पावक, आग, अग्नि
पावन, पवित्र, निर्म्मल
पावनता, पवित्रता, स्वच्छपन
पावस, बर्ष, बर्षाकाल
पाश, फरसा, बिशेष
पाषाण, पत्थर
पाहि, रक्षाकरी
पिंगला, पीलेरंगवाली, देवी
पिपीलिका, चींटी, चिउंटी
पीअर }
पीत } पीला
पीता }
पीयूष, अमृत, सुधा
पीर, दुःख, पीर
पुंगी, सुपारी, फल विशेष, ढेर
पुंज, समूह, झुण्ड, ढेर
पुट, पलक, भौं, मिलान
पुररिपु }
पुरारि } महादेव, शिव, हर
पुष्ट, पलाहुआ, तेजमय

पृष्ठा, तेजमयी
पुष्प, फूल
पुष्पासन, फूलका आसन
पुहुप, फूल
पूगे, पगेहुये, मिलेहुये गुथेहुये
पूर्तिनी, पूर्णा — पूरी, संपन्ना
पोच, पोचना — नीच, मतिमंद
पोषण, पालन
प्रख्यात, प्रसिद्ध, बिदित
प्रचण्ड, कठोर, भारी
प्रचार, फैलाव, फैंकना
प्रजा, रय्यतलोग
प्रज्ञा, विद्या, बुद्धिवाली, आदि
प्रताप, तेज, महिमा
प्रतिज्ञा, प्रण, नेम
प्रत्यक्ष, साक्षात्, सन्मुख प्रसिद्ध
प्रद, देनेवाला, दायक
प्रदा, देनेवाली, दायका
प्रदाता, दायक, देनेवाला
प्रदिष्ट, दर्शिक, सन्मुख, दिखायाहुआ
प्रधान, मुख्य, मंत्री
प्रधाना, मुखिया, उत्तमा, मुख्य
प्रफुल्लित, प्रसन्न, पुलकित
प्रबली, बलवाली, बलमय
प्रभा, छबि, प्रकाश, सुन्दरता
प्रभात, सुबह, तड़का
प्रभाव, प्रताप, महिमा, तेज
प्रहलादनाथ, प्रहलादप, प्रहलादपति — नृसिंहभगवान
प्रार्थिता, आराधिता
प्रिय, प्यारा
प्रिया, प्यारी, स्त्री, शक्ति

(फ)

फन्दनी, फांद, फांदनेवाली
फलकार, फलजनक, फलद, फलनी, फलप्रद — फलदायक, हितकारी
फुर, सच, सत्य
फोरा, फोड़ा, घाव

(ब)

बंका, टेढ़ा, बहादुर
बंकाई, टेढ़ाई
बड़वानल सागरकीभीतरीअग्निमहाग्नि
बतराई, बातचीत, बार्ता, किहै
बधिर, बहिरा
बधु, स्त्री, नारि, पत्नी
बनगज, जंगलीहाथी
बनपति, सिंह
बनी, जंगलीदुष्ट, मतिमन्द

बन्धु, भाई, भ्राता
बन्धुनी, भाई, तुल्यहितकारका
बपुरा, बिचारा, दीन
बमन, उछाल, बिशेष
बयन, बचन, बोलना
बरबेरी } ज़बरदस्ती
बरवशित }
बरूथ, झुण्ड, ढेर, समूह
बल, ताकत, शक्ति, फौज, सेना
बलि } बलिदान, महान पूजा
बली } नैवेद्य, बिशेष
बहिराना, बाहरआना
बहुतेक, अत्यन्त, बहुतसे
बहुराना, लौटाना, फिराना
बहुल, बहुत
बहोर, फिर, पुनि, लौटना
बारि, पानी, दिन, समय
बारिज, कमल
बारिद, बादल
बारिनिधि, समुद्र, सागर
बिकनारी, वेचनेवाली
बिनायास, सहज, यकायक
बिनुबार, तुरंत, शीघ्र
बिसरना, भूलना
ब्रीचि, मध्य, लहर
बुध, बुद्धिमानजन

(भ)

भ, संसार इत्यादि
भगिनी, बहिन, बहिनी
भट, योद्धा, बहादुर, बीर
भणी, कहीगई, कथित
भद्रकाली, कल्याणकरनेवाली, देवी
भयद, भयदायक, डरावनी
भरु, बिष्णु, शिव, सुर
भर्त्तार, पति, स्वामी
भव, संसार, समुद्र, महादेव, सुर, इत्यादि
भवन, घर, लोक, जगत
भवपति, इन्द्र, महादेव
भसिन्धु, संसार, समुद्र
भा, प्रभा, छबि, प्रकाश
भाजन, बर्त्तन
भानु, सूर्य्य, सूरज
भानुज, सूर्य्य से उत्पन्न
भायका, भानेवाली, सुहावनी
भार, बोझाआदि
भाल, कपाल, माथ
भिन्दिपाल, तीर, विशेषहथियार
भीमा, भयंकर, देवी, महानदेवी
भीषण, डर, भयंकर
भुज } बाहु
भुजा }
भुजंग, सांप, पन्नग, नाग
भुवन, लोक, जगत

भुवनेश्वरी, लोकस्वामिनी, महादेवी
भू, पृथिवी, धरती
भूतनाथ, महादेव, शिव
भूति, वैभव, धन, सम्पति
भूतीशा, कुबेरदेवता
भूधव, भूप, भूपति, भूपाल, — राजा, नरपति
भूमि, पृथ्वी, धरती
भूरि, बहुत, अत्यन्त, भारी
भूष, गहना, संवारन
भूषित, संवरित
भृकुटी, भौं
भेक, भेकनी, — मेंडक
भैरव, सुबहगानेकाराग
भोरी, भोली, सीधी
भ्रमण, फिरना, भटकना
भ्रमर, भौंरा, मधुमक्खी
भ्राता, भाई
भ्रान्ति, भ्रम, भटकरूप
भ्रामर, भ्रमरस्वरूपादेवी
भ्रू, भौं, भृकुटी

(म)

मकरन्द, भौंरा, अलि, पराग, रज
मख, यज्ञ, होमविशेष
मग, रास्ता, मार्ग
मजूरी, मज़दूरी
मंजु, मंजुल, — मधुर, मृदु, स्वच्छ
मद, मान, अहंकार
मदन, कामदेव
मदिरा, शराबविशेष
मधुमल, मोम, मैन
मधुरिपु, हरि, विष्णु, ईश्वर
मनस, मन
मनु, मनुष्य, नर, मनुराज
मनुज, मनुष्य, नर
मनुजेश, मनुप, मनुपति, मनुपाल, — राजा, नृपति, भूपाल
मनुसाई, बहादुरी, शूरता
मनोज, कामदेव
मनोजरिपुनारी, पार्वती, देवी
मन्दर, देवालय, घर, मन्दराचलपहाड़
मयूर, मोरपची
मर्कट, बन्दर, बानर
मलीनता, मैलापन, मल
मसक, मच्छर
मसानी, दावात
मसि, स्याही
महकाई, महर्क, वास, सुगन्ध

महान, बड़ा, भारी
महानल, महानअग्नि
महि, पृथिवी, धरती, भूमि
महिधर, पहाड़, पर्व्वत
महिधव, महिनाथ, महिप, महिपति, महिपाल, महिपोषक, महिराज, महिस्वामी, } राजा, नरपति, भूपति
महिरण, संग्रामभूमि
महिष, भैंसासुर, महिषासुर
महिषारातिनी, महिषारिनी, } आदिशक्तिमहादेवी भवानी।
महीश, राजा, नरपति
महेश, महादेव, शिव
महेश्वरी, महानस्वामिनी, महादेवी
मा, माता, लक्ष्मी
माखे, अहंकारमेंआये, क्रोधीआदि
माटिका, माटी, मिट्टी
मातनी, माती, } नशेमेंआई
माधव, विष्णु, हरि, लक्ष्मीपति
माननीय, सुन्दरस्त्री, गर्व्विनीस्त्री
मानाथ, विष्णु, ईश्वर

मानुज, मनुष्य, नर
मानुजराई, राजा, नरपति
मान्सिक, मनसंबन्धीदर्शकसंबंधी
माया, चाल, देवी, मोह
मार, कामदेव
मार्ग, रास्ता, पथ
मार्जार, बिल्ली, बिलाई
मालकौंस, एकराग
मलिनी, मावली, } देवी, भवानीआदिशक्ति महानदेवी
मावस, अमावस्या
मास, महीना, मांस
माहात्म्य, महिमा, प्रभावइत्यादि
माहेश्वरी, महानदेवी, शिवकीशक्ति
मित, सीमासहित
मिथ्या, झूठ, असत्य
मिश्रित, मिलाहुआ
मिष्टान, मिठाईइत्यादि
मीच, मृत्यु, काल
मीत, हितकारी, मित्र
मीन, मछली, मच्छी
मीमान्स, मीमान्सिक, } दर्शकबिशेषबिद्या
मुकुन्दनी, दाता, देवी
मुकुर, आईना, दर्पण
मुक्ता, मोती
मुक्तावली, मोतियोंकीमाला

मुक्ति, मोक्ष, लीनता
मुखड़ा, मुख, आकार
मुखर, बड़बड़िया, बोलनेवाला, पंडित
मुखरता, बड़बड़बोलना
मुग्ध, चुपचाप, मूर्ख, सुन्दर
मुद, प्रसन्न, पुलकित
मुद्गर, मोगरी, मूसलविशेष
मुद्रिका, मुंदरी, छल्ला
मुष्टि, मुट्ठी, घूंसा
मूक, गूंगा, बोलनसके
मूढ़ता, मूर्खता, अज्ञानता
मूरी, मूली, जड़, जड़ी
मूल, जड़आदि,
मूष, } मूस, चूहा
मूषक, }
मृग, हरिण, पशु
मृगईश, } सिंह
मृगनाथ, }
मृगनी, सिंहनी
मृगनृप, } सिंह
मृगपति, }
मृगया, शिकार, आखेट
मृगराई, }
मृगराज, }
मृगरिपु, } सिंह
मृगाधिपति, }
मृगाधीश, }
मृदु, कोमल, मधुर
मृदुंगी, कोमलअंगवाली
मेघ, बादल, वर्षा
मेधा, महानबुद्धिवाली, देवी
मेरु, पर्वत, सुमेरु, पहाड़
मैत्री, मित्रता, स्नेह
मोक्षद, मुक्तिदायक
मोक्षा, मुक्तिस्वरूपा
मोद, आनन्दआदि
मोदक, मिठाईविशेष
मौक्ति, मुक्तिभाव, मुक्ति
मौल्य, मूलभाव, आदिभाव, मोल, मूलता

(य)

यथोचित, जैसाउचितहै
यश, कीर्त्ति, प्रशंसा, चरित्र
यशुमति, यशोदा, नन्दपत्नी
याग, यज्ञइत्यादि
याचना, मांगना
याचित, मांगाहुआ
यान, वाहन, सवारी
यामिनी, रात, रात्रि, रैन
यामिनीचर, राक्षस, दैत्य
यामिनीस्वामी, चंद्रमा
यामिनीस्वामीसुत, बुध
युक्ति, उपाय
युत, मिश्रित, मिलाहुआ
युवती, तरुणास्त्री, सुन्दरी

योग, संयोग, मेल
योगमाया, योगबल्लभा, देवीशक्ति
योनिज, उत्पन्नकियेहुये
योषिता, स्त्री, नारि
यौवन, तरुणपन, जवानी

(र)

रक्त, लोहू, शोण
रक्ता, लाल, अरुण, सुन्दर
रंक, ग़रीब, दीन, दास
रज, धूल, पराग, सार
रजनी, रात, रैन, रात्रि
रजनीचर, राक्षस, दैत्य, चोर, खल
रजनीश, चंद्रमा, चंद्र
रजायसु, राजाकीआज्ञा
रजु, रस्सी, डोरी
रण, संग्राम, लड़ाई, युद्ध
रतनी, प्रीतिवाली, रती
रदच्छद, ओष्ठ, ओठ, अधर
रमा, लक्ष्मी, श्री,
रमापति, रमेश, विष्णु, हरि, ईश्वर,
रव, शब्द, आहट, आवाज़
रवि, सूर्य्य, सूरज
रसना, जीभ, जिह्वा
राई, राजा, सरसोंविशेष
राऊ, राजा, भूपति
राकपति, राकाशशि, पूर्णमासीकाचन्द्रमा
राज, राजा, राज्य
रातचर, राक्षस, दैत्य, दानव
राती, प्रीतिमेंआईहुई, मनमेंभाई
राशि, समूह, ढेर
रिपु, रिपुनी, वैरि, दुश्मन
रिसपति, पावक, महाग्नि
रीता, खाली, छूछा
रूख, दया, दृष्टि
रुण्ड, धड़, शिररहितअंग
रुद्र, महादेव, शिव
रुदन, रोदन, रोना
रुधिर, लहू, रक्त
रुधिरबीज, रक्तबीजराक्षस
रुष्टा, क्रोधरूपा, देवी
रैन, रात, रात्रि
रैनचर, राक्षस, दैत्य, खल
रोगवश, रोगी, बीमार
रोचनी, मुख्य, मुखिया
रोधनी, रोकनेवाली, प्रबली
रौद्र, महादेवकी शक्ति, महादेवी

(ल)

लकुट, लकरी
लखि, देखकर
लगायतार, एकदम, बराबर

लघु, छोटा, थोड़ा

लजाई, लाज, लज्जा

लय, संहार, नाश

ललाट, कपाल, मस्तक

ललाटजा, कपालसे उत्पन्न हुई

ललामा, श्यामा, रक्ता, सुन्दर

लव, मात्र, अंश, लेश

लवण, नीमक

लवांश, अत्यन्तथोड़ा अंश

लहुबीज, रक्तबीज, राक्षस

लांगुल, दुम, पूछ

लाघव, लघुता सहज थोड़ेमें.

लाजवंतहरियाई, उनवृक्षों की हरियालीजिनको छूने से पत्ते मुंद जातेहैं वासकुचते हैं, एक प्रकार का पोधा

लाम, लम्बा

लिखनी, लेखनी, क़लम

लीक, लकीर, रेखा, नाम, मुखिया

लुकाई, छिपाना

लेख, लिखी हुई कथा

लेखक, लिखनेवाला

लेखनी, क़लम

लेश, अंश, मात्र

लोक, जग, जगत, दिशा, मनुष्य

लोकेशा, लोकपति, राजा

लोकेश्वरी, लोकस्वामिनी, सर्व्व स्वामिनी

लोचन, आंख, नयन, नेत्र

लोप, छिपना

लोभ, लालच

लोलुपी, लालची

(व)

वक्ता, पढ़नेवाला, बोलनेवाला

वक्ति, भाव, कथा, नाम

वतास, वायु, हवा

वत्सल, बच्छ, प्रीति

वदत, कहतेहुये, बोलना

वदन, मुख, कहना

वदना, मुखी

वध, मार, हतन

वधनी, मारडालनेवाली

वधित, मारागया, मृत, हत

वनिता, स्त्री, नारि

वन्हि, अग्नि, आग

वपु, देह, अंग

वमन, उछाल, वान्ति

वयस, उमर, अवस्था

वरदा, वरदेनेवाली

वरपेरो, } ज़बरदस्ती
वरवत, }

वशीठ, दूतसंदेशा लेजानेवाला

वसन, कपड़ा बस्त्र

वसु, पृथिवी, धरती, धनादि

वसुधर, पर्व्वत, पहाड़

वसुधव, राजा, भूपाल
वसुधा, पृथिवी, धरती, जगत
वसुधापाल, वसुधाराय, वसुधाराई, वसुधेश — राजा, नृपति
वसुधेश्वरी, जगकी स्वामिनी
वसुनाथ, वसुप, वसुपति, वसुपाल — राजा, भूपाल, नृपति
वसुमति, पृथिवी, धरती
वसुरण, रणभूमि, संग्रामस्थान
वसुराई, राजा, भूपति
वाघम्बरी, महादेवी, शिवशक्ति
वाचाल, बोलनेवाला, पंडित
वाजि, घोड़ा, अश्व
वाजिनी, घोड़ी
वाट, मार्ग, रास्ता
वाणी, भाषा, शारदादेवी
वात, वायु, हवा, सन्नपात
वाधा, दुःख, विघ्न, शोक,
वानर, बन्दर, कपि
वानि, भाषा, शारदा, स्वभाव
वामा, बांया, बिमुख, स्त्री, सुन्दरी
वार, दिन, समय
वाराही, बाराहभगवती, वाराहशक्ति.

वारि, पानी, निछावर
वारिज, कमल
वारिनाथ, वारिनिधि — समुद्र, सागर
वासर, दिन, दिवस
वासरपति, सूर्य्य, सूरज
वाहन, यान, सवारी
वाहु, भुजा
विकट, कठिन, कठोर, भारी
विकराल, कराल, कठिन
विकाश, प्रकाश
विख्यात, प्रसिद्ध, विदित
विगोई, छिपाहुआ
विजया, जीतवाली, देवी, भवानी
वित्त, धन, संपति
विदित, प्रसिद्ध, प्रख्यात
विधाता, ब्रह्मा, ईश्वर
विधान, प्रकार, भांति
विधि, प्रकार, ब्रह्मा, ईश्वर
विधिजा, शारदा
विधिवामा, ब्रह्माणी
विधु, चन्द्रमा, चन्द्र
विधुबदनी, चन्द्रमुखी
विनायक, मुखिया, गणपति
विन्ध्यवासनी, बिंध्याचलपहाड़में बास करनेवाली
विपिन, बन, जंगल, आरण्य

विपिनपति, सिंह
विपिनी, बनी, जंगली, मूर्ख
विपुल, बहुत, अनेक
विप्र, ब्राह्मण
विभु, परमेश्वर, ईश्वर, प्रभु
विमल, निर्म्मल, स्वच्छ, पवित्र
विरक्त, सान्सारिकप्रीतिरहित
विरंचि, ब्रह्मा, विधि, अज
विराट, ईश्वरका सान्सारिकरूप, विष्णु का जगरूप
विलम्ब, देर, समय
विविध, कईप्रकारसे
विबुध, देव, देवता, सुर
विबुधप } इन्द्र, शक्र, सुरपति
विबुधपति }
विबुधपुरी, सुरलोक, अमरावती
विबुधवैरि, राक्षस, दैत्य, खल
विविधेश, इन्द्र, सुरपति
विशाल, दीर्घ, भारी
विश्व, सन्सार, जग, सब
विश्वम्भरी, जगतकीपालनेवाली
विश्वेश्वरी, जगतकी परमेश्वरी, सन्सार की स्वामिनी
विष, ज़हर, गरल
विषम, कठिन, समाननहीं
विषय, सन्सार, सुखइत्यादि
विषाद, शोक, दुःखइत्यादि
विस्मय, दुबिधा, खटका
विस्मित, संदेहसहित
वीणा, एकप्रकारका बाजा
वृत्ति, जीविका
वृथा, नाहक, निःफल
वृद्धिदा, वृद्धिका देनेवाली, बढ़ती की करनेवाली
वृषभ, बैल
वृष्टि, वर्षा, बरसा
वैभव, ऐश्वर्य्य, सुखीदशा
वैष्णवी, विष्णु कीशक्तिलक्ष्मी, श्री, देवी

(व्य)

व्यंग, टेढ़ा
व्याघ्र, शेर, बाघ
व्याधि, रोग, विशेष
व्याधी, शिकारी, बहेलिया
व्याल, सांप, नाग

(श)

शक्र, इन्द्र, सुरपति
शक्ति, बल, देवी, भवानी
शक्तिजा, शक्तिसेउत्पन्न
शंकर, महादेव, हर, शिव, ईश
शची, इन्द्रकी स्त्री
शचीनाथ, इन्द्र, सुरपति
शठ, खल, मूर्ख, दुष्ट
शताक्षी, सौआंखवाली, देवी
शब्द, आहट, वाणी

शम्भु, महादेव,शिव
शयन, सोना,नींद
शर, बाण
शव, मृत,मुर्दा
शवस्थान, मुर्दास्थान,मसान
शशि, चन्द्रमा,चन्द्र
शशनी, चन्द्र प्रिया,चन्द्रिका
शस्त्र, हथियार
शाक, भाजी,तरकारी
शाकम्भरी, पोषणकारी,देवी
शाकिनी, देवी
शात्य, शक्तिभाव
शिक्षा, उपदेशरूपा,देवी
शिखा, चोटी,मुखिया
शियार, शृगाल,लोमड़ी
शिरोमणि, मुख्य,प्रथम,मुखिया
शिव, महादेव,कल्याण
शिवद, कल्याणदायक

शिवनी, शिवरानी, शिवा — महादेवी,पारबती,भवानी

शीघ्र, तुरन्त,जल्द
शीतला, ठण्डी,माता,देवी
शीश, शिर,मस्तक
शुक, तोता,सुआ

शुचि, शुभ, शुभग — उत्तम,स्वच्छ,निर्म्मल
शुभगा, स्वच्छरूपा
शुष्क, सूखा,रसहीन
शूल, त्रिशूल,हथियार
शृंखाली, सांकलवाली,भयंकरा,देवी
श्वेत, श्वेत,सफेद,निर्म्मल
शैल, पहाड़,पर्व्वत
शोक, सोच,बिलाप,दुःख
शोण, लहु,रक्त
शोणबीज, रक्तबीजराक्षस
शोणित, लहु,रक्त
शोणितबीज, रक्तबीजराक्षस
शोधा, स्वच्छरूपा,बनानेवाली,पवित्रकरनेवाली,देवी
शोभदा, शोभाका देनेवाला
शोभित, संवारित,भूषित,सुन्दर
शौरी, विष्णु,हरि,ईश्वर
श्रवण, कान,सुनना
श्री, लक्ष्मी,देवी,प्रभु,आपमहाराज एकराग
श्रीपति, विष्णु,हरि,भगवत
श्रीफल, नारियल
श्रुति, वेद
श्रोता, सुननेवाला
श्यामा, श्यामरंगी,देवी

श्वेत, स्वच्छ, सफेद
श्वेता, श्वेतरूपा, देवी

(ष)

षटकरनी, लक्ष्मी, विष्णु की शक्ति
षड़ाननी, श्यामकार्त्तिककीशक्ति, कार्त्तिकेयदेवी
षष्ठपदी, भ्रमर, भौंरा, भ्रमररूपादेवी

(स)

सकला, कुल, सब, कलासहित
सखरस, माखन, मसका
सगरे, सब, कुल
सगुणा, गुणसहिता, आकारवाली
संकलनी, योगवाली, इत्यादि, देवी
संग्राम, युद्ध, लड़ाई
संघात, मिलान, मिलाहुआ
सचेत, चेतमें, सावधान
सजर, जड़सहित, मूलसहित
सत्य, सच,
सत्या, सत्यरूपा, देवी
सदय, दयासहित, दयालु
सनातनी, सदारहनेवाली, नाशहीन
सन्निधि, निकट, पास
सपक्ष, पंखलगेहुए
सबूरी, धीरज, धैर्य्य
सम, बराबर, समान, तुल्य
समदर्शिनी, सबकोबराबरदेखनेवाली देवी
समर, युद्ध, लड़ाई
समरधरा, रणभूमि, संग्रामस्थान
समीर, वायु, हवा, पवन
समुख, सन्मुख, सामने
समुदाय, झुण्ड, ढेर
समेत, सहित
सम्राज महानराज्यचक्रवर्त्तीराजाकाराज्य
सम्बाद, वार्त्ता, बातचीत
सर, तालाब, ताल
सराहना, प्रशंसाकरना
सरित, तालाब, नदी
सरितपतितनया, लक्ष्मी
सरिता, नदी
सरितापाल सरितेश, समुद्र, सागर
सरोष, क्रोधमय
सर्व्वोत्कृष्टा, सबमेंऊंची, सबमेंउत्तमा, सर्व्वोपरा
सहज, स्वाभाविक, सहल
सहसाक्षी, हज़ारआंखवाली, देवी, शची
सहसानन, शेषनाग
संहार, वध, नाश
साकार, आकारसहित
साक्षात्, सन्मुख, दर्शित
साक्षी, साखी, सन्मुख
सागर, समुद्र
सादि, आदिसहित
साधव, महादेव, शिव

साधा, आराधा, मनमेंलाया
साधित, आराधाहुआ
साधीनी, आधीनतासे
सानन्द, आनन्दसे
सानुभव, अनुभवसे
सारता, सत्यता, सत
सारति, दुखसहित
सारथी, रथहांकनेवाला
सारी, कुल, साड़ी, लुगड़ा, वस्त्र
सावर्णी, छायासेउत्पन्न, दूसरेमनुराज
साश्चर्य्य, आश्चर्य्य से
साहट, आहटसे
सिद्धिदा } सिद्धिदेनेवाली, कामसुफ
सिद्धिप्रद } लकरनेवाली, आदिदेवी
सिन्धु, समुद्र, सागर
सियार, शृगाल, लोमड़ी
सी, सिसकी, सीकरना
सीता, शीता, देवी, सुखदायका
सीदना, पिघलना, प्रसन्नहोना
सीमा, हद, मिति
सींवनी, सिरवाली, मुख्य, मुखिया
सुअन, सुत, पुत्र
सुकण्ठ, सुग्रीव, दूत
सुखद, सुखदायक
सुखमा, क्रान्त, शोभा, प्रकाश, सुन्दरता
सुखारी, सुखदायक
सुघरी, शुभघड़ी, सुन्दर
सुत, पुत्र
सुता, पुत्री, कन्या
सुधा, अमृत
सुन्दरी, स्त्री, सुन्दरस्त्री
सुपास, सेवा, हथियारविशेष
सुभट, योद्धा, शूर, बीर
सुमन, फूल, पुष्प
सुमाली, लक्ष्मी, देवीविशेष
सुर, देव, देवता, अमर
सुरईश, इन्द्र, शक्र
सुरनाहनी, देवी, सुरस्वामिनी, शची
सुरप, इन्द्र, शक्र
सुरपचाप, इन्द्रधनुष
सुरपति, इन्द्र, शक्र
सुरपतिनी, शची, देवी, सुरस्वामिनी
सुरपाल, इन्द्र, शक्र
सुरपासन, इन्द्रासन, इन्द्रगद्दी
सुरलोक, अमरावती, स्वर्ग, वैकुंठ
सुरसरि, गंगा, नभगंगा
सुरा, मदिरा, देवी, अमरा
सुरेश, इन्द्र, शक्र
सुरेशनी, शची, देवी, सुरस्वामिनी
सुलभ, मिलसके, प्राप्त, महत्त
सूक्त, मंत्र, विशेष
सूगा, तोता, सूआ
सृज, उत्पन्न, उत्पन्नकरना
सेतनी, सेतुतुल्य, पुलरूपा

सेननाथ, सेनप, सेनापति, राजा
सेना, फौज, दल
सेनेश, सेनापति, राजा
सैन, इशारा, कटाक्ष
सोपान, सीढ़ी, निसैनी
सौख्य, सुख, सुखभाव
सौंदर्य्य, सुन्दरता
सौंदारि, सुन्दरीपन
सौम्यता, सुन्दरता
सौम्या, सुन्दरी, प्रकाशवाली, सुन्दर
स्थिरता, स्थैत्य, स्थैर्य्य — थिरता, स्थितिशक्ति, स्थिति दशा
स्मृति, स्मरणशक्ति
स्वधा, स्वाहा, मंत्रविशेषरूपा
स्वात्ममूर्त्तिनी, आपसेआपरूप, आदि देवी
स्वीकरनी, अंगीकारकरनेवाली
स्वीकृत, अंगीकारकियागया
स्वीकृता, अंगीकारकी
स्वेद, पसीना, पसीनेकेकण

(ह)

हर, महादेव, शिव
हरनी, पार्वती, देवी
हरि, ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु
हरिज, हरिसेउत्पन्न, ब्रह्मा
हरित, हरा
हरिनयनायनि, विष्णुकीआंखमेंरहनेवाली, योगमाया, देवी
हस्ति, हाथी
हंसिखेल, हंसीखिल्लीवृक्ष, जिसकोछूनेसे पत्तेखिलतेवाफैलतेहैं
हाकिनी, देवीविशेष
हाटक, सोना, सुवर्ण
हाती, हाथ, कर
हानिद, हानिप्रद — हानिदायक, हानिकरनेवाला
हारिनी, हरनेवाली, नाशकरनेवाली
हिंडोल, पालना, झूला, एकराग
हिम, पाला, बर्फ, हिमालयपहाड़
हिमजा, पार्व्वती, देवी, भवानी
हिमजामातृ, महादेव, शिव
हिमपति, हिमालयपर्व्वत
हियजानिनी, हृदयकीजाननेवाली
हिरनकशिपु, हिरणाकुश — हिरण्यकश्यपराक्षस
हीर, हीरक — रत्नविशेष, हीरा
हृदया, हृदय, छाती, स्तन
हृष्ट, सन्तुष्ट, प्रसन्न
हेम, सोना, सुवर्ण
हेरा, देखा, निकाला
ह्री, सकोचस्वरूपा

इति॥